Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain.

Jan-Gyan Acc. no. 113348

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू राज्य
स्थापना हेतु
संघर्ष करो

दक—राकेशरानी
७, हरध्यानसिंह मार्ग,
तबाग, नई दिल्ली-५
ाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११

क मूल्य : ३० रुपए
ा में : विमान से ४२ पौंड,
६० डालर

वन : ५०१ रुपए
: १००१)
प्रति : तीन रुपये

क संवत् २०४०
र १९८३, वर्ष १६, अंक ७

दीपमाला : प्रकाश पर्व

अन्धकार मृत्यु है, प्रकाश जीवन। जीवन का अर्थ है गति, उन्नति और मृत्यु का अथ है समाप्ति।

दीप जलाने सभी को आते हैं पर अन्धकार मिटाना सभी के लिए सम्भव नहीं। यदि ऐसा होता तो कहीं अज्ञान-तम दिखायी न पड़ता।

क्रांति का अर्थ भी प्रकाश का स्वागत है और निर्माण भी प्रकाश से ही सम्भव है, किन्तु प्रकाश के पुजारी होते हुए भी हम विध्वंस को ही अधिक महत्त्व देते हैं।

युद्ध, घृणा, द्वेष, हत्या सभी कुछ प्रकाश के अभाव का ही परिणाम हैं। हम ठीक से सोच ही नहीं पाते कि सत्य क्या है ? असत्य क्या है ?

हम सत्य-असत्य का विवेक कर सकें, असत्य को प्रकाश किरणों से समाप्त कर सकें, इसीलिए हम दीपमाला मनाते हैं और इस वर्ष की दीपमाला तो ऐतिहासिक है।

गुरुदेव देव दयानन्द का निर्वाण हुए आज १०० वर्ष हो गए, किन्तु इन १०० वर्षों में हमने उन्हें कितना जाना, कितना देखा, कितनी दूर हम उनकी राह पर चले ?

जानता हूं कि आप उत्तर नहीं देंगे, किन्तु समय तो किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। इतिहास आपसे पूछेगा कि क्या किया तुमने सत्य के लिए ? तब मौन क्या हमारी मृत्यु का प्रतीक नहीं होगा ?

—वेदभिक्षु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय
मैं हृदयमन्दिर से लिख रहा हूं —वेदभिक्षु:
जलते पंजाब की समस्या — ऋचा
धर्मनिरपेक्षता की दोहरी नीति —प्रह्लाद गोस्वामी
वनस्पति घी में गाय की चर्बी : दोषी कौन ? — धर्मपाल शर्मा
स्वर्गीय श्री लालमनजी आर्य, अब जिनकी याद ही बाकी है
पाकिस्तान पुन: विभाजन के कगार पर —जहीर नियाजी
राष्ट्रीय जागरण के इतिहास में
महर्षि दयानन्द महामानव थे —रामगोपाल शालवाले
प्रभु, हमें सत्मार्ग पर ले चलो (वैदिक प्रार्थना) — प्रो. धर्मवीर
अमरत्व की ओर — भगवान् "चैतन्य"
युधिष्ठिर की धर्मपरीक्षा (बोधकथा) — प्रेमचन्द्र शास्त्री
मां की अंगूठी (बालजगत्) —श्रीव्यथित हृदय
धर्म की वेदी पर (खण्डकाव्य) —राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
वे पाठशालाएं थीं, ये कान्वेन्ट हैं — अरुणा शास्त्री
साम्प्रदायिकता कैसे मिटे ! —रामचन्द्र आर्यमुसाफिर
वह गद्दार नहीं तो क्या है ? (कविता) —रामबाबू मिश्र रत्नेश
समय की पुकार —राजीव मिश्र
महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त
रक्त की श्रद्धांजलि —नटवर पारीक "विद्यार्थी"
कुछ घरेलू नुस्खे
ईश्वर उपासना : उपनिषदों का रहस्य (अध्यात्मधारा)
—स्व. महात्मा नारायणस्वामी
आपही के पत्र
आत्महत्या करनी है तो सिगरेट पीजिए (आपका स्वास्थ्य)
—इन्द्र जोशी
चन्द्रशेखर आजाद (प्रेरक प्रसंग) अरुण आर्य
महर्षि दयानन्द सरस्वती (संक्षिप्त जीवनी)
दयानन्द संस्थान के वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां
ईसा के जीवन में श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र की नकल
—डा. श्रीराम आर्य
सामयिक विचार —सत्यपाल शास्त्री
क्या खालसा कभी राज करेगा ? — बालकवि बैरागी
आवश्यकता है हिन्दुओं के संगठन की — वीरेन्द्र
ये अमरवीर — आभा
संवेदनहीनता का संकट —सत्यपाल [illegible]
क्या हम स्वतन्त्र हैं ? —ब्र. प्रेम प्रकाश शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113348

सम्पादकीय

विजय तुम्हारी होगी !

यह मत सोचो कि कोई घोड़े पर बैठकर आएगा और तुम्हें ...ाएगा, कोई आकाश से उतरेगा और ...्हारी रक्षा करेगा। कोई देवता ...रती से प्रकट होगा और तुम्हारे सभी ...ट हरेगा। नहीं, ऐसा नहीं होगा।

तुम्हें स्वयं अपना उद्धार करना ... तुम्हें स्वयं देवता बनना है। तुम ...यं इन्द्र हो, रुद्र हो। तुम राम भी ...ोगे और कृष्ण भी। तुम्हें अपना ...भिमान जगाना होगा। अग्निपुंज ...ना होगा और विजय-वरण के लिए ...ं आगे आना होगा।

समय को देखो और आगे बढ़ो। ...ाशा छो...कर, उदासी तोड़कर नए ... के निर्माण में जुट जाओ। तुम्हें ...र से सतयुग लाना है। भारत के ...-कण में अमर प्रेम-गंगा बहानी है। ...क व्यक्ति को धर्म के अमृत से पूत ...ना है। यही तुम्हारा भविष्य है, ... तुम्हारी नियति है।

इस्लाम और ईसाइयत के मानने ...ों से हमारा विरोध नहीं। हमारा ... तो उस विचारधारा से है, ...ने धरती के एक बड़े भाग को नरक ... रखा है। कुरान-बाइबिल का ... और चिन्तन मानव के लिए विष ... यही काफिर और मोमिन की समस्या खड़ी करता है। यही तलवार की धार पर विचार फैलाने में विश्वास रखता है।

भारत को इस्लामिस्तान या ईसा-लैंड बनाने के सपनों को गहरे गड्ढे में दबाने की तैयारी आपने करनी है। दंगों से फैलती हिंसा आपने रोकनी है। मजहब के नाम पर देशद्रोह की भावना आपने मिटानी है। मेरे भाई, इसके लिए संघर्ष की तैयारी करो।

भारत के सभी नागरिक एक हैं, उनमें अलगाव की बात देशद्रोह है। भारत के किसी भी नागरिक का किसी अन्य देश के प्रति आकर्षण अक्षम्य अपराध है।

कश्मीर - पंजाब - असम-नगालैंड की समस्याएं भारत का भविष्य बनाएंगी। इन क्षेत्रों में उभरती साम्प्र-दायिकता हम सभी के लिए एक चुनौती है और यह चुनौती आपने स्वीकार करनी है।

देश हमारा है, शासन हमारा है, भूमि हमारी है। हमें प्रतिज्ञा करनी है कि प्राण भले ही चले जाएं, भारत मां की एक इंच भूमि नहीं देंगे। मां की वन्दना, राष्ट्र की पूजा, धर्म का संरक्षण और मानवता का विकास एक साथ जुड़ा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा देश वीरों का देश है। इसमें शंखनाद की आवश्यकता है। एक बार सिंह जाग गया तो देशद्रोही सियार स्वयं समाप्त हो जाएंगे।

इसीलिए तो कहती हूं—
उठा लो अर्जुन
अपने बाण!!

चिन्ता मत करो—विजय तुम्हारी होगी।

मुसलमान चिल्लाना छोड़ें

भारत में रहने वाले मुसलमानों को मेरी नेक सलाह है कि वे अपने हित में चिल्लाना छोड़ें और देश के सभी नागरिकों में पूरी तरह हिलमिल जाएं।

१९४६ में उन्होंने ही तो कहा था कि हम हिन्दू के साथ नहीं रह सकते। हमें अलग राज्य चाहिए। तलवार से खून बहाकर उन्होंने पाकिस्तान ले लिया। देश के टुकड़े हो गए, फिर किस नियम, संविधान और न्याय के आधार पर वे भारत में अधिकार मांगते हैं। वास्तव में होना तो यह चाहिए था कि भारत में मुसलमानों के साथ वही व्यवहार किया जाता जो पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ हुआ।

पर हिन्दू तो जन्म से ही उदार हैं। हमने उन्हें सिर-आंखों पर रखा जिसका परिणाम यह है कि वे फिर हमें आंखें दिखा रहे हैं। जगह-जगह दंगे कर रहे हैं। साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर राष्ट्र को पीछे धकेल रहे हैं।

हम कहना चाहते हैं कि यह सब-कुछ अब अधिक दिन नहीं चलने पाएगा। मुसलमान भारत के नागरिक बनकर, समान अधिकार लेकर तो देश में रह सकते हैं, पर अल्पसंख्यक होने के नाते विशेष अधिकारों की मांग कर वे स्वयं अपनी मृत्यु को निमन्त्रण दे रहे हैं।

अब हम किसी भी मूल्य पर अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक का भेद नहीं चलने देंगे। हम सब एक हैं। हमारे अधिकार समान हैं। हम भारतीय हैं और हमारी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति होनी चाहिए। किन्तु यदि कोई ऐसा न सोच १९४५-४६ का वातावरण फिर लाना चाहे, तो उसे ऐसा नहीं करने दिया जाएगा।

मुसलमानों का हित इसी में है कि वे भारत के सभी नागरिकों की तरह रहें। उन्हें यहां रहना है तो अपनी अलगाववादी मनोवृत्ति छोड़कर अपनी अलग पहचान समाप्त करनी होगी या फिर पाकिस्तान जाना होगा। भारत में रहकर भारत के प्रति शत्रुता रखने वालों को हम भारत में नहीं रहने देंगे। हमें जो कुछ भी करना पड़े, करेंगे, पर भारत के टुकड़े करने की जहरीली विचारधारा नहीं पनपने देंगे।

दंगे, दंगे और दंगे करके मुसलमान स्वयं अपने लिए मुसीबत खड़ी कर रहे हैं। यदि उन्होंने अपनी नीति न बदली तो भगवान् भी उनकी रक्षा न कर सकेगा। यह हमारा नम्र निवेदन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज : एक आन्दोलन

१९११ की जनगणना रिपोर्ट में ब्लन्ट ने आर्यसमाज के बारे में जो टिप्पणी की थी, उसके आलोक में इसके सही स्वरूप का मूल्यांकन सरलता से किया जा सकता है। रिपोर्ट में ब्लंट ने लिखा था—

"आर्यसमाज १९वीं शताब्दी का महानतम धार्मिक आन्दोलन है।" निश्चित है कि इतिहासकार ब्लन्ट ने ये शब्द न तो चापलूसी के उद्देश्य से लिखे थे और न श्रद्धातिरेक के आवेग में, क्योंकि एक इतिहासकार के नाते उनका आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं था।

इसलिए यह जरूरी है कि तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थितियों के सन्दर्भ में ब्लंट की टिप्पणी के अर्थ को समझा जाये। १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम की विफलता के बाद राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान इस ओर गया था कि अंग्रेजों से देश को स्वाधीन कराने के लिए सशस्त्र संघर्ष से पहले देश की जनता को तैयार करना होगा। विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं ने जन-चेतना जागरण के इस कार्य को विभिन्न ढंगों से करने के अभियान चलाए। उन्होंने इसे अलग-अलग दृष्टि से देखा। इसीलिए इस अवधि में नारी मुक्ति आन्दोलन, विधवा विवाह और बाल विवाह की समस्याओं, 'अस्पृश्य' बन्धुओं को अपनाने की समस्या आदि समाज को खोखला करने वाली विविध समस्याओं के लिए आन्दोलन उभरे। दृष्टिकोण एक ही था लेकिन लक्ष्य तक पहुंचने की दिशायें अलग-अलग थीं। किन्तु कालद्रष्टा ऋषि दयानन्द ने देखा कि बीमारी जितनी गहन और जीर्ण है उपचार उतने समर्थ नहीं हैं। बल्कि प्रायः ये ऊपरी ही हैं। उन्होंने इस सत्य को समझा कि बाह्य उपचारों से देश की दुर्बल और रोगजर्जर काया कभी स्वस्थ न हो सकेगी और यह सिंह समान भारत जो कभी जगद्गुरु था, उसी शक्ति और तेज के साथ खड़ा न हो सकेगा। पहले उन्होंने रोग का सही निदान किया। राष्ट्र के रोग के अलग-अलग लक्षणों का इलाज करने की बजाय उन्होंने इस रोग के मूल दोष को पहचाना—वह था अपनी अस्मिता के प्रति 'अज्ञान' का रोग। लम्बी दासता के कालखण्ड में देश का आम आदमी दास्य भाव से इतना दमित हो गया था कि उसे यह बोध ही नहीं रहा था कि वह महान ऋषियों की सन्तान है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पास विश्व का श्रेष्ठतम ज्ञान-भण्डार है और वह निरीह, अकिंचन दास बनने की भूमिका के लिए नहीं जन्मा बल्कि विश्व का नेतृत्व करने की क्षमता रखता है। महर्षि यह भी जानते थे कि यह कार्य राजनैतिक आन्दोलन से नहीं हो सकेगा, क्योंकि वह चेतना को परिवर्तित करने का वाहक नहीं बन सकता। वे जानते थे कि इस देश का प्राणतत्त्व धर्म में निवास करता है, इसलिए धार्मिक आन्दोलन के माध्यम से ही इस देश की समग्र चेतना को बदला जा सकता है। धर्म इस देश का अलिखित, अनिर्देशित लोक विधान रहा है। इस देश की व्यवस्था सदैव से ही धर्म से परिचालित रही है, इसलिए धार्मिक आन्दोलन के पीछे उनका भाव कर्मकाण्ड से नहीं अपितु राष्ट्र की चेतना के परिपूर्ण जागरण से था। देश की तत्कालीन दशा और राष्ट्र के जन-जीवन को देखने के कारण ब्लंट ने इसीलिए आर्यसमाज को १९वीं शताब्दी का महान्तम धार्मिक आंदोलन कहा था।

लेकिन जैसा कि कहा गया है, धार्मिक आन्दोलन का अर्थ उपासना, कर्मकाण्ड या पारलौकिक चिन्तन मात्र नहीं था बल्कि इसका अर्थ राष्ट्रीय चेतना का तेजस्वी जागरण था, अतः ऋषि दयानन्द का समस्त चिन्तन, व्यवहार, लेखन, प्रवचन और अभियान इसी ओर उन्मुख रहा।

उन्होंने पलायनवादी मनोवृत्ति को धर्म समझने वाले समाज को बताया कि धर्म पलायन नहीं सिखाता। भाग्यवाद के भरोसे विस्मृति के गर्त में से निकल पुरुषार्थ के बल पर खड़े होने की सिंह गर्जना करते हुए वे देश का भ्रमण करते रहे और इस सन्दर्भ में समाज को दुर्बल करने वाली सारी बुराइयों पर उन्होंने जम कर प्रहार किया। उन्होंने वेदज्ञान के आलोक में सत्यार्थ-प्रकाश जैसा ग्रन्थ रचकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ भारत (अर्जुन) को कृष्ण के समान सत्यार्थ-प्रकाश के ज्ञान आलोक से कर्म में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दी।

प्रतिफल दिखाई दिया। इस धार्मिक चेतना के प्रबल आन्दोलन से श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे प्रख ऋान्तिकारी, भाई परमानन्द जैसे देश भक्त, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे शिक्षावि और लाला लाजपतराय व लेखरा जैसे राजनीतिक संन्यासी बने राष्ट्रीय जीवन की गंगा के प्रवाह असंख्य मणिमुक्ताओं की एक ऐ बाढ़ आ गई कि दम्भ दारिद्र्य और दासता से दबे देश के जन-मानस आत्मगौरव और स्वाभिमान का सम हिलोरें लेने लगा। इस चेतना परिवर्तन ने स्वाधीनता संग्राम को नया मोड़ दे दिया और अब स्वाधीनता की लड़ाई कुछ सिर-फिरे बलिदानियों की आकांक्षा-भर न रहकर जन-जन की आराधना बन गई।

लेकिन ऋषि दयानन्द ने यह भी देखा कि जनजागरण की इस मशाल को रोकने के लिए पाश्चात्य शासकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसाई मिशनरियों के रूप में संगठित षड्यन्त्र भी चला रखा है। हमारे भोले-भाले वनवासी बन्धुओं की दरिद्रता और अज्ञान का लाभ उठाकर ईसाई प्रचारक न केवल उनका धर्म परिवर्तन कर रहे हैं बल्कि उन्हें राष्ट्रीय धारा से पृथक् भी कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने धार्मिक आन्दोलन को राष्ट्रीय चेतना का प्रखर आन्दोलन बनाने के लिए १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना कर इसे संघर्ष का स्थायी माध्यम बनाया।

इस प्रकार आर्यसमाज कोई संस्था नहीं है, न यह उपासना की कोई विधि है और न कोई नया सम्प्रदाय अथवा पंथ है। महर्षि का ऐसा उद्देश्य भी नहीं था। उनकी आकांक्षा के अनुसार ही आर्यसमाज निरन्तर राष्ट्रीय जागरण के लिए कार्यरत और संघर्षरत रहा।

१८७५ से १९२१ तक के कालखण्ड में आर्यसमाज राष्ट्र में वह प्रखर राष्ट्रीय चेतना जगाने में सफल रहा कि स्वाधीनता आन्दोलन ही नहीं अपितु देश के समस्त सुधारात्मक आन्दोलनों में इसका प्रकाश दिखाई देने लगा।

एक गहन प्रश्न उठ सकता है और अक्सर उठता है कि आर्यसमाज ने राष्ट्र के लिए क्या किया? क्या इसकी सूची बनाई जा सकती है? अक्सर ऐसा पूछे जाने पर आर्यसमाज के कुछ विचारक ऐसी कार्य-सूची प्रस्तुत भी करते हैं जैसे स्त्री जागरण, अछूतोद्धार, रूढ़िवाद से निस्तार, धर्म-संरक्षण, स्वभाषा-संरक्षण आदि-आदि। लेकिन मेरे मत से ऐसा सूचीकरण करके आर्यसमाज के योगदान—राष्ट्रीय योगदान का परिसीमन ही किया जाता है। यदि सूर्य ने कहां-कहां प्रकाश किया है, इसकी सूची बनाई जाये तो क्या यह हास्यापद न होगा? सूर्य जिस प्रकार सृष्टि का जीवन रक्षक है, उसी प्रकार आर्यसमाज ने राष्ट्र की दमित चेतना को तेजस्विता प्रदान की। फिर उस तेजस्वी राष्ट्र चेतना में से कर्मशक्ति का झरना फूटता चला गया और तन्द्रिल भारत सारी अलस निद्रा को त्याग कर सिंह शक्ति के साथ खड़ा हो गया, समस्याओं के टीले भरभरा कर गिरते चले गए।

दयानन्द निर्वाण की शताब्दी के अवसर पर आज फिर हमें अतीत का स्मरण करते हुए यह संकल्प करना है कि इस प्रखर आंदोलन को इतना तेजस्वी बनाया जा सके कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का वैदिक उद्घोष पूर्ण हो सके।

दयानन्द को क्या दोगे ?

निर्वाण शताब्दी, दयानन्द की, संसार के सबसे महान् पुरुष की, आपने मनायी। १९७५ में आर्यसमाज की शताब्दी भी तो मनायी थी। मेरा प्रश्न खड़ा है, आज भी, कल भी, क्या दे सकते हैं आप दयानन्द को?

दयानन्द की जय बोलने से तो उनकी जय नहीं होगी। उन्हें याद करने से भी क्या होगा? आप नेता भले ही बन जाएं पर दयानन्द तो वहीं रहेंगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां हैं।

सच तो यह है कि आपके पास न करने को काम है और न देने को श्रद्धा। आप बातें चाहे जितनी बना लें, युग पर दयानन्द की छाप अंकित नहीं कर सकते। दयानन्द के लिए नहीं मर सकते।

शिक्षा, दर्शन, अध्यात्म, समाज-व्यवस्था में आपने दयानन्द को ठोकर मारी है। तुम शब्दों में दयानन्द की जय बोलते हो और व्यवहार में दयानन्द को भुलाकर अपनी मनमानी करते हो। सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ा है? उत्तर हां में हो या न में, मेरा प्रश्न तो एक ही है कि क्या उस पर आचरण किया है? सच बोलूं, बुरा लगेगा, दयानन्द के प्रति तुम में श्रद्धा नहीं—उस पर सर्वस्व न्योछावर करने की चाह नहीं।

ढोल पीटते रहो, उत्सव रचाते रहो, पर इससे दयानन्द का सपना पूरा नहीं होगा। उसके लिए तो आपको अपनी मनमानी छोड़ दयानन्द के चिंतन को अपनाना होगा। उनकी राह पर चलना होगा।

वैदिक धर्म लुप्त होता जा रहा है। जीवन में सन्नाटा है। चारों ओर निराशा है। ऐसे में फिर जीवन को प्राण-गति देने की शक्ति यदि किसी में है तो केवल दयानन्द में, पर दयानंद के अनुयायी हैं कहां?

स्वार्थ में सने, पार्टियों में बंटे हम अपने को बनाने में लगे हैं। दयानन्द के नाम की चिन्ता किसे है? किस में साहस है जो हिमालय पर खड़ा होकर कह सके, सब कुछ छोड़ दो, चलो दयानन्द की राह पर। मैं तो चल रहा हूं, तुम मेरे साथ आओ।

क्रांति की मशाल उठायी थी मेरे गुरु ने। उसे बुझाया उसके अनुयायियों ने। आज कोई भी तो दयानन्द की राह पर चलने को तैयार नहीं। फिर क्या होगा; स्वयं ही सोच लीजिए।

अधिक कुछ लिखना व्यर्थ है, लिखते-लिखते लेखनी थक चुकी है, बस इतना ही कहना है कि यदि जीवन चाहिए तो दयानन्द को जीवित करो, उसका प्रकाश मन में भरो, सारी समस्याएं स्वयं सुलझ जाएंगी।

मकराना, बहजोई, करतारपुर और कोसीकलाँ

अक्तूबर का महीना मेरे लिए बहुत व्यस्तता का रहा। इस महीने में मुझे चार स्थानों पर जाना पड़ा और यह हर्ष का विषय है कि सर्वत्र मेरे विचारों का जन-मानस ने उत्साह से स्वागत किया।

मैं देश में हिन्दू शक्ति का सूर्योदय देख रही हूं। मैं भारत के भाग्य में सत-युग को आता अनुभव कर रही हूं। क्रांति के बीज सर्वत्र बोए जा रहे हैं। शीघ्र ही वह समय आएगा, जब देश अपने सशक्त रूप में उभर कर सामने आएगा।

जितने भी हिन्दू संगठन हैं, उनसे मुझे कहना है कि वे अलग-अलग काम करते हुए भी विशाल हिन्दू राज्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्य को ध्यान में रखें। हमें संसार के सबसे अधिक शक्तिशाली, आर्थिक दृष्टि से समृद्ध और सामाजिक दृष्टि से सत्य, न्याय और मानवता पर आधारित हिन्दू राज्य के रूप में भारत को खड़ा करना है।

धर्म का निनाद ही युद्ध के महानाश को रोकने में समर्थ होगा, इसलिए मैं जहां भी गयी हूं, वहां मैंने विजयागीतों की झंकृतियों को सुना है। मुझे हर्ष है कि हमारे प्रयत्न सफल हो रहे हैं।

प्राणों की आहुति चाहिए

२५ वर्ष से ३५ वर्ष तक के उच्च शिक्षा प्राप्त युवक अपने जीवन की आहुति दें, यह मेरी इच्छा है। आहुति का अर्थ है सर्वस्व समर्पण। वे झाड़ू लगाने से लेकर उच्च नेतृत्व संभालने तक के लिए तैयार रहें। अग्नि में कूदने में उन्हें संकोच न हो। जो सिर कटा भी सकें और काट भी सकें।

धर्म की रक्षा बातों से नहीं, बलिदान से होगी। हजारों पादरी और मुल्ला आज भारत का नक्शा बदलने में लगे हैं। पर हमारे युवक केवल शब्दों में ही त्याग की बात करते हैं।

अर्धशिक्षित, दुर्बल व्यक्ति की आहुति भी महत्त्व रखती है पर जो जितना अधिक स्तर का होगा उसका बलिदान उतना ही रंग लाएगा। इसलिए मेरा आह्वान है कि कुछ युवक अपनी नौकरियां, व्यापार छोड़कर केवल धर्म रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पित करें।

मृत्यु सभी को आएगी, धन की पूजा से हमारा कल्याण नहीं होगा। त्याग-बलिदान ही राष्ट्र की रक्षा कर सकेगा, यह हम भली-भांति समझ लें।

क्या कोई इस दिशा में सोचेगा ?

मुझे अकेला न बुलाएं

हिन्दू रक्षा समिति की गत बैठक में निश्चय किया गया है कि मैं अकेले यात्रा न करूं। इसलिए मेरा आग्रह है कि आप यदि अपने यहां मेरा आना आवश्यक ही समझें तो निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें—

१. प्रो० धर्मवीर, २४।२६६ चांदबावड़ी, अजमेर या।

२. महात्मा वेदभिक्षु: (अध्यक्ष आ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, १५६७ हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५) में से किन्हीं एक को साथ के लिए आमंत्रित करें। वैसे कार्य का बोझ इतना अधिक है कि यदि मुझे क्षमा ही करें तो अच्छा है।

३. कार्यक्रम में हिन्दू सम्मेलन, धर्म रक्षा सम्मेलन या राष्ट्र रक्षा सम्मेलन अवश्य रखें और उसमें नगर की सभी हिन्दू संस्थाओं व जनता को आमंत्रित करें।

४. वापसी का रिजर्वेशन लोअर बर्थ का कराकर सूचित करें। यह सबकुछ अनिवार्य है। वैसे मेरे बाहर जाने से कार्य की बहुत क्षति होती है। अतः मुझे क्षमा करने की ही कृपा करें तो अधिक अच्छा रहेगा।

—राकेशरानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— वेदभिक्षुः

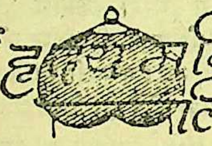

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ —

डूबते सूरज को मत देखो—नए सूर्योदय की तैयारी करो

भारत के द्वार पर बैठा हूं, जिसे Gateway of India कहते हैं। एक ओर स्वामी विवेकानन्द का स्टेचू लगा है। सामने शिवाजी खड़े हैं। बाएं प्रसिद्ध ताज होटल है। यह बम्बई है। यहां प्रथम आर्यसमाज स्थापित हुआ था, पर नगर पर कहीं भी आर्य-समाज की छाप नहीं।

यहां चारों ओर सैलानी हैं। क्यों आते हैं, क्या करते हैं, कोई नहीं जानता। यह महानगरी है, देश के धन-पतियों की नगरी, उद्दाम लालसाओं के उठते तूफानों का केन्द्र, पर यह देश को दिशा देने में असमर्थ है। यहां शिवाजी पूज्य हैं और पंजाब में वीर शिवाजी का नाम गुरु गोविन्दसिंह के साथ लेने पर धमकियां दी जाती हैं और उन्हें साधारण व्यक्ति बताया जाता है, जब-कि दोनों ही हिन्दू धर्म के लिए लड़े थे।

बम्बई भारत को इस्लामिस्तान बनाने के षड्यन्त्रों का केन्द्र है। ईसाइयत भी यहीं से फैलती है। १९४२ का 'भारत छोड़ो' आंदोलन यहीं से आरम्भ हुआ था। यहीं से उदय हुआ था वह सूरज जिसने देश को जीवन दिया, प्राण दिए, शक्ति दी।

मैं समुद्र की उठती हुई लहरें देख रहा हूं। चमकता सूरज सिर पर खड़ा है। एक घंटा मिल गया तो यहीं आकर बैठ गया। अभी तो केवल ६० मिनट की प्रतीक्षा है पर क्या देश ६० वर्ष की अवधि बिताकर ऐसा ही रह सकेगा?

धर्म, सत्य, न्याय, मानवता लुप्त होते जा रहे हैं, शाश्वत सत्य सनातन वैदिक धर्म की चिता जलाने की तैयारियां हो रही हैं। देश की सीमाएं सिकुड़ रही हैं। देश का ईमान जल रहा है। अरब सागर के दूसरे छोर से इस्लाम के नगाड़े मुझे सुनाई दे रहे हैं। यह हमारे लिए खुली चुनौती है पर क्या राम-कृष्ण का देश इस चुनौती को स्वीकार करेगा?

इस्लाम को धर्म कहना धर्म शब्द को कलंकित करना है। उसमें नैति-कता, बुद्धि, युक्ति और तर्क के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई स्थान नहीं। वह जंगल के कानून का पक्षधर है। उसका पक्ष है कि "हजरत मुहम्मद पर ईमान लाओ वरना तुम काफिर हो। काफिर जिन्दा नहीं रहना चाहिए। काफिर के लिए तलवार है और मुसलमान के लिए बहिश्त।"

इसमें अकल का दखल नहीं। बस जो लिखा, सो लिखा। पिछले १००० से अधिक सालों का इतिहास हमारे कथन का साक्षी हैं। इसी आधार पर हमारा चिन्तन है कि जो हो रहा है, वह रुकना चाहिए। कैसे रुके, इसमें मतभेद हो सकता है पर यह जहर का कहर समाप्त करने पर सभी देशभक्त सहमत हैं।

हमारे गुरुदेव दयानन्द का दिया मंत्र कहता है कि यथायोग्य व्यवहार करो। दुष्टों से सज्जनता का व्यवहार नहीं चलता। जिनके हाथ लाखों बेगुनाह बेटे-बेटियों के खून से रंगे हैं उनसे आप प्यार से नहीं निपट सकते। जिन्होंने भारत मां के टुकड़े कराए, पाकिस्तान को जन्म दिया, उनसे भारत के प्रति, वफादारी की आशा करना कोरी मूर्खता है।

दंगों की राजनीति में जिनका विश्वास हो, पूजागृहों को तोड़ना जिनका स्वभाव हो, उनसे हमें उन्हीं की भाषा में बात करनी होगी।

भारत हिन्दू देश है। इसे हिन्दू राज्य बनाना हमारा कर्तव्य है। हम 'जियो और जीने दो' में विश्वास रखते हैं, पर किसी को भी देश के टुकड़े करने की बात सोचने तक की अनुमति नहीं दे सकते।

हिन्दू राज्य में गोहत्या नहीं हो सकेगी। मंदिर में पूजा और शंख की आवाज को कोई रोक न सकेगा और जो यहां के नागरिक होंगे, उन्हें वन्दे मातरम् गाना ही होगा। हम व्यक्ति की समानता के पक्षधर हैं, पर भारत के नागरिकों को अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक वर्ग में बांटने को तैयार नहीं। हम सभी की पूजा-पद्धतियों का सम्मान करने को तैयार हैं, पर किसी की पूजा पद्धति में कोई व्यवधान डाले, इसके लिए तैयार नहीं।

देश की एकता, अखण्डता और स्वतंत्रता की रक्षा हमारा लक्ष्य है और जो इन पर कुठाराघात करेगा, वह देशद्रोही है—यह हमारा निश्चित विश्वास है। इसलिए आज हम प्रतिज्ञा-बद्ध हैं धर्म की, स्वतन्त्रता की, अखंडता की सुरक्षा के लिए। हम सिर कटा सकते हैं पर अपना लहराता ध्वज झुकता नहीं देख सकते।

समुद्र की उत्ताल तरंगें मेरे चरण धोने आ रही हैं। लगता है कि वे मेरे मानस के चिन्तन से मुग्ध हैं। उनका स्वर गंभीर है, शक्तिसम्पन्न है, सबल है और मैं आश्वस्त हूं—विजय के लिए। विजय हिन्दू धर्म की, विजय भारत राष्ट्र की, विजय तिरंगे की, सत्य की, न्याय और मानवता की।

इन लहरों की झंकृतियां आप तक पहुंचा रहा हूं। सुनेंगे आप ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति का

आवश्यक परिपत्र

हिन्दू जनता देशद्रोहियों से निपटने में शासन को सहयोग दे

देश के सभी हिन्दू संगठनों से मेरा आग्रह है कि वे देशद्रोही अराजक तत्त्वों से निपटने में शासन को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

आज संक्रान्ति काल है, देश का भाग्य, इतिहास लिखा जा रहा है। देशद्रोही सांप्रदायिक शक्तियां पूरे बल से राष्ट्रघातक षड्यंत्रों में लगी हैं। अतः प्रत्येक देशभक्त नागरिक का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह पूरे बल से शासन का साथ दे।

हिंसा, हत्या, विघटन और सांप्रदायिकता को पूरे बल से कुचला जाए। हम शासन को सहयोग दें और यदि शासन असफल रहे तो स्वयं आगे बढ़कर देश-द्रोही शक्तियों का फुकारता फन कुचलें, यह समय की मांग है।

एक-एक पल की देरी संकट को निमन्त्रण है, इसलिए देशभक्त हिन्दू जागें और अपने को हिन्दू सेना के सैनिक समझ अनुशासन में रहते हुए सर्वनाश को रोकने के लिए काम आरम्भ करें।

हमें किसी पर आक्रमण नहीं करना पर किसी का आक्रमण सहना भी नहीं है। हम न्याय, शांति, अहिंसा और एकता के लिए कार्य करें और इस्लामिस्तान, ईसाईस्तान व खालिस्तान की योजना बनाने वालों के सानों और कार्यों पर पूरे बल से प्रहार करें।

मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्ति के लिए हमसे सम्पर्क कीजिए।

दूरभाष : ५६२६३९
५६४७४१

धर्मवीर
प्रधानमन्त्री
अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलते पंजाब की समस्या

सिख पंथ हिन्दू धर्म ही की संतान है। ३०० वर्ष पूर्व जब विदेशियों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार हुआ करते थे, तो उनसे निपटने के लिए हिन्दुओं की एक सेना बनी थी, जिसमें हिन्दू धर्म के वीर लोग कौम की रक्षा का व्रत लेकर शामिल होते थे। इस सेना में भरती होने वाले लोगों को सिंह अर्थात् शेर कहा जाता था। सबसे पहले गुरु गोविन्दसिंह ने अपने नाम में सिंह शब्द लगाया था। इस सेना में हिन्दू धर्म की हर जाति के वीर लोग होते थेइ। सी सेना के लोग बाद में सिख कहलाये और गोविन्द सिंह ने इसे खालसा नाम दिया। सिख सम्प्रदाय के सारे गुरु हिन्दू थे। स्पष्ट है कि सिख हिन्दू जाति का ही एक अंग है। फिर आज देश में सिखों द्वारा खालिस्तान की मांग क्यों? पंजाब की अशान्ति और खालिस्तान आन्दोलन का जिक्र छिड़ते ही ये पंक्तियां याद आ जाती हैं—

बाहर की जंग जीती हमने, चीन और पेशावर से।
अन्दर की जंग हार न जाएं, घर के ही हमलावर से ।।

जो दुश्मन सामने से आते हैं उन्हें तो हमारी पैनी निगाहें देख लेती हैं और उन्हें हम हमेशा मुंह तोड़ जवाब भी देते आए हैं लेकिन जो दुश्मन चोला बदलकर या चेहरे पर मुखौटा लगाकर हमारे बीच पीछे से घुस आए हैं और हर जगह अशान्ति तथा हर वर्ग में आतंक फैला रहे हैं उन्हें हम दिल की दूरबीन से ही पहचानकर ठिकाने लगा सकते हैं। सिख और हिन्दू हमेशा से ही एक रहे हैं। वे तो एक जिस्म, दो जान की तरह हैं। उनमें फूट डालने वाले जाल साजों से हमें सावधान होना चाहिए। हिन्दू और सिख कभी एक-दूसरे से अलग नहीं रहे। सिख सम्प्रदाय की तो स्थापना ही हिन्दुओं की रक्षा के लिए हुई थी। जो सिख हिन्दुओं के रक्षक रहे हैं, वे आज उनके भक्षक कैसे हो सकते हैं? औरंगजेब का अत्याचार जब हिन्दुओं पर बढ़ गया था तो मार्शल नस्ल की स्थापना हुई थी। हिन्दुओं की रक्षा हेतु खालिस्तान की मांग अगर पंजाब में सुनी गई है तो क्या जरूरी है कि किसी पार्टी के किसी भी नेता के मुंह से जो बात निकल जाए वह मांग हो गई या आन्दोलन बन गया। अगर कोई शराबी दारू पीकर यह कहे कि यह मकान मेरा है।, तो क्या आप अपना मकान उसे दे देंगे?

हिन्दू और सिख आज आपस में लड़ रहे हैं तो यह उनकी भूल ही कही जा सकती है। हिन्दू और सिख तो एक ही मां के दो बेटों की तरह हैं। इनमें कभी कोई ईर्ष्या-द्वेष रहा ही नहीं। आश्चर्य तो इस बात का है कि खालिस्तान की मांग आज ही क्यों शुरू की गई? अगर उनमें इस तरह की द्वेष की भावना रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पहले भी आन्दोलन छिड़ सकता था। सिखों को अगर अलग राज्य बनाना होता तो इसकी मांग वे १९४७ में ही करते। उन्हें लाहौर की अटारी सीमा से दिल्ली के यमुना तट तक का इलाका दिया जा रहा था तो उन्होंने नहीं लिया।

इसका मतलब साफ है कि इस आन्दोलन के पीछे विदेशी शक्तियों का हाथ है, वरना अगर यह आग आज धधकी है तो इसकी चिनगारी काफी पहले से सुलगी होगी। विदेशी ताकतें भारत में अमन चैन और तरक्की को रोकना चाहती हैं।

सिख राष्ट्र, खालिस्तान या पंजाबी सूबे की बातें निहायत वाहियात हैं। ऐसी मांगे सरासर गलत हैं। इन्हें किसी भी कीमत पर कभी स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। किसी उतावलेपन में लिए गए निर्णय से पछतावा ही होगा। इससे देश के विखण्डन की शुरुआत हो जाएगी। भारत विश्व राजनीति में तेजी से उभरकर सामने आ रहा है। वह कमजोर बना रहे और आत्मनिर्भर न बन सके, इसमें पड़ोसी राष्ट्रों को आरम्भ से ही रुचि रही है। आज की हालत में अमेरिका, पाकिस्तान जैसे राष्ट्र अनुचित हस्तक्षेप करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनके भेजे हुए घुसपैठिये भी निरन्तर पंजाब की सीमा में प्रवेश कर रहे हैं। भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के दुष्परिणाम से सभी पहले से ही परिचित हैं। उसे फिर से दुहराना इस शताब्दी की जानबूझकर की गई सबसे भयंकर भूल साबित होगी। वही बात फिर दोहराई जा रही है जिसके शिकार हम एक बार हो चुके है। जब १९४७ में हमारी भारत मां के टुकड़े किए गए तो···। मां की ममता का अहसास उसे होता है, जिसकी मां का अंग भंग होता है। मैं तूफान मचाने वालों से कहना चाहती हूं कि मां के टुकड़े न किये जायें। उसके हाथ-पांव काट लोगे तो मां तुम्हें जिन्दा नहीं मिलेगी। मां जिन्दा चाहिए तो उसके टुकड़े मत करो, उसकी सेवा करो।

पता नहीं यह बात इन सिखों के दिमाग में क्यों नहीं आ रही ?

पंजाब में नारेबाजी के माध्यम से अलगाव की प्रवृत्ति बढ़ रही है वह भयानक है। वहां निरंकारी, अकाली, मास्टर तारासिंह आदि अनेक सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। निरंकारस्तान अकालस्तान, तारास्तान कौन-कौन से 'स्तान' पंजाब में बनेंगे। अगर इस तरह की मांगों पर ध्यान दिया जाता रहेगा तो देश के हर मुहल्ले में एक-एक देश होगा। सरकार को ऐसे आन्दोलनों को कड़ाई के साथ दबा देना चाहिए। खण्डता की बात करने वालों के लिए वही सजा होनी चाहिए जो एक खूनी के लिए होती है। कौन-सी ऐसी समस्या है जिसका समाधान सरकार के पास नहीं। अपने अपरिमित अधिकार और साधनों के बल पर वह चाहे तो पंजाब की समस्या चुटकी बजाते हल कर सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां गया वह पंजाब जिस पर हमें नाज था—सारे देश को नाज था। कहां गए पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ? क्या सरदार लोग भूल गए कि भगतसिंह भी सिख वंश में से थे ? वे चन्द्रशेखर आजाद को भूल गए, जिन पर सारा देश गर्व करता है। उन्हें आज याद रह गए हैं तो सिर्फ भिन्डरांवाला। वह भिन्डरांवाला जो देश के टुकड़े कराने पर तुला हुआ है।

पंजाब में हो रहे काण्डों के पीछे सरकार की कमजोरी भी एक कारण है। सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी है। उसे पंजाब में होने वाली घटनाओं की ज्यादा परवाह न होकर अपनी गद्दी की ज्यादा परवाह है। वह तो सरदार पटेल जैसा लौह पुरुष था जिसने देश को उस समय एक सूत्र में बांधकर संगठित कर दिया। वरना आज का समय होता तो जाने क्या होता ?

गुरु गोविन्दसिंह गद्दारों को मारने की बात करते थे। उन्होंने यह तो नहीं कहा कि आपस में मर मिटो। पांच प्यारे दुश्मनों और गद्दारों के लिए बनाए गए थे न कि आपस में लड़ मरने के लिए। कौन-सा सिख गुरु गोविन्द सिंह के नक्शे-कदम पर चल रहा है ? सिखों को इस गुरुवाणी को नहीं भूलना चाहिए—

मेरा मुझमें किछु नहीं, जो किछु है तेरा।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागे है मेरा।।

गुरुनानक ने भी तो कहा है—

जाति का गरब न कर मूरख गंवारा।
इस गरब ने चलहि बहुत विकारा।।

(सिख पंथ की स्थापना ही हिन्दुओं की रक्षा के लिए हुई थी। गुरु अर्जुन देव ने अपने हाथ-पैर कुरबान किए तो गुरु गोविन्दसिंह ने अपने चारों बच्चों की कुर्बानी दी। गुरु तेग बहादुर ने शीशगंज में अपने शीश की बलि दी। हमारे पुरखों ने कई हुकूमतें देखी—मुसलमानों की भी, हिन्दुओं की भी और सिखों, अंग्रेजों की भी।)

आज फिर भाईचारे की नींव तैयार करने वाले महान् संतों गुरु नानकदेव, स्वामी दयानन्द जैसों की जरूरत है।

अगर आज कोई पंजाबी हिन्दू इन महान् आत्माओं की कुर्बानियों को नहीं मानता तो वह हिन्दू नहीं हैं और कोई सिख अगर हिन्दू को अपने से अलग समझता है तो वह गुरु का सिख नहीं है। हिन्दू धर्म का इतिहास सिख गुरुओं की कुर्बानी के बगैर पूरा नहीं। इसी तरह सिख पंथ की बुनियाद हिन्दुओं के बिना अधूरी है। हिन्दुओं और सिखों में कभी दुश्मनी नहीं रही। आज वे पंजाब में परस्पर लड़ रहे हैं, यह मानने को दिल नहीं करता।

जो हो रहा है उसे रोका जाए यह समय की मांग है। मेरी सिख बंधुओं से प्रार्थना है कि वे पहल करें और देश को बचाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान भी नां।
पंज तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ।।
जगत भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम ।।
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहि कोय ।।
जो उपजियो सो विनस है परो काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छांड सकल जंजाल ।।
राम गयो रावण गयो जाको बहु परवार ।
कह नानक थिर किछु नहि सुपने जियुं संसार ।।
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात ।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।।
बिरथा कहो कोन सचो मन की ।
लोभग्रसयो दसहु दिस धावतआस लगयो धन की ।।
संग सखा सब तज गये कोऊ न निवाहियो साथ ।
कहु नानक एह विपत में टेक एक रघुनाथ ।।

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है।
ते सभी नरक कुंड महि परि है ।।

—दशमेश गुरु गोविदसिंह जी महाराज

पंजाबी चन्दू हलवाई कराचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, वालकेश्वर माग, तीनबत्ती,
बम्बई-४००००६

१. जबेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादर टी० टी० ५. वरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुरद्वार ८. सूर्योदय स्टोर्स चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रान्ट रोड, बम्बई—४००००७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जिनका धन प्रकाशन से पूर्व
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जाएगा, उन्हें

वैदिक सम्पत्ति

रिआयती मूल्य में भेजी जाएगी।

प्रतियां ३० नवम्बर तक आपको
मिल जाएंगी।

अपना आदेश आज ही भेजें।

मूल्य ५१) : सजिल्द ६१)
डिलक्स : १०१)

किन्तु प्रकाशन से पूर्व आदेश धन सहित भेजने पर

२५) प्रति : सजिल्द ३१ रु०
डिलक्स ५१) : डाक व्यय पृथक्

शीघ्र से शीघ्र आदेश भेजें।

अध्यक्ष
दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू राष्ट्रवाद तथा आर्यसमाज

—सियाराम निर्भय

आजादी के ३६ वर्षों में हिन्दू हीन भावना से जितना ग्रस्त हुआ है, उतना मुगल काल तथा अंग्रेज के शासनकाल में भी नहीं था। जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी, जनता पार्टी के संसद् सदस्य भारत के दूसरे जिन्ना श्री शहाबुद्दीन, भाजपा के दूसरे अकबर मौलाना सिकन्दरबख्त, मुसलमानों के हृदय प्रेमी श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री राजनारायण तथा श्री जगजीवनराम जैसे लोग अगर हिन्दूवाद और हिन्दू राष्ट्र के नाम से भड़कते हैं तो मुझे उतना आश्चर्य नहीं होता, पर जब आर्यसमाज के किसी प्रचारक को मैं राष्ट्रीय संकट की घड़ी में हिन्दू राष्ट्रवाद के नाम से बिदकते देखता हूं तो बहुत क्षोभ होता है।

मुझे पं० सत्यदेव विद्यालंकार का कुछ पत्रिकाओं में हिन्दूवाद तथा हिन्दू राष्ट्र के सम्बन्ध में लेख पढ़ने का मौका मिला। लेख पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा मानो पं० सत्यदेव जी हिन्दू राष्ट्र के मानी मजहबी राज्य समझते हैं। उनकी यह धारणा तथा मान्यता निरर्थक और गलत है। हिन्दू कोई धर्म अथवा सम्प्रदाय नहीं। यह एक राष्ट्र के विस्तृत समूह का नाम है, जिसमें सभी पंथों, मतों और सम्प्रदायों के मानने वाले लोग स्वतंत्र रूप से वास करते हैं। इंग्लैण्ड, अमरिका, श्रीलंका, नेपाल, मलयेशिया, इन्डोनेसिया आदि देशों में भी विभिन्न मतों और सम्प्रदायों के लोग अल्पमत में रहकर उन देशों की मुख्य राष्ट्रीय धारा तथा वहां के बहुमत के साथ अपने को मिलाकर रखे हुए हैं।

श्री बलराज मधोक का कहना है कि "हिन्दुस्तान तो हिन्दू राष्ट्र है ही, इसे हिन्दू राज्य (HINDU STATE) बनाना है। अगर हिन्दुस्तान हिन्दू-राज्य नहीं होगा तो निश्चय जान लें कि यह हिन्दू राष्ट्र भी नहीं रह सकता।" अरबों के पेट्रो-डालर इस देश को दारुल इस्लाम बनाने पर तुले हैं। इस भयानक परिस्थिति तथा राष्ट्रीय संकट में हमें हिन्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तान की रक्षा करनी होगी। यहां के हिन्दुओं को एक राष्ट्र में बांधने का संकल्प लेना होगा। आर्यसमाज सदा हिन्दू कौम का रक्षक रहा है। हैदराबाद का सत्याग्रह, पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन और वर्त्तमान काल में मीनाक्षीपुरम् में आर्यसमाज का कार्य हिन्दू कौम के लिए महान् क्रांतिकारी और सुधारवादी रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ पं० सत्यदेव जी के लेख पर जिसमें उन्होंने लिखा है कि "इस देश की वर्तमान अवस्था में हिन्दू राष्ट्र अर्थात् देश में हिन्दुओं का ही राज्य हो यह विचार देश के टुकड़े-टुकड़े कर देगा। इस देश में केवल हिन्दू ही नहीं बसते। अन्य धर्मों के करोड़ों लोग भी हैं। प्रत्येक धर्म के लोग अपना-अपना राष्ट्र मांगेंगे। करोड़ों की संख्या की जनता को दबाया नहीं जा सकता। हिन्दू राष्ट्र मांगने वाले खालिस्तान का विरोध कैसे कर सकते हैं?" पं० सत्यदेव जी यहां भी भयंकर भूल कर बैठे। भिंडरांवाला तथा लोंगोवाल की तरह ये भी सिक्खों को अलग कौम समझ रहे हैं। खालसा पंथ है, कौम नहीं। सिक्खों के दशम गुरु गोविन्दसिंह ने हिन्दू कौम की रक्षा के लिए खालसा पंथ की स्थापना की थी न कि अलगाव के लिए।

पं० सत्यदेव जी आर्य पंडित होते हुए भी भावावेश में भूल कर बैठे हैं। धर्म एक है, मजहब, मत, सम्प्रदाय अनेक हैं। धर्म तो शाश्वत, चिरंतन और सार्वभौम है। वह धर्म है वैदिक धर्म। फिर यह कहना कि "अन्य धर्मों के करोड़ों लोग भी हैं" कहां तक उचित और तर्कसंगत है ?

हिन्दू राष्ट्र में रहने वाले सभी मतों और सम्प्रदायों के लोग एक साथ मिलकर और प्रेम से रहकर अपने आपको हिन्दू राष्ट्रवाद की धारा से जोड़कर भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति वफादार और ईमानदार रहेंगे। यही हिन्दू राज्य की विशेषता होगी।

श्री बलराज मधोक के शब्दों में "आज हिन्दुस्तान एक सुलभ धर्मशाला बन गया है। जो आता है इसका एक हिस्सा लेकर अगले हिस्से का दावेदार बन जाता है"। किसी की आस्था रूस के साथ है, किसी की आस्था चीन और पाकिस्तान के साथ है। अगर शासन व्यवस्था इसी प्रकार बनी रही तो आगे क्या परिणाम होगा, इसे राष्ट्रवादी जन ही समझ सकते हैं, दूसरे नहीं।

धर्म और मजहब के वास्तविक स्वरूप को समझने वाले राजनीतिज्ञों ने ही भारतीय संविधान को धर्मनिरपेक्ष बनाया है, जबकि वह धर्मसापेक्ष होना चाहिए, धर्म मानव और समाज को नैतिक मूल्यों के मार्ग पर आगे बढ़ाने का आधार है।

आज भी विदेशों में हिन्दू को धर्म मानकर एक राष्ट्र के नाम से जाना जाता है। अभी हाल में जनता पार्टी के नेता संसद् सदस्य डा० सुब्रह्मण्यम् स्वामी चीन की यात्रा पर गये थे। वहां के राजनायक ने श्री स्वामी से पूछा कि आप किस धर्म के मानने वाले हैं ? डा० स्वामी ने उत्तर दिया कि मैं हिन्दू धर्म को मानता हूं। फिर राजनायक ने कहा कि मैं आपके देश के बारे में नहीं जानना चाहता। मैं आपका धर्म जानना चाहता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार सन् १९३५ में जब श्रीमती इन्दिरा गांधी यूरोप गई थीं तो वहां के लोगों ने भी उनसे ऐसे ही प्रश्न किये कि आप वेदान्त के मानने वाले हिन्दू हैं या इस्लाम के मानने वाले हिन्दू ? आज भी विदेशों में हिन्दू को राष्ट्र या देश के नाम से जाना जाता है, धर्म के नाम से नहीं। पं० सत्यदेव जी का कहना है कि हिन्दुस्तान में अगर हिन्दू राज्य कायम हो जायेगा तो मूर्तिपूजा, श्राद्ध और फलित ज्योतिष की मान्यता प्रबल हो जायेगी। पंडित जी कृपया आने वाले दिनों का भी ध्यान रखें। जिस प्रकार हिन्दुओं का बलात् धर्मपरिवर्तन हो रहा है, अगर यही क्रम जारी रहा तो भारत में इस्लामी राज्य बनने में देर नहीं लगेगी। राम के स्थान पर मुहम्मद, काशी की जगह काबा और मूर्तिपूजा की जगह कब्रपरस्ती बढ़ जायेगी। उस समय आर्यसमाज वैदिक धर्म का प्रचार किस कौम के लोगों में करेगा, यह एक विचारणीय प्रश्न है। पाकिस्तान बनने के बाद सबसे ज्यादा नुकसान अगर किसी संस्था का हुआ है तो आर्यसमाज का। लाहौर का डी० ए०-वी० कालेज आज इस्लामी प्रचार का मुख्य केन्द्र बन गया है।

"संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है" आर्यसमाज का ६ठा नियम बनाने वाले ऋषि दयानन्द ने भारत की गुलामी तथा अबलाओं के करुण क्रन्दन से विह्वल होकर यह भी कहा कि "अपना राजा अयोग्य होते हुए भी श्रेष्ठ है पर पिता के तुल्य पालन करने वाला विदेशी राज श्रेष्ठ नहीं"। महर्षि की इस राष्ट्रवादी घोषणा से आज के आर्यजनों को विशेष प्रेरणा लेनी चाहिए जो विभिन्न दलों में सिद्धान्तहीन होकर पड़े हैं।

भारतवर्ष को दारुल इस्लाम बनाने की नापाक योजना वाले देश के दुश्मनों को दुरुस्त करने का एक ही उपाय है कि हिन्दुस्तान को जल्द से जल्द हिन्दू राज्य घोषित कराया जाए। इसी से आर्यसमाज जीवित और जागरूक रह सकता है तथा हम वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार धड़ल्ले के साथ कर सकते हैं। विदेशों में भी जहां आर्यसमाज का प्रचार है वहां के प्रवासी भारतीय जनता में ही हैं, अन्य मतों में कम हैं। इसलिए आर्यसमाज को अपने व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए हिन्दुस्तान को हिन्दू राज्य घोषित कराने का व्रत लेना होगा। अपने वार्षिक उत्सवों पर अन्य सम्मेलनों के अलावा हिन्दू रक्षा सम्मेलन करके हिन्दू राज्य के सम्बन्ध में जन-चेतना जागृत करनी होगी और यह भी बताना होगा कि हिन्दू राज्य धर्मनिरपेक्ष न होकर सर्वपन्थ समभावी मानेगा। समाजवादी, गांधीवादी न होकर जन-कल्याणवादी होगा। हिन्दू राज्य में गोहत्या नहीं होगी। हिन्दू राज्य में सबके लिए समान सिविल कानून होगा। हिन्दू राज्य में नशाबंदी तथा गर्भपात को घोर अपराध माना जाएगा। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का भारतीयकरण होगा, हिन्दू राज्य घोषित होते ही काश्मीर की धारा ३७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा गुर दयानन्द जग को जगा गया !

कीचड़ में फंसा हुआ राष्ट्र सड़ा जा रहा था,
आकर निकाला फिर जीवन दिला गया।
अद्भुत, अनन्त, शक्तिशाली भारतीयो जागो !
जि वन का पाठ बच्चे-बच्चे को पढ़ा गया।
कभी लोहा मानता था विश्व सारा, मत भूलो
भूली हुई राह फिर सभी को बता गया।
दीन हीन अबला का दु:ख मिटा देव-दूत
मेरा गुरु दयानन्द जग को जगा गया।।१।।
हाहाकार घटा औ, निराशा की व्यथा मय आग,
साहस सबल सत्य वाणी से उड़ा गया।
रहें नहीं अनाचार दीखें नहीं पापाचार
ऐसी शुद्ध-बुद्ध भूमि भारत बना गया
अरि दल-बल बीच, खलबली होने लगी
पापमूल मूर्तिपूजा, बात समझा गया।
मानें या न मानें हम, सत्य है परन्तु यह
मेरा गुरु दयानन्द जग को जगा गया ।।२।।

—राकेश रानी

समाप्त हो जाएगी। ये सभी देश-हितकारी विशेषताएं हिन्दू राज्य की होंगी। आर्यसमाज जिस कार्य को करना चाहता है, जिसका वह प्रचारक तथा पक्षधर है, वह शासन व्यवस्था के माध्यम से आसान हो जाएगा। महाभारत का वाक्य है—"राजा कालस्य कारणम्"। समाज और प्रजा पर राजा का प्रभाव होता है।

हिन्दू राज्य कभी भी मजहबी राज्य न था और न होगा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत में जब भी हिन्दू राज्य कायम हुआ तो गोहत्या नहीं हुई। महाराजा रणजीतसिंह ने जब पंजाब में हिन्दू राज्य की स्थापना की तो अनारकली रोड पर टूटे हुए गिरजाघर को फिर से बनवाकर खड़ा करा दिया, पर शर्त यह लगा दी कि तुम अंग्रेज हमारे राज्य में गोहत्या नहीं करोगे।

अपने इस लेख के माध्यम से मैंने आर्यजनों का ध्यान हिन्दू राज्य की विशेषताओं की ओर आकृष्ट करने का प्रयास किया है। वैचारिक संघर्ष स्वस्थ बुद्धि का परिचायक है। हठधर्मी, पूर्वाग्रह ग्रस्त भावना तथा विचार से राष्ट्र का अहित होता है। आशा है कि राष्ट्रवादी पाठक देशकाल की परिस्थिति के अनुकूल हिन्दू राष्ट्र की भावना को प्रसारित करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मनिरपेक्षता की दोहरी नीति

स्वतंत्र भारत के संविधान में 'धर्म-निरपेक्षता' की नीति को अपनाया गया। संविधान में व्याख्या की गई कि 'धर्म, जाति व लिंग के आधार पर देश के किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं किया जायगा।" लेकिन पिछले ३३ वर्षों में संविधान की मूल बात को ताक पर रखकर हमारे सत्ताधीशों और धर्म-निरपेक्षता के तथाकथित पुजारियों ने हिन्दू समाज की उपेक्षा कर मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति अपनाई। कुर्सी को ही साध्य मानकर इन राजनैतिक नेताओं ने मुसलमानों की नाजायज मांगें मानकर वोट बैंक स्थापित कर देश की अखंडता को पुनः एक बार दांव पर लगा दिया।

इस दोहरी नीति के सम्बन्ध में प्रो० वी० वी० जॉन ने अपने एक लेख में इस सत्य को उजागर किया कि आज के राजनैतिक नेताओं में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को गाली देकर धर्मनिरपेक्षता का प्रमाणपत्र प्राप्त करने की होड़ लगी हुई है। उन्होंने कहा कि "आज राजनैतिक नेता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को साम्प्रदायिक बताकर धर्मनिरपेक्षता का प्रमाणपत्र लेना चाहते हैं। आज इन्होंने एक नई नीति को जन्म दिया है—बहुसंख्यकों की साम्प्रदायिकता की आलोचना करना और अल्पसंख्यक समाज की साम्प्रदायिकता पर चुप्पी साध लेना! वास्तव में दोहरे मापदण्ड की यह नीति ही देश में कटुता, वैमनस्य व संघर्ष के लिए उत्तरदायी है।"

इतिहास साक्षी है कि इस दोहरी नीति ने ही अखंड भारत को खंडित कर दिया और हमें खंडित आजादी पर ही सब्र करना पड़ा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी हमारे ये राजनैतिक नेता इस नीति का अनुसरण वोट के लिए कर रहे हैं, आज धर्म के आधार पर आरक्षण के समझौते किये जा रहे हैं, विद्या मन्दिरों को अल्पसंख्यक स्वरूप प्रदान किया जा रहा है, अल्पसंख्यक आयोग स्थापित किये जा रहे हैं और हर कीमतपर इन अल्पसंख्यकों की नाजायज मांगें आंख बन्द कर मानी जा रही हैं। आज धर्मनिरपेक्षता के ये पुजारी, जो हिन्दू संगठनों को पानी पी-पीकर गाली देना ही अपना धर्म समझ रहे हैं, उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दू धर्म ही ऐसा धर्म है, जिसने सम्पूर्ण विश्व के सामने "सर्वधर्म समभाव" का उच्च आदर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा। यही नहीं, इससे भी आगे बढ़कर सर्व कल्याणकारी कामना को व्यापक बनाया और इस महामन्त्र का उद्घोष किया—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

इस प्रकार की शुभकामना संसार के अन्य धर्मों में नहीं। इतिहास में इस प्रकारका एक भी उदाहरण नहीं कि हिन्दू धर्म के मानने वाले किसी व्यक्ति ने किसी का बलात् धर्मपरिवर्तन किया हो या किसी का पूजास्थल नष्ट किया हो। इसके विपरीत इस्लाम की कहानी ही रक्त रंजित है। मां भारती के महान् पुत्र स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही कहा है कि "जब तक इस्लाम धर्म की लहर भारत में नहीं आयी थी, तब तक यहां के लोग यह जानते तक नहीं थे कि धार्मिक अत्याचार किसे कहते हैं। जब विधर्मी विदेशियों द्वारा हिन्दुओं पर यह अत्याचार हुआ, तभी उन्होंने इसे प्रथम बार अनुभव किया। आज भी यह बात सर्वविदित है कि ईसाइयों के गिरजाघर बनाने में हिन्दुओं ने कितनी सहायता दी। वे उन्हें सहायता देने के लिए सदैव तत्पर रहे। यहां धर्म के नाम पर रक्तपात कभी नहीं किया गया।"

लेकिन यह विडम्बना ही है कि सत्य को भुलाकर राजनैतिक नेता वोट बटोरने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व अन्य हिन्दू संगठनों को गालियां दे रहे हैं। यह बेबाक सत्य है कि जब तक इस देश में आत्मा को परमात्मा मानने वाला, वैदिक ध्वजा फहराने वाला, जड़ व चेतन में ईश्वर का दर्शन करने वाला और गीता, गौ व गायत्री को पूजने वाला महान् हिन्दू बहुसंख्यक है, तब तक ही धर्मनिरपेक्षता रह सकती है और जिस दिन यह महान् हिन्दू समाज अल्पसंख्यक हुआ, इस देश से धर्मनिरपेक्षता हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगी।

आओ, आज समय है, प्रत्येक हिन्दू को साथ लेकर आगे बढ़ें, सिंहनाद करें तथा दुनिया को पुनः बता दें कि हम वही हिन्दू हैं जो जगद्गुरु के पद पर आरूढ़ थे। हम वही लोग हैं, जिन्होंने सिकन्दर को वापस भेज दिया। हम अपनी शक्ति को पहचानें। फिर संकट के बादल छंट जायेंगे। अगर हम समय रहते नहीं चेते तो इतिहास हमें कभी क्षमा नहीं करेगा। हम तभी हिन्दू कहलाने के सच्चे अधिकारी होंगे, जब हिन्दू राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशील जैन को १२ गोलियां मारी गईं

कपूर-थला हत्याकांड का दिल दहला देने वाला विवरण

"वह निर्दोष था। उसके साथ ऐसा क्यों हुआ? उन्होंने १२ गोलियां उसके शरीर में दाग दीं। बिना किसी कारण के उसे मार डाला। वह हमारा सबसे बड़ा बेटा था—हमारे बुढ़ापे का सहारा"—"जैन भवन की दीवारों को बींधकर सुनाई देने वाली ये आवाजें मर्म को छूती चली जाती हैं। किसी के पास इन करुण पुकारों का उत्तर नहीं है। इस बारे में कहा भी क्या जा सकता है कि २४-वर्षीय सुशील जैन को क्यों मार डाला गया? वह दुर्योग से उसी बस का एक यात्री था जिसके एक सम्प्रदाय के यात्रियों की पंजाब के उग्रवादियों ने निर्ममतापूर्वक बाहर घसीटकर हत्या कर दी। उसके सभी साथियों के साथ वह ट्रेन से वहां गया था।

चार्टर्ड एकाउंटट बनने के बाद सुशील का दिल्ली से बाहर काम के लिए जाने का यह पहला मौका था। वास्तव में यही उसकी पहली बाहर के किसी नगर की यात्रा भी थी। वह सात दिन पहले अमृतसर एक आडिट के लिए गया था। उसके सभी सहयोगी दो दिन पहले लौट आए थे।

घटना वाले दिन सुशील अमृतसर से दिल्ली के लिए रात की बस से रवाना हुआ। वह अपनी मां से मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। लेकिन वह दिल्ली तक नहीं पहुंच सका। उसके माता-पिता को ही उसका पार्थिव शरीर लाने कपूरथला के जिला अस्पताल में जाना पड़ा। सुशील के ५३-वर्षीय पिता हरराम जैन एक प्राइवेट फर्म में कर्मचारी हैं। उन्होंने बिलखते हुए बताया—उसके शव को देखने वालों का कलेजा पत्थर का होना चाहिए। छः गोलियां उसके माथे पर लगी थीं। बाहें चाकू से काट दी गई थीं। आंखें निकाल ली गईं·· पता नहीं किसने ऐसा किया।"

शोकाकुल माता-पिता कुछ देर और कपूरथला न पहुंचे होते तो शव को लावारिस करके जला दिया जाता। सुशील के पास उसके घर का पता और टेलीफोन नम्बर था लेकिन कपूरथला के पुलिस अधीक्षक कार्यालय ने उन्हें देखकर उसके माता-पिता को घटना की जानकारी देने की जरूरत नहीं समझी। उसके माता-पिता का कहना है कि उसके पास सामान था लेकिन हमें वह नहीं मिला। हमने दो घंटे तक सामान मिलने का इन्तजार भी किया। हम वह सामान इसलिए लेना चाहते थे कि वही उसकी अन्तिम निशानियां थीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशील के माता-पिता को घटना की जानकारी अमृतसर के उस बंक से मिली जिसके आडिट के लिए वह वहां गया था। उन्होंने फोन पर बताया कि जिस बस के साथ यह घटना घटी है, सुशील भी उसी बस में दिल्ली के लिए रवाना हुआ था। सुशील के उस बस में होने की खबर पाकर पूरा परिवार, उनके माता-पिता, दो विवाहित बहनें, दो छोटे भाई, सभी आशंका से स्तब्ध रह गए। इसके बाद जगह-जगह फोन करने का सिलसिला चला। एक संवाद समिति से उन्हें इस घटना में मृत लोगों के नाम पता चले। दिल्ली पुलिस नियंत्रण कक्ष के पास भी मृतकों के नामों की सूची थी लेकिन वहां से कोई मदद नहीं मिली। कपूरथला के पुलिस अधीक्षक ने यह जानकारी दी। श्री जैन ने बताया—"सुशील का शव हमें ७ अक्तूबर को मिला। हमने पोस्टमार्टम रिपोर्ट मांगी लेकिन वह हमें नहीं दी गई। हम यह जानना चाहते थे और आज भी चाहते हैं कि उसकी आंखें क्यों निकाली गईं। इसकी जानकारी देना नियम के अन्तर्गत हो या न हो, हम यह जानकारी चाहते हैं।"

सुशील एक प्रतिभाशाली छात्र था। उसका किसी राजनीतिक दल की ओर कोई झुकाव नहीं था। उसके लिए दुल्हन पसन्द करली गई थी लेकिन वह कम्पनी सैक्रेटरी की परीक्षा पास करने से पहले विवाह नहीं करना चाहता था, अतः उसे रोक दिया गया था।

उसके पिता ने कहा— मैं तो यही कहना चाहता हूं कि ऐसा किसी के साथ नहीं होना चाहिए। किसी निर्दोष की हत्या क्यों की जाती है? उनका क्या कसूर है?

सुशील के साथी छात्रों और सहयोगियों ने भारतीय चार्टर्ड अकाऊन्टेंट संस्थान और क्षेत्रीय परिषद् से अनुरोध किया है कि वे सभी सदस्यों से चन्दा लेकर सुशील की स्मृति में एक कोष की स्थापना करें। १० अतूबर को उन्होंने संस्थान में एक शोकसभा का भी आयोजन किया।

उग्रवादियों के उन्माद का शिकार होने वाली इसी बस में दिल्ली के दो और यात्री थे जो मार डाले गए। इनमें से एक पश्चिम विहार के निवासी अमरनाथ तथा दूसरे नानकपुरा निवासी सतीश कपिला थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रवादियों ने धर्मपाल पर ८ गोलियां चलाईं और फिर लाश पर बेदर्दी से ठुड्डे मारे

५ अक्तूबर १९८३ की रात जिसने १९४७ की याद दिला दी

पांच अक्तूबर की खूनी रात को अमृतसर से दिल्ली जा रही डीलक्स बस के जिन ६ यात्रियों को उग्रवादियों ने ढिलवां के निकट गिडाना गांव में गोलियों से उड़ा दिया था, उनमें से एक श्री धर्मपाल मित्तल लुधियाना के थे।

४३-वर्षीय मित्तल अपने पीछे पत्नी सुरक्षा रानी के अलावा एक बेटा तथा एक बेटी छोड़ गए हैं।

जब एक संवाददाता संतप्त परिवार से समवेदना अभिव्यक्त करने गया तो वहां का वातावरण स्तब्ध कर देने वाला था।

स्वर्गीय श्री धर्मपाल मित्तल के छोटे भाई श्री नवीनचन्द मित्तल ने भीगी पलकों और रुंधे गले से संवाददाता को बताया कि जब हम भाई साहब की लाश टैम्पो द्वारा लाए तो वह इस हालत में थी कि देखा न जाता था। शव की चमड़ी तक उधड़ चुकी थी। कनपटी, आंख और सीने में हत्यारों ने ८ गोलियां मारीं और हमारे हंसते हुए परिवार को बरबाद करके रख दिया। हत्यारे ने श्री धर्मपाल के मृत शरीर पर इतनी बेदर्दी से ठुड्डे मारे कि बहुत-सी जगह से मांस उखड़ गया।

श्री नवीन चन्द मित्तल ने बताया कि लाश बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गई थी। उसे देखा भी न जा सकता था। रस्मी तौर पर नहलाने के बाद भी श्री मित्तल की लाश देखी न जाती थी। अन्तिम संस्कार से पहले भी हम लोग उनके मुंह और पांवों को ही देखने का साहस कर सके। स्वर्गीय के भाई ने बताया कि श्री मित्तल २२ वर्ष पहले लुधियाना से अमृतसर चले गए थे। अमृतसर में उनकी एक वूलन मिल है। वह शाल निर्यात करने के एक बड़े व्यापारी माने जाते थे। उन्हें इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार ने एक्सपोर्ट ट्राफी भी दी थी। वह लुधियाना गवर्नमेंट कालेज के पुराने ग्रेजुएटों में से थे। श्री नवीन मित्तल ने बताया कि घर में यह दूसरी बड़ी दुःखदायी घटना है। ३।। मास पूर्व हमारे पिता श्री हंसराज मित्तल का देहान्त हो गया था। धर्मपाल मित्तल की शादी १८ मई, १९६४ को हुई। उनकी पत्नी रक्षा रानी दिल की रोगी है। मृतक के दो बच्चे हैं। एक १८।।-वर्षीय लड़का, जो दिल्ली में मकैनिकल इंजीनियरिंग का कोर्स कर रहा है जबकि दूसरी १४-वर्षीया लड़की, जो अमृतसर में शिक्षा प्राप्त कर रही है। श्री नवीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्तल ने बताया कि [illegible] होनी थी, उस दिन भाई साहब लुधियाना आए लेकिन हमें नहीं मिले। काम करने के बाद वह शाने पंजाब से वापस अमृतसर चले गए। वहां भी वे घर नहीं गए तथा फैक्टरी में ही रहे जबकि रात को उस अभागी बस में अपने व्यापारिक पर दौरे दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

श्री मित्तल ने बताया कि अभी तक हमसे सहानुभूति व्यक्त करने के लिए लुधियाना के १२ विधायकों में से कोई नहीं आया और न ही जिले का कोई अफसर आया है। स्टील यार्न मर्चेण्ट्स एसोसिएशन ने शोक प्रस्ताव जरूर हमें भेजा था। मृतक की अरथी के जलूस में लगभग पांच हजार लोग शामिल हुए जबकि जलूस का नेतृत्व पंजाब शिव सेना के प्रधान श्री जगदीश टांगड़ी ने किया। श्री नवीन ने बताया कि भाई साहब की मौत से हम इतने आतंकित हो गए कि हम भाभी को कार द्वारा अमृतसर से लाने की बजाय रेल गाड़ी में लुधियाना लाए जबकि भाई साहब की लाश भी दूसरे रास्तों से लुधियाना लाई गई ताकि कोई और दुर्भाग्यपूर्ण घटना न हो जाए। श्री नवीन ने आशंका व्यक्त की कि शेष यात्रियों के बारे में भी कुछ कहना सम्भव नहीं। हो सकता है कि उग्रवादी उन्हें अपने साथ ही ले गए हों।

—टी. एल. जोशी

डा० सूर्यदेव शर्मा का देहावसान

आर्यसमाज अजमेर के भूतपूर्व मन्त्री तथा वर्तमान उप प्रधान, भारतवर्षीय आर्य विनोद परीक्षा के मन्त्री तथा डी० ए०-वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०, एल० टी०, डी० लिट का ५ अक्तूबर को ८४ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया।

डा० सूर्यदेव शर्मा उच्च कोटि के विद्वान्, प्रसिद्ध वक्ता, कई पुस्तकों के लेखक और प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री थे। डा० सूर्यदेवजी ने अपने जीवन काल में विभिन्न आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्यसमाजों तथा आर्य पत्र-पत्रिकाओं को लाखों रुपयों का दान स्थायी निधियों एवं सहयोग के रूप में दिया। उन्होंने आर्यसमाज अजमेर द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला के लिए २२,०००) रु० का दान दिया था। आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर ने माननीय डाक्टर साहब के नाम पर सूर्यदेव शर्मा माध्यमिक विद्यालय प्रारम्भ किया जिसमें उन्होंने ५०,००० रु० का दान दिया था। सूर्यदेवजी द्वारा आयोजित विद्याविनोद, विद्यारत्न, विद्यावाचस्पति आदि परीक्षाओं के केन्द्र सारे देश एवं विदेशों में भी हैं। अजमेर के प्रसिद्ध डी० ए०-वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय के वे १९३५ से १९६२ तक प्रधानाध्यापक रहे। ऐसे प्रसिद्ध शिक्षाविन् एवं आर्य विद्वान का निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्मग्रन्थ : परमात्मा की वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-अर्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य लगभग ४४४ रु०

किन्तु प्रचार के लिए अपने सदस्यों को

पुस्तकालय संस्करण : २५१ रु०

उपहार संस्करण : ६०४ रु०

५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

दूरभाष : ५६२६३६-५६४७४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में
सहयोग दीजिए।

अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइए।

आज ही आप ५०१) भेजिए।

यह मेरी प्रार्थना है।

—राकेशरानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें अभिमान है कि हम हिन्दू हैं

वह व्यक्ति हिन्दू है जो हिमगिरि के धवल शृंगों से महोदधि की उत्ताल तरंगों तक विस्तृत इस भूखण्ड को अपनी पितृभूमि के रूप में मान्यता देता है, जो रक्त सम्बन्ध की दृष्टि से उसी महान् जाति का वंशज है जिसका प्रथम उद्भव वैदिक सप्तसिन्धुओं में हुआ था और जो निरन्तर अग्रगामी होता अन्त-र्भूत को पचाती तथा महनीय रूप प्रदान करती हुई हिन्दू जाति के नाम से सुख्यात हुई है। जो उत्तराधिकार की दृष्टि से अपने आपको उसी जाति का स्वीकार करता है तथा इस जाति की उस संस्कृति को अपनी संस्कृति के रूप में मान्यता देता है जो संस्कृत भाषा में संचित है। जिसकी अभिव्यक्ति इस जाति के इतिहास, साहित्य, कला, धर्मशास्त्र, व्यवहारशास्त्र, रीति-नीति, विधि-संस्कार और पर्वों के माध्यम से हुई है। इसके साथ ही उस व्यक्ति के लिए यह भी अनिवार्य है कि वह उपर्युक्त बातों के साथ इस देश को अपनी पुण्यभूमि, अपने अवतारों, ऋषियों, महर्षियों की अवतारस्थली एवं इसके कण-कण को तीर्थस्थली समझता है। हिन्दुत्व के लक्षण हैं—एक राष्ट्र, एक जाति तथा एक संस्कृति। इन सभी लक्षणों को संक्षेप में इस भांति प्रस्तुत किया जा सकता है कि वही व्यक्ति हिन्दू है जो सिन्धुस्थान (हिन्दुस्थान) को केवल पितृभूमि ही नहीं, अपितु पुण्यभूमि भी स्वीकार करता है। हिन्दुत्व के प्रथम दो लक्षणों राष्ट्र तथा जाति का समावेश 'पितृभूमि' शब्द में हो जाता है और तृतीय लक्षण एक संस्कृति की अभिव्यक्ति 'पुण्यभूमि" शब्द से होती है, क्योंकि संस्कृति में ही सब संस्कार समाविष्ट हैं और वही किसी भूमि को पुण्यभूमि का रूप प्रदान करती है। उपर्युक्त परिभाषा को और भी अधिक संक्षिप्त रूप में निम्नलिखित श्लोक में प्रस्तुत किया जा सकता है—

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

—वीर सावरकर

गुप्ता इन्वैस्टमैन्टस एण्ड कन्स्ट्रक्शन
कम्पनी, बम्बई के सौजन्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जन-ज्ञान' मासिक की एजेंसी के नियम

१—कम से कम १० प्रतियां प्रतिमास मंगाने पर एजेंसी दी जा सकेगी।

२—दो रुपया प्रति के हिसाब से रक्षा धन अमानत रूप में जमा कराना होगा, जो एजेंसी समाप्त होने पर लौटा दिया जाएगा।

३—दस प्रतियां बीस रुपये में प्रतिमास भेजी जायेंगी।

४—कम से कम बीस प्रतियां मंगाने पर एक रुपया पचहत्तर पैसे प्रति के हिसाब से भेजी जाएंगी।

५—प्रतियां घटाने-बढ़ाने की सूचना सम्बन्धित मास की २५ तारीख तक धन सहित मिल जानी चाहिए।

६—बची हुई प्रतियां अभिकर्ता अपने व्यय पर लौटा सकेंगे।

७—किसी भी विवाद का निर्णय दिल्ली न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होगा। दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष का निर्णय अभिकर्ता को मान्य होगा।

धन-मनीआर्डर-ड्राफ्ट "दयानन्द संस्थान" के नाम से ही भेजें।

—आभा, प्रबन्धक

हमारा नया साहित्य

१. इस्लाम क्यों छोड़ा?

मूल्य : ५० पैसे

२. The Clarion Call

मूल्य : ४० पैसे

३. जय हिन्दू : पृष्ठ २२८

मूल्य : ६ रु०

४. मोपला (उपन्यास) : वीर सावरकर

मूल्य : ५ रु०

अधिक से अधिक मंगाएं : बांटें

दयानन्द संस्थान

वेद मंदिर, नई दिल्ली-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

साहित्य और जन-ज्ञान

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छापने के लिए

प्रेस का तुरंत प्रबन्ध करें।

अन्यथा कार्य करना कठिन होगा।

५०००) रु. देने वाले १०० सदस्य चाहिएं।

प्रेस के लिए आप जो भी भेज सकें, भेजिए।

तुरन्त अपना भाग भेजिए।

—राकेशरानी
अध्यक्ष

दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर, नई दिल्ली–५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्पति घी में गाय की चर्बी : दोषी कौन ?

—धर्मपाल शर्मा

भटिंडा की एक फैक्टरी में कुछ महीने पूर्व छापा पड़ने पर वनस्पति घी में गाय की चर्बी पाये जाने के बाद से सारे देश में आक्रोश की लहर फैल गई है। १८५७ के स्वातंत्र्य युद्ध में सैनिकों को दांत से कारतूस खींचने पड़ते थे, जिनमें गाय की चर्बी की अफवाह ने सैनिकों को विद्रोह के लिए प्रेरित कर दिया था। आज लाखों-करोड़ों हिन्दुओं को अनजाने में गाय की चर्बी खिलाई गई है। इसके लिए दोषी कौन है ? व्यापारी, वनस्पति घी के निर्माता या सरकार ? देश की जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने वाले इस घृणित प्रयास को इस लेख में अनावृत किया गया है।

वनस्पति घी में गाय की चर्बी मिलाने का कार्य पिछले डेढ़-दो साल से हो रहा है। भटिंडा में गत मास सबसे पहले गाय की चर्बी से भरे टैंकर के सड़क पर उलट जाने और फिर छापे के दौरान गाय की चर्बी का काफी भंडार पकड़े जाने से यह मामला प्रकाश में आया। फिर परत दर परत इसके सूत्र खुलते गये। भटिंडा कैमिकल्स के कुछ निदेशकों को जो इसके चेयर मैन श्री द्वारकादास मित्तल के सम्बन्धी हैं, मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया था। लेकिन श्री मित्तल काफी समय तक फरार रहे। अन्ततोगत्वा पुलिस ने उन्हें २० सितम्बर को मद्रास के एक नर्सिंग होम में गिरफ्तार कर लिया। ज्ञातव्य है कि भटिंडा कैमिकल्स के श्री मित्तल के पास वनस्पति घी बनाने का लाइसेंस नहीं है लेकिन वे अवैध रुप से वनस्पति घी बनाते रहे और छापे के दौरान उनके वनस्पति निर्माण संयत्र प्रासेसिंग प्लांट तथा पाइपलाइन में गाय की चर्बी पाई गई। भटिंडा कैमिकल्स के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचालकों का कहना है कि गाय की यह चर्बी जैन शुद्ध वनस्पति से खरीदी गई। छानबीन के दौरान ५० स्थानों पर छापे मारे। इन छापों के दौरान पाये गए जिस वनस्पति घी में गाय की चर्बी की मिलावट थी वह "पीपल" ब्रान्ड जैन शुद्ध वनस्पति का था जिसका निर्माण १९७५ तक गाजियाबाद में होता रहा लेकिन बाद में इसके बजाय इस कम्पनी ने अजंता नाम से वनस्पति घी बनाना शुरू कर दिया। कहा जाता है कि भटिंडा कैमिकल्स में अनेक राजनेताओं की भागीदारी है।

गाय की चर्बी का अभी तक नहाने के साबुन में प्रयोग किया जाता था। विशेषज्ञों का कहना है कि अच्छे नहाने के साबुन तो गाय की चर्बी के बिना बनाये ही नहीं जाते लेकिन खाद्य तेल के मूल्यों में भारी वृद्धि के कारण गत डेढ़-दो वर्षों से कुछ स्वार्थी और अनैतिक तत्त्वों ने वनस्पति घी में गाय की चर्बी की मिलावट का घृणित व्यापार शुरू कर दिया। इस व्यापार के एक सुत्रधार जैन शुद्ध वनस्पति के प्रबन्ध निदेशक श्री विनोद कुमार जैन रासुका में गिरफ्तार कर लिये गये थे। वे २० सितम्बर को हाईकोर्ट द्वारा दिल्ली और देश से बाहर न जाने की शर्त पर जमानत पर रिहा किये गये हैं। गाय की चर्बी के एक आयातकर्त्ता जैन शुद्ध वनस्पति के प्रबन्ध निदेशक श्री विनोद जैन आयात अधिकारियों को धोखा देने में सबसे अधिक माहिर माने जाते हैं। जब कोकोनट आयल के आयात को राज्य व्यापार निगम ने अधिगृहीत कर लिया तो श्री जैन ने "औद्योगिक कोकोनेट आयल" के नाम पर कानून की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की। १९८१ में ५००० टन "औद्योगिक कोकोनट आयल" के इस घोटाले में बम्बई के तटकर अधिकारी द्वारा जैन शुद्ध वनस्पति पर ५० लाख रुपये जुर्माना किया गया था। इससे पहले श्री जैन २४ करोड़ की बीमा राशि प्राप्त करने के लिए एक जहाज डुबा देने वाले कांड में भी चर्चित रहे हैं। इस सबके बावजूद श्री जैन ने एक भेंट के दौरान अपने ऊपर लगे आरोपों को राजनैतिक स्वार्थ से प्रेरित बताया। उन्होंने यहां तक कहने की हिमाकत की कि राजनीतिज्ञ तो हमारी जेब में पलते हैं। उनके इस दुःसाहस का सम्भवतः यही कारण था कि कई सांसद और राजनेता उनसे आर्थिक सहायता मांगते रहते हैं। उस समय भी वहां दिल्ली के एक सांसद एवं कुछ युवा नेता बैठे हुए थे।

भटिंडा कैमिकल्स मिल्स के नमूनों में गाय की चर्बी पाई जाने के बाद तो चंडीगढ़ और रांची में भी गाय की चर्बी के भण्डार पकड़े गए। शुद्ध जैन वनस्पति पर आयात लाइसेंस का दुरुपयोग करके ३ करोड़ रुपये की गाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्बी आयात करने के जुर्म में एक करोड़ नौ लाख रुपये का जुर्माना किया गया।

रांची में जेठमल सत्यनारायण कम्पनी से ३०० टिन और राज ट्रेडिंग कम्पनी से २८३ टिन गाय की चर्बी बरामद की गई। सिरसा और अमृतसर में भी गाय की चर्बी के भंडार पकड़े गए। लोकदल के संसद सदस्य श्री रामेश्वर सिंह ने संसद में बताया कि गत एक वर्ष में ही करीब १० लाख टन गाय की चर्बी का आयात हुआ है, जिसका मूल्य एक अरब रुपये होता है। इसके अतिरिक्त देश की १७ कम्पनियों की एक सूची भी संसद में पेश की गई जो गाय की चर्बी का आयात करती रही हैं।

गाय की चर्बी की मिलावट क्यों ?

गाय की चर्बी (जिसे अंग्रेजी में "बीफ टैलो" कहा जाता है) गाय, बैल, या बछड़े के शरीर के विभिन्न अंदरूनी अंगों से निकाली जाती है। यह स्वाद और गंध में अन्य पशुओं की चर्बियों से बेहतर होती है। किन्तु जैन शुद्ध वनस्पति के प्रबन्ध निदेशक श्री बी० के० जैन ने इसे वनस्पति घी में मिलाने की बात को अव्यवहारिक बताते हुए इसका जोरदार खंडन किया। उन्होंने कहा कि तकनीकी कारणों से गाय की चर्बी के मूल्य स्तर के कारण इसकी मिलावट करना असम्भव है। श्री विनोद जैन के अनुसार गाय की चर्बी का भाव ९५०० रुपये प्रति टन है और कारखाने तक लाने में इस पर १००० रुपये प्रतिटन खर्च और बढ़ जाता है जबकि वनस्पति घी बनाने के लिए तेल का भाव कारखाने आने तक ८,५०० रुपये प्रतिटन ही पड़ता है। किन्तु जांच पड़ताल से पता चला है कि तकनीकी कारणों से भी वनस्पति घी में गाय की चर्बी की मिलावट करना असंभव नहीं है। दूसरे वनस्पति घी में गाय की चर्बी मिलाना आर्थिक दृष्टि से लाभदायक न होने का तर्क भी गलत है क्योंकि आयातकों को गाय की चर्बी काफी कम दरों पर, ४००० से ५००० रुपये प्रति टन पड़ती है और सारे करों को मिलाकर यह कारखाने में ६,००० रुपये प्रतिटन मूल्य पर पड़ती है, जबकि बाजार में वनस्पति घी की दरें १७००० से १८००० रुपये प्रतिटन है। इस प्रकार स्पष्ट रूप से तीगुना लाभ है।

यद्यपि गाय की चर्बी के आयात के बारे में स्पष्ट आंकड़े उपलब्ध नहीं है लेकिन एक आकलन के अनुसार एक लाख टन चर्बी का आयात पिछले साल किया गया है। क्या इसे मात्र संयोग कहा जाये कि वे अधिसंख्य आयात-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कर्ता जो गायकी चर्बी का आयात करते हैं, वनस्पति घी के कारखानों के मालिक हैं ?
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्मेदार कौन ?

१९६९-७० से पशु की चर्बीका आयात राज्य व्यापारनिगम द्वारा नियंत्रित था जो अभी भी जारी है लेकिन ५ जून १९८१ को एक आदेश के द्वारा इस सूची में सुधार करके इसमें समस्त पशु चर्बी के आयात के लिए राज्य व्यापार निगमको ही अधिकृत कर दिया गया जिसमें गाय की चर्बी भी शामिल हो गई। इस अवधि तक मुक्त सामान्य लाइसेंस ओ० जी० एल० के अन्तर्गत देश में गाय की चर्बी से लदे अनेक जहाज आ चुके हैं। लेकिन इसके बाद भी धोखाधड़ी से गाय की चर्बी का आयात होता रहा।

कांग्रेस सरकार का आरोप है कि जनता सरकार द्वारा अप्रैल १९७८ से मुक्त व्यापार लाइसेंस (ओ० जी० एल०) लागू कर देने के बाद गाय की चर्बी का आयात बढ़ा है और इसके लिए जनता सरकार दोषी है। लेकिन तथ्य साक्षी हैं किइससे पहले भी "औद्योगिक चर्बी" के नाम पर गाय की चर्बी का आयात किया जाता रहा। फिर यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि जैन शुद्ध वनस्पति के हाल ही में ६ हजार टन से अधिक गाय की चर्बी से लदे जहाज को जब्त करने और इसके द्वारा एक करोड़ नौ लाख रुपये जुर्माना अदा करने के बाद इस चर्बी को मुक्त कैसे कर दिया गया जबकि इसे जब्त रखना सरकार के अधिकार क्षेत्र म था ? सरकारी क्षेत्रों में इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया जा रहा है कि जबकि देश में इस मुद्दे पर घोर असन्तोष फैला हुआ है, उस समय इस चर्बी भंडार को मुक्त क्यों किया गया ? लोकदल सांसद श्री रामेश्वर सिंह ने ससद में इस आरोप का कड़ा विरोध किया कि गाय की चर्बी का आयात जनता सरकार के काल में शुरू हुआ। उन्होंने तथ्यों का हवाला देते हुएकहाकि गाय की चर्बी जनता सरकार के काफी पहले से मंगाई जाती रही है। उन्होंनेयह भी आरोप लगाया कि पशु की चर्बी के नाम पर गाय की चर्बी मंगाई जाती रही और खाद्य वनस्पति, तेल तथा साबुन में इसका उपयोग होता रहा है।

चर्बी के आयात पर रोक

अब वाणिज्य मंत्रालय द्वारा २४ अगस्त के आदेश से गाय, भैंस और सूअर की चर्बी के आयात की पूरी तरह रोक लगा दी गई है। निर्यात वस्तुओं के निर्माणके लिए भी अन्य पशुओं की चर्बी के सीधे आयात पर प्रतिबन्ध लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया है। अब ऐसे लाइसेंस धारकों की जरूरतों की आपूर्ति राज्य व्यापार निगम द्वारा की जायेगी लेकिन गाय, भैंस और सूअर की चर्बी का आयात तो निर्यात उत्पादनों के लिए भी नहीं करने दिया जायेगा। आदेश में कहा गया है कि जिन लाइसैंसों के अन्तर्गत चर्बी आयात के जहाज रवाना हो चुके हैं, उन्हें राज्य व्यापार निगम के द्वारा प्राप्त करने की शर्त नहीं होगी लेकिन तटकर अधिकारी इनमें भी गाय, भैंस और सूअर की चर्बी को उक्त आदेश के अन्तर्गत देश में आने की अनुमति नहीं देंगे।

जनभावनाओं को भारी आघात

वनस्पति घी में गाय की चर्बी की खबर से देश की धर्मपरायण जनता हतप्रभ रह गई है। अनेक लोगों ने वनस्पति घी का प्रयोग बन्द कर दिया है। कुछ मंदिरों ने भी वनस्पति घी की मिठाइयों के प्रसाद पर रोक लगा दी है और इस की बजाय वे चीनी के बताशों या तुलसी पत्रों का प्रसाद देने लगे हैं।

भारत में गाय के प्रति असीम श्रद्धा है। भारतवासी गाय को माता के समान पूज्य मानते हैं। पंडित कमलापति त्रिपाठी जैसे वरिष्ठ कांग्रेसी नेता ने भी जो सामान्यतया कम बोलते हैं, इस विषय पर संसद् में हो रही बहस के दौरान बड़ी वेदना के स्वर में कहा था, "मुझे नरक में मत धकेलो और स्वयं नरक में मत जाओ।" इसी प्रकार लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने इसे किसी दल के बजाय सारे देश का मामला बताया और गम्भीर चिंता प्रकट करते हुए सरकार को ऐसा अपराध करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने की हिदायत दी। धार्मिक क्षेत्र के अनेक नेताओं ने इस प्रकार का अपराध करने वालों का सार्वजनिक बहिष्कार करने की अपील की है। अतः सरकार से अपेक्षा है कि जिन व्यापारियों, राज-नेताओं और सरकारी अधिकारियों का वनस्पति घी में गाय की चर्बी मिलाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हाथ रहा है और इस प्रकार जिन्होंने करोड़ों भारतवासियों को ठेस पहुंचाई है, उन्हें कठोर दंड दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

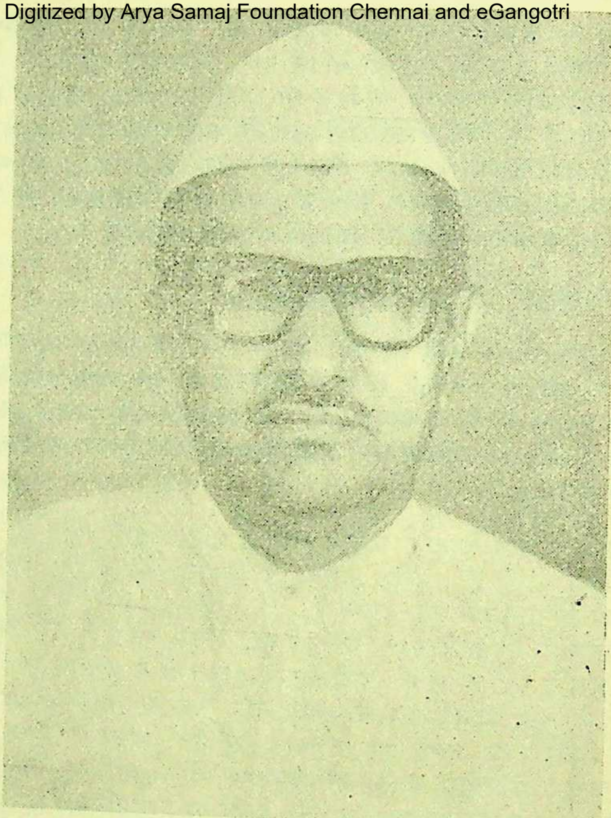

स्व० श्री लालमन जी आर्य, अब जिनकी याद ही बाकी है

स्व० लालमन जी आर्य का बचपन राजस्थान के गांव शेरड़ा में सभी सामान्य बालकों की तरह बीता। सिर पर से मां-बाप की शीतल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया छोटी उम्र में ही उठ गया था। [illegible] चाची ने दत्तक पुत्र बनाकर माता का-सा प्यार दिया और उन्होंने भी अपने पूरे जीवनकाल में अपनी इस चाची का सम्मान अपनी जननी से भी अधिक किया। शिक्षा के नाम पर गांव के ब्राह्मणों द्वारा पढ़ाया गया अक्षर ज्ञान ही था। १५ वर्ष की अल्पायु में उन्हें विवाह के दायित्वपूर्ण बन्धन में बांध दिया गया। गांव का संसर्ग अशिक्षित वातावरण और अंधविश्वास से भरपूर था। उनका अपना परिवार घोर पौराणिक था। कुल मिलाकर उनका बचपन विरोधी स्थितियों से घिरा हुआ था।

बीस वर्ष की उम्र में आजीविका के लिए बंगाल के चाय बागानों में चले आये। वहां एक छोटी दूकान से अपना कर्म क्षेत्र आरम्भ किया। ईश्वर ने यहीं से उनके जीवन को एक नया मोड़ दिया। पास के क्षेत्र में उनके पारिवारिक भाई श्री रामानन्द जी की अपनी दूकान थी। श्री रामानन्द जी के सान्निध्य ने इनके हृदय में वैचारिक क्रान्ति का समावेश किया। वहीं उनको "सत्यार्थप्रकाश" की एक प्रति प्राप्त हुई। इस पुस्तक से उनके जीवन में आपादमस्तक परिवर्तन आ गया। इस साधारण ग्रामीण बालक में एक ऐसे सुधारक की स्थापना हो गई जिसने अपने जीवन में हजारों व्यक्तियों को किसी न किसी रूप में प्रेरणा दी।

श्री लालमन जी काव्यानुरागी थे। इन्होंने सैंकड़ों सुधारवादी गीत लिखे। इन गीतों ने बंगाल के डुआर्स क्षेत्र में तथा फिर राजस्थान और हरयाणा के गांवों में धूम मचा दी। आर्य समाज तथा सत्यार्थप्रकाश के प्रचार और प्रसार में इन्होंने अपने तत्कालीन व्यवसाय की ओर विशेष ध्यान नहीं रखा। साधारण शिक्षा का विस्तार अपने स्वाध्याय के द्वारा इतना बढ़ा चुके थे कि लेखों और भजनों के माध्यम से जनता को अपने विचार बड़े प्रभावशाली ढंग से पहुंचाते थे। आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय उनका नित्य कर्म था।

स्वतंत्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी के विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की अपील ने उनको बहुत प्रभावित किया। तभी से खादी धारण का उनका व्रत आजीवन बना रहा। चमड़े के जूतों का बहिष्कार उन्होंने गोरक्षा के आंदोलन को सक्रिय बनाने की भावना मे किया हुआ था। महात्मा गांधी के स्वदेशी प्रचार को उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा ग्रामीण जनता तक बहुत निष्ठा से पहुंचाया।

गांव के ऐसे वर्ग को जिनको "अछूत" कहा जाता था—जिनसे छू जाना सवर्ण कहे जाने वाले लोगों को बहुत घृणास्पद लगता था—ऐसी कुप्रथाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को श्री आर्य जी ने अपने घर से निष्कासित किया। अछूतों का अछूतपन उनके व्यवहार और विचार में स्थान नहीं पा सका। अपने पौराणिक परिवार से उन्होंने अपने अथक प्रयत्नों से मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध और मृतक भोज को निकाल फेंका। इस प्रकार के खंडनात्मक कार्यों के साथ-साथ संध्या हवन, वैदिक संस्कार और आर्य विद्वानों के सत्संग से मंडनात्मक क्षेत्र अपनाने में वे सदैव सचेष्ट बने रहे। तभी तो उन्होंने अपने नाम के आगे कोई जातिबोधक पुछल्ला न लगाया और मात्र "आर्य" नाम से सर्वत्र जाने और माने गए।

विक्रमी सम्वत् १९९९ में भयंकर अकाल से पीड़ित ग्रामवासियों को अपने भाई स्व० रामानन्द जी के विशेष सहयोग से अन्न दान की व्यवस्था, सं० १९९९ में मलेरिया की महामारी से पीड़ितों की चिकित्सा ने इनको सामाजिक सेवा कार्यों में प्रेरित किया। मलेरिया की महामारी के समय स्थापित किया गया वह औषधालय अब राजस्थान राज्य के अन्तर्गत "ए" श्रेणी का चिकित्सा केन्द्र बन गया है। गांव में बने हुए विद्यालय भवन, औषधालय भवन आर्य सरोवर, कुएं विश्राम स्थल और गांव की पक्की गलियों के निर्माण के साथ उनका नाम चिरस्मरणीय हो गया है। हरियाणा का अकाल और रोहतक की बाढ़ सहायता में उनका अथक परिश्रम लोग बड़ी श्रद्धा से याद करते हैं। गांव के सरपंच बनकर गरीब व हरिजन वर्ग को आवास खंडों के निश्शुल्क वितरण ने उनको एक प्रशंसनीय अधिकारी बना दिया।

विधवा विवाह के कार्य को उन्होंने अपना एक पवित्र कर्तव्य मान लिया था बाल विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए जहां कहीं और किसी भी समय जाने के लिए तैयार थे। सैकड़ों बाल विधवाओं को सौभाग्यदान दिलवाने के पीछे आर्य जी की तत्परता और सेवाभावना का बहुत अधिक योगदान है।

सन् १९७२ में वानप्रस्थ की दीक्षा के पश्चात् उनका समस्त समय ईश्वरभक्ति, वेद प्रचार, समाज सेवा और ग्राम सुधार के प्रयास में व्यतीत हुआ। अनेकों संस्थाओं का सहयोगी बनकर सेवा करने वाला यह व्यक्ति पदों की लालसा से अलग रहा।

आर्य जी द्वारा संस्कारित उनका आर्य परिवार समस्त भारत में अपने व्यापार में अग्रसर है। आशा करनी चाहिये यह परिवारिक स्व० आर्य जी के आदर्श को अक्षुण्ण रखेगा।

सन् १९८३ की २० जून की रात्रि को यह कर्मयोगी इस संसार को छोड़ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान पुन : विभाजन के कगार पर

—जहीर नियाजी

सिंध में जो जनांदोलन उभर कर सड़कों पर चला आया, १४ अगस्त को और उसके बाद—उसकी पृष्ठभुमि भी कुछ थी या नहीं...इस प्रखर प्रवाह और सशक्त लहर के पीछे वह कौन सा ऐसा जज़्बा था जिसने सिंधियों के अंदर इतनी और ऐसी शानदार शक्ति का संचार किया ?

स्तुत हैं कुछ ऐसे दस्तावेज़ी हैसियत के संगीन व सनसनीखेज तथ्य जो अब तक अज्ञात या अल्पज्ञात रहे हैं और जिन्हें अब तक किसी भी हिंदी पत्र-पत्रिका द्वारा पेश नही किया जा सका ।

"मजलूम सिंध जालिमों को मजा चखा देगा !"

ये शब्द हैं भुट्टो के। जी हां, तत्कालीन पाकिस्तानी प्रधान मन्त्री श्री जुल्फिकार अली भुट्टो-सिंधी के !

भुट्टो का सम्बन्ध सिंध से होने के नाते मैंने स्व. भुट्टो को 'भुट्टो-सिंधी' लिखा—हैं)

पाकिस्तानी हुक्मरानों की तानाशाही, जुल्म, जब्र और शोषण के विरुद्ध आवाजें बुलंद हुई थीं १९५५ में भी उन दिनों जो बेशुमार आवाजें बुलंद हुईं, उन में तीन आवाजें खास शानदार थीं—वली खां की, अताउल्ला खां मेंगल की और भुट्टो की। इनमें भुट्टो की आवाज कुछ ज्यादा ही जोरदार थी।

वली खां की बेशुमार आवाजों में एक आवाज यह थी—"पख्तून भी पंजाबियों से आजिज (तंग व परेशान) हैं।" इस आवाज में बस शिकायत थी। (खान अब्दुल वली खां के पिता 'सीमांत गांधी' खान अब्दुल गफ्फार खां भी ऐसी आवाज बार-बार बुलंद करते रहे थे)।

मेंगल की आवाज में शिकायत नहीं खतरे का संकेत था, चेतावनी थी—

"बलूचिस्तान में लावा उबल रहा है !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर मुँहफट भुट्टो ने शिकायत व सांकेतिक 'शिकवे' से काम न लेकर डंके की चोट पर एलान किया था—

"मजलूम (पीडित व शोषित) सिंध जालिमों (अत्याचारियों व शोषकों) को मजा चख देगा !"

'मजा चखाने' के सिलसिले की कार्रवाईयां कई बार हो भी चुकी हैं, पर ताजा तजकिरे से पहले अतीत की कुछ अहम झाकियां—

"तुम बंगाली चिल्लाते हो कि पूर्वी पाकिस्तान का शोषण पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार और पश्चिमी पाकिस्तान (अभिप्राय सिर्फ पंजाब) वाले करते हैं। हमारे प्रांत सिंध के बारे में क्या खयाल है तुम्हारा ? कराची अब हमारा शहर नहीं रहा। हमारा दूसरा शहर हैदराबाद भी मुहाजिरों ने ले लिया। हमारी सबसे अच्छी बेरिज वाली खेती पर पंजाबियों ने कब्जा कर लिया। नौकरियों में—फौजी व गैर-फौजी दोनों में—सिंधियों की कोई जगह नहीं। (विभाजन पूर्व) कारोबार में सिंधी पूरे उप-महाद्वीप में फैले हुए थे। अब वे कहीं नही हैं। हम धीरे-धीरे अपने ही देश में विदेशी और अपने ही क्षेत्र में अल्पसंख्यक होते जा रहे हैं ! अगर पाकिस्तान के प्रशासन के खिलाफ किसी को शिकायत का सही हक है तो वे सिंधी हैं !" —(१९५९ में ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों को सम्बोधित करते हुए श्री भुट्टो ने यह बात कही थी !)

भुट्टो साहब का यह बयान जब ए. पी. पी. (एसोसियेटिड प्रेस ऑफ पाकिस्तान) के हवाले से छपा तो लोगों को भुट्टो की इस बेबाकी पर सख्त ताज्जुब हुआ—खास कर अखबार वालों को, क्योंकि भुट्टो अय्यूब सरकार के एक मन्त्री थे। एक मन्त्री ऐसा बेबाक बयान दे, यह ताज्जुब (आश्चर्य) की बात ही थी !

ढाका के एक मशहूर अखबार—'काउंटर प्वाइंट, के सम्पादक श्री हजूर हुसैन चौधरी इस सिलसिले में लिखते हैं—"मेरी आंखें खुली की खुली रह गयीं ! (भुट्टो की बेबाकी की खबर से)। एक सब—एडीटर मेरे पास, ए. पी. पी. की दी हुई, यह खबर लाया था। 'भुट्टो ढाका यूनिवर्सिटी के छात्रों को सम्बोधित करते हुए कुछ अहम बातें बता रहे थे। लडकों ने नारेबाजी की जिस पर उन्हें गुस्सा आ गया, मैंने कहा—वे (भुट्टो) जरूर ज्यादा पी गये थे ! अय्यूब खां की मार्शललॉ सरकार का एक मन्त्री भला आम जलसे में यह कैसे कह सकता है ? और फिर ए. पी. पी. इस खबर को कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिलीज कर सकता है ? [illegible] को गलत करार दिया । पर बाद में मुझे मालूम हुआ कि लड़कों की नारेबाजी से चिढ़ कर वहां भुट्टो ने इससे कहीं ज्यादा खतरनाक बातें कही थीं ! उन्होंने साफ-साफ कहा था कि विभाजन से सिंधियों को बहुत नुकसान पहुंचा हैं अलग बात है कि कुछ लोग फायदे में भी रहे हों । सिंधी गुजरातियों और वम्बई वालों के साथ कहीं ज्यादा खुश थे । मेरे स्टाफ रिपोर्टर ने इस की पुष्टि की कि श्री भुट्टो नशे में नहीं थे । हां गुस्से और जोश में जरूर थे !"

कुदरत की सितमजरीफी देखिए कि सिंधियों के ऊपर किये जाने वाले जुल्मो-सितम के खिलाफ आवाज उठाने वाले भुट्टो जब खुद हुकूमते पाकिस्तान के सरबराह बने तो खुद सितमगरों की सफ में चले गये और मजलूमों व सितमजदों (शोषितों) की ओर से नजरें चुराना शुरु कर दीं। उस सिंधी की ओर से नजरें चुराना शुरू कर दीं जिसे उन्होंने खुद कभी कहा था— मजलूम सिंध(शोषित सिंध) जिस सिंध की धरती ने, हवाओं ने, फिजाओं ने खुद उन्हें भी बहुत कुछ बख्शा था ! पर उनकी नजरें चुराने से क्या हकीकतें बदल सकतीं थीं ? हरगिज नहीं ! इसी अहम नुक्ते की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया पाकिस्तानी अखबारों ने भी ·

'सिंधु देश'—चश्मपोशी क्यों ?

इसी शीर्षक से लाहौर व रावलपिंडी से प्रकाशित होने वाले प्रसिद्ध दैनिक—'नवा. ए. वक्त' ने अपने ३ अप्रैल ७५ के अंक में लिखा—

डेरा इस्माईल खाँ में संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा के तत्त्ववाधान में एक इजलास (अनुमति न मिलने के कारण आम जलसा न हो सका था) में भाषण करते हुए मुस्लिम लीगी लीडर चौधरी जहूर इलाही ने 'सिंधुदेश' के फितने का खास तौर पर जिक्र किया । उन्होंने कहा—

"मुझे पूरे सूबा सरहद में कहीं भी 'पख्तूनिस्तान' का लिटरेचर नहीं मिला, पर सिंध में २०-२५ रिसाले और अखबार 'सिंधुदेश' का प्रचार कर रहे हैं ! मगर उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाती !"

"सरहद में नाम-निहाद 'पख्तूनिस्तान' के लिटरेचर के सिलसिले में मत-भेद की बड़ी गुंजाइश है, लेकिन उन्होंने सिंध में 'सिंधु देश' का प्रोपेगैंडा करने वाले रिसालों व अखबारों के बारे में जो कुछ कहा है उससे न सिर्फ इन्कार संभव नहीं, बल्कि यह बात अर्से से ताज्जुब व सदमे का कारण बनी हुई है कि इस फितने से सरकारी सतह पर चश्मपोशी (नजरें चुराने, छिपाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
झुठलाने या नजर अन्दाज करने) के लम्बे सिलसिले की वजह या मसलेहत क्या है ?"

भुट्टो सरकार की चश्मपोशी वाली समझ में न आने वाली मसलेहत का रोना रोने के बाद अखबार ने आगे लिखा—

'सिंधु देश' के फितने का प्रचार स्व० अय्यूब खां के दौर में 'एक इकाई' के विरोध के पर्दे में शुरु हुआ था। यहिया खां के दौर में यह सिलसिला बहुत बढ़ गया और हर लिहाज से विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार इस समय सिंध के विभिन्न भागों में पुस्तकों के रूप में स्थायी प्रकाशन के साथ-साथ दो-तीन दर्जन से ज्यादा अस्थायी—अनियमित पत्र-पत्रिकाएं भी सिंध की पृथक् संस्कृति व सभ्यता का उसी ढंग से प्रचार कर रही हैं जो एक जमाने में बंगाली राष्ट्रवादी करते थे।

'नवाये वक्त' अक्सर 'भुट्टो समर्थक' की भूमिका भी अदा करता रहा है। उसने अपनी 'आला जहनियत' का इजहार करते हुए आगे लिखा—

"सरहद और बलूचिस्तान में अलगाववादी तत्त्व ज्यादातर पृथक् भाषाई व नसली पहलुओं को उभारते हैं लेकिन 'सिंधु देश' के बदबख्त झंडा बरदार तो इस्लाम पर भी खुले हमले करते हैं। इस प्रोपेगंडा के प्रचारक अधिकांश लोगों के नाम मुसलमानों जैसे होते हैं, लेकिन बेलाग जांच पड़ताल की जाये तो ये ऐसे हिन्दू साबित होंगे जिन्होंने साजिशी तौर पर मुसलमानों के नाम अपना रखे हैं...हकीकत चाहे कुछ भी हो इस मामले में चश्म पोशी और लापरवाही राष्ट्रीय अखंडता व सुरक्षा के लिए बेहद खतरनाक साबित हो सकती है !"

'सिंधु देश' के पीछे अगर काल्पनिक नामों वाले मुसलमानों का हाथ है तो फिर हैदर बख्त जतोई, शेख अयाज और गुलाम मुर्तजा सय्यद को भी 'हिन्दू साजिशी नाम' ही करार दिया जाना चाहिए या फिर मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी को भी कोई 'गैर-मुस्लिम शख्सियत' ही करार दिया जाना चाहिए जिनसे 'सिंधु देश' के लगभग सारे रहनुमा प्रभावित रहे हैं।

जी. एम. सय्यद साहब को अक्सर कठमुल्लों की ओर से काफिर वगैरह का फतवा मिलता रहा है। कुछ लोग उन्हें बराबर अपने अखबारों के जरिये मश्विरे देते रहते हैं। मशहूर तेज-तर्रार अखबार 'चट्टान' लाहौर के मौलाना शोरिश काश्मीरी ने भी उन्हें एक चट्टानी किस्म का मश्विरा दिया और 'जी. एम. सय्यद के नाम !' से एक पैगाम में लिखा कि 'सय्यद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब तहरीके पाकिस्तान के सक्रिय नेता थे, उनका दामन किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार से पवित्र है पर वे और उनके साथी राजा दाहर को हीरो मानें, यह हमें पसंद नहीं !'

राजा दाहर को हीरो मानने की खता में किसी को साजिशी-गैर मुस्लिम तो करार नहीं दिया जा सकता। 'सिंधु देश' के प्रवक्ता और समर्थक तो वही बातें करते रहे हैं, वही मांगे करते रहे हैं, उन्हीं हकों के लिए अपनी आवाज बुलंद करते रहे हैं—सरकार के सामने जिनके लिए खुद भी भुट्टो ने कभी आवाज बुलंद की थी। जल्लादों का जुल्म जारी रहा तो पाकिस्तान पुनः टूटेगा, सिंधु देश, बनेगा बन कर रहेगा !

पाकिस्तान टूटता है तो उस की जिम्मेदारी जहां 'जल्लाद सिफ्त' तानाशाही के माहरीन हुक्मरानों पर आयद होगी वहीं वहां की परले दरजे की मौका परस्त 'शैतान-सिफ्त' सियासी पार्टियो पर भी !

इस्लामवाद या 'इस्लामिस्तान' के सपने देखने वाली धर्मांध 'जमाते इस्लामी' ने 'इस्लामी नस्ल' के नाम पर बंगला देशी महिलाओं को बलात्कार की शिकार बनवाया था—पाक फौजियों द्वारा; बंगाली बुद्धिजीवियों का चुन-चुनकर खात्मा कराया था कि न ये रहेंगे न हिन्दू-साहित्य व संस्कृति रहेगी। इनका सिंध में भी यही अपराध करने का इरादा था, पर सिंधी पहले ही से सजग व सचेत थे, अतः उनका यह घिनावनी साजिश सफल न हो सकी।

साजिशी चक्र चलाने की माहिर जमाते इस्लामी की तरह कुछ अन्य तथाकथित इस्लामवादी पार्टियां भी जनरल जिया-उल-हक जैसे जल्लाद सिफ्त हुक्मरान की जाबिराना व आमिराना हुकूमत का साथ देती रहीं जिस ओछे ढंग से उसे देख निकट भविष्य में भी पाकिस्तान के स्थायित्व की आशा नहीं बंधती। कुल मिला कर यही नजर आता है और यही कहना चाहिए कि जिन स्वार्थी तत्त्वों ने अखण्ड भारत को खण्डित करके पाकिस्तान बनवाया था, उन्हीं तत्त्वों ने १९७१ में पाकिस्तान को भी खंडित कर दिया, बंगलादेश बन गया और वही तत्त्व पाकिस्तान को पुनः खंडित करने के जिम्मेदार होंगे।

'पख्तूनिस्तान' नहीं भी बन सका तो 'सिंधु देश' तो बन कर ही रहेगा —'बंगलादेश' की तरह, अगर हालत आज जैसे ही रहे तो—सही और स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना नहीं की जा सकी तो। अभी तक तो सिंध के सुलगते रहने ही के समाचार हैं। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय जागरण के इतिहास में महर्षि दयानन्द महामानव थे

—रामगोपाल शालवाले
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

संसार के इतिहास में प्रायः देखा जाता है कि समय-समय पर मानव जाति को उठाने के लिए कुछ विशिष्ट आत्माएं इस धरती पर अवतरित होती हैं। सृष्टि एक अरब सत्तानवे करोड़ वर्ष पुरानी हो चुकी हैं। महापुरुषों की लम्बी सूची में अनेक पराक्रमी व चक्रवर्ती राजा-महाराजा; ऋषि-मुनि, बड़े-बड़े योद्धा एवं उच्च कोटि के महामानव इस धरती पर पैदा हुए और अपना-अपना काम करके उसकी छाप संसार पर छोड़ गए।

संसार की राजनीति में सबसे पहला सम्राट् वैवस्वत मनु हुआ था। उन्होंने राज्य प्रणाली का आविष्कार किया और वेद के आधार पर उस समय की जनता को अपने-अपने कर्तव्य के पालन की ओर अग्रसर किया। इसी प्रकार सदियां बीतती गई और बड़े बड़े महापुरुष अपना-अपना काम करके चलते रहे। किन्तु इतिहास में उनकी अमर गाथाएं आज भी हमारे सामने हैं। जनमानस इनसे हर समय प्रेरणा ले सकता है।

आर्य भूमि भारत में लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व महाभारत के युद्ध के पश्चात् बड़े-बड़े राजाओं और महाराजाओं का पतन हुआ और वैदिक धर्म का लोप होने लगा। महाभारत के पश्चात् भारत में धर्म का जो ह्रास हुआ, उसका दिग्दर्शन इतिहास के पृष्ठों में किया जा सकता है। राजनीतिक गिरावट के साथ-साथ धार्मिक गिरावट भी देश में आई और वैदिक धर्म अनेक भागों में बंट गया। वाम मार्ग का उदय हुआ और वाममार्ग के कारण जैन और बौद्धि धर्म ने जन्म लिया। हिन्दू समाज वैष्णव शाक्त आदि अनेक सम्प्रदायों में विभाजित हो गया जिसके परिणामस्वरूप अनीश्वरवाद का प्रादुर्भाव हुआ।

जैन और बौद्धि धर्म के प्रचार का सामना करने के लिए शंकराचार्य ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म लिया और इन नास्तिक मतों का मुकाबला करने के लिए उन्होंने अद्वैत ब्रह्म का प्रतिपादन किया। जहाँ नास्तिक लोग प्रकृति की उपासना करते थे और ईश्वर की स्तुति व सत्ता से इन्कार करते थे, वहीं आचार्य शंकर ने प्रकृति का खण्डन कर एक ईश्वर का प्रचार किया। इसके बाद महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने ईश्वर जीव और प्रकृति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और धर्म के नाम पर मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, छूत-छात आदि का घोर विरोध किया। महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि धर्म के ह्रास के कारण राज्य का भी ह्रास हो गया है। इसलिए उन्होंने देश की राजनीतिक परिस्थितियों को सुधारने का काम किया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू जाति में राजनीतिक और धार्मिक चेतना पैदा हुई।

सन् १८७५ में महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में अपने देश में अपने राज्य का समर्थन किया और विदेशी राज्य की बुराइयों पर खुले रूप में अपने विचार जनता के सामने रखे।

सन् १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज मि० ह्यूम ने की। किन्तु उस समय कांग्रेस के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता का कोई लक्ष्य नहीं था बल्कि डिप्टी कमिश्नर और पुलिस अफसर भारतीय हों, यही नारा था। इसी आधार पर मि० ह्यूम ने समझौता वार्ता चलाई। किन्तु इससे १० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग कर दी थी, जिसे सन् १९३० में कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में पं० जवाहलाल नेहरू की अध्यक्षता में स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने १८७२ में कलकत्ता के प्रवन्धो कानन में बैठकर तत्कालीन वाइसराय के साथ जो भेंट की उसमें वाइसराय महोदय ने महर्षि दयानन्द से कहा—स्वामी जी! आप ईसाई, मुसलमान, पौराणिक, जैन आदि मजहबों का खण्डन करते हैं, आपकी जान को कोई खतरा तो नहीं? यदि हो तो सुरक्षा का प्रवन्ध कर दिया जायेगा। महर्षि दयानन्द ने जवाब दिया—नहीं महोदय, आपके शासन में धर्मप्रचार में मुझे किसी प्रकार का खतरा नहीं। मुझे सर्वशक्तिमान् ईश्वर पर विश्वास है, वही मेरा संरक्षक है। इस पर वाइसराय ने बड़े गम्भीर भाव से कहा—महाराज, यदि हमारा राज इतना अच्छा है तो आप जब उपदेश करते हैं, तो परमात्मा से प्रार्थना कर दिया करें कि अंग्रेजों का राज बहुत दिनों तक चलता रहे। वाइसराय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की यह बात सुनकर महर्षि दयानन्द का चेहरा तांबे की तरह लाल हो गया। उन्होंने कहा—अंग्रेज सरकार बहुत दिन तक चले, ऐसी प्रार्थना मैं नहीं कर सकता। मैं तो भगवान् से यही प्रार्थना करता हूं कि वह कैसा अच्छा दिन होगा जब अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायेंगे। इस मुलाकात के बाद अंग्रेज सरकार का रवैया स्वामी दयानन्द के प्रति बहुत कठोर हो गया और उनके पीछे सी० आई० डी० लगा दी गई। उन्हें मरवाने के षड्यन्त्र किए जाने लगे।

जोधपुर में डा० अली मर्दान खां, जिसने महर्षि का इलाज अन्तिम समय में किया था, वह भी अंग्रेजों का पिट्ठू था? राष्ट्रीय और धार्मिक चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द ने अजमेर में आज से ठीक १०० वर्ष पूर्व दीपावली के दिन इस संसार को सदैव के त्याग दिया।

३ नवम्बर से ६ नवम्बर तक हम युगपुरुष दयानन्द का निर्वाण शताब्दी समारोह मना रहे हैं। लोग कहते हैं कि आर्यसमाज की जनता को नया प्रोग्राम देना चाहिए। मेरा कहना है कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियम बनाकर धर्म का जो स्वरूप हमारे सामने रखा है, वह इतना पूर्ण है कि इससे बाहर कोई चिन्तन की चीज नहीं रही।

मैं आर्य बन्धुओं से इतना ही कहना चाहता हूं कि वे आपसी झगड़ों और मनमुटाव को दूर करें। यही दुर्भावनायें आर्यसमाज की प्रगति में रोड़ा हैं। हमें एक दूसरे पर विश्वास करके एक-दूसरे को समझने का प्रयास करना चाहिए। यज्ञों के माध्यम से धार्मिक वृत्ति का प्रचार करें। घर-घर में वैदिक ज्योति जलावें और इसका प्रचार-प्रसार करें।

३६ वर्ष की स्वतन्त्रता का सिंहावलोकन करते हुए मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि इस समय राजनैतिक पार्टियां धर्मनिरपेक्षता की आड़ में भारत के बहुमत की पग-पग पर अवहेलना कर रही हैं। इन सबका मुकाबला करने के लिए आर्यसमाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड संगठन खड़ा करके ईसाइयों, मुसलमानों व सिक्खों के अलगाववाद में नारे का देश भर में सक्रिय विरोध करने के लिए जन आन्दोलन चलाना चाहिए। आज चुपचाप काम करने का अवसर नहीं अपितु प्रोपेगण्डे की भी बड़ी आवश्यकता है। आर्य बन्धु इस दिशा में भी सदैव जागरूक रहें।

निर्वाण शताब्दी पर युगद्रष्टा स्वामी दयानन्द के चरणों में अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुऐ हम कृणवन्तों विशवमार्यम् के उद्घोष को अपने कर्यक्रम का अंग बनावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—प्रो० धर्मवीर, अजमेर

प्रभु, हमें सन्मार्ग पर ले चलो

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।।

बड़ा सुपरिचित मन्त्र है । यजुर्वेद का प्रायः अन्तिम मन्त्र है । मन्त्र का भाव भी कुछ इसी प्रकार का है जहां पर सारे प्रयत्नों की समाप्ति दृष्टिगोचर होती है, उपासक अपनी समस्त सामर्थ्य प्रभु को समर्पित कर चुका है, स्वयं को उसकी शरण में डाल चुका है, उसकी इच्छानुसार चलने के लिए अपना मानस बना चुका है । अतः प्रभु से कह रहा है आप ही ले चलो—मेरे चलने से पहुंचना सम्भव नहीं है, नहीं है ।

मन्त्र में ईश्वर को अग्नि रूप में देखा गया है । अग्नि क्रिया का सर्वाधार है, अग्नि के अभाव में क्रिया सम्भव ही नहीं है । फिर संसार की गति बिना अग्नि के कैसे सम्भव है । वह तो स्वयं अग्नि है, अग्निरूप है प्रकाश, ज्ञान क्रिया का भण्डार है ।

वह अग्नि ही है । अग्नि उसका ही नाम है । उसको अग्नि के रूप में ही प्रत्यक्ष किया गया है । भक्त जानता है —इस अग्नि के बिना चेतना और क्रिया का अनन्त भण्डार कहीं और नहीं । संसार का सारा प्रकाश उसी अग्नि से प्रकाशित है । आंख उसी के सामर्थ्य से देख पाती है, सूर्य उसी के प्रकाश से प्रकाशित है, संसार की प्रत्येक वस्तु उसी से गतिमान् है ।

अग्नि स्थूल को सूक्ष्म की ओर ले जाता है । सूक्ष्म बना देता है, अदृश्य कर देता है परन्तु प्रभाव बढ़ जाता है । स्थूल का प्रभाव कम है परन्तु सूक्ष्म होकर क्षमता बढ़ती है । अग्नि ऊर्ध्वगामी है, कहीं भी कभी भी उसका स्वरूप दृष्टि में आया तो वह ऊपर की ओर ही जाने वाला होगा । सूक्ष्म होगा तो ही ऊपर की ओर उठ सकेगा । स्थूल की तो अधोगति अवश्यम्भावी है । अतः अग्नि सूक्ष्म है, ऊर्ध्वगति वाला है, व्यापक है । अपने साथ दूसरों को भी विस्तृत करने की, व्यापक करने की क्षमता रखता है —वह ज्ञान का प्रकाश गति का कारण है, समिधा को प्रज्वलित कर अपने साथ प्रकाशित करता है, समिधा के साथ जलता है । प्रकाशित होता है, समाप्त हो जाता है, समाप्त कर देता है परन्तु वास्तव में समाप्त नहीं होता और न करता है । वह तो सूक्ष्म और व्यापक होकर अदृश्य होता है, स्थूल दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

से ओझल हो जाता है। भक्त समिधा है तभी तो परमेश्वर को अग्नि के रूप में देख पाता है। गुरु के पास शिष्य समित्पाणि जाता है, बिना समिधा बने कुछ नहीं पाया जा सकता। समिधा बनना स्वयं को जलने के लिए—अग्नि में ढलने के लिए स्वयं को तैयार करना है। उसके लिए अपने को समर्पित कर देना है, कहीं कमी रही तो बात बनेगी नहीं। समिधा नहीं रही, समिधा गीली रही तो जलेगी नहीं। जल्दी नहीं जलेगी, बहुत धुआं होगा, प्रकाश नहीं होगा। अतः समिधा की—सूखी हुई समिधा की आवश्यकता है। तभी समिधा बना भक्त परमेश्वर को 'अग्ने' कहता है।

अग्नि से प्रार्थना करता है—सुपथा नय ! आश्चर्य है—चलने के लिए पैर दिये हैं, विवेक के लिए, पथ की पहचान के लिए बुद्धि दी है, परन्तु भक्त जानता है इन परों से वहां नहीं पहुंचा जा सकता, भटका जा सकता है। संसार में भटकता रहता है, भटकता रहेगा जब तक वह यह नहीं समझ लेगा कि इन पैरों से नहीं चला जा सकता, वहां तक नहीं पहुंचा जा सकता। तब उपासक कहता है—अग्ने ! नय—ले चल, ले जा। आज तक मैं जो भी चला, जो चलने का दम्भ किया वह तो व्यर्थ ही है—न मैं चला न मैं चल सकता हूं, आप ही ले चलो—मैं आपकी शरण में हूं। आप जहां ले जायेंगे वास्तव में वही सुपथ है। जिसे मैं सुपथ समझ रहा था वह तो पथ ही नहीं है—अन्धकूप है। मैं उसमें पड़ा चलने के भ्रम में रहा। मैं तो अब समझा हूं कि सुपथ तो तेरे बिना होता ही नहीं। इसलिए अग्ने ! मुझे सुपथ से ले चल।

जब मैं जानता था कि मैं जानता हूं तब मेरा अहंकार मुझे कुछ जानने नहीं देता था। मैं जानने के स्थान पर जानने के दम्भ में जीता रहा हूं। जब मैंने तुझ ज्ञान के सागर को जाना है तो मैंने जाना है कि मैं कुछ भी नहीं जान पाया हूं, मैं कुछ भी जानने में समर्थ नहीं। मैं एक तुच्छ कण से स्वयं को जानने वाला समझता रहा हूं। हे अग्ने ! आप ज्ञानमय हो—प्रकाशमय हो। आप ही मुझे ले चलो, अपने मार्ग से ले चलो—मैं आपके बिना नहीं चल पाऊंगा।

मैंने सोचा था कि मेरा सामर्थ्य बहुत है, मैं सारे संसार का ऐश्वर्य एकत्रित कर लूंगा। सारा सुख मेरे पास होगा। मैंने जीवन भर प्रयत्न करके बहुत इकट्ठा किया बड़े-बड़े महल खड़े किये, बहुत सारी भूमि का अधिपति बना और बहुत सम्पत्ति भी एकत्रित की। सारा संसार मेरी प्रशंसा करता था परन्तु आज मैं देखता हूं कि मैंने सारी आयू और सारा सामर्थ्य पत्थरों के ढोने में लगा दिया और एक मजदूर जितना भी नहीं पा सका—जो पत्थर तो ढोता है परन्तु बदले में कुछ पाकर संतुष्ट हो जाता है। परन्तु मैं देखता हूं कि जिसको मैं ऐश्वर्य समझता था वह धन है ही नहीं, जिसको मैं सुख समझता रहा वह तो दुःख का ही मूल है। भला मैं उससे सुख किस प्रकार प्राप्त कर सकता हूं ? इसलिए मेरा चला पथ सुपथ नहीं था,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कभी भी नहीं हो सकता। सुपथ तो वही है जो रयि को, वास्तविक धन को, सत्यसुख को, प्राप्त करा सके, वहां तक पहुंचा सके। इसलिए आप ही सुख को जानते हो। हे देव ! सारे कर्मों को, सारे ज्ञान को आप ही जानते हो, अतः आप ही सुमार्ग पर लेकर चलो, दूसरा कोई ऐसा करने में समर्थ नहीं होगा।

अबतो मेरा यह सामर्थ्य भी नहीं कि मैं अपने आपको पाप से अलग कर रु कूं। मेरे संस्कार इस प्रकार के हो गये हैं—जन्म-जन्मान्तर की छाया मेरे चित्त पर सञ्चित है। मैं बहुत प्रयत्न करता हूं परन्तु संस्कार उसी ओर ले जाता है जहां से दूर होना चाहता हूं। क्योंकि पाप का मार्ग सीधा नहीं होता। वह टेढ़ा-मेढ़ा होता है। उसमें आंखमिचौनी है। हर मोड़ पर आगे कुछ पाने की आशा है और प्रलोभन बढ़ता ही जाता है। पाप से छूटने का मेरा सारा प्रयत्न धरा का धरा रह जाता है। आश्चर्य होता है कि टेढ़े मार्ग पर चलने का, बुराई करने का सामर्थ्य मुझ में कहां से आ जाता है और सुपथ पर--सरल पथ पर चलना आसान होना चाहिए पर उधर कदम ही नहीं उठते। क्यों नहीं उठते, यही तो मैं नहीं जान पाया।

ज्ञानी कहते हैं कि धार्मिक वह है जो सरल है,। पता नहीं सब धार्मिक क्यों नहीं हो पाते। जो सहज है, सरल है वह कठिन है, जो टेढ़ा है, कुटिल है, दुर्लभ है, वही सरल प्रतीत होता है। इस संसार की रीति ही कुछ ऐसी है। यहां धर्म कठिन लगता है—अधर्म सरल और सत्य अस्वाभाविक लगता है, झूठ, सहज, ईमानदारी अनहोनी लगती है—बेईमानी आदत। तभी तो मैं छूट नहीं पाता हे अग्ने ! मुझे सरल और सहज होना ही तो नहीं आता। प्रभु, तुम ही मुझे कुटिल मार्ग की कठिनता से हटाकर पुण्य के सहज-सरल मार्ग का पथिक बना सकते हो। यही मेरी बार-बार आप से प्रार्थना है। मैं प्रार्थी होकर— याचक होकर आपकी शरण में आया हूं। मैं नमः करता हूं—बार-बार करता हूं—मेरा मुझ में अब कुछ भी नहीं बचा। मैं तो जैसा हूं तेरे आधीन हूं। यह नम्रता निरभिमानता ही सरलता का आधार है। जब नम्रता आ गयी फिर कुछ करना शेष नहीं रहा। सारे शास्त्र,, सारे उपदेश, सारे साधन यहां तक पहुंचने के लिए हैं। यहां से आगे जाने का सामर्थ्य तो किसी में नहीं—वह तो सब ईश्वर की इच्छा से ही संभव है।

जब एक बार बरेली में स्वामी दयानन्द के भाषण हो रहे थे तो प्रतिदिन ईश्वर के अस्तित्व पर नवयुवक मुन्शीराम तर्क करते थे। अन्तिम दिन युवक मुंशीराम ने कहा कि मुझे तर्क से तो आपने निरुत्तर कर दिया परन्तु विश्वास नहीं हुआ। तब महाराज ने उत्तर दिया—नवयुवक, यह तो ईश्वर की इच्छा से होगा। जब प्रभु चाहेंगे तब तुम्हारी आत्मा में प्रकाश होगा।

बस यही सूत्र है जो विश्वास का आधार है—

भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरत्व की ओर

वेद में जीवात्मा को हंस की उपाधि दी गई है। जिस प्रकार गन्तव्य प्राप्त होने तक हंस अपने दोनों पंखों को ऊपर-नीचे करता हुआ निरन्तर गतिमान् रहता है लेकिन गन्तव्य प्राप्त हो जाने पर वह शान्त और स्थिर हो जाता है—उसका भटकाव समाप्त हो जाता है, ठीक इसी प्रकार जीवात्मा भी शरीर के श्वास-प्रश्वास रूपी पंखों पर आरूढ़ होकर निरन्तर तब तक अनेक योनियों में आता जाता रहता है, जब तक इसका साक्षात्कार उस परमपिता परमात्मा से नहीं हो जाता तथा यह भूमा सुख में निमग्न नहीं हो जाता। परमात्मा ने हमें इस संसार में दुःख उठाने के लिए कदापि नहीं भेजा। लेकिन हमारी दौड़ स्वयं ही जब विपरीत दिशा की ओर हो जाती है तो हमें दुःख मिलना स्वाभाविक हो जाता है। अग्नि हाथ में डालें और वह न जले, यह कैसे हो सकता है ? सांसारिक-विषय वासनाएं अग्नि से क्या कम हैं ? जैसा हमारा लक्ष्य होता है – वैसे ही हमारे प्रयास भी होते हैं। जैसे हमारे प्रयास होंगे वैसी ही हमें प्राप्ति भी होगी। लेकिन क्योंकि जीवात्मा का स्वभाव आनन्द में रहना है, उस परमेश्वर के भूमा सुख के सान्निध्य में रहना है अतः वह तब तक गतिमय रहेगा जब तक उसे वह स्थिति प्राप्त नहीं हो जाती।

इहैव सन्तोऽथ विद्मस्तद् वयम्, न चेदवेदीन्महती विनष्टिः।
ये तद्विदुरमृतास्ते भवन्ति, अथेतरे दुःखमेवापि यन्ति ॥

प्रभो, इसी जन्म के अन्दर यदि हम आपको साक्षात् कर लेवें तो अच्छी बात है, अन्यथा महान् अनर्थ होगा। जो जन आपको जान जाते हैं वे अमर हो जाते हैं, दूसरे दुःख के भागी बनते हैं। अर्थात् जीवात्मा का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है और इस हंस रूपी जीवात्मा को यह मनुष्य शरीर रूपी पंख केवलमात्र इसलिए मिले हैं कि वह उस स्थिति-विशेष को प्राप्त कर ले अन्यथा महान् अनर्थ होगा क्योंकि पुनः न जाने कितनी और योनियों में भटकना पड़ेगा।

मानव जीवन के इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विलम्ब करना स्वयं अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने के समान है। मल, विक्षेप एवं आवरण को हटाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय को प्रकाशित करना होगा। उस परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित आत्मा की स्थिति अतुलनीय हो जाती है, क्योंकि वह प्रकाश साधारण प्रकाश नहीं बल्कि—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम् नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्, तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

अर्थात् उस परमात्मा के प्रकाश के तुल्य न तो इस सूर्य का प्रकाश है, न चन्द्रमा और तारों का और न ही बिजली का। अग्नि का तो कहना ही क्या? उसके प्रकाश से ही सब प्रकाशित हैं। उस प्रकाश को प्राप्त करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। हमारा एक-एक क्षण उसके ही चिन्तन में व्यतीत होना चाहिए अन्यथा विनाश सामने है। मृत्यु निश्चित है। सांसारिक दुःख, कष्ट, क्लेश आदि भी मृत्यु के समान ही हैं। वेद माता कहती है कि मृत्यु से छुटकारा पाने का केवलमात्र एक रास्ता है और वह है उस प्रभु को प्राप्त करना। और कोई रास्ता नहीं।

वेदाहमेतं पुरुषं महांतमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥

हमें यह मानव शरीर मिला है। यदि हम इसका सदुपयोग करें तो हम उस परमात्मा को पा सकते हैं। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। इसी बात को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन शब्दों में कहा है—"मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र मगर फल भोगने में परतन्त्र है।" हम अच्छे मार्ग पर चल रहे हैं या बुरे मार्ग पर —इसकी पहचान भी हमें स्वयं कदम-कदम पर मिलती रहती है। एक व्यक्ति को बुखार हो जाता है। बुखार इस बात का द्योतक है कि शरीर के भीतर खराबी पैदा हो गई है और खराबी का कारण वह व्यक्ति स्वयं है। उसके वश में था कि वह अपने शरीर को इस स्थिति तक न पहुंचने देता। उस व्यक्ति द्वारा शरीर के प्रति की गई किसी न किसी अनियमितता का परिणाम ही बुखार के रूप में उसे भोगना पड़ा। ठीक इसी प्रकार हमें अपने जीवन के सम्बन्ध में एक मोटी-सी कसौटी रखनी चाहिए कि यदि हम सुखी हैं, शान्त हैं तो समझिए कि हम ठीक मार्ग पर चल रहे हैं, लेकिन इसके विपरीत यदि हम अशान्त हैं तो यह इस बात का द्योतक है कि हमारा जीवन ठीक पथ पर नहीं चल रहा। हम किसी गलत रास्ते पर चल निकले हैं, क्योंकि गलती का परिणाम ही दुःख होता है। हम किसी गन्दे स्थान की ओर जा रहे हों तो दूर से ही दुर्गन्ध हमें इस बात की सूचना दे देगी और इसके विपरीत यदि हम फूलों से भरे किसी बाग की ओर जा रहे हों तो सुगन्ध हमें इस बात की सूचना भी दे देगी। मनुष्य को कदम-कदम पर स्वयं अपने आपका पता लगता रहता है। मनुष्य स्वयं को जितना स्वयं समझ सकता है उतना और कोई नहीं समझ सकता। इसलिए यह सत्य मार्ग की जो यात्रा है, प्रभु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति का यह जो अभियान है इसका संचालक स्वयं मनुष्य ही है। इस मार्ग पर मनुष्य को अकेले ही चलना है, क्योंकि यह दौड़ बाहर की ओर नहीं बल्कि भीतर की ओर है। मनुष्य के अपने भीतर ही सब कुछ है। भीतरी खजानों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य कमर कस ले तो उसे जो कुछ मिलेगा, जितना कुछ मिलेगा, उसे पाकर वह आश्चर्यचकित हो जाएगा। लेकिन हमारी दौड़ केवल बाहर की दौड़ है। हम भीतर की ओर चल ही नहीं पाते। बाहरी वस्तुएं संचित करने में दिन-रात एक कर रहे हैं मगर भीतर जो अक्षय भण्डार है उससे अपरिचित हैं।

हमारे सभी क्रिया-कलाप शरीर तक ही सीमित हैं। यदि इससे आगे कुछ चलते भी है तो वह मन तक ही सीमित रह जाता है। जो हमारा वास्तविक स्वरूप है उससे हम अनभिज्ञ हैं। कोई विरला ही है जो उससे परिचित होना चाहता है। इससे बड़ा आश्चर्य और क्या होगा कि हम स्वयं से ही अपरिचित हैं? हम केवलमात्र यह शरीर तो नहीं। हम यदि शरीर होते तो यह तो मृत्यु के बाद भी विद्यमान रहता है लेकिन उसे तो सम्बन्धी लोग जला देते हैं। हम शरीर नहीं, शरीर हमारा है। तो फिर हम क्या हैं? अन्तर्यात्रा से हमें इसी का पता लगेगा। यह शरीर रूपी रथ तो सजाना-संवारना है ही। इसे स्वस्थ और सबल भी बनाना है, मगर इस रथ पर बैठकर जिस मालिक ने अपने लक्ष्य तक पहुंचाना है उसे भी तो उसके गन्तव्य पर पहुंचाना है। आज सभी उस लक्ष्य को भुलाकर चल रहे हैं। यह कैसी दौड़ है? यह हमें कहां ले जाएगी? निश्चित मानिए, यह दौड़ हमें मृत्यु तक तो ले जाएगी मगर अमरत्व तक नहीं। अमरत्व पाने के लिए भीतर की ओर चलना होगा। श्रद्धा और विश्वास के साथ चलना होगा। निरन्तर चलना होगा। सुख और अमरत्व प्राप्त करने का और कोई रास्ता है ही नहीं। यह भी ठीक है कि ऐसे व्यक्ति बहुतायत में नहीं हैं।

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयंभूः तस्मात् पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदप्रावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्।

यह कठोपनिषद् का वचन है। स्वयम्भू ने इन्द्रियों को बहिर्मुखी बनाया है। इसलिए प्राणी बाहर की ओर देखता है, अपने भीतर नहीं देखता। संसार में कोई विरला धीर पुरुष ही आत्मा और अमृतत्व की इच्छा करता हुआ आंखें बन्द करके अन्तरात्मा को देखता है।

हमारे समाज में ऐसे मनुष्यों का बाहुल्य है जो मनुष्य और समाज की शान्ति तथा व्यवस्था के लिए रोटी, कपड़ा और मकान का नारा लगाते हैं। उनका यह नारा अपने स्थान पर ठीक है। ये वस्तुएं हमें दुःख से तो दूर रख सकती हैं मगर चिर सुख का सम्पादन नहीं कर सकतीं। ये सब शरीर की आवश्यक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताएं हैं, पूरी होनी चाहिएं मगर रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध हो जाने पर भी हम देखते हैं कि इन वस्तुओं से मनुष्य सदा के लिए सुखी नहीं हो जाता। उसकी दौड़ समाप्त नहीं हो जाती। शरीर की आवश्यकताएं पूरी हो जाने पर मन अपनी आवश्यकताएं प्रस्तुत करता है। इसके लिए मनुष्य साहित्य एवं कला आदि से अपना सम्पर्क स्थापित करता है। भावनाओं का आदान-प्रदान करता है। अपने लिए नए-नए भौतिक साधन जुटाता है। लेकिन जहां शरीर पुराने में अर्थात् एक 'रूटीन' में बंधना पसन्द करता है उसके एकदम विपरीत मन प्रतिक्षण नवीनता चाहता है। वह पुराने से बंधना नहीं चाहता बल्कि बदला व; चाहता है। मानसिक सुख प्राप्त करने के लिए व्यक्ति परिवार में, शराब में सिनेमा में, संगीत में, साहित्य में बार-बार डुबकी लगाता है मगर वह और ही और की मांग करता चला जाता है— तृप्त नहीं होता। उसे सुख मिलता अवश्य है मगर उस सुख की अपनी एक सीमा होती है। अन्ततः वह सुख ही दुःख में परिवर्तित हो जाता है तथा मनुष्य जीवन के चौराहे पर दुःखी का दुःखी खड़ा रहता है। इस दुःख से छूटने के लिए व्यक्ति को शरीर और मन की पकड़ से आगे बढ़ना होगा। सुकरात ने कहा है कि जो केवल शरीर को सन्तुष्ट करता है वह पशु है, लेकिन जो मन की ही सन्तुष्टि में लगा रहता है वह भी मनुष्य नहीं है। इन दोनों से आगे आत्मा की ओर चलना होगा जो वास्तविक आनन्द का द्वार है। आत्मा का स्वभाव ही आनन्द की अवस्था है। जब तक हम उस वास्तविक स्वरूप को प्राप्त नहीं होंगे तब तक यात्री बनकर ही चलना होगा। भला उस जीव से अधिक मूर्ख और कौन होगा जो गन्तव्य प्राप्त न करके केवल यात्रा पर ही रहना पसन्द करेगा। लेकिन हममें से बहुत-से ऐसा ही कर रहे हैं। हममें से बहुत-से विपरीत दिशा को चल पड़े हैं। हम केवल रोटी, कपड़ा और मकान प्राप्त करके तृप्ति चाहते हैं। हम विषय वासना तथा अन्य भोगों में आनन्द पाना चाहते हैं। मगर विषयों का सुख क्षणिक होता है। मनुष्य पुनः किसी नए विषय से स्वयं को जोड़ता है मगर वहां से मिलने वाला सुख भी उसे तृप्त नहीं कर पाता। इसप्रकार खोज-खोज में ही मनुष्य का अन्त समय आ जाता है। हमारे ऋषि कह गए हैं "भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः" अर्थात् मनुष्य विषयों को नहीं भोगता, विषय ही मनुष्य को भोगने लगते हैं। तृष्णाएं समाप्त नहीं होतीं, मनुष्य ही एक दिन समाप्त हो जाता है। विषयों की ओर हमारी दौड़ की दशा यह हो जाती है कि हम भोक्ता नहीं बल्कि भोग्य बन जाते हैं।

हमारे जीवन का परम लक्ष्य है उस परमात्मा की आनन्द रूपी गोद का सान्निध्य प्राप्त करना। हमारी यह युगों-युगों की यात्रा तब तक चलती ही रहेगी जब तक हम उस स्थिति को प्राप्त नहीं हो जाते। इसके लिए हमें शरीर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन की पकड़ से आगे बढ़ना होगा। विषय वासनाओं की कंटीली पगडंडी को छोड़कर राजपथ के पथिक बनना होगा। हम विषय न भोग बल्कि हम भोक्ता बनकर रहें। कठोपनिषद् का ऋषि हमारे समक्ष जीवन को जीने का एक क्रम रखते हुए कहता है—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु, बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।
इन्द्रियाणि हयानाहुः विषयांस्तेषु गोचरान् आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्या-हुर्मनीषिणः॥

अर्थात् मनुष्य का शरीर एक रथ के समान है। इस रथ का स्वामी आत्मा, कोचवान बुद्धि, लगाम मन और इन्द्रियां घोड़े हैं। इस रथ को यदि गन्तव्य तक पहुंचाना है तो इसका क्रम यह होना चाहिए कि आत्मा के अधीन बुद्धि, बुद्धि के अधीन मन और मन के अधिकार में इन्द्रियां। आज के मनुष्य की स्थिति इस क्रम के एकदम विपरीत हो गई है। वह इन्द्रियों का मालिक नहीं बल्कि इन्द्रियां उसकी मालिक बन बैठी हैं। यही कारण है कि आज व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में सभी जगह अव्यवस्था है। दुःख है—कष्ट है। जब तक इस क्रम को बदला नहीं जाएगा तब तक सुख और आनन्द भी प्राप्त नहीं हो सकता। पता नहीं मनुष्य कितने जन्म ले-लेकर, कितनी योनियों में जा-जाकर मरुस्थल के मृग के समान विषय-वासनाओं के पीछे तृप्ति की चाह लेकर दौड़ता-दौड़ता समाप्त होता रहेगा। तो फिर क्यों न इसी जन्म में रथ को सही दिशा की ओर हांक दें।

अहम् इन्द्रो न परा जिग्य इद् धनम् न मृत्यवे ऽवतस्थे कदाचन।
सोममिन्मा सुन्वन्त याचता वसु, न मे पूरवः सख्ये रिषाथन॥

ऋक् १०।४८।५

मैं इन्द्र हूं। मैं आत्मा हूं कभी नहीं मरूंगा। जो मरता है वह मेरा शरीर है; आग,वायु, मिट्टी आकाश तथा पानी के मेल से बना है। जब यह मेल बिखर जाता है, तो मैं अपने कर्मानुसार दूसरे शरीर में वास कर लेता हूं। मुझे मौत का कभी इन्तजार नहीं करना पड़ता। मैं मौत के दायरे से बाहर हूं। सदा सुख, सौभाग्य और आनंद पाने के लिए देवजन मेरी ही शरण में आते हैं। मैं आत्मा हूं, यह जान लेने के बाद आत्मज्ञानी को कोई दुःख नहीं होता, कोई हानि नहीं होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—प्रेमचन्द्र शास्त्री

युधिष्ठिर की धर्मपरीक्षा

द्रौपदी के हरण के बाद पांडव लोग काम्यक बन को छोड़कर फिर द्वैतवन में आ गए। वहां वे सुखपूर्वक रहने लगे। एक दिन घूमते-घूमते वे एक वटवृक्ष के पास पहुंचे और भूख प्यास से शिथिल होकर उसकी शीतल छाया में बैठ गए। तब धर्मराज ने नकुल से कहा —भैया ! तुम्हारे सब भाई प्यासे और थके हुए हैं। यहां पास ही कहीं जल हो तो देखो। नकुल बड़े भाई की आज्ञा पाते ही एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़ गए और इधर-उधर देखकर कहने लगे —राजन् ! मुझे जल के पास बड़े बहुत-से वृक्ष दृष्टिगोचर हो रहे हैं और सारसों का शब्द भी सुनाई दे रहा है, इसलिए वहां अवश्य ही जल होगा। युधिष्ठिर ने कहा—तुम शीघ्र जाओ और तरकसों में जल भर लाओ।

ज्येष्ठ भ्राता की आज्ञा पाकर नकुल तेजी से चले और जल्दी ही वे जलाशय के पास पहुंच गए। वहां निर्मल जल देखकर ज्यों ही वे पीने के लिए झुके कि यक्ष ने कहा—'नकुल ! साहस न करो। पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो, उसके बाद जल पीना और ले जाना। नकुल को बड़ी प्यास लगी हुई थी, उसने यक्ष की बात पर ध्यान नहीं दिया। उसने ज्योंही वह जल पीया कि वह भूमि पर गिर पड़ा। वह जलाशय यक्ष का था।

नकुल को देर हुई देख युधिष्ठिर ने सहदेव को भेजा। सहदेव की भी वही दशा हुई। फिर उन्होंने अर्जुन को भेजा और उसके बाद भीमसेन को। सबने वैसा ही किया और सब भूमि पर गिर पड़े

महाराज युधिष्ठिर भीम को बहुत विलम्ब हुआ देखकर बड़े चिन्तित हुए। फिर वे स्वयं ही जाने को खड़े हो गये। जलाशय के तट पर पहुंच कर उन्होंने देखा कि उनके चारों भाई भूमि पर गिरे पड़े हैं। उन्हें देखकर युधिष्ठिर बहुत शोकातुर हुए। वे सोचने लगे कि इन्हें किसने मारा है ? इनके शरीर पर कोई आघात भी नहीं दीखता। कहीं दुर्योधन ने यह जलाशय विषैला तो नहीं करवा दिया। किन्तु यह जलाशय भी निर्मल दिखाई देता है। इनके शरीर पर विष का भी कोई प्रभाव नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इसी प्रकार अनेक संकल्प-विकल्प करके वे जल में उतरने को तैयार हुए। यक्ष ने कहा कि मैंने ही तुम्हारे भाइयों को मारा है। यदि तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दोगे, तो तुम्हारी भी यही दशा होगी। इसलिए तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दे दो, फिर जल पीना और ले भी जाना।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष एक वृक्ष के ऊपर बैठा था। युधिष्ठिर ने उससे कहा कि आप मुझसे प्रश्न कीजिये, मैं अपनी बुद्धि के अनुसार उनके उत्तर दूंगा।

यक्ष ने पूछा—सूर्य को कौन उदित करता है? उसके चारों ओर कौन चलते हैं? उसे अस्त कौन करता है? और वह किसमें प्रतिष्ठित होता है?

युधिष्ठिर बोले—ब्रह्म सूर्य को उदित करता है, देवता उसके चारों ओर चलते हैं। धर्म उसे अस्त करता है और वह सत्य में प्रतिष्ठित है।

यक्ष—ब्राह्मणों में देवत्व क्या है? उनमें सत्पुरुषों का-सा धर्म क्या है? मनुष्यता क्या है और असत्पुरुषों का-सा आचरण क्या है?

युधिष्ठिर—वेदों का स्वाध्याय ही ब्राह्मणों में देवत्व है, तप सत्पुरुषों का-सा धर्म है, मरना मनुष्यता है और निन्दा करना असत्पुरुषों का-सा आचरण।

यक्ष—ऐसा कौन पुरुष है जो इन्द्रियों के विषय को अनुभव करते हुए, श्वास लेते हुए, बुद्धिमान् होते हुए भी वास्तव में जीवित नहीं है?

युधिष्ठिर—जो देवता, अतिथि, सेवक, माता-पिता और आत्मा—इनका पोषण नहीं करता, वह श्वास लेने पर भी जीवित नहीं है।

यक्ष—पृथ्वी से भारी क्या है? आकाश से ऊंचा क्या है? वायु से भी तेज चलने वाला क्या है और तिनकों से भी हल्का क्या है?

युधिष्ठिर—माता भूमि से बढ़कर है, पिता आकाश से भी ऊंचा है, मन वायु से भी तेज चलने वाला है और चिन्ता तिनकों से भी हल्की है।

यक्ष—सोने पर पलक कौन नहीं मूंदता? उत्पन्न होने पर चेष्टा कौन नहीं करता? हृदय किसमें नहीं है और वेग से कौन बढ़ता है?

युधिष्ठिर—मछली सोने पर भी पलक नहीं मूंदती, अण्डा उत्पन्न होने पर भी चेष्टा नहीं करता, पत्थर में हृदय नहीं है और नदी वेग से बढ़ती है।

यक्ष—समस्त प्राणियों का अतिथि कौन है? सनातन क्या है? अमृत क्या हैं और सारा जगत् क्या है?

युधिष्ठिर—अग्नि समस्त प्राणियों का अतिथि है। अविनाशी नित्य धर्म ही सनातन है, गौ का दूध अमृत है और वायु यह सारा जगत् है।

यक्ष—अकेला कौन विचरता है? एक बार उत्पन्न होकर पुनः कौन उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होता है ? शीत की औषधि क्या है और महान क्षेत्र क्या है ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिर—सूर्य अकेला विचरता है, चन्द्रमा एक बार जन्म लेकर पुनः जन्म लेता, अग्नि शीत की औषधि है और पृथ्वी बड़ा भारी क्षेत्र है।

यक्ष—धर्म का मुख्य स्थान क्या है ? यज्ञ का मुख्य स्थान क्या है ? स्वर्ग का मुख्य स्थान क्या है और सुख का मुख्य स्थान क्या है ?

युधिष्ठिर—धर्म का मुख्य स्थान दक्षता है, यज्ञ का मुख्य स्थान दान है, स्वर्ग का मुख्य स्थान सत्य है और सुख का मुख्य स्थान शील है।

यक्ष— उत्तम गुण क्या है ? उत्तम धन क्या है ? प्रधान लाभ क्या है और श्रेष्ठ सुख क्या है ?

युधिष्ठिर— दक्षता उत्तम गुण है, शास्त्रज्ञान उत्तम धन है, आरोग्य प्रधान लाभ है और सन्तोष श्रेष्ठ सुख है।

यक्ष—लोक में श्रेष्ठ धर्म क्या है, नित्य फल वाला धर्म क्या है, किसको वश में रखने पर शोक नहीं होता और किनके साथ हुई सन्धि नष्ट नहीं होती ?

युधिष्ठिर—दया श्रेष्ठ धर्म है, वेदोक्त धर्म नित्य फल वाला है, मन को वश में रखने पर शोक नहीं होता और सत्पुरुषों के साथ हुई सन्धि नष्ट नहीं होती।

यक्ष—उत्तम क्षमा क्या है, लज्जा किसे कहते हैं, तप का लक्षण क्या है और दम क्या कहलाता है ?

युधिष्ठिर-- द्वन्द्वों का सहना क्षमा है, न करने योग्य काम से दूर रहना लज्जा है, अपने धर्म में रहना तप है और मन का दमन दम है।

यक्ष— मनुष्य का दुर्जय शत्रु कौन है ? अनन्त व्याधि क्या है ? साधु कौन माना जाता है और असाधु किसे कहते हैं ?

युधिष्ठिर—क्रोध दुर्जय शत्रु है, लोभ अनन्त व्याधि है, समस्त प्राणियों का हित करने वाला साधु और निर्दय पुरुष असाधु है।

इस प्रकार यक्ष के प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर युधिष्ठिर ने दे दिया। युधिष्ठिर से प्रसन्न होकर यक्ष ने उसके सब भाइयों को जीवित कर दिया। तदनन्तर एक क्षण में ही उनकी सब भूख-प्यास जाती रही। इसके बाद वे यक्ष की आज्ञा लेकर वहां से चल पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—श्री व्यथित हृदय

मां की अंगूठी

राजपुत्र के अन्नप्राशन का दिन था। अन्नप्राशन के साथ ही राजकुमार का नामकरण संस्कार भी सम्पूर्ण होने जा रहा था। राजभवन में चारों ओर उत्साह था, उल्लास था।

राजा अपनी महारानी से बोल उटे, "मदालसे, मैं इस पुत्र का नाम 'धनेश्वर' रखूंगा।"

महारानी का नाम मदालसा था। मदालसा बड़े ऊंचे विचारों की थीं। उनके मन में संसार के प्रति विरक्ति थी। वे धन, राज्य, पृथ्वी और कुटुम्ब आदि के सुखों को महत्त्व नहीं देती थीं। वे महत्त्व देती थीं जीवन की वास्तविकता को। उनका विचार था कि मनुष्य संसार में जन्म लेकर यह समझे कि वह क्या है और कौन है? मनुष्य को इसी बात को दृष्टि में रखकर अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

मदालसा अपने पुत्रों को इसी बात की शिक्षा देती थी। इसके पूर्व उनके चार और पुत्र हो चुके थे। पर वे उनकी शिक्षा से विरक्त बन चुके थे, संन्यासी होकर वन में जाकर जप-तप में संलग्न थे। वे अपने इस पांचवें पुत्र को भी अपने ही मार्ग पर चलाना चाहती थीं।

पर महाराज को यह बात स्वीकार नहीं थी। उनके चार-चार पुत्र वन में जा चुके थे। पुत्र-वियोग की ज्वाला सदा उनके हृदय में धधकती ही रहती थी। अतः जब यह पांचवां पुत्र हुआ, तो वे बिगड़ गए। उन्होंने निश्चय किया, कि वे अपने इस पांचवें पुत्र को बहुत बड़ा नृपति बना करके रहेंगे।

किन्तु महारानी मदालसा भी सहज ही अपने पंथ से क्यों हटने लगीं? वे राजकुमार के 'धनेश्वर' नाम को सुनकर चौंक उठीं! 'धनेश्वर' का अर्थ तो है धन का बहुत बड़ा स्वामी! इसका तात्पर्य तो यह है कि उसमें धन के लिए बहुत बड़ा लोभ होगा, और जब मन में धन के लिए अधिक लोभ होगा, तो वह लोगों पर तरह-तरह के अत्याचार करेगा। पर यह तो वास्तविक जीवन नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदालसा बोल उठी, "धनेश्वर नाम ठीक नहीं महाराज ! यह तो लोभ का सूचक है। कोई ऐसा नाम रखिए, जो आत्म-बोध का सूचक हो !"

महाराज ने विस्मय की दृष्टि से मदालसा की ओर देखा। उन्होंने मदालसा की ओर देखते-ही-देखते कहा, "मदालसे ! तुम मेरे चार-चार पुत्रों को आत्मज्ञान की शिक्षा देकर वन में भेज चुकी हो। अब इस पांचवें पुत्र पर तो दया करो ! आखिर मेरे पश्चात् कौन राज्य चलायेगा ? मेरे बाद कौन इस राज्य और विस्तृत धरती का स्वामी बनेगा ?"

महाराज कातर नेत्रों से महारानी की ओर देखने लगे। उनके नेत्रों से साफ-साफ प्रकट हो रहा था कि वे महारानी से इस पांचवें पुत्र की भिक्षा मांग रहे हैं।

महारानी मदालसा द्रवित हो उठीं। यद्यपि उन्हें महाराज की बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगी, किन्तु फिर भी वे महाराज के कातर नेत्रों की ओर देखती हुई बोल उठीं, "अच्छी बात है, आप अपने पांचवें पुत्र को बहुत बड़ा नृपति ही बनाइए। मैं आपके रास्ते में बाधक नहीं बनूंगी।"

महारानी मदालसा ने अपने इस पांचवें पुत्र का नाम 'अलर्क' रखा। 'अलर्क' जब कुछ बड़े हुए, तो महाराज उन्हें महारानी से दूर रखने लगे। क्योंकि महाराज के मन में भय था कि, कहीं अलर्क महारानी के प्रभाव में आकर संसार से विरक्त न बन जाएं !

महारानी मदालसा अलर्क की ओर से उदासीन तो हो गईं, पर अलर्क को लेकर वे बराबर चिन्तित रहती थीं। वे सोचती रहती थीं कि उनके कुल पांच पुत्र हैं। उन्होंने अपने चार पुत्रों को तो जीवन के सच्चे मार्ग पर आगे चला दिया, किन्तु इस पांचवें पुत्र 'अलर्क' का क्या होगा ? क्या यह अज्ञान के गहरे अंधेरे में ही डूबा रहेगा ? क्या इसका उद्धार न होगा ?

आखिर, महारानी मदालसा ने अलर्क के उद्धार के लिए भी उपाय सोच लिया। उन्होंने एक पत्र पर कुछ उपदेश वाक्य लिखकर उसे बड़े कौशल से सोने की एक अंगूठी के भीतर छिपाकर रख दिया और उसके ऊपर नग जड़ दिया।

मदालसा ने बड़े स्नेह से उस अंगूठी को उपहार रूप में अलर्क को देते हुए कहा, "बेटा, मेरे पास तुम्हें देने के लिए इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है ! तुम मेरी इस भेंट को ग्रहण करो। जब भी कभी तुम पर दारुण आपदा आये, तुम इस अंगूठी के नग को खोलना। तुम्हें इस अंगूठी के नग के भीतर एक ऐसी अनमोल वस्तु मिलेगी, जिससे तुम उस आपदा पर विजय प्राप्त कर लोगे।"

अलर्क ने अपनी मां के इस उपहार को बड़े आदर से ग्रहण किया। उन्होंने उसे लेकर अपनी अंगुली में धारण कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर महाराज के मन में तो इतने से ही आशंका डोल उठी। वे यह सोचकर चिन्तित हो उठे कि कहीं मदालसा राजकुमार के ऊपर अपना प्रभाव तो नहीं डाल रही ? किन्तु फिर भी वे मौन ही रहे !

महाराज मौन तो रहे, पर यह तो सत्य है ही कि उनके मन में निरन्तर आशंका की आंधी उठा करती थी। आखिर उन्होंने मदालसा के प्रभाव से बचाने के लिए अलर्क को दूर—बड़ी दूर काशी भेज दिया।

कुछ दिनों के पश्चा महाराजत् और मदालसा—दोनों स्वर्गगामी हो गए। अलर्क अपने पिता के राजसिंहासन पर बैठकर बहुत बड़े भू-भाग पर राज्य करने लगे।

अलर्क के जो चारों भाई संन्यासी हो गये थे, उन्हें जब अलर्क के राज्यारोहण का समाचार मिला, तो वे बड़े दुःखी हुए। उन्होंने सोचा, "हम चारों भाई तो त्याग के मार्ग पर चल रहे हैं, परअलर्क ने आसक्ति का मार्ग ग्रहण किया है ! फिर इसका उद्धार किस प्रकार होगा ? क्योंकि आसक्ति के मार्ग पर चलने से तो वह नाना प्रकार के पाप-कर्मों में फंस जाएगा।

चारों भाई मिलकर अलर्क के उद्धार के उपाय सोचने लगे। आखिर उन्होंने एक उपाय खोज ही लिया।

चारों भाई, मन-ही-मन सोचकर, अलर्क के एक शत्रु-नृपति की सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने शत्रु-नृपति से निवेदन किया, "महाराज, हम चारों भाई बाल्यावस्था में ही घर छोड़कर निकल गए थे। हमारे छोटे भाई 'अलर्क' ने सुयोग पाकर पिता के राज्य पर अधिकार स्थापित कर लिया। वह हमारे भाग को भी हड़प लेना चाहता है। आपसे प्रार्थना है कि आप हमारी सहायता करें, हम अपने अधिकार के लिए उससे युद्ध करेंगे।" हमें न्याय दिलाने की कृपा करें।

वह नृपति अलर्क का शत्रु तो था ही ! वह चारों भाइयों का पक्ष लेकर अलर्क से युद्ध करने के लिए तैयार हो गया।

पर युद्ध के पूर्व उसने अलर्क की सेवा में दूत भेजकर यह सन्देश भेजा कि वे अपने भाइयों का भाग उन्हें दे दे। पर 'अलर्क' ने कोरा उत्तर दिया। उन्होंने कहा, "मेरा कोई भाई नहीं है। मैं किसी को एक कौड़ी भी न दूंगा।"

शत्रु-नृपति कुपित हो उठा। उसने एक विशाल सेना लेकर अलर्क पर आक्रमण कर दिया। अलर्क भी अपनी वाहिनी लेकर रण के मैदान में जा डटे। अलर्क ने बड़ी वीरता के साथ शत्रु-नृपति का सामना किया, पर वे हार गये। शत्रु-नृपति ने उनके राज्य, उनके भू-भाग—सब पर अधिकार स्थापित कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अलर्क' निराश्रित हो गए, निस्सहाय ! ! वे शत्रु-नृपति के भय से इधर-उधर घूमने लगे।

दोपहर का समय था। अलर्क एक वृक्ष की छाया में बैठकर, मन-ही-मन अपनी दारुण स्थिति पर सोच-विचार कर रहे थे, "आह, यह कैसा भाग्य का खेल है! कभी राजा थे, उनके पास सब-कुछ था—राज्य, सोना, भवन, नौकर-चाकर सब-कुछ ! पर आज वे निराश्रित हैं। इतने निराश्रित कि उनके पास विश्राम के लिए दो गज धरती भी नहीं !"

अलर्क का मन सोचते-सोचते उद्विग्न हो उठा।

हठात्, अलर्क को अपनी मां मदालसा की याद आ गई ! जब मदालसा की याद आ गई, तो उनके कानों में मदालसा की यह बात भी गूंज उठी, "बेटा, तुम्हें देने के लिए इस अंगूठी को छोड़कर मेरे पास और कोई चीज नहीं। मेरी इस भेंट को स्वीकार करो। जब भी कभी तुम पर आपदा आये, अंगूठी के नग को खोलना। अंगूठी के नग के भीतर तुम्हें वह वस्तु मिलेगी, जिससे तुम आपदा पर विजय प्राप्त कर लोगे।"

अलर्क की रगों में नवजीवन की लहरें-सी लहरा उठीं। वह मन-ही-मन सोच उठा कि आज से बढ़कर दारुण आपदा उस पर और कब आयेगी ? फिर वह क्यों न अपनी मां की दी हुई अंगूठी के नग को खोलकर देखें कि उसमें वह कौन-सी वस्तु है ?"

अलर्क ने उंगली से अंगूठी निकालकर शीघ्र उसके नग को तोड़ दिया। नग के भीतर पत्र था। पत्र में लिखा था—

"यह संसार नाशवान् है। संसार की वस्तुएं भी नाशवान् हैं। केवल आत्मा ही सत्य है। अतः मनुष्य को राज्य के लिए नहीं, आत्मा के लिए ही युद्ध करना चाहिए। यही मानव जीवन का सार है।"

अलर्क पत्र में अंकित उपदेश की पंक्तियों को पढ़ने लगा। पढ़ते-ही-पढ़ते उसके मन में वैराग्य पैदा हो उठा। राज्य, धन, पृथ्वी—सब-कुछ उसे तुच्छ समझ पड़ने लगा। उसने अपने चारों भाइयों को पत्र लिखकर उन पर यह प्रकट किया, "वे सुख से राज्य करें। 'अलर्क' को अब कुछ न चाहिए।" क्योंकि उसने अब जीवन का वास्तविक मार्ग पा लिया है। अब वह सब-कुछ छोड़कर केवल आत्मा की प्राप्ति के लिए ही प्रयत्न करेगा।"

अलर्क के चारों भाई यही तो चाहते थे। शत्रु-नृपति से मिलकर युद्ध करना तो एक उपाय-मात्र था। चारों भाई आनंदित हो उठे। वे शत्रु-नृपति को राज्य-भार सौंपकर स्वयं भी आत्मा की खोज में लग गए।

धन्य थी मदालसा और धन्य थे उसके पुत्र ! !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की ६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु: ५० पैसे
३. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ? ५० पैसे
४. हिन्दुओं को चेतावनी— वेदभिक्षु: ५० पैसे
५. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर ५ रु०
६. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर ५० पैसे
७. पोस्टर—दो प्रकार के ८० पैसे
८. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी ५० पैसे
९. शुद्धि का मंत्र—कुंवर चांदकरण शारदा ८० पैसे
१०. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी ५० पैसे
११. हिन्दू जागो ! देश बचाओ ! ५० पैसे
१२. इस्लाम—एक परिचय ५० पैसे
१३. Bible in the Balance ६० पैसे
१४. A Challenge t theChristian Faith २५ पैसे
१५. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु: ५० पैसे
१६. पादरियों को चुनौती ५० पैसे
१७. बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी ५० पैसे
१८. क्या ईसा खुदा का बेटा था ? ५० पैसे
१९. और पादरी भाग गया ५० पैसे
२०. Christianity Unmasked १.०० रु०
२१. The Clarion Call ४० पैसे
२२. जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक ६ रु०
२३. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ? ५० पैसे
२४. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ? ५० पैसे
२५. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ? ६० पैसे
२६. जन-ज्ञान का महान् हिन्दू विशेषांक ६)

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन

५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन

प्रत्येक आदेश क साथ १/४ धन अगाऊ भेजें।

दयानन्द संस्थान, नई दल्ली–५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म की वेदी पर

खण्ड काव्य

—राधेश्याम 'आर्य, विद्यावाचस्पति

प्रथम सर्ग

पतन पराजय की वेला में
तड़प रहा था जहां उदास—
वहा रहा था अश्रु, दुखी हो
भारत का तापित इतिहास ।

नष्ट हुई थी भारत के वीरों
की अतुलित शक्ति महान् ।
जिस पर कभी किया करता था,
सारा महिमण्डल अभिमान ।

नष्ट हुआ आर्यत्व हमारा
पतित-दलित थे सारे आर्य ।
निर्मम-सी स्थिति में भीषण,
परिवर्तन था अपरिहार्य ।

औरंगजेब मुगल शासक था
हृदयहीन, दिल्ली का अधिपति ।
वह मदान्ध था, अत्याचारी,
भ्रष्ट हुई थी उसकी मति ।

राज्य लोभ में शाहजहां को
बन्दी गृह में बन्द किया ।
अपने सारे बन्धु बान्धवों
का निर्दय हो कत्ल किया ।

स्वयं मानता था अपने को
मुस्लिम मत का सच्चा सेवक ।
किया प्रदर्शित अतिकट्टरपन
अन्य मतों का मारा हक ।

नियमित था, संयमित सदा हो
करता था, केवल वह काम ।
भारत में निर्बन्ध निरन्तर
जिससे बढ़े दीन इस्लाम ।

पाठ सदा करता कुरान का
मुस्लित मत का पक्का भक्त ।
मात्र मुसलमानों के हित में
सदा रहा करता अनुरक्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू और मुसलमानों में
उसने किया सतत पक्षपात।
उसके कार्यक्रमों ने संस्कृति
पर कर डाला वज्र निपात।

हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य भावना
सारी नष्ट-विनष्ट हुई।
अकबर द्वारा प्रतिपादित
सब परम्परा भी भ्रष्ट हुई।

भीषण भ्रष्टाचारों से अभि-
शप्त हुई हिन्दू जनता।
मुरझाई अत्याचारों से
हिन्दू-मुस्लिम पुष्पलता।

'हिन्दू ग्रहण करें मत मुस्लिम'
यही रहा उसका आदेश।
आज्ञा का जो करें उल्लंघन-
'मृत्युदण्ड दो, था निर्देश।

हिन्दू जनता की कटवाई गई
शिखाएं-यज्ञ उपवीत।
नष्ट हुई सभ्यता सुपावन
नष्ट हुआ गर्वित अतीत।

अग्नि समर्पित हुए हमारे
धर्मग्रन्थ और ग्रन्थागार।
राणा की धरती पर मुस्लिम
मत का हुआ बलात् प्रचार।

शहंशाह की आज्ञा थी यह
मत मुस्लिम स्वीकार करो।
अन्य मतों के अनुयायी जो
उनके सब अधिकार हरो।

तलवारों के बल पर हिन्दू
करने लगे ग्रहण इस्लाम।
आज्ञोल्लंघन करने वाले
जाने लगे ईश के धाम।

अत्याचारों से पीड़ित भारत-
भू अधिक कराह उठी।
आश्रयहीन महीतल पर
हिन्दू जनता कह आह उठी।

रुख पा करके शहंशाह का
बढ़ा मौलवियों में उन्माद।
प्रतिक्षण बढ़ने लगे मजहबी
बिना किसी आधार, विवाद।

वेद-शास्त्र सब नष्ट हुए थे,
नष्ट हुई हिन्दू संस्कृति।
चीत्कार कर उठी दिशाएं
कांप उठी सहसा संसृति।

सारे भारत की धरती पर
चारों ओर अंधेरा था।
रश्मिरथी के दिव्य देश को
गहन तिमिर ने घेरा था।

द्वितीय सर्ग

धैर्य-धर्म पर संकट छाया
लगी सुसंस्कृति दांव पर।
अत्याचारी शासक के थे
नेत्र लगे फिर गांव पर।

बीच भंवर में नाव पड़ी थी
पावन हिन्दू धर्म की।
जकड़ उठीं जंजीरें अनगिन
मुस्लिम मत के मर्म की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्जर जीवन, जटिल जाति का
छाया घन अज्ञान का।
बाध्य हुआ, पीता था भारत
घूंट सतत अपमान का।

ऊंच-नीच के भेदभाव से
कलुषित हुई सुसभ्यता।
बढ़ी निरन्तर भरत-सुतों में
कुटिलक्रूर अहम्मन्यता।

विघटित हुआ समाज सुदृढ़तम
जाति-पांति दुश्चक्र में।
फंसी मनीषी परम्परा फिर
क्रूर काल के चक्र—में।

गयी रसातल में भारत की
मान्यता और वदान्यता।
कल्पवृक्ष वेदों पर छायी
मतवादी बैषम्य लता।

अपराजेय पराजित होकर
हुए अतीव निराश थे।
पन्थ प्रशस्ति रहित था उनका
मग पर हसित हताश थे।

नष्ट हुए भरत की वगिया
के सब सुन्दर फूल थे।
सुमन सुवासित सौम्य पथों पर
बिखरे चहुंदिशि शूल थे।

वातावरण प्रदूषित था,
छाया कटु कलुष वितान था।
सत्य-धर्म का होता दिल्ली
में अतिशय अपमान था।

धर्म-धुरन्धर वीरों के
कट रहे यथावत् शीश थे।
ज्वाला उगल रहे निर्दय हो
सौम्य युक्त रजनीश थे।

सत्य-धर्म का ही आपस में
विह्वल बहुल विरोध था।
त्याग-तपस्या के पथ पर
गतिरोधक था, अवरोध था।

भारत को, इस भीषण बेला
में अतिशय था आवश्यक।
मिले महामानव कोई जो
बने धर्म का पथप्रदर्शक।

करे विवेचन स्थितियों का
कोई सही तथा सम्यक्।
त्याग तथा बलिदान भावना
से वह बने सत्य सेवक।

अनाचार की, अन्यायों की
करे निडर हो सद् व्याख्या।
निर्मित करे जयी वीरों की
अनगिन अनुदिन अनु आख्या।

प्राण समर्पित करदे अपना
देश तथा निज धर्म पर।
गर्व करे सर्वस्व समर्पण
करके अपने कर्म पर।

अडिग हिमालय-सा अड जाए
जाति-पांति की आन पर।
तन, मन, धन सर्वस्व लुटा दे,
भारत मां की शान पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राणा-सा योद्धा प्रतीक हो
जन-जन के विश्वास का ।
करता रहे प्रतितिधित्व वह
पावन परम प्रकाश का ।

चिंतित कभी न संकट में हो
खुशी रहे मधुमास की।
निर्जन वन में घूम सके
वह रोटी खाकर घास की ।

तन जाए पर धर्म न जाए
दिव्य बने यह भावना ।
देशप्रेम की उत्कट, धारा
बहे हृदय सद्भावना ।

अन्यायी से टकराने की
भव्य भावना आविर्भूत ।
त्याग-तपस्या के घन
उर में, घिरे निरन्तर रहें अकूत ।

नव्य चेतना का निशिवासर
अन्तर में उन्मेष हो ।
स्वतन्त्रता के लिए समर्पित
भाव सबल सविशेष हो ।

आत्मप्रगति की सदा रहे
मन में अतुलित आकांक्षा
रहें सदा कटिबद्ध समुद्यत
दें अति कठिन परीक्षा ।

देश-धर्म की बलिवेदी पर
करे निछावर प्राण सुमन
निर्भयता से करे निरन्तर
बलि के पथ का अनुगमन

मदान्ध शासकों से रक्षा कर
जो निर्बल को त्राण दे ।
धर्म सुरक्षा हेतु हर्ष से
बलि वेदी पर प्राण दें ।

अनय राज को निर्भयता से
गर्जन कर ललकार दे ।
अहंकार अत्याचारी का
बलिदानों से मार दे ।

धर्म-ध्वजा जिसकी प्रतिभा पर
गगनांगन में उठे लहर।
अनाचार के गूढ़ गढ़ों पर
जो ठा देता प्रलय कहर ।

प्रादुर्भाव हुआ ऐसे ही
नर पुंगान का देश में ।
जाग्रत हुई सुनिर्मल-सी फिर
नूतन ज्योति स्वदेश में ।

दिल्ली का अधिपति मदांध हो
मचा रहा आतंक था ।
पुण्य प्रवाहों में सलिला के
जमा हुआ अति पंक था ।

नवां गुरु सिक्खों का आया
पंच-सरित पंजाब में ।
जिसकी आभा फैली फिरतो
गंग-यमुन दो-आब में ।

साहस-शौर्य-सदाशय सज्जन
'तेग बहादुर सिंह' था ।
शहंशाह दिल्लीपति के हित
निर्भय वह नरसिंह था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेग बहादुर ने सिक्खों को
बना दिया था क्रान्ति पथिक ।
धर्म बदलने वाले—को
दुत्कारा गया तभी धिक्‌धिक्‌ ।

ऐसा वीर गुरु पाकर के
सिक्खों में आयी नवशक्ति
धर्मवेदि पर प्राण समर्पित
करने की जागी नव भक्ति ।

वैदिक धर्म सुरक्षा में थे
तेग बहादुर सिंह उद्यत ।
प्राण सुमन अर्पित करने को
प्रतिक्षण रहते रहे समुद्यत ।

गुरुवर्य ने जन-जन मन में
नव जागृति का फूंका मन्त्र ।
अंगड़ाई ले उठी भरत-भू
जाग उठा भारत परतन्त्र ।

अनय राज से टक्कर ले कर
हिला दिया सिंहासन था ।
डोल उठा औरंगजेब का
कुटिल और कटु शासन था ।

फड़क उठी थीं सिक्ख भुजायें
तलवारें चमचमा उठीं ।
किरपानों की कट-कट ध्वनियां
धरती पर तमतमा उठीं ।

वीर भूमि पंजाब हमारी
जगी नवलतम बेश में ।
परिवर्तन आ गया चतुर्दिक्‌
परिवर्तित परिवेश में ।

निकले वीर सपूत यहाँ के
हिन्दू धर्म के बन रक्षक ।
हुए प्रकम्पित म्लेच्छ राज्य
के, सारे के सारे भक्षक ।

शहंशाह ने सुन यह गाथा
देकर स्वजनों को आदेश ।
बुलाया तेग बहादुर सिंह को
आग बबूला हुआ विशेष ।

दिल्लीपति के सम्मुख गुरुवर
हुआ उपस्थित कुछ दिन बाद ।
उनकी निर्भयता, निर्मलता
बनी हुई थी नव अपवाद ।

तेग बहादुर सिंह वीर था
सत्य सनातन धर्म पथिक ।
आभामय व्यक्तित्व सुपावन
तेज प्रदीप्ति पवित्र अधिक ।

मुखमण्डल पर गुरुवर्य के
दीप्त जयी-से भाव थे ।
संघर्षों से टकराने हित
जाग उठे अति चाव थे ।

सत्य सनातन वेद धर्म की
रक्षा हित प्रतिबद्ध थे ।
लेकर प्राण हथेली पर
सिर देने और कटिबद्ध थे ।

भय से रहित, सहित साहस
के, गुरुवर भाव-विभोर थे ।
एक तरफ वे खड़े अकेले
म्लेच्छ अधिक उस ओर थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्लीपति ने कहा गुरु से
'मत मुस्लिम स्वीकार करो'।
गुरु बनो तुम फिर मेरे भी
सुख सम्पत्ति अपार भरो।'

'नहीं ! नहीं ! मैं धर्म सुवैदिक
नहीं समझता किंचित् त्याज्य।
मिले हमें दिल्ली क्या सारी
धरती का भी यदि साम्राज्य।'

सर्वश्रेष्ठ है धर्म हमारा
दिखला रहा हमें सन्मार्ग।
हिन्दू धर्म बताता सबको,
कहा गुरु ने—'मुक्ति सुमार्ग।'

सुनकर वाणी गुरुश्रेष्ठ की
औरंगजेब हुआ क्रोधित।
उसकी मनोदशा को उसके
लोगों ने कर दिया अनूदित।

गर्जा दिल्लीपति कर्कश स्वर
"करो ग्रहण तुम मत इस्लाम।
आज्ञोल्लंघन हुआ कहीं तो
उधड़ेगी तेरी तन चाम।

नहीं जानते तुम कुरान का
क्या अब तक भी दिव्यादेश ?
बने नहीं जो व्यक्ति मुसलमां
सिर से अलग करो तन शेष।

इसीलिए कहता हूं तुमसे
बनो अभी इस्लाम समर्थक।
क्योंकि न ऐसा करने पर
कटे न तेरा शीश निरर्थक।"

क्रूर वचन सुन शहंशाह के
हुआ नहीं वह भय आक्रान्त।
शीश लिए जाने का भय भी
नहीं कर सका उन्हें श्रान्त।

"शीश कटे या काया मेरी
टुकड़े-टुकड़े हो जाए।
लेकिन धर्म न बदलूंगा मैं
चाहे हिमगिरि हिल जाए।

सत्य सनातन धर्म सुवैदिक
अधिक प्राण से भी प्यारा।
सत्य-शिवं-सुन्दरता पूरित
पावन हिन्दू धर्म हमारा।

मानवता की गरिमा के हैं
चतुर्वेद जाग्रत प्रहरी।
भव-वारिधि में फँसे मनुज
हित, वेद हमारे सुदृढ़ तरी।

वेदाधारित धर्म हमारा
दिव्य ज्योति का प्रखर दिनेश।
जिसकी गरिमा महिमण्डल पर
आदि काल से रही विशेष।

धर्म हमारा अम्बर से भी
अधिक महाविस्तीर्ण है।
कठिन परीक्षाओं में भी वह
रहा सदा उत्तीर्ण है।

हिमगिरि के उत्तुंग श्रृंग से
भी अति अधिक ऊंचाई है।
सारे मत इस धरती के
करते जिसकी सिवकाई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भानु सदृश है वेद हमारे
दीपक सदृश कुरान है ।
हिन्दू धर्म पवित्र हमारा
भूमण्डल अभिमान है ।

कौन मूर्ख जो स्वर्ण त्याग कर
मिट्टी का कण अपनाए ।
कायर कौन भला भारत में
जो बलि से भी डर जाए ।

ऋषियों-मुनियों द्वारा है
निर्मित यह हिन्दू धर्म की भीत ।
राम-कृष्ण के वंशज होते
नहीं कभी बलि से भयभीत ।

हंसते-हंसते प्रफुल्लता से
निर्भय शीश चढ़ाते हम ।
तलवारों की तीव्र धार पर
अविरल कदम बढ़ाते हम ।

दृढ़प्रतिज्ञ रहे हैं हिन्दू
जब से है यह सृष्टि चली ।
सदा धर्म की बलिवेदी पर
चढ़ी सहस सुकुमार कली ।

प्रेम-दया का, समस्वरता का
पाठ-पढ़ाता वैदिक धर्म ।
मानव को मानवता पथ पर
रहा चलाता वैदिक धर्म ।

मुस्लिम मत की तरह नहीं
फैलाता है यह घृणा-द्वेष ।
नफरत नहीं सिखाता हमको
नहीं बढ़ाता है विद्वेष ।

ऐसा पावन धर्म हमारा
नहीं त्याग हम सकते हैं ।
एक नहीं क्या शीश सहस्रों
धर्म वेदि पर बढ़ते हैं ।

रे मदान्ध दिल्ली के अधिपति
ले सकता तू भौतिक देह ।
मिटा नहीं सकता है पर तू
कभी धर्म से अतुलित नेह ।

दिव्य आत्मा ही अविकल है
रहती सदा धर्म सम्पृक्त ।
शस्त्र न जिसका वध कर सकते
वारि न कर सकती है सिक्त ।

अतः तुम्हारी तलवारों का
किंचित् नहीं हमें है भय
हमें हमारे दिव्य धर्म ने
बज्रादपि कर दिया अभय ।

अमृत-सी यह गुरुवर वाणी
दिल्लीपति को लगी कठोर ।
'लज्जित बिल्ली खम्भा नोचे'
त्यों वह हुआ विद्वेष विभोर ।

आज्ञा दी औरंगजेब ने—
'शीघ्र काट लो इसका शीश ।
यह तो काफिर, नीच महा है
सत्वर डालो इसको पीस ।'

आज्ञा सुन कर दिल्लीपति की
चमक उठी तलवार थी ।
क्षणोपरान्त वह तेग बहादुर
के सीने के पार थी ।

धर्मवेदि पर प्राण सुमन
अर्पित करके वह चला गया ।
पर सिक्खों को संघर्षी
वह, मर कर, भीषण बना गया ।

दसवें गुरु बने गोविन्द सिंह
शहीद हुए जब तेग बहादुर ।
अपने पिता सदृश वे भी
थे धर्म सुरक्षा हित आतुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पिता सदृश उनमें भी
शौर्य और शक्ति महान् थी।
देश-धर्म पर मर मिटने की
अतुलित इच्छा, आन थी।

दिन दूना और रात चौगुना
बढ़ा नृपति का अत्याचार।
बढ़ा निरन्तर हिन्दू पर
असहनीय अति अनाचार।

बर्बरता से भ्रात हमारे
ग्रहण किया करते इस्लाम।
आनाकानी यदि करते बस
उनका होता काम तमाम।

गोविन्द सिंह ने अत्याचारों
का निर्भय हो किया विरोध।
मुस्लिम मत की बर्बरता का
किया अभय बन कर प्रतिरोध।

सुगठित सैन्य गठित की
सिक्खों की, जो वीरत्व-मूर्त्ति।
जिसने लोहा लिया शत्रु से
किया शौर्य-साहस आपूर्त्ति।

छक्के छुड़ा दिए दिल्ली की
सेना के, जो रही विशाल।
जाग्रत किया, रहे उद्दीपित
सदियों तक जो धर्म मशाल।

सिक्खों का वीरत्व देख कर
घबड़ा गयी मुगल सेना।
लघ्वाकार परन्तु दृढ़ी थी
आक्रमणों से बिखरे ना।

अति विशाल ले करके सेना
मुगलों ने प्रस्थान किया।
घेर लिया गढ़ गोविन्द सिंह का
पंचनदी अपमान किया।

लड़े सिक्ख विकराल रूप धर
मुगलों को कर दिया प्रकम्पित।
समर भूमि में लाखों मुगलों
का वध करके, किया उसे चित।

लेकिन सिक्ख रहे मुट्ठी भर
दिल्ली सेना अमित अपार।
बढ़ते रहे मुगल सैनिक थे
बचे इधर केवल दो-चार।

हाहाकार मचा युद्ध स्थल
मची उसी क्षण थी हलचल।
इधर-उधर सैनिक थे भागे
गोविन्द सिंह भी गए निकल।

उसी समय गोविन्द सिंह जी के
धोखे-से सुत गए पकड़।
वीर जोरावर सिंह तथा लघु
भ्रात फतह सिंह गए अकड़।

आयु जोरावर सिंह की केवल
रही बहुत कम थी, नौ वर्ष।
और फतहसिंह लघु भ्राता की
केवल सात रही उस वर्ष।

सिंह-शावकों-से वे दोनों
भारत मां के थे दो फूल।
धर्म सरित के दोनों भाई
अविरल बने रहे दो कूल।

दोनों मां के अमर सपूतों
में साहस था भरा हुआ।
लख उनकी वीरत्व भावना
यवनों का दल डरा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों भ्राताओं में अनुपम
पुञ्ज तेज का रहा समाहित ।
तत्त्व धर्म के उन दोनों में
रहे स्वाभाविक अन्तर्निहित ।

तृतीय सर्ग

वीर जोरावर सिंह तथा
वीर फतह सिंह की कथा,
शव में भी नव प्राण फूंकती
कभी दिखाती दैन्य व्यथा ।

दोनों बच्चों का उत्कर्ष,
आयु सात तथा नौ वर्ष,
ऐसे बलिदानी बच्चों से
युग युग गर्वित भारतवर्ष ।

मां ने यही दिया संदेश
रहा पिता का यह उपदेश,
दृढ़ रहना सर्वदा धर्म पर
कितना ही कोई दे क्लेश ।

यही गुरु जी का आशीष,
विस्मृत कभी न करना ईश,
सदा धर्म की बलिवेदी पर
हर्षित हो कटवाना शीश ।

याद कहानी रही पितामह,
गाथा याद रही वर भामह,
बलि सुगन्ध गुरु तेग बहादुर
बिखराती थी महक महामह ।

पिता तुल्य थी वीर भावना,
धर्म विजय की रही कामना,
उनका था व्यक्तित्व समादृत
शान्ति-शक्ति से सब्य सना ।

सीखा कुछ करना जीवन में,
दिव्य भावना रही स्वमन में,
फहर रही है कीर्ति पताका
जिनकी धरती तथा गगन में ।

लगा हुआ था राजमहल में
सूबा सरहिन्द का दरबार ।
मुगल सैनिकों के घेरे में
आए दो बालक सुकुमार ।

दोनों बालक तेज पुन्ज थे
निर्भयता की थे प्रतिमूर्ति ।
विस्मित थे दरबारी सारे
देख भ्रातृद्वय विमल विभूति ।

इधर-उधर वे देख रहे थे,
जैसे सिंहों की सन्तान ।
शीश उठा ऊपर दोनों का
झलक रहा था दिव्य अभिमान ।

स्वंय खड़ा हो साहस जैसे,
ऐसे लगते थे द्वय भ्रात ।
त्याग तथा बलिदान भावना
से आपूरित उनका गात ।

धर्मवीरता टपक रही थी ।
गरिमामय था मुखमण्डल ।
सौम्य-सरल-सी-प्रकृति स्वाभाविक
उनकी थी परिपूर्ण विमल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काजी और सभासद सारे
हुए वहां पर एकत्रित ।
न्यायालय में यवनों के था
मिलता न्याय अतीव विचित्र ।

समस्त काजियों-सभासदों की
बनी हुई थी यह सहमति ।
सबने एक स्वर से अपनी
दी चिल्ला कर यह सम्मति ।

दोनों बालक गोविन्द सिंह के
अपना लें यदि दीन इस्लाम ।
उन्हें मुक्ति फिर मिले कैद से
तथा मिले अत्यधिक इनाम ।

यदि यह अपना धर्म नहीं
करते है अभी यहां परिवर्तित
प्राणदण्ड फिर मिले इन्हें
ये बच्चे है अरि के, परिचित ।

गोविन्द सिंह से बदला लेने,
का है यही समय समुचित ।
बढ़े हमारा धर्म सुपावन
निर्भय यही अतीव उचित ।

काजी तथा सभासद् सारे,
इस विचार से थे सहमत ।
इसीलिए सूबा सरहिन्द ने
बड़े भ्रात का पूछा अभिमत ।

बालक तुम सुकुमार जोरावर !
मुस्लिम मत स्वीकार करो ।
जीवन धन्य बनाओ अपना
नहीं तनिक इनकार करो !'

धर्म बदलने की बातें सुन
बालक खड़ा रहा, हो शान्त !
यवनों के अत्याचारों से
नहीं मात्र भी था वह भ्रान्त ।

शान्त देखकर उस बालक को
क्रुद्ध हुआ सूबा सरहिन्द ।
वीर जोरावर से फिर बोला
क्रोध हुआ जब कुछ-कुछ मन्द ।

'कान खोल कर सुन लो बालक !
तुम्हें मुसलमान है बनना ।
शहंशाह का मजहब तुमको
निश्चय ही, स्वीकृत है करना ।

मुसलमान क्यों हम बन जाएं,
धर्म हमारा परम पुनीत ।
धर्म नहीं बदलेंगें निश्चय
तनिक नहीं हैं हम भयभीत ।

सुनकर बात जोरावर सिंह की
निर्भय-सी वाणी गम्भीर ।
काजी तथा सभासद् सारे
हुए उसी क्षण अधिक अधीर ।

क्रोधित हो सूबा सरहिन्द ने,
बाल जोरावर को ललकारा ।
बने नहीं जो मुसलमान फिर
उसके सिर पर चले दुधारा ।

यही हमारे दिव्य ग्रन्थ का
है आदेश सही सुस्पष्ट ।
कत्ल करो मुसलिम विद्रोही
का, वह समझा जाय निकृष्ट ।

सूबा सरहिन्द की बातें सुन,
तनिक नहीं वह घबराया ।
वीर जोरावर ने निर्भय हो
अपना दृढ़ संकल्प सुनाया

अपना धर्म न छोड़ो, कहते
सदा हमारे हैं सद्ग्रन्थ ।
सर्वश्रेष्ट है धर्म वेद का
अन्य सभी निकृष्ठ कुपन्थ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी भय हमें दिखाओ
बदल न सकते हैं हम धर्म ।
तुम अत्याचारी ! क्या जानो
पावन वेदों का शुचि मर्म ।

शहंशाह ही नहीं, अगर हो
समग्र भूमि सम्राट् कुपित ।
फिर भी सुन लो, अरे म्लेच्छो !
धर्म न कर सकते परिवर्तित

शीश कटा सकते हैं हम
पर, शीश नहीं झुक सकता है ।
भारत का बच्चा बच्चा,
तुम सुन लो, धर्म पर मरता है ।

जो चाहो वह दण्ड मुझे दो
तनिक नहीं हमको परवाह ।
आज धर्म की रक्षा हित ही
शीश चढ़ाने की है चाह ।

सुनकर के भय रहित सुपावनि
वीर जोरावर की वाणी ।
दाँतों तले गई उंगली, यवनों
की, सहज सुकल्याणी ।

यवनों ने फिर ऐश्वर्यों का
सुख-सुविधा का लोभ दिया ।
लेकिन उसके बदले में अति
व्यक्त बाल ने क्षोभ किया ।

"धर्म छोड़कर सुख-सुविधा
क्या ? स्वर्गों का साम्राज्य मिले ।
वैभव भव्य मिले चाहे या
ऐश्वर्यों का राज्य मिले ।

फिर भी वह सब नरक तुल्य
है, धर्म हिन्दुओं के सम्मुख ।
कभी नहीं हम हो सकते
है पावन वैदिक धर्म विमुखी"

बात न मानी बाल सिंह ने
जब यवनों के अभिमत की ।
ठुकराया बातें यवनों कों
पारित जो सर्वसम्मति की ।

फतेहसिंह से प्रश्न वही
फिर दोहराया सूबा सरहिन्द
'ग्रहण करोगे मुस्लिम मत
तुम मृत्यु दण्ड से हो पाबन्द ।'

फतेह सिंह ने भी निर्भयता
से, वह उत्तर दोहराया ।
जो उसके अग्रज भ्राता ने
यवनों को था बतलाया ।

आग बबूला हुए यवन सब
काजी तथा सभासद् सारे ।
लोभ तथा भय अधिक दिखा
कर, ध्येय पूर्ति में थे वे हारे ।

दोनों वीर कुमारों का वध
यवनों को था बना अभीष्ट ।
मुस्लिम मत का ही प्रचार हो
यही उन्हें था लगता ईष्ट ।

काजी-सभासदों में सारे
मानवता का रहा अभाव ।
पारित किया उन्होंने भीषण
अत्याचार भरा प्रस्ताव ।

यह प्रस्ताव कलंक भरा था
कलमष युक्त, असीमित क्रूर ।
सभासदों की न्याय भावना
भाग गयी थी अतिशय दूर ।

एक स्वर से सभासदों ने
न्याय रहित दे डाला निर्णय
"दोनों इन सुकुमार बालकों को
चुन दो दीवाल अभय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एक सीध में इन दोनों को
करके खड़ा उठाओ भीत ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इनके चारों ओर उठी दीवाल
करेगी अति भयभीत ।

हो सकता है मृत्यु देखकर
परिवर्तित हो इनके भाव ।
बिह्वलता पूरित शरीर में
साहस का फिर रहे अभाव ।"

चतुर्थ सर्ग

क्रूर लिए इतिहास भयावह
फैला धरती पर इस्लाम ।
दिल दहलाने वाला इसका
रहा घृणित-सा दूषित काम ।

धर्म सुरक्षा हेतु भ्रात दो
शीश कटाने को सन्नद्ध ।
परम्परा से वीर जाति की
दोनों थे वे दृढ़ आबद्ध ।

सम्मति से काजी-मुल्लाओं
की जो पारित था प्रस्ताव ।
उसने किया हृदय पर सबके
एक अमिट-सा भीषण घाव ।

देश दृढ़ी-व्रतधारी बच्चों
का फिर अटल सुदृढ़ निश्चय ।
देख सिंह के शावक जैसे
साहस तथा शक्ति का संचय ।

सूबा सरहिन्द ने बच्चों को
चुनने का आदेश दिया ।
क्षण में ही हो गई शुरू थी
कार्यान्वयन की प्रक्रिया ।

दोनों भ्रात निश्शंक बने-से
अगल बगल में खड़े हुए ।
धर्म धुरन्धर-से वे दोनों
अविचल-से थे अड़े हुए ।

ईंटें लगे लगाने कारी
गर बच्चों के चारों ओर ।
मानवता पर घिरा कुहासा
धरती कांप उठी घनघोर ।

धीरे-धीरे निर्मित होने
लगी प्राण घातक दीवाल ।
काल जयी बच्चों के सम्मुख
मड़राया फिर घातक काल ।

पहुंची जब दीवाल वक्ष तक
उन्हें समेटे आंचल में ।
यवनों ने सोचा बदलेगा
धर्म, फंसा अब दल-दल में ।

सूबा सरहिन्द ने बच्चों पर
झूठा प्रेम और मोह दिखाया ।
शिक्षा देकर बाल कुमारों
से था उसने तब यह फरमाया ।

"अभी समय है बच्चो
बदलो अपने पूर्व के निश्चय को ।
ग्रहण करो इस्लामी मत
अब तोड़ो अपने निश्चय को ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे तुम दोनों सुकुमारों
के बच जाए कोमल प्राण ।
मृत्यु दण्ड से मिले तुम्हें
फिर जीवनदायी सत्वर प्राण ।"

दृढ़ता से दोनों बच्चों ने
लगा दिया यह शुचि नारा ।
"मुझे नहीं है चाह प्राण की,
प्यारा धर्म है हमारा ।"

बढ़ने लगी निरन्तर दोनों
बच्चों की चुनवाई ।
कुछ ही क्षण में दीवालें
लघु भ्रात के गले तक आइ ।

दोनों भ्राताओं ने देखा
एक दूसरे को सत्वर ।
दर्शक गण विस्मयपूरित थे
कुछ को चढ़ आया था ज्वर ।

वीर जोरावर सिंह की आंखें
देख अनुज को, सजल हुई ।
मुसकाया पर, अनुज हर्ष से
इच्छाएं हो गई वमल ।

दोनों के इन भावों को देख
विस्मित से हो गए यवन ।
कैसे रोते तथा विहंसते
हैं इन बच्चों के अभिमन ।

पूछा यवनों ने रोने का
वीर जोरावर से कारण ।
क्या भय से आक्रान्त हुए
तुम देख सन्निकट भ्रातमरण ।

उत्तर दिया हर्ष से उसने
धर्म हुआ गौरव अन्वित ।

सुनकर जिसको जनसमूह
था, वहां उपस्थित हुआ चकित

"मरने के भय से हैं मेरे
नेत्र नहीं ये अश्रु पूरित ।
दुःख है मेरे आज अनुज ने
किया हमें है अभी विजित ।

इस धरती पर आया था यह
सच्य यही है, मेरे बाद ।
पर पहले हो रहा निछावर
धर्म वेदि पर, कर प्रतिवाद ।

जो अधिकार हमें मिलना था
उसे किया इसने अर्जित ।
इसीलिए ये नेत्र हमारे
हुए दुःखी हो जल पूरित ।"

मृदु मुस्कान सहित भ्राता लघु
जन समूह से यों बोला
"आज धर्म के लिए तात से
पहले छूट रहा यह चोला ।

इसीलिए मैं अति हर्षित हूं
गौरव मण्डित हुआ हृदय ।
अपने पुरखों के निर्देशित
पथ पर बढ़ता हुआ अभय ।"

कुछ ही क्षण में दोनों भाई
चिर समाधि में लीन हुए ।
पंच तत्व भौतिक शरीर के
पंच तत्व विलिन हुए ।

धन्य है वह राष्ट्र जिसमें
जन्म लेते वीर बाल का
धन्य है वह भावना जो
हो गयी बलिदान प्रेरक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्य है वह मातृ जिसने
जन्म देकर इन सुतों को ।
धर्म की रक्षा करवाई
त्याग कर अपने हितों को ।

धन्य है वह धर्म जिसमें
वीर बालक जन्म लेते ।
सत्य की रक्षा-सुरक्षा में
सदा वे शीश देते ।

धन्य है वह देश जिसमें
जन्म लेते हैं तपस्वी ।
धार युग की बदलते
धन्य हैं ऐसे तपस्वी ।

आज युग के काव्य का है
नित, उन्हें शत बार वन्दन ।
प्राण गवां करभी अपने
दूर करते अवनि क्रन्दन ॥

मात्रा का चमत्कार

बहुत बड़ा तख्त स्टोर में पड़ा देखकर अधिकारी ने लेजर में उसकी एंट्री चैक करते हुए कहा, "इसमें तख्त का साइज नहीं लिखा है । हो सकता है कि असली तख्त इससे भी बड़ा हो । लगता है कि तुमने हेराफेरी की है।" सुनकर स्टोरकीपर गिड़गिड़ाया, "नहीं हुजूर, इससे बड़ा तख्त तो इस स्टोर में आ ही नहीं सकता । इसने ही सारा स्टोर घेर रखा है ।"

अधिकारी बोले, "तुम ठीक कहते हो । इस तख्त से तुम्हें काफी डिस्टरबेंस है । ऐसा करो, इस तख्त को मेरी कोठी पर भिजवा दो । चपड़ासी से बोल दो कि वापसी में कोठी पर जो तख्त पड़ा है, वह उसे ले आयेगा । तुम लेजर में 'तख्त' के आखिर में सिर्फ 'आ' की मात्रा लगा दो । क्यों ठीक है न ? इससे तुम्हें काफी सहूलियत हो जायेगी ।"

इस बात का पता जब बड़े बाबू को चला तो उसने तख्त से बने 'तख्ता' में 'ई' की मात्रा लगवाकर अपने घर से एक छोटी-सी तख्ती मंगवायी और तख्त की जगह रखवा दी ।

—राजेन्द्र शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे पाठशालाएं थीं, ये कान्वेन्ट हैं !

—डा० अरुणा शास्त्री

भला हो इन 'इंगलिश मीडियम' स्कूलों का। जब से कालोनियों से लेकर गली और महल्लों तक में 'शासन द्वारा मान्यता प्राप्त' ये कान्वेन्ट और पब्लिक स्कूल खुल गये हैं, तब से बच्चों के साथ बच्चों के माता-पिता भी हिन्दी भूलते जा रहे हैं और उनकी इंगलिश सुधरती जा रही है। जो लोग बी० ए० तक जनरल इंगलिश पढ़कर भूल चुके थे, उनका भी इसी बहाने 'रिवीजन' हो रहा है। गांव औरऔर कस्बों से आई मम्मियां, जिन्होंने अपने जीवन काल में पाठशाला का मुंह तक नहीं देखा था या देखा भी था, तो प्राइमरी के बाद छोड़ दिया था; अब अपने अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों से 'इंगरेजी' की नई-नई शब्दावलियां सीख कर पड़ोसिनों पर रौब गांठ रही हैं।

अब तक तो आम धारणा यह थी कि कान्वेन्ट या पब्लिक स्कूल का दर्जा पाने लायक संस्थाएं भारत भर में केवल इतनी हैं, जितनी अंगुलियों पर गिनी जा सकें। परन्तु अब यह धारणा टूटती जा रही है। अब तो गली-महल्लों या कालोनियों में एक या दो कमरों में चलने वाला प्राइवेट स्कूल भी कान्वेन्ट या पब्लिक स्कूल है। जरा सोचिए तो सही, कोई विदेशी पर्यटक भारत-भ्रमण करते समय शहरों में हर दस कदम पर 'इंगलिश मीडियम' स्कूलों के बड़े-बड़े आकर्षक बोर्ड लगे हुए देखता होगा, तो वह मन-ही-मन कितना हंसता होगा कि भले ही ये भारतवासी अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हो गये, किन्तु आज भी इन्होंने अंग्रेजियत की गुलामी स्वेच्छा से स्वीकार कर रखी है। पिछले कुछ वर्षों से तो यह व्यावसायिकता एक बड़े पैमाने पर महामारी की तरह फैल गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल बैग, टिफिन बॉक्स और वॉटर-बॉटल लेकर जूते-मोजे, यूनिफार्म और टाई, बैज में सजे बच्चों को बस, रिक्शा या तांगे में स्कूल की ओर जाते देखकर ऐसा लगता है, जैसे हथियारों से लैस होकर कोई सैनिक दस्ता बख्तरबंद गाड़ियों में बैठकर मोर्चे की ओर प्रस्थान कर रहा हो! स्कूल-बसें बिल्कुल अंग्रेजी टाइम से आती हैं। चाहें तो बसों को देखकर आप अपनी घड़ी मिला लें। अगर बच्चे को बस-स्टाप पहुंचने में आप पांच मिनट भी लेट हुए तो बस फुर्र। अब अपने आफिस को तिलांजलि देकर पहले अपने लाड़ले को स्कूल छोड़ने जाइये, क्योंकि उसका स्कूल जाना आपके आफिस जाने से ज्यादा जरूरी है। आखिर इंगलिश मीडियम स्कूल में पढ़ना कोई मजाक थोड़े ही है और शाम को रणक्षेत्र से थके-हारे सिपाहियों की तरह जब ये बच्चे घर लौटते हैं उस समय का दृश्य तो देखने लायक होता है। सुबह जो बच्चे टिप-टाप सज-धज कर जूतों की टप-टप आवाज के साथ प्रस्थान करते हैं; शाम को घर लौटते समय उनका हुलिया ही बदल जाता है। टाई इलास्टिक सहित ढीली होकर नीचे लटकने लगती है, जूते के फीते जमींन चूमते चलते हैं, स्कूल यूनिफार्म पर स्याही, मिट्टी और स्कूल में खाए नाश्ते के दाग, यूनिफार्म पर रूमाल टंके होने के बावजूद बहती नाक और गालों पर आंसुओं की सूखी धार, नींद से बोझिल पलकें और भारी-भरकम बैग में होमवर्क का ढेर सारा बोझ, जिसे रात को मम्मी और पापा दोनों बैठकर हल करते हैं शाम को जब बच्चों के पापा आफिस से लौटते हैं तो बच्चों की मम्मियां पड़ौसिन की नई साड़ी और गहनों का गम या शहर में चल रही नई फिल्म की चर्चा भूलकर बड़े उत्साह से सुनाते हैं, "सुनो जी, आज स्कूल में अपने मुन्ने को नाश्ते में ब्रेड और बटर मिले थे या आज अपनी गुड़िया को उसकी मैडम ने 'वेरी गुड गर्ल' कहा था या देखो तो सही आज अपना पप्पू स्कूल में फिर शार्पनर, पेंसिल गुमा आया और कल तो बैग ही भूल आया था।" इंगलिश मीडियम स्कूल में जाने वाले हर बच्चे के घर में यही बाल-लीला का पाठ नित्य चलता है और इसे वर्णन करते समय मां का मातृत्व और पिता का पितृत्व उमड़ा पड़ता है और कलेजा दो-दो हाथ फूल जाता है।

अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की यह 'भेड़िया धसान' देखकर मन उस अतीत में भागता है, जब हम स्वयं बस्ता उठाकर पाठशाला जाते थे। अभी तक याद आता है कि जब छह-सात बरस की उम्र हो जाने पर पिताजी ने मुझे 'अखंड-बखंड' में दाखिल करने का विचार किया था तो दादी जी उन पर कितना बरसी थीं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अरे, अभी इसकी उमर ही क्या है जो अभी से इसे स्कूल में धकेल रहे हो ? अभी तो इसकी खेलने-खाने की उमर है और फिर लड़की की जात ठहरी । कौन-सी पढ़ा-लिखाकर हमें कलेक्टरी करानी है ?"

इस तरह दादी मां के आंचल तले अभयदान मिल जाता ।

उस समय स्कूलों में 'एडमिशन टेस्ट' भी कितने सरल होते थे । स्कूल में दाखिल होते समय 'इन्टरव्यू' में मुझसे पूछा गया, "तुम्हारा नाम क्या है ?" नाम तो खैर, किसी तरह हकलाते हुए बतला दिया, परन्तु जब पूछा गया, "पिताजी का नाम क्या है ?,' तो छह साल की उम्र में भी ऐसा प्रश्न पूछने वाली उन 'बेनजी' की बुद्धि पर तरस आया कि क्या इन्हें इतना भी नहीं मालूमी भला पिताजी का भी कोई नाम होता है ? नाम तो बच्चों के होते हैं । पिताजी का नाम तो पिताजी होता है । कोई बाबूजी कहता है और कोई बापूजी । खैर, इस बुद्धूपन के बावजूद मुझे 'अखंड' में भर्ती कर लिया गया ।

उन दिनों कहां थे चमड़े के ऐसे सुन्दर बैग और कहां थे ऐसे खूबसूरत शार्पनर, खुशबूदार रबड़ और पेंसिलें । हम लोग पट्टी (स्लेट) और खड़िया लेकर स्कूल जाते, साथ में टीन की जंग लगी पुरानी डिबिया में पानी से तर पुराने कपड़े की चिंदी होती । पट्टी पोंछकर हवा में झुला-झुला कर गाते, 'सूख-सूख पट्टी चन्दन की गट्टी, नदी का पानी नदी में जा, मेरी पट्टी सूख जा ।' उन दिनों 'मेरी बिल्ली बड़ी चिबल्ली, घर-घर में घुस जाती है' तथा 'बड़ी भली है अम्मा मेरी, ताजा दूध 'पिलाती है' ये कविताएं रटाई जाती थीं । ये दोनों कविताएं मेरे शुद्ध दिमाग में जाकर इस तरह गड्ड-मड्ड हो गयी थीं कि कितने ही दिनों तक मैं यही रटती रही कि 'बड़ी भली है अम्मा मेरी, घर-घर में घुस जाती है, परन्तु किसी का ध्यान मेरी इस मासूम भूल पर नहीं गया । किसी को इतनी फुरसत ही कहां थी ? और इंग्लिश ? उन दिनों इंग्लिश छठी क्लास तक हम बच्चों को तो क्या हमारे प्राइमरी स्कूल की 'बड़ी बेनजी, (हेड मिस्ट्रेस) तक को भी नहीं आती थी ।

और अब जब ढाई-तीन साल के गुड्डू को सीधा पालने से उठाकर किंडरगार्टन में 'एडमिशन' देना पड़ा तो लगा कि हम सचमुच कितने बेरहम हो गये हैं । अनेक स्कूलों में धक्के खाने के बाद जब एक दूरवर्ती कालोनी के छोटे-से स्कूल में 'एडमिशन' मिल गया तो हमने अपने आपको कितना धन्य समझा था कि अच्छा ही हुआ कहीं गुड्डू 'ओवरएज' हो जाता तो ? उसे रिक्शे में नजाकत से बैठाते समय ऐसा लगता था कि वह कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कांच का सामान है, जिसको पैकिंग के ऊपर 'हैंडल विद केयर' का लेबल चिपका है। बेचारा गुड्डू स्कूल बैग में शहद वाली निप्पल लेकर जाता और जब टीचर बोर्ड पर कुछ लिखने के लिए मुड़ती तो वह बैग से झट निप्पल निकालकर मुंह में रख लेता। उन दिनों आत्मा कितनी कचोटती थी। परन्तु जिस दिन गुड्डू ने घर आकर तुतलाते हुए एक्टिंग के साथ 'टिवकल-टिवकल लिटिल स्टार', 'जैक एंड जिल' गाकर सुनाई तो यकीन मानिये कि हमारी आंखों के तारे भी ऐसे टिवकल-टिवकल हुए कि आंखें चौंधिया गई और कलेजे में गंगा की बाढ़ उमड़ने लगी। श्रीमान् जी को भी लगा, कि उनके पसीने की गाढ़ी कमाई में से हर महीने चालीस रुपये रिक्शा फीस, चालीस रुपये ट्यूशन फीस और तीस रुपये नाश्ता फीस—इस तरह ११० रुपये पानी में नहीं फेंके जा रहे। इंग्लिश मीडियम स्कूल में भेजना सार्थक हो गया।

इंग्लिश मीडियम स्कूल में किसी के० जी० या मांटेसरी क्लास में पढ़ने वाले बच्चे से यदि अंग्रेजी में पूछा जाए कि 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'तुम्हारे डैडी का नाम क्या है?' 'तुम कहां रहते हो?, 'तुम्हारे कितने भाई-बहन हैं? इस प्रकार के तमाम प्रश्नों के उत्तर धड़ल्ले से अंग्रेजी में ही देने में इनकी जुबान कहीं नहीं लड़खड़ाती। लगता है सीधे इंग्लैंड-अमेरिका से पार्सल होकर चले आ रहे हैं। याद आता है, जब हमसे पाठशाला में पूछा जाता था कि "तुम्हारे कितने भाई-बहन हैं?" तो हम चाचा, ताऊ, बुआ, मामा, मौसी सबके बच्चों की दो दर्जन भर संख्या गिनकर बता देते थे और हमारी 'बेनजी' को भी यह सुनकर कोई आश्चर्य नहीं होता था। एक दिन मांटेसरी में पढ़ने वाले हमारे पुत्र ने क्लास में यह प्रश्न पूछे जाने पर कि "तुम्हारे कितने भाई-बहन हैं?" इसी तरह का उत्तर बड़े उत्साह से दिया तो, 'मैडम' भौंचक्की होकर उसकी ओर देखती रहीं। उसके मन में शायद ऐसी उर्वरा मां के दर्शन करने की इच्छा जागी होगी। तभी कहने लगीं, 'ओह गाड, तब तो हमें एक बार आपकी मम्मी से मिलने आपके घर आना ही पड़ेगा।" गुड्डू ने घर आकर रुंआसे होकर पूछा, "मां' बताओ हमने 'टीचर' को गलत क्या कहा कि हमारे पांच भाई और आठ बहनें हैं?" फिर उसने ताऊजी, चाचाजी, बुआजी, मामाजी और मौसी सबके बच्चों के नाम उंगली पर गिन कर कहा कि "मां तुम ही तो कहती हो कि ये सब हमारे भाई-बहन हैं।" अब मुंह बाये देखने की बारी मेरी थी। मैं गुड्डू को थप-थपाकर कहती हूं, "हां बेटे, तुमने टीचर को ठीक ही जवाब दिया। तुम्हारे पांच भाई और आठ बहनें हैं।" अब जब गुड्डू को स्कूल में टीचर यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है कि कहो, "आई हैव ओनली वन सिस्टर" (मेरी केवल एक बहन है) तो उसका मुंह जरा-सा हो जाता है और मेरा भी मन गवाही नहीं देता कि अभी से बच्चे के मन पर अपने-पराये का भेद क्यों डाला जाए ? चाचा, ताऊ, बुआ और मौसी के बच्चों में भेद करने में मन में भी कहीं दरार-सी पड़ने लगती है ।

आजकल जब अपने बच्चों से कहती हूं कि शैतानी बंद करो और बैठकर पहाड़े याद करो तो वे भौंचक्के होकर मेरा मुंह ताकते हुए पूछते हैं कि "मां ये पहाड़े क्या होते हैं ? टेबल्स याद करो, ऐसा क्यों नहीं कहती हो ? लगता है कि आप लोगों के समय में पहाड़े पहाड़ पर जाकर याद करने पड़ते होंगे ।" अब हम चाहे कितने ही अंग्रेजीदां क्यों न बनें, परन्तु बच्चों को गणित के सवाल हल कराते समय पहाड़े हिन्दी में ही बुदबुदा कर बोलने पड़ते हैं कि कहीं बच्चे न सुन लें, नहीं तो मखौल उड़ाएंगे । बच्चों के डर से यदि अंग्रेजी में टेबल्स बोलने की कोशिश करो तो थोड़ी ही देर में जीभ छटपटाने लगती है और फिर जो मजा 'पचम पच्चीस' 'छौ छौ छत्तीस', 'आठी आठी चौंसठ' और 'नमा नमा इक्यासी' कहने में आता है और मुंह में मिसर-सी घुलने लगती है वह मजा 'फाइव फाइव जा ट्वेंटी फाइव' या 'एट एट जा सिक्स्टी फोर' कहने में कहां आता है । चाहें तो अभी बोलकर देख लीजिए । लगेगा जैसे जीभ की अच्छी-खासी वर्जिश हो गई है ।

हमारे यहां घरेलू काम करने के लिए महरी की एक ९-१० साल की लड़की आती है । वह भी काम करने के दौरान बच्चों से सुन-सुन कर कान्वेंटी लहजे में 'नर्सरी राइम्स' गाना सीख गई है और बच्चों की देखा-देखी इंगलिश बोलने की बढ़िया नकल कर लेती है । उसके गरीब माता-पिता खुश हैं कि उनकी बेटी 'लर्न व्हाइल अर्निंग' के तहत फ्री में अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त कर रही है, जिससे शादी के बाद ससुराल वालों पर अच्छा रोब जमा सकेगी । इधर मैं हैरान हूं कि हमारे देश में अंग्रेजी शिक्षा का स्तर कितना ऊंचा उठता जा रहा है । ★

हिन्दू राज्य निर्माण के लिए
अधिक से अधिक
धन दीजिए —वेदभिक्षु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्प्रदायिकता कैसे मिटे?

—रामचन्द्र आर्यमुसाफिर (अजमेर)

भारत सरकार और देश के राजनैतिक नेता विशेषकर कांग्रेसी भारत में होने वाले हिन्दू-मुसलिम झगड़ों से बहुत परेशान हैं। अतएव वे इन झगड़ों का सदैव के वास्ते अन्त करने को कृतसंकल्प हैं बहुत विचार-विमर्श हो रहे हैं। अभी कुछ महीनों पहले सारे भारत राज्यों के मुख्यमन्त्रियों का एक सम्मेलन दिल्ली में इस विषय पर विचार करने के लिए हुआ था, जिसमें एक प्रस्ताव भी पास किया गया, जिसका आशय यह है कि जहां भी झगड़े का अन्देशा हो, अधिकारी वर्ग सतर्क रह कर झगड़ा होने से पूर्व ही कठोर कार्रवाई करे। यदि आवश्यकता हो तो बल का प्रयोग भी किया जाये, इत्यादि। जहां तक देश में शान्ति सुरक्षा को कायम रखने का प्रश्न है, प्रत्येक समझदार व्यक्ति उक्त प्रस्ताव से सहमत होगा, परन्तु हमारी समझ में अभी तक इसका सही हल नहीं आया।

हमारे मस्तिष्क में विचार करने पर इसका सही जो हल प्रतीत होता है वह मैं जनता जनार्दन एवं भारत के शासकों के समक्ष रखता हूं, और आशा करता हूं कि दोनों ही हमारे इस लेख को पक्षपात का चश्मा आंखों से हटाकर पढ़ेंगे और विचार करेंगे। जहां तक साम्प्रदायिकता का सम्बन्ध है, वह अधिकतर हिन्दू और मुसलमान के बीच है। दूसरे मतावलम्बियों में कम है। यदि मैं यह कहूं कि भारत सम्प्रदायों का यानी मतविभिन्नता का देश है तो कोई अत्युक्ति न होगी। यहां हिन्दू धर्म और इस्लाम मजहब के अतिरिक्त अन्य कई बड़े-बड़े मत हैं, जैसे जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई इत्यादि। फिर इनमें भी छोटे-छोटे भेद हैं जैसे हिन्दुओं में शैव, शाक्त, वैष्णव आदि, जैनियों में श्वेताम्बर, दिगम्बर आदि, ईसाइयों में रोमन कैथॉलिक प्रोटैस्टैन्ट आदि। गरज कि हिन्दुओं में ही शाखा-प्रशाखा सैकड़ों भेद हैं। इसी प्रकार हिन्दु स्थान के बाहरी मत ईसाइयों, मुसलमानों में भी छोटे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे अनेक भेद हैं। किन्तु हिन्दुओं में अधिक भेद होते हुए भी वे आपस में नहीं टकराते, जबकि ईसाई, मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। इतिहास के पृष्ठ इसके साक्षी हैं।

वर्तमान में ईरान-इराक का युद्ध, पाकिस्तान में वहाबी, कादियानी आदि के साथ होने वाले व्यवहार, लखनऊ में शिया-सुन्नियों के झगड़े आये दिन होते रहते हैं। तात्पर्य यह है कि मुसलमान मतविभिन्नता को सहन नहीं कर सकता, जबकि हिन्दू मतविभिन्नता में आनन्द अनुभव करता है। जैसे अमरोहा के मियाँ को, पिरान किलियर की जियारत, अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह को, बलरामपुर गोण्डा के पीर की जयारत पर हजारों हिन्दू प्रसाद चढ़ाते चले आ रहे हैं।

साथ ही मुहर्रम पर खील-बताशे भी सदियों से चढ़ाते आ रहे हैं। गरज कि सारे हिन्दुस्तान में आपको मुसलिम पीरों-मजारों के सम्बन्ध में हिन्दुओं का उक्त व्यवहार दृष्टिगोचर होगा।

फिर झगड़े क्यों होते हैं ?

अब प्रश्न यह है कि फिर झगड़े हिन्दू और मुसलमान में क्यों होते हैं ? इस पर गम्भीर विचार करने की आवश्यकता है। हमने इस विषय पर जहां तक विचारा है उसका निष्कर्ष यह है कि झगड़ों का जन्मदाता अंगरेज था। उसे हिन्दुस्तान में शासन करना था। वह सन् १८५७ के स्वतन्त्रता आन्दोलन के बाद चाहता था कि हिन्दू और मुसमलान को मिलने न दिया जाए। फलतः उसके दिमाग में एक युक्ति आई और वह थी गोवध (गाय की कुर्बानी बकर ईद पर) मुसलमानों का धार्मिक कर्त्तव्य ठहराया। बस, जहां-तहां इसे लेकर अंग्रेज हकूमत ने झगड़े कराये। सन् १८५७ में जो प्रेम हिन्दू-मुसलमानों में था, वह अंग्रेजों की कूट नीति से शनैः-शनैः टूटना आरम्भ हो गया।

आज जो दशा है वह सबके सामने है। पाकिस्तान की स्थापना चलते चलते अंग्रेज करा गया जो उसी घृणित मनोवृत्ति का परिणाणाम है। मुसलमान हिन्दुओं को काफिर समझते हैं और मतन्धता की दृष्टि से उनका विश्वास है कि "काफिर-ए-कत्ल वायद" अर्थात् काफिर को कत्ल कर देना चाहिए।

कुरान शरीफ जो मुसलमानों का मुख्य धार्मिक ग्रन्थ है से तथा अरबी लुगत (कोश) को देखने से पता चलता है कि काफिर शब्द का मतलब जो मुसलमान लेते हैं या करते हैं वह बिल्कुल गलत है। काफिर शब्द का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ है जो ईश्वर विरोधी हो उसकी दी हुई बरकतों से इन्कार करे और अपने को ही खुदा समझे।

अरब में हजरत मुहम्मद साहब के जमाने में यहूदा और नस्तारा नाम की दो कौमें थीं और कुछ इस विचार के व्यक्ति भी थे जो ईश्वर की सत्ता (हस्ती) के विश्वासी न थे। इस हेतु हजरत मुहम्मद साहब उन्हें काफिर कह कर पुकारते थे।

कुरान शरीफ में मुहम्मद साहब को खुदा का यह आदेश है कि ऐ नबी! तुम लोगों से कहो कि जैसे हमने अरब के वास्ते अरबी जुबान में अपना कलाम तुम्हारे जरिए भेजा है, ऐसे ही हमने तमाम मुल्कों में उनकी जबान में ज्ञान दिया है और पैगम्बर भेजे हैं।

पाठक विचार करें कि कुरान मजीद के उपरोक्त आदेश के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, श्री कृष्ण, महावीर स्वामी आदि समय-समय पर जो सुधारक आते रहे हैं वे सब भी क्या मुसलमानों के लिए वन्दनीय नहीं? आप कहेंगे कि इस दृष्टि से मुसलमानों को भी उचित है कि दूसरे मतवालों के आचार्यों का सम्मान करें। अस्तु, यह उपरोक्त भावना अगर मुसलमानों में हो जाए तो झगड़ों का अन्त आज ही हो सकता है।

अंग्रेजों के जमाने में गोवध झगड़ों का कारण था, किन्तु आज झगड़ों का कारण राजनैतिक स्वार्थ और पाकिस्तानी मनोवृत्ति है। हिन्दुस्तान में रहने वाले कुछ समझदार मुसलमान भाइयों को छोड़ कर अधिकतर मुसलमान हिन्दुस्तान में दूसरा पाकिस्तान बनाने के स्वप्न देखा करते हैं। यही लोग हैं जो समय-समय पर झगड़े करते हैं। साथ ही एक नारा भी लगाते हैं कि "हँस के लिया है पाकिस्तान लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान" पाठक इसके अर्थों को समझें। इसके शब्दों में क्या भावना मुसलमान प्रकट करता है?

इसलिए "देर आयद दुरुस्त आयद" फारसी की इस लोकोक्ति के अनुसार देर से ही सही अभी कुछ थोड़ा ही बिगड़ा है, श्री छागला जी की सलाह पर अब भी मुसलमान ध्यान दें, तो क्यों बलवे हों करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति का नाश हो, और क्यों बेकसूर हिन्दुओं और मुसलमानों के खून से हिन्दुस्तान की जमीन तर की जाये।

फिर झगड़ों का निपटारा कैसे हो?

अब प्रश्न यह है कि साम्प्रदायिक झगड़ों का अन्त कैसे हो? इसका उत्तर बिल्कुल सरल और स्पष्ट है कि अपराधी को पकड़ कर कठोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोर दण्ड दिया जाये । किन्तु खेद है कि शासन में बैठे हुए लोगों का मस्तिष्क स्वार्थ से इतना खराब हो गया है कि वे पहिले मारने वाले को दोषी नहीं करार देते । वे उसे दोषी मानते हैं जो अपने बचने के वास्ते दो-चार हाथ मारता है ।

पाठक सोचें कि यह न्याय कहां तक उचित है और यह उपाय कहां तक कारगर होगा ? गत वर्ष १८ जून के अखबारों में पटना से समाचार प्रकाशित हुआ था कि भारतीय मोमिन पंचायत के महामन्त्री मौलवी मुहम्मद जहीरुद्दीन अंसारी ने कहा था कि यदि मुस्लिम साम्प्रदायिकता का उन्मूलन किया जाये तो हिन्दू साम्प्रदायिकता अपने आप ही मिट जायेगी अर्थात् अंसारी साहब की राय में भी हिन्दू साम्प्रदायिकता का जन्मदाता नहीं है, बल्कि वह मुसलमान है जो मतान्धता का चोगा पहने हुए है । गवर्नमेन्ट की रिपोर्ट जो देश में हुए झगड़ों पर प्रकाशित हुई, उसने भी यह स्वीकार किया है कि देश के सारे झगड़ों में जो भी जहां हुए हैं प्रारम्भ करने वाले मुसलमान ही हैं ।

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री गुलजारी लाल जी नन्दा ने कहा है कि अच्छा हिन्दू कभी भी साम्प्रदायिक नहीं हो सकता । (देखें १५ मई का पांचजन्य) मैं इस कथन में इतना और जोड़ना चाहूंगा कि बुरे से बुरा हिन्दू भी साम्प्रदायिक नहीं हो सकता । मेरा उन लोगों को चैलेन्ज है जो हिन्दू को साम्प्रदायिक कहते हैं । मेरा दावा है कि बड़े से बड़ा मुसलमान भी साम्प्रदायिक है । स्वर्गीय मुहम्मद अली ने एक बार कहा था कि मेरी नजर में एक मुसलमान (फासिक व्यभिचारी, गुनाहगार,) फाजिक, दुश्चरित्र बदचलन, भी महात्मा गांधी से अच्छा है, क्योंकि वह मुसलमान है । और महात्मा गांधी हिन्दू होने से काफिर है ।

अब पाठक विचार करें कि जो व्यक्ति राष्ट्रीय महासभा का प्रधान रहा हो वह कितना बड़ा साम्प्रदायिक ही नहीं किन्तु कितना बड़ा मतान्ध है । फिर छोटे मुसलमान और अशिक्षित एवं कठमुल्लाओं के संसर्ग में रहने वाले मुसलमान का तो कहना ही क्या ।

उपरोक्त दोनों प्रमाण जाहिर करते हैं कि झगड़ों का मूल कारण हिन्दू कतई नहीं । जो उपाय झगड़े मिटाने के लिए किए जा रहे हैं वे कैसे कारगर होंगे जब तक कि असलियत को न खोजा जायेगा । फारसी की एक कहावत मुझे स्मरण आती है कि "तंग आमद बजंग आमद" अर्थात् जो आदमी किसी बात से तंग (दुःखी) हो जाता है तो वह लड़ने को तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हो जाता है और किसी प्रकार भी शान्ति नहीं पाता। तो वह कानून की परवाह न करके मरने-मारने को तैयार हो जाता है। बस हमारी समझ में यही हिन्दू का बड़ा भारी कसूर है कि जिसको सरकारी दिमाग सहन नहीं करता हालांकि कानून इस बात की आज्ञा देता है कि अगर किसी आदमी को कोई मार रहा है तो आत्मरक्षार्थ उसके हाथ से खून हो जावे तो उसे निर्दोष मानकर अदालतें मुक्त करती हुई देखी गई हैं। अंग्रेज सरकार के जमाने में कलकत्ते की काली देवी के शान्त जलूस पर धूर्त मतान्ध मुसलमानों ने पत्थर फेंककर शान्ति भंग की। पुनः मन्दिरों पर हमला कर उन्हें तोड़ना प्रारम्भ किया। तब हिन्दुओं ने संगठित होकर प्रतिकार रूप में मस्जिदों पर आक्रमण किया और उन्हें मिस्मार करना प्रारम्भ कर दिया तो मुसलमानों को होश आया और उन्होंने फिर कभी भी मन्दिरों पर हाथ नहीं डाला, न बलवे हुए।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान कितना साम्प्रदायिक है, इसका जीता-जागता प्रमाण अभी गत दिनों में कश्मीर में हुए चुनावों में देखने को मिला। मौलवी फारूख ने मुसलमानों में साम्प्रदायिकता भड़काई। फलतः इन्दिरा कांग्रेस कई स्थानों पर चुनाव हार गई। भारत में स्वतंत्र होने पर जहां जहां भी झगड़े हुए हैं सर्वत्र पहल मतान्ध मुसलमानों ने की है—जैसा कि ऊपर गवर्नमेण्ट की रिपोर्ट से जाहिर हुआ है। झगड़ों में पाकिस्तानी मनोवृत्ति का सदा हाथ रहा है। यह ध्रुव सत्य है।

अगर सरकार मुस्लिम वोटों का लोभ छोड़ दे तो एक दिन में सारे झगड़े समाप्त हो सकते है। गुण्डे मुसलमानों की मतान्धता की वृत्ति भी ठीक हो सकती है। सरकार पानी को पानी और दूध को दूध कहना स्वीकार करे एवं उस पर आचरण करना अख्त्यार करे।

मैं साम्प्रदायिकता को सदैव के लिए नाश करने वालों से जोरदार शब्दों में कहना चाहता हूं कि वे वास्तविकता को समझ कर रोग का इलाज करें। आंख मिचौनी और नाटक का परित्याग करें।

असलियत यह है कि झगड़ों की शुरूआत देशद्रोही पाकिस्तानी जहनियत के मुसलमान करते हैं। जहां-वहां बिना आज्ञा के भारत के शहरों-गाँवों में घुसे बैठे हैं, उन्हें पकड़कर कड़ा दण्ड दिया जाये यह गन्दा और सड़ा हुआ विचार दिमाग से निकाल दिया जाये कि मुसलमान हमें वोट देकर हमारी गद्दी को सुरक्षित रखेंगे। वे इस तथ्य को समझें कि अंगरेजों से लड़ाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड़कर हिन्दुओं ने ही स्वराज्य प्राप्त किया है और शासन की गद्दियों पर आपको बैठाया है। मुसलमान ईसाई तो आटे में नमक के बराबर भी स्वराज्य प्राप्ति में साथी न थे, इसलिए बेकसूर हिन्दुओं को साम्प्रदायिक ठहराकर उनके साथ अन्याय न करें। इतिहास साक्षी है कि अन्याय अधिक काल तक फूलता फलता नहीं है। उसका एक दिन बुरी तरह अन्त होता देखा गया है। आज का हिन्दू इस बात का अनुभव कर रहा है कि सरकार उसके साथ अन्याय कर रही है। उसने भी अपना संगठन करना प्रारम्भ कर दिया है। यदि समय रहते शासक वर्ग सचेत न हुआ तो वह समझ ले कि हिन्दू संगठित होकर क्या करेगा, यह भविष्य के गर्भ में हैं। आशा है कि शासक शुद्ध भावना से सही और समाज एवं देश के कल्याण का मार्ग ग्रहण करेगा।

एक मास में तीन दिन काम कर

१०००) मासिक कमाइए

हम आपको १०००) में जन-ज्ञान [मासिक] की एक हजार प्रतियां देंगे। यदि आप २) प्रति भी जनता को देंगे तो भी आप १०००) बचा सकेंगे। वैसे मूल्य ३) है।

१००० प्रतियां—१०००) में ५०० प्रतियां—६२५) में, २५० प्रतियां—३५०) में और कम प्रतियां केवल १) ६० प्रति। सभी पर डाक व्यय हमारा

हिन्दू राज्य की स्थापना के लिए आगे आइए। सहयोग दीजिए।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडिता राकेशरानी के विरुद्ध मुकद्दमे वापिस लिये जायें

—वीरेन्द्र

प्रधान, आर्य प्रतिनिधिसभा, जालन्धर पंजाब

इस समय देश में साम्प्रदायिकता बढ़ती चली जा रही है। साम्प्रदायिक शक्तियां सिर उठा कर देश को विघटन की ओर ले जा रही हैं। हमारा शासन भी इन्हीं साम्प्रदायिक शक्तियों की मदद कर रहा है।

दुर्भाग्य से शासन ने आर्यसमाज के व्यक्तियों पर सब से अधिक प्रहार किया है। दिल्ली की धार्मिक संस्था दयानन्द संस्थान ने जिसने चारों वेदों का प्रकाशन तथा लगभग अन्य चार सौ पुस्तके प्रकाशित कर वेद प्रचार का सराहनीय कार्य किया है, कुछ पुस्तकें साम्प्रदायिक तत्त्वों के विरुद्ध प्रकाशित कीं और अपनी जन-ज्ञान मासिक पत्रिका में इस संबंध में कुछ लेख भी लिखे, जिस के कारण जन-ज्ञान की सम्पादक व दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पण्डिता राकेश रानी पर २२ मुकद्दमे १५३ ए तथा २९५ ए के अन्तर्गत शासन ने चला रखे हैं। शासन पंजाब में सिखों की देशद्रोही पूर्ण गतिविधियों पर मौन है। उनके विरुद्ध कुछ भी करने में संकोच कर है लेकिन एक देश भक्त धार्मिक आर्यसमाजी महिला पर २५-२५ मुकद्दमे कर रहा है, हिन्दुओं को दबाना चाहता है। शासन का यह पग समस्त हिन्दू समाज के लिए विशेषकर आर्यसमाजियों के लिए चुनौती है। मैं स्वयं श्रीमती राकेश रानी जी से मिला था और उनसे सारी परिस्थितियां ज्ञात की थीं। मैं समझता हूं कि सभी आर्यसमाजियों को और सभी हिन्दू संस्थाओं को इस सम्बन्ध में प्रस्ताव पारित कर प्रधानमंत्री, गृह मंत्री को भेजना चाहिये और जोरदार शब्दों में सभी मुकद्दमे वापिस लेने की मांग करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांप्रदायिकता व अमानवीयता के विरुद्ध आर्यसमाज आंदोलन चलायेगा

दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर कार्यक्रम तय होगा

अजमेर आर्यसमाज सांप्रदायिकता व अमानवीयता के विरुद्ध शीघ्र ही एक विश्वव्यापी अभियान प्रारम्भ करेगा। यह जानकारी देते हुए सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता एवं विचारक महात्मा वेद भिक्षुः ने कहा कि देश में बढ़ती हुई विघटनकारी प्रवृत्तियों व विश्व में बढ़ते हुए अमानवीय घटनाक्रम पर रोक लगाने की दृष्टि से इस आन्दोलन की रूप रेखा तीन से छः नवम्बर तक अजमेर में होने वाले महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह में तय की जायेगी।

वेद भिक्षुः जी ने बताया कि आर्यसमाज इस वैचारिक आंदोलन के लिए विश्व भर में मानवीय संवेदनाओं के प्रति जन जागृति लाने के लिए ऐसे युवा लोगों को प्रशिक्षण दे रहा है, जो देश-देशान्तर में पहुंचकर विश्व-कल्याण की भावना पैदा करेंगे।

पंजाब की समस्या को उन्होंने ऐसे बीमार लोगों के दिमाग की उपज बताया जो धर्मान्ध होकर न केवल अपने धर्म को भूल गये बल्कि अपने धर्म का अपमान भी कर रहे हैं।

इससे पूर्व परोपकारिणी सभा द्वारा एक बैठक दयानन्द आश्रम में आयोजित की गई, जिसमें निर्वाण शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए विभिन्न मुद्दों पर विचार किया गया। बैठक में श्रीयुत श्रीकरण शारदा, श्री रासा सिंह, श्री धर्मवीर, श्री रामस्वरूप रक्षक व श्री जयसिंह मेहता ने अपने विचार व्यक्त किये। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गद्दार नहीं तो क्या है ?

—रामबाबू मिश्र रतनेश

जिसे देश से प्यार नहीं, वह गद्दार नहीं तो क्या है ?
अपनी मां की अस्मत बेचे, वह गद्दार नहीं तो क्या है ?
शासन और प्रशासन सब कुछ फिर भी होती है मनमानी
कभी भड़कता दंगा बलवा, कभी हो रही खींचातानी !
ओ भारत के वीर जवानो ! यह सोने का समय नहीं है—
काश्मीर पर आंख गड़ाये बैठा है हर पाकिस्तानी !
शस्त्रों का अम्बार, युद्ध को वह तैयार नहीं तो क्या है ?
अपनी मां की अस्मत बेचे……

जिसको इस मिट्टी से नफरत, जिसे न प्यारी मथुरा-काशी
खाकर अन्न साँड़-सा डहके फिर भी कहता हम वनवासी ।
जिसके पास बुद्धि है सोचे, शासन तो बिल्कुल अन्धा है
धरना देकर कातिल कहते हिम्मत हो तो दे दो फांसी ।।'
फिर भी आँखें बन्द किये जो वह मक्कार नहीं तो क्या है ?
अपनी माँ की अस्मत बेचे…………

धर्मग्रन्थ पर रोक लगाते, आग लगाते खुल्लमखुल्ला
पंडित बैठे हैं मुंह बाँधे, राज चलाते काजी-मुल्ला !
जागृत हो भारत की जनता, देकर लहू बचा ले माँ को—
माँ काली बलि मांग रही है, जयचन्द हो चाहे अब्दुल्ला ।।
रोग यही है तो रोगी का यह उपचार नहीं तो क्या है ?
अपनी माँ की अस्मत बेचे, वह गद्दार नहीं तो क्या है ?

नागालैण्ड, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणाचल, मणिपुर दहके हैं—
काश्मीर-केरल में दुर्मति राष्ट्रद्रोह करते-कहके हैं !
नेता मत के पीछे अन्धे सारा राष्ट्र मिटा डालेंगे
कहाँ सो गई शिवा-वाहिनी, कहां क्रान्ति के पग बहके हैं !
मातृ भूमि पर बलि होने का यह त्योहार नहीं तो क्या है ?
अपनी माँ की अस्मत बेचे, वह गद्दार नहीं तो क्या है ।
जिसे देश से प्यार नहीं है, वह गद्दार नहीं तो क्या है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय की पुकार

—राजीव मिश्र

आज हिन्दू शब्द की इतनी छीछालेदर हमारे तथा कथित राज-नेताओं ने की है कि हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। महज कुर्सी के लालच में चन्द वोटों की खातिर हमारे राजनेता अपने को मुसलमानों का वंशज कहने को भी तैयार हैं। मुसलमानों और ईसाइयों के सामने ये घुटने टेके हुए हैं। उनकी हर सही-गलत माँगों को मानकर उन्हें सिर पर चढ़ा रखा है। आज अपने ही देश में हिन्दू बेगाना होकर रह गया है। हमें अपने त्योहार मनाने में भी उनकी इच्छा-अनिच्छा का खयाल रखना पड़ता है।

क्या कारण है कि आज हिन्दू अपने को हिन्दू कहने को तैयार नहीं। वह स्वयं को मैं ब्राह्मण हूं, मैं ठाकुर हू, मैं कायस्थ हूं, इत्यादि कहेगा। परन्तु मैं हिन्दू हूं, ऐसा नहीं कहेगा। यह सब हमारी क्षुद्र राजनीति के कारण हुआ है। आजादी के बाद जातिवाद को बढ़ावा दिया गया। चुनावों में उम्मीदवार की जाति को उछाला जाता है ताकि उसकी जाति के वोट मिल सकें। हिन्दुओं को कोसा जाता है, ताकि मुसलमानों तथा ईसाइयों के वोट मिल सकें। हमारे राजनेता अच्छी तरह जानते हैं कि हिन्दुओं को कोसने से किसी भी हिन्दू को बुरा नहीं लगेगा, क्योंकि कोई हिन्दू है ही नहीं। कोई ब्राह्मण है, कोई ठाकुर है, कोई यादव है, इत्यादि। आप किसी भी मुसलमान से मिलें और पूछें कि भाई तुम कौन हो, तो वह चाहे शिया हो या सुन्नी, तुरन्त जवाब देगा कि मैं मुसलमान हूं। इसी प्रकार किसी ईसाई से पूछें, तो वह चाहे प्रोटेस्टेंट या कैथॉलिक, तुरन्त जवाब देगा कि मैं ईसाई हूं। परन्तु हिन्दू अपने को हिन्दू कहने में झिझकता है। यह हमारे नैतिक पतन का द्योतक है। हम अपने इस दब्बूपन को धर्म निरपेक्षता का नाम देते हैं। परन्तु यह शब्द ही गलत है। इसके स्थान पर सर्वधर्म समभाव कहना चाहिए। हिन्दू हमेशा से सर्वधर्म समभाव में विश्वास करता आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब समय आ गया है कि प्रत्येक हिन्दू अपने हिन्दू होने पर गर्व करे और स्वयं को हिन्दू कहने में गौरवान्वित महसूस करे। जागरूक हिन्दुओं को चाहिए कि वे अपने व्यवहार से राजनीति बाजों को करारा जवाब दें तथा उन्हें मुस्लिम एवं ईसाई तुष्टीकरण की नीति बदलने पर मजबूर करें।

इसी प्रकार का एक शब्द है अल्पसंख्यक। इसका भी हमारे राजनीतिबाज बहुत प्रयोग करते है। ईसाई एवं मुसलमान इसका उपयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए करते हैं। लोकतंत्र में अल्पसंख्यक नाम की चीज नहीं होती। सभी भारतीय नागरिक हैं। अल्पसंख्यक होना कोई विशिष्टता नहीं, जिससे कोई विशेषाधिकार का प्रयोग कर सके। इन शब्दों का इस्तेमाल बंद होना चाहिए।

अब समय आ गया है कि हिन्दू चेत जाये। यदि वह इतने पर भी नहीं चेता तो वह अपने ऊपर होने वाले चौतरफा हमले से बिखर जाएगा। मैं पुनः अपने हिन्दू भाइयों एवं बहनों से अपील करता हूं कि आइये, हम शपथ लें कि जब तक हमारे शरीर में खून की एक भी बूंद हैं, हम हिन्दुत्व की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहेंगे।

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए
पवित्र धर्मग्रन्थ : परमात्मा की वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-अर्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित
लागत मूल्य लगभग ४४४ रु०
किन्तु प्रचार के लिए अपने सदस्यों को
जनता संस्करण : २२५ रु०, पुस्तकालय संस्करण : २५१ रु०
उपहार संस्करण: ६०४ रु०
५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३९-५६४७४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्लिम संस्थाओं को सऊदी अरब से पैसा मिलने का प्रमाण

भारत में इस्लाम के प्रचार के लिए और हरिजन एवं दलित वर्ग के धर्मान्तरण तथा राष्ट्र विरोधी कार्यों के लिए विदेशों से विशेष रूप से अरब देशों से धड़ाधड़ धन भेजे जाने की चर्चा विगत कई वर्षों से सुनने में आ रही है। अनेक राज्यों की विधान सभाओं और संसद में भी ये आरोप लगाये गये हैं कि भारत में साम्प्रदायिक दंगों में परकीय शक्तियों का हाथ रहा है।

विदेशी धन भारत आने का प्रमाण दैनिक 'तरुण भारत' के प्रतिनिधि के हाथ लगा है जो सऊदी अरब से भेजे गये बैंक ड्राफ्टों के रूप में है। 'तरुण भारत' (नागपुर का मराठी दैनिक) ने इन ड्राफ्टों का चित्र १-८-८३ के अंक में प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किया है। ड्राफ्ट से यह भी प्रमाणित होता है कि धन नेपाल के रास्ते भारत भेजा गया है।

मक्का (सऊदी अरब) स्थित मुस्लिम वर्ल्ड लीग द्वारा नेशनल कमर्शल बैंक जद्दा के माध्यम से ऐसे पांच ड्राफ्ट बम्बई स्थित 'बैंक आफ अमरीका' की शाखा को भेजे गये हैं और उनकी रकम नेपाल के जयनगर शहर में मदरसा सिराजुलउलूम के शेख अब्दुल (उर्फ रहमानी अब्दुल रशीद, जियाउल्ला, फादहल हक, अब्दुल रफीक मुख्तार, अहमद मुहम्मद यूनुस, मुहम्मद उमरक बिन शम्सुल हक, मुहम्मद तय्यब अन्सारी को देने को कहा गया है। प्रत्येक ड्राफ्ट ६५१३ अमरीकी डालर अर्थात् ६५,१३० रुपये का है। इसका अर्थ यह है कि इन पाँच ड्राफ्टों से ३,२५,६२५ रु० सऊदी अरब से आया है।

हम भारत को हिन्दू गण राज्य बनाने का संकल्प लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त

१—ऋषि दयानन्द सत्य को सर्वोपरि मानते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि "जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा जाता है क्योंकि सत्य उपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं"।

२—ऋषि संसार के सब मनुष्यों को एक ईश्वर का पुत्र होने के नाते भाई समझते थे। मनुष्य और मनुष्य के मध्य खड़ी भेद की दीवारों समस्त समूल नष्ट करना चाहते थे। मनुष्यमात्र को एक जाति, एक धर्म एक लक्ष्य की स्थापना उनका इष्ट था। जन्म से मनुष्य समान और कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। वर्ण गुण, कर्म और स्वभाव सूचक है—जाति सूचक नहीं।

३—ऋषि का लक्ष्य मनुष्यमात्र को यह ज्ञान कराना था कि वह शरीर नहीं, शरीर का स्वामी आत्मा है। आत्म-तत्त्व को जान ईश्वर का निरन्तर सान्निध्य प्राप्त कर मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है। ज्ञान का उद्देश्य आत्म-तत्त्व की प्राप्ति का मार्ग-निर्देशन है। हम संसार के समस्त कर्मों को करते हुए उस ऐश्वर्य का संग्रह करें जो धरती से बिदा होते हुए साथ जा सके। भोगवाद और अध्यात्म का समन्वय ऋषि का विशेष संदेश था।

४—ऋषि का यह अटूट विश्वास था कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वे वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना परम धर्म मानते थे। वेद ज्ञान के प्रचार के अतिरिक्त और कोई मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं। उनका विचार था कि जब से भारतवासियों ने वेद का स्वाध्याय छोड़ा है तभी से भारत का पतन आरम्भ हुआ है। वस्तुतः वेद की विचारधारा का साम्राज्य धरती पर स्थापित करना ऋषि का चरम लक्ष्य था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—नारी जाति को ऋषि पूजनीय मानते थे। उन्होंने पाँच हजार वर्षों के बाद सबल स्वरों में यह प्रचारित किया कि—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"

६—ऋषि की दृष्टि में सत्य वह है जिसका विरोधी कोई भी न हो सके। उनका कथन था कि "मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं कि जो तीनों काल में सबको एक-सा मानने योग्य है। जो सत्य है उसका मानना-मनवाना जो असत्य है उसका छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।"

७—ऋषि का आदेश था कि अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य धर्मात्माओं की, चाहे वे कितना सेभी निर्बल हों, रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हों तथापि उनका अप्रियाचरण सदा किया करे।

८—ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि मानते हुए जीव को भोक्ता प्रकृति को साधन और ईश्वर से नित्य आनन्द प्राप्त करना जीव का ही लक्ष्य है। उन्होंने निरन्तर कम करते हुए प्रभु की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहना ही ज्ञान मार्ग बताया।

९—गंगास्नान, व्रत, पूजा से पाप क्षमा नहीं होते। कर्मों का फल सभी को भोगना ही होगा। ऋषि का यह विश्वास पूर्ण और धर्म भाव की आधार शिला था।

१०—मूर्ति पूजा, अवतार वाद, छुआ छूत, गुरुडम और अन्धविश्वास, भूत-प्रेत आदि और मतमतान्तरों के ऋषि प्रबलतम विरोधी थे और वे उन्हें मनुष्य जाति के पतन के कारण मानते थे।

११—ऋषि दयानन्द एक ईश्वर को ही उपास्य देव मानते थे। नाना देवी-देवताओं और अवतारवाद को वे पतन का हेतु समझते थे। उनकी मान्यता थी कि मनुष्यमात्र अपने शुभ कर्मों से ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इसके लिए किसी पैगम्बर या गुरु की सिफारिश आवश्यक नहीं।

१२—महर्षि दयानन्द ऐसी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यवस्था चाहते थे जिसके द्वारा संसार स्वर्ग बन जाए और जन्म से मृत्यु तक कोई भी मनुष्य दुःख, कष्ट, क्लेश का अनुभव न करे।

१३—सब सत्य का प्रचार कर सबको एक मत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुंचाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। ऋषि का यह चरम लक्ष्य उनके ही शब्दों में कितना स्पष्ट है।

१४—अपने चरम लक्ष्य को पूरा करने की ऋषि की अत्यन्त उत्कण्ठा थी। वे लिखते हैं—सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा, सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जाय।

१५—क्यों प्रवृत्त हो जाय—इसका उत्तर ऋषि के ही शब्दों में इस प्रकार है—"जिससे सब लोग सहज से धर्म अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनंदित होते रहें। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है"।

पाठक गण ! आपने देखे ऋषि के सिद्धान्त, देखी उनकी महान् विश्व-प्रेम की उदात्त भावना, उनका सत्य प्रेम, ईश्वर विश्वास। आपके जीवन को इससे यदि प्रकाश और प्रेरणा मिली हो तो इन गुणों को अपने जीवन में धारण कीजिये। असत्य छोड़ प्रभु की शरण में जाने के लिए ऋषि का महान् ग्रन्थ "सत्यार्थ-प्रकाश" पढ़िये और विश्वास रखिये कि ऋषि दयानन्द की बताई राह पर चलने से आपको जीवन में कभी दुःख-क्लेश नहीं मिलेगा। उनकी सभी बातें वेदसम्मत होने से निश्चय ही कल्याणकारी हैं।

किसी ने तो बाइबिल, किसी ने कुरान पै ही,
आंख मींच के ईमान लाओ, यह सुझाया था।
किसी ने पुराण, भागवत किसी ने "प्रकाश',
धर्म-ग्रन्थ हनुमान् चालीसा बताया था।
किसी ने केवल ज्ञान, किसी ने केवल कर्म
किसी ने केवल ढोल, भक्ति का बजाया था।
किन्तु स्वामी दयानन्द जी ने वेद द्वारा ज्ञान,
कर्म, भक्ति तीनों का महत्त्व दरशाया था।

* * * *

पाला ब्रह्मचर्यव्रत वीर हनुमान् ने था,
अपने आराध्यदेव राम को रिझाने को।
सुनते हैं पाला ब्रह्मचर्य परशुराम ने था,
आततायी क्षत्रिय समाज के नसाने को।
पाला ब्रह्मचर्य भीष्म पितामह ने "प्रकाश',
पूज्य पिता शान्तनु को सुखिया बनाने को।
किन्तु पाला ब्रह्मचर्य देव दयानन्द ने था।
कोटि-कोटि मानवों के संकट मिटाने को।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त की श्रद्धांजलि

—नटवर पारीक "विद्यार्थी"

ांधियां उठतीं गगन में
ा रहे दुर्दिन घनेरे ।
ाल-से मंडरा रहे हैं,
ाज फिर से वे अँधेरे ।

दृष्टि को जिस ओर फेंकें,
उठ रही संगीन ज्वाला ।
स्वार्थ की चिनगारियों ने,
देश को ही फूंक डाला ।

ासता के बोझ को,
मां भारती ने खूब ठेला ।
ेलकर अफसोस यह कि
ूर्ववत् वैसा झमेला ।

विद्वेष की ये खाइयां,
अलगाव की बुलन्दियाँ
फिरकापरस्त कर रहे हैं,
शत्रुओं से सन्धियां ।

हो तनिक यदि रक्त में
भावना बलिदान की ।
खींच लो तलवार औ
बाजी लगा दो जान की ।

स्वप्न तब साकार होंगे,
क्रांति फैले हर गली ।
मातृभूमि मांगती है
रक्त की श्रद्धांजलि ।

मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है उसे प्रत्यक्ष करना ो शिक्षा का कार्य है ।
—स्वामी विवेकानन्द

लोगों को पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए योग्य बनाना शिक्षा का ेय है ।
—स्वामी श्रद्धानन्द

युवकों को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने र्वोत्तम आदर्श रखें ।
—महामना पं० मदनमोहन मालवीय

शिक्षा का ध्येय चरित्र-निर्माण है ।
—प्रिंसिपल दीवानचन्द

गुरु के साथ रहने से शिष्य चारित्रिक गुणों को स्वयमेव अपना लेता है ।
—महात्मा नारायणस्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ घरेलू नुस्खे

□ □

हींग—यदि माचिस से जलाने पर हींग पूरी जल जाए तो समझो असली है। इससे खाना जल्दी हजम होता है। टट्टी साफ होती है। पेट दर्द में लाभकारी है। पेट फूलने पर हींग को ठंडे पानी में मिलाकर पेट पर लगाएं।

□ □

जीरा—बुखार में जीरे का पानी देने से शरीर और पेशाब की जलन कम हो जाती है। पेशाब कम होने पर जीरा और चीनी बराबर-बराबर मिला कर खाने से लाभ होता है।

□ □

अदरक—२-३ चम्मच अदरक का रस मिसरी में मिला कर लेने से सीने का दर्द कम होता है। अदरक का रस और काला नमक खाने से कड़वी व खट्टी डकारें रुक जाती हैं। बेहोशी में अदरक का रस मिसरी के साथ लें। भूख बढ़ाने के लिए अदरक नमक के साथ खाएं।

□ □

आँवला—२-३ तोले आंवले के रस में मिसरी मिला कर खाने से पित्त में आराम मिलता है। इसका तेल दिमाग को ठंडा रखता है और नींद गहरी आती है। रोजाना मुरब्बे के दो आंवले खाने से पेट के रोग नहीं होते।

□ □

कत्था—कत्था आवाज साफ करता है। बारीक पीसकर खाने से अ... सार कम होता है। पेशाब बहुत आए तो ३ तोले कत्था ३ तोले गुड़ मिलाकर खाने से लाभ होता है। रोजाना २ तोले कत्था एक गिलास पानी में पीने से मोटापा दूर होता है।

□ □

कपूर—सर्दी में सिर-दर्द हो तो कपूर का चूर्ण बना कर नाक से न... वार की तरह खींचें। गर्भाशय में दर्द हो तो कपूर को घी में मिलाकर ना... के नाचे लगाएं। १ तोला चीनी में मिलाकर भी खाएं। बदहजमी और मानसिक विकार में दिल धड़कने लगे तो कपूर और हींग की गोली बनाकर खाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□

धनिया—हरा धनिया पित्तनाशक है। खुजली और सिरदर्द में इसे ...कर लेप करें। चमड़ी लाल हो जाए तो धनिया मलें। सूखा धनिया ...साफ करता है। सूखा धनिया पीस और उबाल कर छानें। इसका ...पेशाब साफ करेगा।

□

लहसुन—३ तोले लहसुन का रस और ३ तोले शुद्ध शहद मिला कर ...ने से बिच्छू का जहर उतर जाता है। नमक और लहसुन साथ-साथ ...कर डंक की जगह लगाने से भी जहर उतर जाता है। बाद में लहसुन ...कर लेप करने से फायदा होता हैं। ★

...नन्द स्वामी उवाच

सत्संग की महिमा

महर्षि दयानन्द जिन दिनों जेहलम में थे, उन दिनों वहां महता अमीचन्द जी बहुत सुन्दर भजन गाया करते थे। परन्तु वे थे शराबी ...और उनका आचार भी कुछ बिगड़ चुका था। नित्य स्वामीजी के पास ...थे। एक दिन महता अमीचन्द ने प्रभुभक्ति का बहुत ही मनोहर गाना ...गाया। स्वामीजी ने सुना तो कहा—"अमीचन्द! हो तो हीरे परन्तु कीचड़ ...में गिर पड़े हो।"

बस, तीर चल गया; निशाना ठीक बैठ गया था। उसी समय से महता ...अमीचन्द का जीवन पलट गया। मदिरा छोड़ दी, व्यभिचार को महापाप ...समझने लगे और महता अमीचन्द सचमुच ईश्वर के सच्चे भक्त बन गए। ...महर्षि के एक वाक्य ने एक शराबी, व्यभिचारी को भक्त और शुद्धाचारी ...बना दिया।

इसलिए मैं कहता हूं कि सत्संग से उकताइये नहीं। निरन्तर प्रयत्न-...शील रहा करिये। प्रतीक्षा कीजिये कि कब आपके भाग्योदय की घड़ी ...आती है।

कबीर संगति साधु की, नितप्रति कीजे जाय।
दुरगति दूर बहावसी, देसी सुगति बताय। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर-उपासना : उपनिषदों का रहस्य

—स्व० महात्मा नारायणस्वामी

उपनिषदों में शिक्षा दी गई है कि यदि हम परमात्मा को प्राप्त करना चाहें तो केवल विद्या द्वारा नहीं प्राप्त कर सकते, और न ही बुद्धि तीव्र कर लेने अथवा उपदेश और सत्संग में जाने से प्राप्त कर सकते हैं।

अब देखना यह है कि मनुष्य की शक्ति के अन्दर की जो बात है वह तो है—वेद का स्वाध्याय और साधु समाज की संगति। यदि वह इन साधनों से प्राप्त होने वाला नहीं, तो कैसे प्राप्त होगा ? इस उलझन को उपनिषदें सुलझाती हैं। उनमें लिखा है—

"ईश्वर को वही प्राप्त करते हैं जिन्हें ईश्वर स्वयं पसन्द कर लेता है।" हां, तो परमात्मा भी किसी नियम-कायदे के अधीन होकर पसन्द करता है, या यों ही अन्धाधुन्ध ? इसका उत्तर देना बाकी है।

ऋग्वेद में लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु से मित्रता करनी चाहिए। जैसे, एक बालक, जो भूख से व्याकुल है, अपनी निर्बल टांगों का सहारा लेकर अपनी मां के पास पहुंच जाता है। बस ! आगे उसकी शक्ति से बाहर है कि वह इतना ऊंचा हो जाये कि माता के स्तनों तक पहुँच कर दूध पी सके। तब क्या होता है ? बालक के प्रेम से प्रभावित होकर माता के हृदय में दया की उमंगें मौजें मारने लगती हैं, वह उसे गोदी में उठा लेती है और दूध पिलाकर उसकी भूख मिटा देती है। यही हाल परमात्मा की प्राप्ति का भी है।

मनुष्य को चाहिए कि प्राणपण से—जहां तक उसकी शक्ति उसे काम दे सकती है—प्रयत्न करे। तब इसका फल होगा और जगदम्बा रीझेगी। वह दया से द्रवीभूत होकर अपनी प्रेममयी गोद में ले लेगी और आनन्दरूपी दूध पिला कर उसकी इच्छा पूर्ण करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु जब ... में कुछ त्रुटि होगी तो उस जगन्माता की दया का प्राप्त होना भी असम्भव होगा। हमारा अभिप्राय यह है कि जहां तक मनुष्य से बन पड़ता है वह अपनी शक्ति से काम ले। इससे ईश्वर उसे स्वयं चुन लेंगे।

उपनिषद् में एक वचन आता है कि मनुष्य जब धर्म और कर्म—दोनों को काम में लाता है तब कर्म के द्वारा मृत्यु से पार होता है और ज्ञान के द्वारा अमृत को प्राप्त करता है। तो क्या मृत्यु के पार होने और अमृत को प्राप्त करने में कुछ अन्तर है?—नहीं। इसका अभिप्राय है कि मनुष्य को चाहिए कि वह ज्ञान और कर्म दोनों को साथ ले आए।

मनुष्य-शरीर-ज्ञान और कर्मेन्द्रियों का सामूहिक रूप है। आत्मा के अधिकार में ज्ञान और प्रयत्न हैं। वेद कहता है कि जब कोई प्राणी ज्ञान और कर्म दोनों को उपलब्ध करता है तो उसका परिणाम मृत्यु से पार होना होता है। मोक्ष तो न ज्ञान से प्राप्त होता है, न कर्म से। वह दोनों के संयोग से प्राप्त हो सकता है।

मोक्ष पर विचार किया जाए तो उसके दो पहलू दीख पड़ते हैं। एक त्याग और दूसरा ग्रहण करना अर्थात् मृत्यु के बन्धन काट देना और आनन्द प्राप्त करना। त्याग करना मनुष्य के अधिकार की बात है, किन्तु प्राप्त करना उसकी शक्ति से बाहर है। आनन्द-प्राप्ति ज्ञान और कर्म का फल नहीं, तो किसका फल है? इसमें ईश्वर की दया काम करती है। दया किस पर होती है? जिसने अपने आपको मृत्यु के बन्धन से मुक्त करने योग्य बना लिया। आनन्द के दो प्रकार हैं—विषम और सम। जो आनन्द किसी के त्याग से मिलता है उसे शान्ति कहते हैं। जैसे ज्वर आकर चला जाए तो शान्ति मिलती है। किन्तु ग्रहण से जो मिलता है उसका नाम आनन्द है। इसकी प्राप्ति ज्ञान और कर्म—दोनों के एक साथ ग्रहण करने से होती है।

निर्गुण और सगुण उपासना

ईश्वर-उपासना के दो प्रकार हैं—एक निर्गुण उपासना, दूसरा सगुण उपासना। निर्गुण उपासना वह है जो उन गुणों के विचार करने से की जाए जो ईश्वर में नहीं हैं और सगुण उपासना उन गुणों के ध्यान करने से होती है जिनकी सत्ता ईश्वर में मौजूद है। निर्गुण-उपासना से मनुष्य मृत्यु से पार होता है और सगुण-उपासना से आनन्द को प्राप्त करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग कहते हैं कि जब हम परमात्मा को देख नहीं सकते तो हम ध्यान किसका करें ? यह उनकी भूल है। ध्यान किसी वस्तु का अन्दर की तरफ लाना नहीं बल्कि वह तो अन्दर से निकलना है। ध्यान मन को विषयातीत —विषय से रहित—कर देने का नाम है और मन के विषयातीत होने का नाम वह सुषुप्ति है जो जाग्रत अवस्था में होती है।

जप करो

ईश्वर-उपासना का आरम्भिक प्रकार उसका जप करना है। जप कहते हैं—वाणी से ओ३म् का जप करना, और मन से इसके अर्थों का चिन्तन करना। ऐसा करने से मन संकल्प-विकल्प से बचा रहता है। कोरा तर्क करने वाला परमात्मा तक नहीं पहुंच सकता।

उपनिषदों का रहस्य

मनुष्य शक्ति का केन्द्र है। शक्ति उस के भीतर निहित है। इन्हीं शक्तियों के विकास का नाम शिक्षा है। मनुष्य-जीवन की सफलता का भेद यही शक्ति-विकास है। यही शक्ति विकसित होकर अभ्युदय और निःश्रेयस, लोक और परलोक की सिद्धि का कारण बनती है। शक्ति-विकास के कार्य्य-क्रम ही का नाम अध्यात्म (योग) विद्या है। योग, कर्म में कुशलता का नाम है; जैसा कि गीता में कहा गया है।—योगः कर्मसु कौशलम्—महा-मुनि पतंजलि ने भी योग को क्रिया (कर्म) योग भी कहा है, और उनके केवल तीन विभाग किए हैं—'तपःस्वाध्याये-श्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः। (योगदर्शन २।३) अर्थात् तप, स्वाध्याय और ईश्वर-भक्ति ही से योग की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। सुतरां क्रिया (कर्म) ही योग है। इस क्रिया को करने के लिए सबसे पहला साधन तप है। तप व्रतानुष्ठान को कहते हैं। व्रत नाम कर्त्तव्य का है। इस शक्ति के विकास के लिए जिस तप को करना, जिस व्रत का अनुष्ठान करना, या कर्त्तव्य का पालन करना है उसी का नाम कर्त्तव्य-पंचक है। अर्थात् क्रियात्मक जीवन बनाने के लिए जिस प्रकार का वातावरण उत्पन्न करने की जरूरत है वह इन पांच कर्त्तव्यों के पालन करने से उत्पन्न होता है, जिसका नाम कर्त्तव्य-पंचक है। यह उपनिषदों की प्रथम शिक्षा है। इन्हीं कर्त्तव्यों के पालन करने से किसी भी व्यक्ति को वह अधिकार प्राप्त हुआ करता है जिसका नाम अध्यात्म-विद्या में 'प्रवेशाधिकार' है। इसीलिए उपनिषदों की शिक्षा के वर्णन में पहला स्थान इसी कर्तव्य-पंचक को दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला कर्तव्य

पहली बात यह है कि मनुष्य उच्च प्रकार की आस्तिकता के भावों से अपने हृदय को भर ले। इसका साधन यह है कि मनुष्य ईश्वर को व्यक्ति-स्वरूप में न मानकर उसे विभु (व्यापक) रूप में माने अर्थात् जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु आकाश में है और प्रत्येक वस्तु के भीतर भी आकाश है, इसी प्रकार से ईश्वर भी जगत् में ओतप्रोत हो रहा है। कोई वस्तु ऐसी नहीं है जो ईश्वर में न हो और जिसमें ईश्वर न हो। इस सिद्धान्त के आचरण में आने से मनुष्य का हृदय लचकीला हो जाता है। हृदय के लचकीला होने के लिए दो बातों की जरूरत होती है—प्रथम यह कि वह निष्पाप हो, दूसरे उसमें प्रेम की मात्रा अधिकता से हो। ये दोनों बातें ईश्वर को उपर्युक्त प्रकार से सर्वव्यापक मानने से मनुष्य में आया करती हैं।

मनुष्य पापाचरण के लिए सदैव एकान्त की खोज किया करता है। चोर इसीलिए रात्रि को अपनी सफलता का साधन समझता है, क्योंकि उसमें उस प्रकार के एकान्त की अधिक संभावना होती है जो ऐसे दुष्ट कर्मों के लिए आवश्यक है। परन्तु ईश्वर का विश्वास होने पर पापाचरण के लिए एकान्त स्थान मिल ही नहीं सकता। एक उर्दू के कवि ने अपनी एक कविता में इसी भाव को इस प्रकार प्रकट किया है—

> 'जाहिद शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर।
> या वह जगह बतादें जहां पर खुदा न हो॥'

अस्तु, जब तक मनुष्य के हृदय में नास्तिकता न आवे वह पाप नहीं कर सकता। इसलिए ईश्वर के सर्वव्यापकत्व पर विश्वास होने ही से मनुष्य निष्पाप हो सकता है। दूसरी बात प्रेम है। मनुष्य ईश्वर को सर्वव्यापक मानने से विवश है तो प्रत्येक प्राणी में ईश्वर की सत्ता, उसके व्यापकत्व गुण से, स्वीकार करे और जब इस प्रकार प्रत्येक प्राणी में—चाहे वह अछूत हो या कोई उससे भी निकृष्ट—ईश्वर का व्यापक होना मानेगा तब उससे घृणा किस प्रकार कर सकता है? घृणा का अभाव ही प्रेम का द्वार है। घृणा भी नास्तिकता से ही उत्पन्न होती है। जिससे कोई घृणा करेगा, अवश्य उसमें ईश्वर की सत्ता का अभाव मानेगा। इसी का नाम नास्तिकता है। निष्कर्ष यह है कि निष्पापता और प्रेम से मनुष्यों के हृदयों में लचकीलापन (कठोरता का अभाव) आया करता है और और इन दोनों साधनों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्राप्ति ईश्वर के व्यापकत्व पर विश्वास होने से हुआ करती है। उपनिषद् ने इस शिक्षा को अपने शब्दों में इस प्रकार प्रकट किया है—"ईशा वास्य-मिदंसर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा कर्तव्य

दूसरा कर्तव्य उपनिषदों ने संक्षिप्त तीन शब्दों में वर्णन किया है। वे शब्द ये हैं—तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' अर्थात् उस (ईश्वर) के दिये हुए में से मांग कर उपनिषदों ने प्रत्येक प्रकार के भोग की आज्ञा दी है। मनुष्य विवाह करके सन्तान उत्पन्न करे, शक्ति प्राप्त करके राज्य प्राप्त करे और उसका उपभोग करे। कृषि, व्यापार तथा अन्य कला-कौशलादि से धन प्राप्त करके उनका उपभोग करे, इत्यादि। उपनिषद् इस सबको विहित बतलाती है, परन्तु एक शर्त इन सबके भोग के साथ लगाती है और वह यह है कि वह इन भोग-पदार्थों को ईश्वर का समझ कर भोग करे। ऐसे विश्वास से मनुष्य प्रत्येक पदार्थ—राज्य, धनादि—ईश्वर का समझकर उनमें केवल अपना प्रयोगाधिकार समझेगा और ममत्व न जोड़ सकेगा कि अमुक पदार्थ मेरा है। संसार के समस्त दुःखों का मूल ममता है। दुःख प्रायः किसी न किसी वस्तु के पृथक् होने से हुआ करते हैं। परन्तु जब उन्हीं वस्तुओं को मनुष्य स्वयं छोड़ देता है तब दुःख नहीं, अपितु सुख हुआ करता है। प्राणी में जब तक ममता क प्राबल्य रहता है वह किसी वस्तु को छोड़ना नहीं चाहता, परन्तु जब उन वस्तुओं में वह अपना केवल प्रयोगाधिकार ही समझता है तब प्रयोग का समय समाप्त होने हर स्वयं उन्हें छोड़ दिया करता है। वस्तुओं के छीनने वाले चोर, डकैत, राजे-महाराजे हुआ ही करते हैं, परन्तु एक बड़ी प्रबलशक्ति जो गिनकर एक दो वस्तु प्राणियों से ले लिया करती है और कुछ भी नहीं छोड़ा करती, उस शक्ति का नाम मृत्यु है। मृत्यु आकर पदार्थों को छीनती है, परन्तु ममता के वशीभूत प्राणी उन्हें देती नहीं। आत्मा की इसी कलह का नाम मृत्यु संवेदना (मरने का दुःख) है। मृत्यु वास्तव में दुःखप्रद नहीं, किन्तु सुखमय है, परन्तु मरने के समय ये सब दुःख मनुष्यों को ममता के वश होकर उठाने पड़ते हैं। जो मनुष्य सांसारिक भोग्य पदार्थों में अपना केवल प्रयोगाधिकार समझता है, वह उन्हें प्रयोग का समय (जीवन-काल=आयु) समाप्त होने पर छोड़ देता है और फिर उसके पास कुछ रहता ही नहीं जिसे मृत्यु आकर अपहरण करे, इसलिए उसके लिए मृत्यु का समय दुःख का समय नहीं, अपितु सुख और शान्ति के साथ संसार छोड़ने का समय होता है, जिसमें उसे न केवल आशा बल्कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास होता है कि वह यह सब चिरकालीन सुख और शान्ति की प्राप्ति के लिए कर रहा है; और ऐसे व्यक्ति मृत्यु से डरते नहीं अपितु मृत्यु का स्वागत करते हैं और प्रसन्न और हंसते-हंसते संसार को छोड़ा करते हैं। सारांश यह है कि इस दूसरे कर्तव्य के पालन करने से मनुष्य मृत्यु के भय से स्वतन्त्र होता है। किन्हीं-किन्हीं पुरुषों को ऐसा भ्रम है या हो जाता है कि यदि मनुष्य सांसारिक पदार्थों—राज्यादि—में ममता न जोड़ें तो फिर उनकी रक्षा न कर सकेंगे। परन्तु यह उनकी भूल है। मनुष्य उन वस्तुओं की भी वैसी ही रक्षा किया करता है जो प्रयोग के लिए मिली हों—जैसी उनकी करता है जिनमें उसने मेरे पन का नाता जोड़ा हुआ है। इसलिए लोक-दृष्टि से भी यह नियम वैसा ही उपयोगी है जैसा परलोक-दृष्टि से। मनुष्य मृत्यु के भय से स्वतन्त्र होकर संसार में कौन-सा बड़े से बड़ा काम है, जिसे नहीं कर सकता !

तीसरा कर्तव्य

बिना शान्ति का वातावरण उत्पन्न किए संसार का कोई भी काम पूरा नहीं होता, फिर अध्यात्म-विद्या का तो कहना ही क्या। उसे तो कोई अशान्ति में या अशांतचित्त होकर प्राप्त ही नहीं कर सकता। अशान्ति का मूल कारण किसी व्यक्ति या जाति का स्वत्वापहरण ही हुआ करता है।

दुनिया में भिन्न-भिन्न जातियों में जितने भी युद्ध हुआ करते हैं, उनका मुख्य कारण यही होता है कि किसी जाति का स्वत्व छीना गया या उसकी स्वतन्त्रता में बाधा पहुँचाई गई हो। यही कारण प्रत्येक व्यक्ति में झगड़ों की तह में छिपा हुआ मिलता है, इसलिए 'कारणाभावात्कार्याभावः' के नियमानुसार उपनिषदों में (तीसरा कर्तव्य यह ठहराया गया है कि 'मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' अर्थात् किसी का धन या स्वत्व लेने की चेष्टा मत करो। न किसी का धन लिया जावेगा, न किसी का स्वत्व छीना जायगा, न किसी की स्वतन्त्रता में बाधा पहुंचाई जायगी, तो न उनकी सन्तति अशान्ति का जन्म होगा।

चौथा कर्तव्य

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

अर्थात् कर्म करते हुए ही मनुष्य १०० वर्ष तक जीने की इच्छा करे। परन्तु शर्त यह है कि कर्म इस प्रकार से करने चाहिए कि वे करने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लिप्त न करें अर्थात् मनुष्य उनमें फंस न जाय। उपनिषदों ने खुले शब्दों में यह भी कह दिया है कि मनुष्य को जीवित रहने के लिए इस (कर्मयोग) के सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

यह कर्तव्य दो भागों में विभक्त है—
(१) मनुष्य को निरन्तर कर्म करने का अभ्यास करना चाहिए; (२) वे कर्म कर्त्ता को फंसाने वाले न हों।

पहले भाग पर दृष्टिपात करने से प्रकट होता है कि कर्म सृष्टि का सार्वतन्त्रिक नियम है। जगत् में कोई वस्तु ऐसी दिखाई नहीं देती कि जो क्रिया-रहित हो। सृष्टि का महान् से महान् कार्य—सूर्य—प्रतिक्षण गति में रहता है। पृथ्वी गतिमय है, चन्द्रमा चलता है—यदि छोटी से छोटी वस्तु एक कण (Atom) को लेवें और देखें तो एक बड़ा चमत्कार दिखाई देता है। उस कण के भीतर केन्द्र है और उसके चारों ओर असंख्य विद्युत्-कण (Electrons) उसी प्रकार घूमते दिखाई देते हैं जिस प्रकार अनेक ग्रह-उपग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं। इस प्रकार ब्रह्माण्ड का एक-एक कण भी सूर्य-मण्डल (Solar System) का संक्षिप्त रुप है। क्या वह कण, जिसके भीतर इतना कार्य हो रहा है, ठहरा हुआ और निष्क्रिय है? विज्ञान का उत्तर यह है कि कदापि नहीं। यह पुस्तक, जो सामने मेज पर रक्खी है, क्या ठहरी है? कदापि नहीं। पुस्तक के पृष्ठ जिन कणों से बने हैं उनमें से प्रत्येक कण में कम्पन (Vibration) पाया जाता है, यदि कम्पन न हो तो कोई वस्तु वस्तु-स्वरूप में बाकी न रहे। इससे स्पष्ट है कि जगत् की छोटी से छोटी वस्तु में कण है जिसके भीतर गति हो रही है और जो स्वयं भी सूर्य-मण्डल की तरह गति में है। जब कर्म का साम्राज्य जगत्-व्यापी है तो मनुष्य उससे किस प्रकार बच सकता था! इसीलिए मनुष्ह को भी कर्म-निष्ठ होना चाहिए। उपनिषद का उपयु क्त वाक्य जीवन की अन्तिम घड़ी तक कर्म करने का बिधायक है। अवश्य संन्यास कर्म के त्याग को कहते हैं, परन्तु कर्म से प्रयोजन काम्य (सकाम) कर्म, यज्ञादि से है और उन्हीं का त्याग संन्यास है।

कर्तव्य का दूसरा भाग यह है कि मनुष्य कर्म में लिप्त न हो। कर्तव्य के इस भाग को समझने के लिए आवश्यक है कि समझ लिया जावे कि कर्म दो प्रकार के हैं—(१) सकाम (२) निष्काम। सकाम कर्म फल की इच्छा रख कर काम करने का नाम है, जबकि निष्काम कर्म फल की इच्छा त्याग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म या कर्तव्य समझ कर कर्म करने को कहते हैं। इन दोनों में अन्तर यह है कि सकाम कर्म से वह वासना उत्पन्न होती है जो फिर उसी प्रकार के कर्म की प्रेरणा करती है। योगदर्शन का भाष्य करते हुए व्यास मुनि ने जिस संसार-चक्र की बात कही है, वह चक्र छः अरोंवाला है। वे अरे यह हैं, मनुष्य इच्छा करता है, उसका फल उसे सुख मिलता है, उससे सुख की वासना बनती है, वह फिर उसी प्रकार की इच्छा करती है, उससे फिर सुख और फिर वही वासना और उससे फिर वही इच्छा—इस प्रकार (१) इच्छा (२) उसका फल सुख (३) सुख की वासना, ये चक्र के तीन अरे हैं जो बरा-बर उपर्युक्त की भाँति घूमा करते हैं। बाकी तीन अरे हैं (१) द्वेष, (२) उसका फल दु:ख, (३) दु:ख की वासना। ये भी पहले तीन अरों की भांति घूमा करते हैं। यही छः अरों वाला संसार चक्र है जो संसारी पुरुषों को चक्र में रखता है। इसी चक्र में रहने का नाम कर्म में मनुष्य का या कर्म का मनुष्य में लिप्त होना है। उपनिषद मनुष्यों का कर्तव्य ठहराती है, कि कर्म करते हुए भी इस चक्र में न फंसे। फंसे हुए प्राणी इस चक्र से किस प्रकार निकल सकते हैं—इसका उपाय और एकमात्र उपाय सकामता का निष्कामता में परिवर्तन करना है। इस परिवर्तन से प्रभावित मनुष्य निष्काम कर्म करके वासनाओं का नाश करता है। उनके न रहने से सुख-दु:ख से भी पृथक् हो जाता है और सुख-दु:ख के न रहने से उनकी वासनाएं भी नहीं बन सकतीं। इस प्रकार चक्र के छः अरे निकम्मे होकर चक्र टूट जाता है और मनुष्य उससे निकल आता है। यही चौथा कर्तव्य है जिसके पालन किए बिना कोई व्यक्ति अध्यात्म-जगत् में प्रवेश का अधिकारी नहीं बन सकता।

पाँचवां कर्तव्य

उपनिषद् के इस वाक्य में पांचवें कर्तव्य का विधान किया गया है—

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽवृताः ।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥

अर्थात् आत्म-हनन (आत्मा से विपरीत काम) करने वाले मनुष्य प्रकाश-रहित और तम से आच्छादित योनियों को प्राप्त होते हैं।

मन्त्र में आत्म-हनन अर्थात् आत्मा के प्रतिकूल कार्य को निषिद्ध ठहराया गया है। आत्मा के प्रतिकूल कार्य नहीं करना चाहिए—इस पर विचार करना है। आत्मा स्वरूप से शुद्ध और पवित्र है, किसी प्रकार के ईर्ष्या, द्वेषादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषों से लिप्त नहीं। इसलिए आत्म-प्रेरणा भी, जिसको अन्तः-करण (Conscience) के अनुकूल कार्य करना कहते हैं, इन दोषों से मुक्त होती हैं। इसीलिए धर्मशास्त्रानुसार मनु ने भी इसी आत्म-प्रेरणा को "स्वस्य च प्रियमात्मनः" कह कर धर्म का अन्तिम साधन बतलाया है। चरित्र-नियन्त्रण करने का मुख्य साधन भी यही आत्म-प्रेरणा है। चरित्रवान् हुए बिना मनुष्य अध्यात्म-जगत् में प्रवेश नहीं कर सकता। इसीलिए उपनिषद् में इस बात का विचार करते हुए कि कौन-कौन मनुष्य आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, उनकी गणना में सबसे पहला नाम चरित्रहीनों का लिया है—"नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः (उपनिषद् १।२।२४) आत्म-प्रेरणा से किस प्रकार चरित्र निर्मित होता है इसके लिए किसी बड़ी व्याख्या की जरूरत नहीं, चरित्र को ही सदभ्यास भी कहते हैं। अभ्यास एक ही कर्तव्य को अनेक बार कार्य में परिणत करने से बना करता है। मनुष्य जब कोई अच्छा या बुरा काम करना चाहता है, तो अच्छे काम करने में आत्म-प्रेरणा से उसको उत्साह और प्रसन्नता उत्पन्न होती है, परन्तु जब बुरा काम करने का विचार करता है तो उसके सम्मुख भीतर से भय, लज्जा और शंका के रूप में अनुत्साह और अप्रसन्नता उत्पन्न होती है। पहली सूरत में किसी अच्छे कर्म को अनेक बार करके प्राणी उसके करने का अभ्यास (आदत) बना लेता है और फिर उस काम को वह इच्छा से नहीं किन्तु अभ्यास-वश किया करता है। इसी का नाम सदभ्यास या चरित्र है। इसी प्रकार जब कुसंगति में पड़कर कुसंगदोष से आत्म-प्रेरणा के विरुद्ध मनुष्य कोई बुरा काम अनेक बार कर लेता है, तो उससे असदभ्यास बनता है और इससे वह उस बुराई को बिना इच्छा के, और किन्हीं सूरतों में इच्छा के विरुद्ध भी, अभ्यास-वश करने लगता है। कल्पना करो कि एक मनुष्य ने अफीम खाने का बुरा अभ्यास बना लिया है। अब, जब दूसरे पुरुष उसको इस दुष्कर्म की दुष्कर्मता को बतलाते हैं तो वह उन्हें स्वीकार कर लेता है, परन्तु जब कहते हैं कि फिर इसे छोड़ क्यों नहीं देते, तब वह अपनी विवशता प्रकट करते हुए कह देता है कि 'क्या करूं, आदत से लाचार हूं।'

इस प्रकार विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि आत्म-प्रेरणा से सदभ्यास या चरित्र बना करता है, और उसके विरुद्ध आचरण करने से असदभ्यास या दुश्चरित। हमने देख लिया कि आत्मा के अनुकूल कार्य करके ही हम चरित्र-निर्माण करते हुए अध्यात्म-जगत् में प्रवेशाधिकार प्राप्त कर सकते हैं। पश्चिमी विचारकों ने भी उपनिषद् की इस सचाई के सामने सिर झुकाया है। इंग्लैंड के प्रसिद्ध विद्वान् 'माटले' ने एक पुस्तक लिखी है जिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम 'राजीनामा' (Compromise) है। इसमें इस बात पर विचार किया गया है कि किन सूरतों में राजीनामा हो सकता है। उसने सम्मति के तीन दर्जे किए हैं—

(१) सम्मति का स्थिर करना (Formation of opinion)
(२) सम्मति प्रकट करना (Expression of opinion)
(३) सम्मति का कार्य में परिणत करना (Execution of opinion)

इस प्रकार से सम्मति के तीन दर्जे करते हुए 'माटले' लिखता है कि कुछ थोड़ा-सा राजीनामा नं० २ सम्मति के प्रकट करने में हो सकता है और वह केवल इतना कि जिस सम्मति के प्रकट करने से दुष्परिणामों के निकलने की सम्भावना है उस सम्मति को प्रकट न किया जावे। यह वही बात है जिसे मनु ने 'न ब्रूयात् सत्यप्रियम्' के द्वारा प्रकट किया है। माटले की सम्मति में पूरा-पूरा राजीनामा नं० ३ सम्मति के कार्य में लाने से हो सकता है अर्थात् अल्प पक्ष की सम्मति की उपेक्षा करके बहुपक्ष के मतानुकूल कार्य किया जावे। परन्तु उसकी यह स्थिर सम्मति है कि नं० १ अर्थात् सम्मति के स्थिर करने में किसी दशा में भी कोई राजीनामा नहीं हो सकता। सम्मति का स्थिर करना क्या है? आत्म-प्रेरणानुकूल किसी विचार का स्थिर करना। अतः यह प्रकट है कि माटले साहब भी आत्मप्रेरणा के विरुद्धाचरण का विधान नहीं करते। कर्तव्य-पंचक में से पांचवां कर्तव्य 'आत्मा के अनुकूल कार्य करना' है। इस प्रकार उपनिषदों ने आत्म-ज्ञान प्राप्त करने के लिए सबसे पहली बात यही बतलाई है कि मनुष्य इन पांचों कर्तव्यों को समझ कर आचरण करे।

वे पांचों कर्तव्य ये हैं—

(१) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ईश्वर का व्यापकत्व।

(२) जगत् के भोग्य पदार्थों में ममता को न जोड़ कर उनमें केवल अपना प्रयोगाधिकार समझना।

(३) किसी भी वस्तु या स्वत्व का अपहरण न करना।

(४) सदैव कर्म करना और निष्कामता को लक्ष्य में रख कर उन्हें धर्म या कर्तव्य समझ कर करना।

(५) आत्मा के अनुकूल मन, वाणी और शरीर से आचरण करना।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

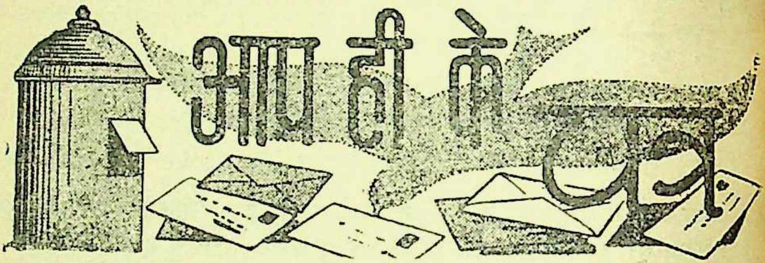

आपका प्रयास सराहनीय है

आदरणीय बहन जी,

आपके द्वारा सम्पादित जन-ज्ञान मासिक का आषाढ़ का अंक मेरे हाथ में है। मैं इस का जनवरी से ही नियमित पाठक हूं। इस पत्रिका का प्रत्येक लेख बहुत ज्ञानवर्द्धक और महत्त्वपूर्ण होता है। सामग्री उच्च कोटि की होती है। परन्तु यह देखकर दुःख होता है कि सरकार ने एक राष्ट्रवादी सम्पादक, विचारक, लेखिका और सत्यवादी नारी पर विभिन्न धाराओं में २३ अभियोग चला रखे हैं और दूसरी तरफ सरकार से खुला विद्रोह करने वाले, भारतीय संविधान और राष्ट्रीय झंडे को जलाने वाले, १५ अगस्त को पाकिस्तानी झंडा लहराने वाले खुले आम सड़कों पर घूम रहे हैं। मोपला कांड के हत्यारे, जिन्होंने हिन्दुओं को मार-मार कर कुंएं भर दिये थे, आज स्वतन्त्र सेनानी बन कर पेंशन पा रहे हैं। इन सब बातों को देखते हुए हमें यह सोचने पर विवश होना पड़ता है कि हम अभी स्वतन्त्र हुए भी हैं या नहीं? जो राष्ट्रवादी थे, हिन्दुत्व वादी वीर सावरकर सरीखे व्यक्ति थे उन पर मुकद्दमे चलाये गये और जो आज राष्ट्र के भले की बात कहते है, देश की अखंडता को खतरा पैदा करने वालों से देश की जनता को सावधान करना चाहते हैं उन्हें साम्प्रदायिक कह कर उन पर कठोरतम धाराओं में मुकद्दमे चलाये जाते हैं। आपका प्रयास सराहनीय और अनुकरणीय है। हम हर संकट में राष्ट्र की सेवा के लिए हर वक्त तैयार बैठे हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह आपको और वेदभिक्षु जी को दीर्घायु करे' जिससे आपका निर्देशन और आशीर्वाद बहुत समय तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मिलता रहे और देश में हिन्दुत्व की गंगा, जिसकी धारामन्द पड़ गयी थी;
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाढ़ की तरह उफनती चली आये । इन्हीं शब्दों के साथ आपके प्यार का
भिलाषी—

आपका भाई
विक्रमसिंह आर्य

मेरठ

आपके दर्शन करूंगा

शारानी जी,

आपकी भेजी राखी मिली । अत्यन्त प्रसन्नता हुई । आप विश्वास रखें हमारा भाई-बहन का सम्बन्ध उम्र-भर नहीं टूटेगा । अवसर मिलने पर आपके दर्शन करूंगा ।

आपका प्रिय अनुज
छांगामल आर्य

मृतसर (पंजाब)

हार्दिक शुभ कामनाएं

बहनजी,

रक्षाबन्धन पर मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं स्वीकृत करें । मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपके मिशन को यथाशक्ति सहयोग देता रहूंगा ।

कृष्णलाल सोनी

गर्यविडपुरा (जिला खरगोन)

मेरी ओर से साधुवाद

श्रीयुत सम्पादक जी,

समाज के लिए आप जो श्रम कर रही हैं उसके लिए मेरी ओर से साधुवाद । आप हर विषय पर लिख रहे हैं किन्तु हरिजनों और पिछड़े वर्ग पर हो रहे जुल्मों और अत्याचारों पर खामोश हैं निवेदन करना चाहूंगा कि इन मामलों पर आप जरूर लिखें ।

उम्र, शरीर और परिवार तुम्हें नहीं तोड़ पाया । कलम के तेबर छठे दशक वाले ही हैं । तुम्हारी कलम के शौर्य को देखकर मन बड़ा खुश है । खूब बधाई लो और अब जम कर लिखो । लोग चाहे कुछ भी कहें किन्तु मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तुम्हें निकट से जाना है। इसलिए मुझे हमेशा तुम्हारे संघर्ष में एक सात्त्विक निष्ठा का अहसास हुआ है। धर्म की रक्षा में आप जिस उत्साह और समर्पण की भावना से प्राणपण से कटिबद्ध हैं, उससे एक नये इतिहास का सृजन हो रहा है। आपकी लेखनी ने सारे हिन्दू समाज को गहरी निद्रा से जगा कर खड़ा कर दिया है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य सामग्री आपकी निष्पक्षता को प्रदर्शित करती है। सम्पादक के नाम पत्र लिखने का उद्देश्य आपको गरमाना है।

क्रान्तिकारी अभिवादन सहित।

करौली

गोविन्दप्रसाद "यास"

गर्व और ग्लानि

पूज्य मां,

मैं गत कई मासों से हिन्दुत्व को जगाने वाली मासिक पत्रिका जन-ज्ञान का नियमित पाठक हूं।

हमें गर्व के साथ ही साथ ग्लानि भी होती है कि एक मां विधर्मियों की चुनौतियों को दृढ़तापूर्वक स्वीकार करते हुए उनका सामना करती है और हम सभी युवा पुत्र जागते हुए भी सो रहे हैं।

पर नहीं, अब हम सब जाग गये हैं और आपके इस महान् ईश्वरीय कार्य में तन, मन, धन से सहयोग दे कर अपने प्राणों से प्रिय हिन्दुस्थान (भारत) को हिन्दू गणराज्य बनाने का संकल्प लेते हैं।

गत ज्येष्ठ मास के अंक को पढ़ने से ज्ञात हुआ कि प्रेस की स्थापना के लिए धन की आवश्यकता है। मैं इस महान् कार्य रूपी सागर में कुछ धन जो एक बूंद से भी तुच्छ है, सम्मलित करना चाहता हूं।

इस धन को मनीआर्डर द्वारा भेज रहा हूं। आशा है कि आप स्वीकार करेंगी।

बदराइच

राजकुमार श्रीवास्तव विद्यार्थी

सिख हिन्दुओं से अलग नहीं

श्रद्धेय सम्पादक जी,

आपकी जन-ज्ञान पत्रिका में मैंने अनेक स्थानों पर 'हिन्दू और सिख'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लिखा पाया है। यह लिखना अनुचित है। इसके स्थान पर और हिन्दू-सिख, लिखा जाना चाहिए। या फिर सिखों के लिए खालसा' शब्द प्रयुक्त होना चाहिए। हम जैनियों को 'हिन्दू-जैन' हैं। बौद्धों को हिन्दू-बौद्ध कहते हैं। इसी तरह से सिखों को भी 'हिन्दू- कहना चाहिए, क्योंकि सिख मुसलमान-ईसाइयों की तरह अलग नहीं। सिख हमारे हिन्दू समाज का अभिन्न अंग हैं। सिखों के लिए संख्यक शब्द का प्रयोग भी अनुचित है क्योंकि ये बहुसंख्यक हिन्दू समाज अंग हैं।

बृजपालसिंह राजपूत

कुंवर

मैं आपका आभारी रहूँगा

बहन जी,

आपका रक्षा बन्धन मिला। रक्षा बन्धन सूत्र को पाकर मन को ी सी शक्ति मिली। एक आदर्शवादी नारी और हिन्दू धर्म की रक्षक देवी ने मुझे भाई स्वीकार किया। बहन, इसके लिए मैं आपका आभारी । पूरी हिन्दू जाति से अनुरोध करूंगा कि हम सब आप के आदर्शों पर और तन, मन, धन से आपको सहयोग दें। पत्र द्वारा सदा हमारे मनो- को बढ़ाना, ताकि हम अपनी राह पर पहुँच पायें। भगवान् आपको नता प्रदान करें।

आपका भाई
सरदचन्द गुलेरिया

५६ ए. पी. ओ.

देश की स्थिति

देया,

आज देश में जो स्थिति चल रही है वह बड़ी खतरनाक है। महात्मा ी ने जिस रामराज्य की आशा की थी, उसके राजा श्री रामचन्द्र तो र्मिक थे, परन्तु वर्तमान सरकार धर्मनिरपेक्ष है। धर्म से इसका कोई सरो- र नहीं। भारत की श्रेष्ठ प्राचीन सभ्यता जिस धर्मनिष्ठता पर आधारित ी उस स्वधर्म को जानने और पुनः स्थापित करने के लिए भारत अपनी सर- कार होते हुए भी कोई प्रयत्न नहीं हो रहा।

सरकार के धर्म को महत्त्व न देने से अधर्म और भ्रष्टाचार में वृद्धि हो रही है।

हेमसिंह

जीतगढ़ (सीकर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूज्य सम्पादिका जी,

हर बार जन-ज्ञान पढ़कर एक अजीब-सा उन्माद अंगड़ाई लेकर उठ है। हर बार एक ही आवाज दिल से आती है। कि कुछ करो, इस के लिए, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए। पर यहां रह कर हम क्या कर स हैं। जबकि यहां परिवार व समाज की जिम्मेदारी भी निभानी है। जो अपनी जगह सबसे ज्यादा अहमियत रखती है।

ये विचार मेरे हैं। परन्तु मैंने कई जगह कई लोगों से मिलकर क्षेत्र में हिन्दुओं को जगाने की या उनके विचारों को जानने की कोशिश तो मुझे एक नया अनुभव हुआ कि मेरे क्षेत्र का हर वह नागरिक जो दिल में अपने देश के प्रति सद्भावना रखता है वह हर समय तैयार उस शक्ति से निपटने के लिए जो इस राष्ट्र को खोखला करने की कोशि में है। इस देश का वह सपूत जो इस राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछा कर सकता है, वह हर घर में है। हर हिन्दू का परिवार अपनी जगह राष्ट्र के लिए समर्पण की भावना रखता है। परन्तु एक कमी है। हल्की-सी धुंधली-सी परत जम गई है जो उन्हें आगे बढ़ने से रोकती है है स्वार्थ और अंधविश्वास की परत जो इन्सान के हर इरादे को डावांडो कर देती है। स्वार्थ व अन्धविश्वास मनुष्य के इरादों को कुंठित कर दे है। मनुष्य सोचता क्या है और करता क्या है। उनका इस राष्ट्र के प्रति कोई कर्तव्य है या नहीं यह सोचना तो बहुत दूर रह जाता है।

आपके इस पत्र के माध्यम से मैं हर हिन्दू का आह्वान करता हूं और कहना चाहता हूँ कि वह ज्यादा नहीं केवल ३० मिनट प्रतिदिन यह चिन्तन करे कि मैं कौन हूँ और क्या करता हूँ? इस हिन्दू समाज के लिए मुझे क्या कुछ करना चाहिए? इत्यादि। हर मनुष्य, हर हिन्दुस्तानी अपने रोजमर्रा के कार्य से केवल इतना समय विचार ले तो मैं सोचता हूं कि उसे किसी की उंगली थामने की जरूरत नहीं रहेगी। उसका मजबूत इरादा एक मजबूत ईंट की तरह होगा और हर एक इरादा, हर एक ईंट मिलकर एक ऐसी दीवार, एक ऐसी ढाल बन जाएगी, जिससे टकरा कर ऐसी ताकतें जो इस राष्ट्र को नुकसान पहुंचाना चाहती हैं, खुद ही नष्ट हो जाएंगी। अगर आपके इरादे मजबूत हैं तो विरोध करना तो दूर रहा, कोई सामने टिक भी नहीं सकेगा।

टांटोटी

गोपाल भारद्वाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दर्दभरा पत्र

बेटी राकेश,

आप का पत्र सं. १३० दिनांक अगस्त १८, १९८३ राखी की जगमग में, स्नेह तथा धर्म के प्रति जागरूकता का सन्देश लिये मिला। साथ में धनादेश फार्म धर्म, वेद मन्दिर निर्माण हित तथा धर्म रक्षार्थ दान देने कामना के साथ।

बेटी, बड़े ही टूटे दिल से लिख रहा हूं कि मेरी दशा उस घायल सिपाही भांति है जो समर भूमि में घायल तथा निराशा में आशा की किरण लाने के लिए प्रयास रहते तक संघर्षरत है। कारण यह कि जितने सेनापति हैं, अधिकतर दिशाहीन तथा पदलोलुप हो रहे हैं। मेरे यौवन तक यदि कोई सदस्य किसी भी कारण सत्संग में नहीं पहुंचा तो समस्त सदस्य सत्संग समाप्त होने पर उस के घर जाते थे तथा उस की समस्या का समाधान सब मिल कर कर देते थे। यदि वह आलस्य वश आया प्रतीत होता था तो भी उसे लज्जित न कर इस प्रकार प्रोत्सा-हित करते थे कि फिर कभी वह नागा नहीं करता था, पर आज प्रधान को मालूम है, सभी जानते हैं कि अमुक बीमार है अथवा किसी कारण से रुष्ट गया है; पर होगा, यह तो सब लगा ही रहता है। शिखा-सूत्र विहीन आर्यसमाज के अधिकारी, स्वाध्यायविहीन, घृणा तथा द्वेष की प्रतिमूर्ति फिरते हैं।

मैं कानपुर में था। नगर में कर्फ्यू लगा था तथा हमारे गोलाघट सत्संग एक सदस्य किसी कारण पकड़ा गया। उस सदस्य ने श्री गोविन्दराम सेठ, जो गोलाघट सत्संग के संस्थापक थे तथा दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कालेज में इतिहास के प्राध्यापक थे, उनका नाम ले दिया कि दवा लेने गया था। अदालत में श्री सेठजी बुलाये गये। वे पूछने पर केवल हंस दिए तो अधिकारी ने बिना और कुछ पूछे मुकद्दमा खारिज कर दिया। अदालत में आर्यसमाजी की धाक थी पर आज ! अरे यह तो आर्यसमाजी है, विश्वास न करना—यह सब क्यों ? आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव अदालत कराए, ज़रा-सी कुरसी के लिए हम अपनी संस्था की छवि धूमिल कर रहे हैं।

कारण स्पष्ट है कि आज का आर्यसमाजी आर्य नहीं है, वह है केवल पदलोलुप—निकम्मा। वह ब्रह्मयज्ञ से पूर्व शिखा बांध प्रभु को वरण नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता । [illegible] गायत्री [illegible] शिखा बध्वात द्रक्षांच कुर्या[illegible] को निरर्थक समझता है । वह भूः पुनातु शिरसि—मैं बुरा न सोचूं भुवः पुनातु नेत्रयोः—बुरा न देखूं तथा स्वः पुनातु कण्ठे हे नाथ मैं बुरा न बोलूं की प्रार्थना करते हुए कम से कम एक घन्टे संध्योपासन नहीं करता तो पांच मिनट चलते-फिरते कर ले तो बहुत है ।

बेटी, मैं तो कोरा आशीर्वाद दे रहा हूं कि आप अपने अभियान में सफल हों । शिखा-सूत्र हीन आर्यसमाजियों को सन्मार्ग दिखायें । शिखा व्रत बन्धन है तथा चारों वर्ण वालों के लिए अनिवार्य है । सूत्र कर्म बन्धन है तथा शूद्र वर्ण वालों को छूट है ।

समस्त शुभ कामनाओं तथा आशीर्वादों के साथ,

एक जर्जर सिपाही

लखनऊ

महाराजकिशोर आर्य

वनस्पति घी में चर्बी

श्रद्धेय राकेशरानी जी,

खबर है कि वनस्पति घी में गाय, भैंस की चर्बी मिलाकर बेचा जा रहा है । भागलपुर में सात व्यक्ति पकड़े गये हैं जिन्होंने कि मरा हुई भैंस से चर्बी निकाल कर उबाल कर रखी थी । इस तरह आज सब भारतीयों का धर्म नष्ट हुआ है और हो रहा है । इस स्थिति में भी हम सभी चैन से बैठे हैं । एक समय इसी भारतवर्ष में कारतुस में चमड़े के उपयोग के प्रति सिपाही विद्रोह हो गया है, लेकिन आज हम सभी उसे खाकर चुप हैं । इस तरह के भयानक अत्यंत नाच कर्म की लिए हम सभी को डूब मरना चाहिए हम सभी को जीने का अधिकार नहीं । जब हम धर्म की रक्षा नहीं कर सके तो देश की रक्षा कैसे कर सकते हैं । आर्यसमाज एवं विश्व हिन्दु परिषद् को चाहिए कि बड़े पैमाने पर इसके खिलाफ आन्दोलन शुरू करें जिससे जन जागृति आयेगी ऐसे समाजविरोधी तत्वों को कठोर से कठोर सजा दी जाय चाहे वे जिस भी जाति एवं कौम के हों । कम से कम परमपूज्य महर्षि दयानन्द जी के लिए भी । नही तो उनकी आत्म कभी माफ नहीं करेगी । सम्पूर्ण भारतवासी आत्मा की शुद्धि के लिए एक दिन का उपवास एवं गायत्री यज्ञ करें ।

भागलपुर

राजनकुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभावशाली साहित्य

केशरानी जी

निवेदन है कि आपकी लेखनी से लिखे साहित्य को पढ़कर जनता बहुत प्रभावित हुई है और हो रही है। आज साहित्य की जनता को सख्त जरूरत है। इस साहित्य को पढ़कर मुसलमान, ईसाई एवं पौराणिक लोगों में परिवर्तन हो रहा है। वे अपने-अपने धर्म-ग्रंथों को टटोल कर देख रहे और लिखी गई बुराइयों को निकालने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। यह है आपके लेखनी का प्रभाव। आपकी लेखनी द्वारा साहित्य लोगों के हृदयों में एक प्रकाश-स्तम्भ बनकर अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर भगायेगा।

नामदेव वि० शास्त्री

अकोट (आकोला)

सांभर लेक में साम्प्रदायिक तनाव

सांभर, १८ सितम्बर। नमक के उत्पादन को लेकर विश्व प्रसिद्ध झील सांभर लेक इन दिनों साम्प्रदायिक तनाव का मुख्य केन्द्र बन गई है व किसी भी समय यहां हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगा भड़क सकता है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार गत दिनों यहां मुस्लिम संप्रदाय के एक व्यक्ति की जमीन पर चल रहे निर्माण कार्य से कुछ मूर्तियां निकलीं जिस पर हिन्दू संप्रदाय के लोगों ने उने अपनी धार्मिक संस्था का प्रतीक बताते हुए जमीन पर धरना दे दिया जो अभी तक बरकरार है। मूर्ति निकलने के स्थान पर अब भी सैकड़ों लोग धरना दिए बैठे हैं व कीर्तन आदि भी चल रहा है।

हिन्दू नेता पंडिता राकेशरानी, वेद भिक्षु एवं कई नागरिकों ने केन्द्रीय सरकार के गृह मंत्रालय को पत्र लिखकर अविलम्ब हस्तक्षेप की मांग की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा हिन्दुस्थान तुम्हारा है!

—वेदव्रत वाजपेयी

ननकाना की ओर चलो, यदि पौरुष ने ललकारा है ।
खालिस्तान न मांगो, पूरा हिन्दुस्थान तुम्हारा है ।।

सिसक रहे लाहौर कराची, पर अब तक अधिकार नहीं ।
महा पंचनद की माटी से, रहा तुम्हें क्यों प्यार नहीं ?
तक्षशिला बन्दी जेहलम की, मुक्त अभी तक धार नहीं,
खण्डित है पंजाब समूचा, कर पाये प्रतिकार नहीं ।।

गुरु पुत्रों ने दीवारों से, तुमको पुनः पुकारा है,
खालिस्तान न मांगो, पूरा हिन्दुस्थान तुम्हारा है ।
ननकाना की ओर चलो, यदि पौरुष ने ललकारा है,
खालिस्तान न मांगो, पूरा हिन्दुस्थान तुम्हारा है ।।

बलिदानी शूर-शहीदों का, घायल विश्वास किया तुमने,
पावन माटी-परिपाटी का, जग में उपहास किया तुमने ।
स्वाधीन देश का अपमानित, धरती-आकाश किया तुमने,
जो लिखा लहू से गया वही, काला इतिहास किया तुमने ।।

भारत और विभाजित करने का, कैसा जय कारा है,
खालिस्तान न मांगो, पूरा हिन्दुस्थान तुम्हारा है ।
ननकाना की ओर चलो, यदि पौरुष ने ललकारा है,
खालिस्तान न मांगो, पूरा हिन्दुस्थान तुम्हारा है ।।

तुमने अन्तर से भुला दिया, गोविन्द सिंह बलिदानी को,
अनुराग बन्दा भूल गये, गुरु-पुत्रों की कुर्बानी को ।
विस्मृत कर दिया विचारों से, सरदार भगत अभिमानी को,
कर दिया कलंकित सिन्धु, व्यास जेहलम चनाब के पानी को ।।

आज बहाता नीर नयन से, शीशगंज गुरुद्वारा है,
खालिस्तान न मांगो, पूरा हिन्दुस्तान तुम्हारा है ।
ननकाना की ओर चलो, यदि पौरुष ने ललकारा है,
खालिस्तान न मांगो, पूरा हिन्दुस्थान तुम्हारा है ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

....या यह राज मिटाना होगा !

——रामनाथ सिंह

गाय की चर्बी खाना होगा या यह राज मिटाना होगा ॥ गाय की...॥
धर्म नहीं तो राज्य नहीं है यह पशुओं का शासन है,
लाखों गौवें कटें देश में ऐसा बना कुशासन है ।
हाथ जो गायों को कटवाता, उन हाथों को कटाना होगा ॥ गाय की...१
दुनिया भर से कर्जा लेकर, जनता को बहकाता है,
सचिव है एम० ए० नेता निरक्षर, झूठी प्रगति दिखाता है ।
बढ़े गरीबी औ बेकारी ऐसी प्रगति हटाना होगा ॥ गाय की...(२) ॥
अट्ठारह सौ सत्तावन में क्रांति हुई थी चर्बी से,
गाय की चर्बी की ये सभ्यता, आई इंगलिश-अरबी से,
ऐसी शिक्षा जो पशुवत् है उसको मार भगाना होगा ॥ गाय की...(३)॥
इंगलिश-अरबी कुल सत्रह, पर राज करें तीरासी पर,
ये तीरासी क्यों न क्रांति कर, चढ़ जाते हैं फांसी पर ।
धर्म की रक्षा जो न करे अब, उसको फिर पछताना होगा ॥ गाय...(४)
पेट्रोडालर और पादरी, हिन्दू बहुमत मिटा रहे,
असम और कश्मीर में देखो, हिन्दू कैसे पिटा रहे ।
अब भी अगर तुम नहीं समझे तो तुमको मिट जाना होगा ॥ गाय...(५)
जागो ! जागो !! देश बचाओ !!! भारत मां की शान रखो,
अपना रक्त चढ़ा वेदी पर, गौ, गंगा का मान रखो ।
करके 'सिंह' दहाड़ देश को, हिन्दू राष्ट्र बनाना होगा ॥ गाय की...(६)

★

हिन्दू राज्य बनाएंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्महत्या करनी है तो सिगरेट पीजिये

—इन्द्र जोशी

यदि आप सिगरेट पीने के आदी हैं तो अगला सिगरेट सुलगाने से पहले यह बात दमाग में रखिये कि आप सिगरेट के हर कश के साथ प्रकृति द्वारा वरदान स्वरूप प्राप्त अपने जीवन के कुछ दिन इस धुएं की भेंट कर रहे हैं। बात केवल इतनी है कि यदि आपने साठ वर्ष की उम्र पाई है तो सिगरेट पीने की आदत के कारण आप सात वर्ष पूर्व ही मर सकते हैं। सिगरेट पीने का मतलब है तपेदिक जैसी नामुराद बीमारी को गले लगाना और कैंसर से हानि होने वाली मौत को अपने हाथों से दावत देना।

इस संदर्भ में अगला सिगरेट सुलगाने से पहले इस बात का भी ख्याल रखिए कि सिगरेट का नशा हर वर्ष ७०००० व्यक्तियों की जान ले रहा है और यह संख्या सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या से पांच गुणा अधिक है। फफड़ों में कैंसर से अस्पतालों के वार्डों में वृद्धि करने वाले १० मरीजों में से ९ केवल सिगरेट को आदत की बदौलत वहां पहुंचते हैं।

विश्वविख्यात नाटककार जार्ज बर्नाडशा का नाम आपने जरूर सुना होगा। एक बार टिप्पणी करते हुए उन्होंने अपनी व्यंग्य भरी भाषा में सिगरेट और सिगरेट पीने वाले पर यह फिकरा कसा था, सिगरेट वह बला है जिसके एक सिरे पर आग सुलग रही होती है। जबकि उसका दूसरा सिरा एक वेवकूफ के मुंह में धरा होता है।'

शायद सिगरेट पीने वालों ने कभी इस बात की कल्पना तक नहीं की होगी कि वह अपने हर सांस के साथ किस कदर जहर अपने शरीर में भर रहे होते हैं। सिगरेट का एक कश लेने के ठीक सात सैकेण्ड बाद निकोटिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधे पीने वाले के दिमाग में जा पहुंचती है और दिमाग तक पहुंचने का सफर वह फेफड़ों को पार करते हुए पूरा करती है। एक डाक्टर के शब्दों में यदि निकोटिन का इन्जेक्शन किसी को दिया जाए तो उसका असर ४२ सैकेण्डों के बाद जाकर होता है। यानी सिगरेट का एक कश इन्जेक्शन से कहीं अधिक पहले हमारे दिल व दिमाग पर होता है। जो लोग अक्सर दिल की धड़कन बढ़ने की शिकायत करते हैं और यदि वे सिगरेट पीते हैं तो इस शिकायत का कारण केवल सिगरेट ही हो सकता है।

सिगरेट का तम्बाकू 'निकोरियसा' पौधे से प्राप्त किया जाता है। इसके पत्तों का चूरा बनाकर इससे सिगरेट, सिगार, पान में डाले जाने वाले विभिन्न नम्बर जैसे ९७, १२० और ३०० आदि से तैयार किए जाते हैं। जो लोग न सिगरेट पीते हैं और न पान खाते हैं वे तम्बाकू की नसवार लेकर यह नशा पूरा कर लेते हैं।

जार्ज बर्नार्ड शा और सिगरेट

जार्ज बर्नार्ड शा का नाम इस दौर के विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित महान नाटककारों में आता है। वह अपनी हाजिर जवाबी और चुस्त बयान के लिए विशेष रूप से चर्चित रहते थे। एक बार एक खूबसूरत महिला ने सिगरेट का धुआं उनकी तरफ छोड़ते हुए पूछा, 'मिस्टर शा सिगरेट के बारे में आपका क्या ख्याल है ?

बर्नार्ड शा ने अपनी दाढ़ी खुजलाते हुए कहा, 'सिगरेट वह बला होती है जिसके एक सिरे पर आग दहकती रहती है और जिसका दूसरा सिरा एक बेवकूफ के मुंह में धरा होता है।

जो सिगरेट हम पीते हैं वह हमें पश्चिम की बदौलत प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व हमारे देश में सिगरेट का चलन नहीं था। हमारे यहां तम्बाकू हुक्के की चिलम में भर कर पिया जाता था। हुक्का नवाबों का विशेष शौक था और तत्कालीन सम्भ्रांत जीवन की एक विशिष्ट पहचान और उसका कुछ ऐसा जादू था कि अंग्रेजी राज के शुरू के दिनों में लाल बहादुर हुक्के की गुड़गुड़ से यह नशा पूरा किया करते थे। उस दौर के सुरक्षित चित्रों में आज अंग्रेज अफसर हुक्के की नली मुंह में लगाए आराम फरमाते देखे जा सकते हैं। तम्बाकू का स्वाद कड़वा होता है लेकिन आज के सिगरेट निर्माता उसमें कुछ मीठा तेल भर कर उसके जायके की कड़वाहट को दूर कर देते हैं। चिलम में भरे जाने वाला तम्बाकू भी सीरे के मेल से तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है । जो तम्बाकू पाइप में रखकर पिया जाता है उसके बनाने में भी यही विधि प्रयोग में लाई जाती है ।

सिगरेट सेहत का दुश्मन नम्बर एक है । यह कहावत भी उतनी पुरानी है जितनी सिगरेट का प्रयोग । सन् १६०४ में इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम ने कानूनी तौर पर सिगरेट पीने पर पाबन्दी लगा दी थी लेकिन उसे इस नापुराद आदत को दूर करने में आंशिक सफलता भी नहीं मिल पाई थी । इंग्लैंड में सिगरेट प्रचलन १६वीं सदी के आस-पास हुआ और कहते हैं कि कोई सर वाल्टर रैले थे जो अमरीकी लोगों से यह आदत सीखकर आये थे । उन्होंने लन्दन में पहली बार सिगरेट पीने का प्रदर्शन किया था और देखते ही देखते यह नशा सारे यूरोप में ही नहीं सारे विश्व में फैल गया ।

अभी हाल ही में प्रकाशित एक सर्वेक्षण रिपोर्ट में बताया गया है कि विश्व में प्रति दिन १० अरब पौंड तम्बाकू की खपत होती है । ८० देश तम्बाकू की खेती करते हैं और उनकी अर्थव्यवस्था इस फसल पर आधारित है । तम्बाकू की खेती करने वाले देशों में आज अमरीका का भी एक बड़ा नाम है ।

अमरीका में सिगरेट को लेकर एक बहुत रोचक स्थिति बनी हुई है । चिकित्सा अनुसंधान से प्राप्त नए तथ्यों के आधार पर लोगों की सिगरेट की आदत छुड़ाने के लिए जोरदार प्रचार किया जा रहा है । इस प्रचार के लिए हर सम्भव तरीका अपनाया जा रहा है । अरबों, खरबों का बजट प्रतिवर्ष केवल इसी काम के लिए सुरक्षित रखा जाता है लेकिन इसके मुकाबले वहां के सिगरेट निर्माताओं की लाबी इस कदर मजबूत है वह इस बजट से कई गुण अधिक बजट सिगरेट प्रचार के लिए खर्च कर रही है । उनके पास प्रचार के अपने हर साधन हैं । सिगरेट निर्माता कम्पनियों के अपने टी० वी० चैनल है । इस प्रचार की वदौलत इस समय वहां स्थिति यह है कि यदि प्रति वर्ष वहां पांच प्रतिशत सिगरेट लोग छोड़ते हैं तो सिगरेट पियो और जियो मार्का प्रचार के कारण सिगरेट पीने वालों की २० प्रतिशत नयी जमात पैदा हो रही है ।

यह स्थिति लगभग सभी देशों में व्याप्त है । सिगरेट निर्माता कम्पनियां करोड़ों रुपया इसके प्रचार के लिए खर्च करती हैं । हालांकि सिगरेट पीने से जितने खतरे आज साफ दिखाई देते हैं और उससे उत्पन्न होने वाली बीमारियों की ओर उनके परिणामों की जितनी खोज हो चुकी है, वह आज से सौ-पचास वर्ष पहले नहीं थी । फिर भी इन सौ-पचास वर्षों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिगरेट पीने वालों की संख्या में कल्पनातीत वृद्धि हुई है। सिगरेट प्रचार का इस कदर जोरदार प्रभाव पड़ रहा है कि सिगरेट व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग बना दिया गया है। आज की युवा पीढ़ी जो तथा कथित आधुनिकता का शिकार अधिक है अपने लिए हर स्थिति में सिगरेट अनिवार्य मानती है, उठते-बैठते, काम करते या आराम फरमाते सिगरेट उनकी एक बड़ी जरूरत बन जाती है।

सिगरेट पीना एक बुरी आदत ही नहीं बल्कि एक घातक रोग पालना है। निकोटिन का टीका जो असर ७ सैकिड में करता है, सिगरेट का एक कश १ सैकिड में करता है। सिगरेट पीने का मतलब यह भी है कि आप तपेदिक जैसी बीमारी को करीब ला रहे हैं और कैंसर से होने वाली मौत को अपने हाथों से आमन्त्रित कर रहे हैं। विश्व की विभिन्न सरकारें सिगरेट के विरुद्ध विशेष अभियान के अन्तर्गत करोड़ों रुपये खर्च कर रही है। लेकिन सिगरेट निर्माताओं की लाबी 'सिगरेट पियो' अभियान के लिए इससे दस गुणा अधिक खर्च कर रही हैं।

भारत सिगरेट की खपत का अनुमान केवल इस बात से ही लगाया जा सकता है कि सिगरेट की लत का शिकार एक व्यक्ति वर्ष भर में ३२००० सिगरेट फूंक देता है। इस सम्बन्ध में मात्र एक रिपोर्ट के अनुसार सिगरेट की यह लत अपने शिकार को पन्द्रह-सोलह वर्ष में ही अपने जाल में फंसा लेती है। और फिर इस कदर उनकी जिन्दगी से चिपट जाती है कि तब तक नहीं छूटती जब तक कोई खतरनाक बीमारी उन्हें घेर नहीं लेती। कई आदमी यानी सिगरेटनोश इस कदर इस आदत के गुलाम होते हैं कि सिगरेट की डिब्बी सिरहाने रखे मौत की इंतजार करते देखे गए हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने कसम खा रखी है कि मैं न छोड़ूंगा तुम्हें चाहे सारा जमाना छोड़ दे।'

इस भयानक नशे के साथ चूंकि यह विरोध भावना नहीं जुड़ी होती जो अन्य नशों के साथ साभाजिक स्तर पर पायी जाती है अतः इसका क्षेत्र व्यापक होने में कोई बाधा नहीं पड़ती। आज के विज्ञापन युग में एक नौजवान को पूरा चुस्त नौजवान सिद्ध करने के लिए विलापनों में, कैलेंडरों में, फिल्मों में उसके हाथ में सिगरेट पकड़वाना एक फैशन बन गया है। सिगरेट प्रचार में हर प्रकार का मनोवैज्ञानिक हथियार काम में लाया जाता है। मेज पर एक सुन्दर नवविवाहित जोड़ा एक दूसरे की ओर रोमांस-भरी नजरों से देख रहा है लेकिन उनके बीच सिगरेट का पैकिट पड़ा दिखाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दे रहा है, मानो आज के दाम्पत्य जीवन में यह सिगरेट एक पुल का काम कर रहा हो। सिगरेट प्रचार के नये-नये प्रभावशाली तरीके खोज निकाले गएहैं। सिगरेटों के पैकिट धड़ाधड़ बिक रहे हैं हालांकि हर पैकिट पर लिखा होता है—'सिगरेट पीना सेहत के लिए हानिकारक है।' केवल सिगरेट के प्रचार से सिगरेट पीने की संख्या नहीं बढ़ रही। इस काम में सिनेमा और सस्ता साहित्य भी अपना योगदान दे रहा है।

सिगरेट का घातक प्रभाव पीने वाले के सेहत पर बीस-पच्चीस वर्ष बाद देखने को मिलता है। कैंसर; दमा, पुराना या नया जुकाम या अन्य ऐसी बीमारियां उसे आ घेरती हैं। नई खोज के मुताबिक सिगरेट अंगों में भयानक दर्द का कारण भी बनता है—विशेष कर इससे जिस्म के निचले हिस्से में विशेष प्रभाव पड़ता है और यह इस कदर तेजी से बढ़ने वाला दर्द होता है कि इससे उस अंग विशेष को काटे बिना गुजारा नहीं होता। केवल अंग काटने से ही उस दर्द का फैलाव रोका जा सकता है। गले का कैंसर सिगरेट से होता है। सत्तर प्रतिशत गले के कैंसर रोगी केवल सिगरेट के कारण बिस्तर पकड़ते हैं। सिगरेट न दिमागी चुस्ती देता है और न शारीरिक बल्कि इसके नियमित प्रयोग से आदमी का प्रतिरोधक शक्ति क्षीण हो जाती है। मामूली बीमारी उसके लिए गम्भीर हो सकती है। सिगरेट पीने वाला व्यक्ति मुंह का जायका खो बैठता है, उसकी सूंघने की शक्ति कम हो जाती है, सुनने की शक्ति कम होती है।

सिगरेट पीने वालों की कई कोटियां है। हरेक की तलब का अपना-अपना अंदाज है। किस-किस को तलब किस-किस समय होती है इनका तनिक अनुमान निम्नलिखित पंक्तियों से लगाइए—

जिसे हम 'चेन स्मोकर' कहते हैं उसकी तलब सुबह बिस्तर से उठने के साथ ही शुरू हो जाती है। उस समय उसके शरीर में निकोटिन का असर कम हो रहा होता है। सिगरेट उसकी यह शारीरिक कमी पूरी करती है।

शेव बनाने से पहले कई लोग सिगरेट जरूर पीते हैं।

नाश्ते के बाद दोपहर के भोजन के बाद व रात्रि के भोजन के बाद कइयों के लिए सिगरेट जरूरी होता है।

कई लोगों को सिगरेट के साथ शौचालय जाते देखा जा सकता है।

कई व्यक्ति सुबह के अखबार के साथ सिगरेट लेने के भी आदी होते हैं

कई लोग अपने दिन का काम-काज सिगरेट से शुरू करते हैं और सिगरेट के साथ ही उसे खत्म करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटलों में चाय, काफी पीने वालों के लिए चाय के साथ ही अंगुलियों में सिगरेट सुलगाए रखना जरूरी होता है।

किसी समस्या पर विचार करते हुए सिगरेट पीने वालों की अंगुलियों में सिगरेट आना एक आदत बन जाती है।

सिगरेट पेश करके मित्रता का सूत्रपात हो सकता।

शराब और सिगरेट का भाई-भतीजे का साथ है।

सिनेमा के इन्टरवल में सिगरेट पीने वाले बाहर आ कर अपनी तल्ब पूरी करते हैं।

जो लोग रतजगे के मरीज होते हैं वे सिगरेट सिरहाने रखना नहीं भूलते।

सिगरेट पीने वालों का निकट से जायजा लेने के बाद यह बात आम पायी जाती है कि वे खुद नहीं जानते कि वे सिगरेट क्यों पीते हैं। वह यह भी मानते हैं कि बस तल्ब-सी होती है, अंगुलियों में खलस होती है तो सिगरेट हाथ में ले लिया जाता है।

डा० फ्रायड ने सिगरेट पीने का मनो-विश्लेषण करते हुए यह रहस्य खोज निकाला कि इस सिगरेट पीने वाले स्तनपान की दबी हुई इच्छा की पूर्ति करते हैं। कई लोग स्वीकार करते हैं कि उन्हें सिगरेट पीने की आदत अपने बड़ों को सिगरेट पीते देख कर पड़ी। कई इसे दोस्तों की देन मानते हैं। कई लोग सिगरेट के बगैर अपने व्यक्तित्व को अधूरा मानते हैं।

इनके पति ४३२०० रुपये धुएं में उड़ा चुके हैं

यदि आप नियमित रूप से धूम्रपान करने वाले आदमी हैं तो क्या आप जानते हैं कि आज तक आप कितने हजार रुपए सिगरेट के धुएं में उड़ा चुके हैं?

इसकी जानकारी एक 'चेन स्मोकर' मित्र की पत्नी ने ये आंकड़े हमारे सामने रखते हुए दी।

उस शिक्षित महिला ने अपने सिगरेट पीते पति को मुजरिम करार देते हुए उसके सामने ही यह जुर्माना पेश किया, 'ये हजूर गत ३० वर्षों से सिगरेट पी रहे हैं। इनकी सिगरेट काऔसत प्रतिदिन का खर्च आज तक चार रुपये पड़ता रहा है। एक मास में इन्होंने १२० रु० के सिगरेट पिए हैं इस हिसाब से एक वर्ष में इनका सिगरेट खर्च १४४० रु० था और ये हजरत अब तक ४३२०० रु० धुएं में उड़ा चुके हैं। इन्हें कौन समझाए !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रशेखर आजाद

——अरुण आर्य,

सन् १६२२ के असहयोग आन्दोलन में संस्कृत कालेज बनारस पर धरना देते हुए चन्द्रशेखर आजाद पकड़ लिए गये। अदालत में मुकद्दमे के समय जज ने इनसे पूछा—

"तुम्हारा नाम ?"
"आजाद"
"बाप का नाम ?"
"स्वाधीन !"
"निवास स्थान ?"
"जेलखाना !"

इस उत्तर को सुनकर जज ने १५ वर्ष के इस कोमल बालक को १५ बेंतों की सजा का कठोर आदेश दिया।

बेंतों के समय जेल अधिकारी ने माफी मांगने के लिए कहा तो चन्द्रशेखर ने उत्तर दिया "आजाद ने कभी माफी नहीं मांगी और न ही किसी के अपराध को क्षमा किया है।"

जेल में बेंतों की सजा कोई साधारण बात नहीं होती। नंगा करके ये बेंत लगाये जाते हैं। सारी आयु बेंतों के निशान नहीं मिटते। घाव हो जाते हैं और रक्त बहने लगता है। बड़े-बड़े बदमाशों के भी इन बेंतों से छक्के छूट जाते हैं। परन्तु उस साहसी वीर ने हंसते-हंसते ये बेंत खाये। हर बेंत के साथ वे 'भारत माता की जय' और 'बन्दे मातरम्' के नारे लगाते थे।

बेंत लगने के बाद आजाद को तीन आने के पैसे दिये गये। आजाद ने ये पैसे बड़े तैश के साथ वहीं जेलर के मुंह पर फेंक मारे।

इन बेंतों के खाने से आजाद के मन में प्रतिशोध की अग्नि और अधिक प्रज्वलित हो गयी और उसने ब्रिटिश शासन को मिटा देने का घोर प्रण कर डाला।

आजाद का नारा यह था—

दुश्मन की गोलियों का सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग निर्माता

महर्षि दयानन्द सरस्वती

विश्व के सब देशों में भारत की एक विशिष्टता रही है। यह ऐसी अद्भुत और विश्व-इतिहास में असामान्य और चमत्कारी है कि इस देश का …खों-करोड़ों वर्षों का इतिहास इससे देदीप्यमान है। भारत माता के इस अनोखे …र अद्वितीय वैशिष्ट्य का संक्षप में यदि उल्लेख करें तो वह है मानव के …क्तिगत और सामाजिक —प्रत्येक क्षेत्र में हमारी मातृभूमि की गोदी का सदा …रा-भरा रहना। इसकी मिट्टी में खेलने वाले नौनिहालों का जीवन किसी भी …न्य देश के लिए सदा ही परम गौरवास्पद और प्रतिस्पर्द्धात्मक रहा है। व्यक्ति-…त दृष्टि से भारत भूमि ने अनेक जीवन्मुक्त, ऋषि, महर्षि, मुनि परम योगी, …धक, तपस्वी, मार्गदर्शक, साधु, सन्त, महात्मा, विद्वान्, विविध-विद्या पारंगत …इत्यादि का प्रसव किया है। साथ ही सामाजिक क्षेत्र में यशस्वी राजा, शासक, …सिधारा पर खुला खेलने वाले शूरवीर, राजनीतिज्ञ, साम्राज्य संस्थापक, लक्ष्मी …वरद पुत्र, साहसी व्यापारी, व्यवसायी, उद्योगपति इत्यादि ने विश्व-इतिहास के …ष्ठों पर अपनी अमिट छाप डाली है। यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इन …नों प्रकार की विभूतियों की अटूट शृंखला ने भारत माता के ललाट को उन्मुक्त …प में युग-युगान्तरों से समलंकृत कर रखा है।

आर्यजाति मार्गभ्रष्ट

परन्तु कालचक्र ने भारत की इस स्थिति को बदला। महाभारत युद्ध के …श्चात् भारत की आन्तरिक स्थिति में पतन का घुन लग गया। आलस्य, प्रमाद, …कर्मण्यता के साथ विभिन्न रूढ़ियां, पारस्परिक कलह और अन्ध परम्पराओं …का जाल बिछने लगा तथा एकता के सूत्र बिखरने लगे। व्यक्तिवाद का प्राबल्य …और सामाजिकता का ह्रास होने लगा। दूसरी ओर, भारत की समृद्धि और …उसके ऐश्वर्य को देख विदेशी ललचाई आंखों से इसकी ओर देखने लगे। भारत …पर बाह्य आक्रमण होने लगे। सबसे पहला आक्रमण सिकन्दर का हुआ। फिर …भारत की उत्तर दिशा से हूण, सोथियन और पारसीकों के हमले हुए। पर ये …तीनों प्रकार के आक्रान्ता या तो वापस चले गए अथवा जो भारत में रह गये, वे …इस देश की मुख्य सांस्कृतिक धारा में विलीन हो गए। उनका पृथक् अस्तित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रहा। तीसरा धावा इस्लाम का हुआ। यह पहले दोनों प्रकार के आक्रमणों से सर्वथा भिन्न, अत्यन्त प्रबल, अधिक स्थायी और बहुत दूरगामी था। मुस्लिम आक्रान्ता पहले लूट-मार के लिए आये, पर शीघ्र ही वे यहां हाकिम बनकर टिक गये। यद्यपि भारत के इतिहास में ऐसा समय कभी नहीं आया जब समूचे भारत पर एकछत्र मुस्लिम शासन हुआ हो। देश के अनेक भागों में सदा मुस्लिम शासकों के साथ युद्ध और संघर्ष होते रहे और हार-जीत के पलड़े द्रुतगति से डावांडोल होते रहे। पर इस्लाम की धर्मान्धता और बलात् भारतीयों को अपने मजहब में लाने के कुकृत्यों ने इस देश के समाज पर गहरा प्रभाव डाला। चौथा आक्रमण पश्चिम की गोरी जातियों का हुआ। ये लोग हाथ में तराजू और बाट लेकर सात समुद्र पार से यहां आये। यहां के ही हिन्दू-मुस्लिम निवासियों से छल-कपट द्वारा तलवार छीन उसी से उन्हें आपस में लड़ा-भिड़ा बन्दर बांट से देश के शासक बन गये। इस देश की सभ्यता, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, धार्मिक विचार, शिक्षा इत्यादि प्रत्येक दृष्टिकोण से सर्वथा विभिन्न, संख्या में अत्यल्प फिर भी भारत जैसे विशाल और करोड़ों की संख्या वाले देश को उन्होंने अपना गुलाम बना लिया इससे क्या यह स्पष्ट अभिव्यक्त नहीं होता कि तत्कालीन भारत अत्यधिक जर्जरित, शक्तिहीन, नपुंसक, शतधा विच्छिन्न और यथा स्थिति प्रिय तथा मृतप्राय हो चुका था।

उस समय आर्य जाति की यह स्थिति उच्च डिंडिमघोष से कह रही थी कि उसे चतुर और रोग के मूल तक पहुंचने वाले एक वैद्य की अविलम्ब आवश्यकता है। जिस प्रकार अर्जुन ने खांडव वन को दावानल से भस्मसात् कर वहां इन्द्रप्रस्थ के भव्य, मनोहारी और चमत्कारी भवन निर्मित किये थे, इसी प्रकार भारत को एक ओर संहारक और दूसरी ओर सर्जक—दोनों गुणों से युक्त महापुरुष की आवश्यकता थी।

महर्षि का आगमन जन्म : बचपन : शिवरात्रि का व्रत

इस पृष्ठभूमि में ऋषि दयानन्द का इस देश में अवतरण हुआ। काठियावाड़ (सौराष्ट्र) प्रान्त की मोरवी रियासत के अन्तर्गत टंकारा नामक कस्बे में औदीच्य ब्राह्मण कर्षन जी के घर संवत् १८८१ फाल्गुन वदी १० शनिवार (१२-२-१८२५ ई०) को ज्येष्ठ पुत्र के रूप में मूलशंकर का जन्म हुआ। मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने से मूलशंकर नाम रखा गया। दुलार में इस बालक को दयाराम भी पुकारा जाता था। कर्षन जी अपने समय के अच्छे साहूकार और विस्तृत भूमि के स्वामी थे। वह कट्टर शैव परिवार था। १४ वर्ष की आयु में मूलशंकर को यजुर्वेद कंठस्थ कराने के साथ व्याकरण और शब्दरूपावली का अभ्यास करा दिया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। इससे पूर्व ८ वर्ष की आयु में मूल जी का उपनयन हो चुका था। बालक
ावी, अद्भुत स्मरण शक्ति युक्त और पढ़ने में अत्यन्त रुचि रखने वाला होने
ाथ स्वभाव से विरक्त और एकान्तप्रिय था। उसने काशी जाकर विद्या
े का आग्रह किया, पर पिता किसी प्रकार भी बालक को घर से बाहर भेजने
तैयार न थे। पिता उसे गृहस्थ और अपने कारोबार के बन्धन में डालना
ते थे।

इस समय दो उल्लेखनीय घटनाएं हुईं जिन्होंने मूलशंकर के जीवन को
ंतः प्रभावित किया। कर्षन जी कट्टर शैव थे। शिवरात्रि का त्योहार आया
समस्त परिवार ने विधिवत् उपवास रखा। १३-वर्षीय बालक मूलशंकर
ी पिता ने व्रत रखने का आदेश दिया यद्यपि माता बालक को इस कष्ट में
ने के पक्ष में नहीं थी। सब भक्तजन शिव मन्दिर में एकत्र हुए। शिवलिंग
पूजा की गयी और मूर्ति पर फल-फूल, मिष्टान्नादि चढ़ाये गये। व्रत की
के अनुसार समस्त रात्रि जागकर पूजा करना आवश्यक है। पर निद्रा तो
के लिए बलवती होती है। आधी रात होते बालक के पिता और पुजारी सहित
भक्तजन निद्राग्रस्त हो गये। केवल व्रत का दृढ़ता से पालन करने की भावना
ा मूलशंकर बालक अपनी आंखों पर जल के छींटे देता हुआ जागता रहा।
ने तब देखा कि एक चूहा शिवलिंग पर अठखेलियां करता हुआ नैवेद्य खा
है। मूलशंकर को तो पिता ने बताया था कि शिव त्रिशूलधारी और दैत्य-
संहारी है पर यह क्या, वह अपने पर निःशंक उछल-कूद करते चूहे को भी
भगा सकता है पिता को जगाकर उसने अपनी शंका निर्भयता से प्रकट कर
। पिता के इस उत्तर से कि "कलिकाल में साक्षात् शिव नहीं, उसकी मूर्ति की
पूजा की जाती है"—मूल जी का समाधान नहीं हुआ और उसकी सच्चे शिव
जानने की जिज्ञासा प्रबल हो उठी।

बहिन और चाचा की मृत्यु

इस घटना के ५ वर्ष पश्चात् मूलशंकर की १४-वर्षीय बहिन की हैजे से मृत्यु
गयी। सब सम्बन्धी क्रन्दन कर रहे थे पर बालक मूलशंकर जीवन की क्षण-
गुरता और मृत्यु के अवश्यम्भावी होने की चिन्ता में ग्रस्त पत्थर की तरह चुप-
खड़ा रहा। इसके कुछ दिन पश्चात् ही मूलशंकर के चाचा की मृत्यु हो
ी। यह चाचा सुपंडित और सच्चरित्र थे, तथा मूलशंकर से विशेष स्नेह रखते
। अब मूल जी अपने को न संभाल सके और उनके नेत्रों से अश्रुधारा बहने
ी। इस क्षण मूलशंकर के हृदय में दूसरी बड़ी समस्या पैदा हो गयी। "यह
क्या है और क्या इस पर विजय प्राप्त हो सकती है?"

इधर पिता मूलशंकर को विवाह के बंधन में बांधने के लिए विशेषतः तत्पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो गये। जिस पंडित से मूलशंकर पढ़ते थे, उसने भी कर्षन जी को सूचित कर दिया कि यह बालक विवाह नहीं करना चाहता। पर पिता न माने और उन्होंने विवाह की तैयारी आरम्भ कर दी। मूलशंकर ने अब अपना मार्ग निश्चित कर लिया। संकल्प के धनी इस युवक ने गृहत्याग की योजना बना ली और २२ वर्ष की आयु में इसे कार्यान्वित कर दिया।

गृहत्याग : मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य

संवत् १९०३ ज्येष्ठ मास में मूलशंकर ने गृहत्याग किया और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की आकांक्षा से सबसे पहले योग सीखने का निश्चय किया। उस क्षेत्र के "शैला" गांव में लाला भक्त नाम के एक योगी विख्यात थे। मूलशंकर कई दिन की यात्रा के बाद इस योगी के पास पहुंचा। मार्ग में ठग भिक्षुओं ने मूल जी के रेशमी कपड़ों और आभूषणों पर फब्ती कसी। युवक ने इसके प्रत्युत्तर में सब रेशमी वस्त्र और आभूषण इन भिक्षुओं को दान कर दिये। लाला भक्त के पास कुछ दिन ठहर मूल जी की भेंट वहीं शैला ग्राम में एक ब्रह्मचारी से हुई। उसने मूल जी का नाम "शुद्ध चैतन्य" रख दिया। यहां पर शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी को सिद्धपुर के मेले का समाचार ज्ञात हुआ। योगियों की खोज में ब्रह्मचारी वहां गया। रास्ते में एक परिचित व्यक्ति ने इन्हें वैरागी वेश में देख इनके पिता को सूचना दे दी। साधुओं की संगति में बैठे शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी (मूल) को उनके पिता तलाश करते वहां पहुंच गये। पिता का क्रोध भड़क गया पुत्र को गालियां देते हुए पिता ने पीटा और साधु वेश के कपड़े फाड़ दिये सिद्धपुर में सिपाहियों के पहरे में ब्रह्मचारी को रखा गया। एक रात की भोर ३ बजे इन सिपाहियों को सोता देख शुद्ध चैतन्य शौच जाने के बहाने हाथ में लोटा ले बाहर निकल गये। दौड़ लगाकर प्रातःकाल तक कुछ मील दूर निकल गये। दिन चढ़े एक मन्दिर के पास घने वृक्ष पर छिपकर बैठ गये। सिपाहियों को मन्दिर के भीतर ढूंढ़ते शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी ने देखा। किसी को वृक्ष पर तलाश करना सूझा ही नहीं। सिपाहियों के निराश हो वापस चले जाने पर शुद्ध चैतन्य ने अपनी पैदल यात्रा प्रारम्भ कर दी। सिद्धपुर मेले में ब्रह्मचारी की अपने पिता से यह अन्तिम भेंट थी।

नर्मदा तट पर ८ वर्ष तक

घर के बन्धनों से मुक्त हो शुद्ध चैतन्य ने योगियों की तलाश और अमृत पद प्राप्ति के लिए प्रयास रूप दोनों लक्ष्यों के लिए पूर्णतः जुट जाने की दिशा में नर्मदा नदी तट स्थित योगियों के आश्रमों में चक्कर लगाने आरम्भ कर दिये। लगभग ८ वर्ष तक वे नर्मदा तट पर रहे। यहां स्वामी पूर्णानन्द से शुद्ध चैतन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचारी ने संन्यास की दीक्षा ली और दयानन्द नाम ग्रहण किया। आश्रम मर्यादा के अनुसार ब्रह्मचारी रहते वे भिक्षा नहीं मांग सकते थे। स्वयंपाकी होना आवश्यक था। पर संन्यासी हो जाने पर वे भिक्षा लेने के अधिकारी हो गये और साथ ही सम्बन्धियों द्वारा पहचाने जाने के भय से भी मुक्त हो गये। नर्मदा तट स्थित चाणोद आश्रम में कई योगियों से दयानन्द ने योग-दीक्षा प्राप्त की। यहां से वह आबू गये।

योगियों की खोज में उत्तराखंड की यात्रा

संवत् १९१२ में हरिद्वार में कुम्भ का मेला था। दयानन्द के मन में अब उत्तराखण्ड की यात्रा का विचार था। कुम्भ-मेला देखने के बाद दयानन्द ऋषिकेश होते हुए टिहरी गये। यहां एक तांत्रिक पंडित द्वारा भोजन का निमन्त्रण स्वीकार करने पर वहां पके हुए मांस को देख दयानन्द तत्काल वापस चले आये और उसी पंडित द्वारा बाद में भेजे गये फल-दूध को स्वीकार किया। यहां तन्त्र ग्रन्थों का स्वामी जी ने अवलोकन किया और उनमें व्यभिचार तथा पैशाचिक अनुष्ठानों का वर्णन देख इनका सदा के लिए त्याग कर दिया। टिहरी से ये एक अन्य साधु के साथ केदार घाट, गुप्त काशी, गौरी कुंड, भीम गुफा, त्रियुगी नारायण आदि स्थानों और मन्दिरों को देखते हुए पुनः केदार घाट वापस आ गये। अब स्वामी जी एकाकी यात्रा कर रहे थे। उधर शीत ऋतु आरम्भ हो गई थी। फिर भी बीहड़ जंगलों और पर्वत शिखरों पर चढ़ते-उतरते भूखे-प्यासे किसी प्रकार ओखी मठ पहुंचे। दिन भर की कष्टप्रद यात्रा के बाद रात इस मठ में बिताई। यह मठ बड़ा प्रसिद्ध और धन-सम्पत्ति से पूर्ण था। यहां के महन्त ने दयानन्द के पवित्र यौवन और भव्य आकृति को देख उन्हें शिष्य बनने और बाद में मठ का स्वामी बनने का प्रलोभन दिया। स्वामी जी ने कहा "इस मठ की जितनी सम्पत्ति है, मेरे पिता की सम्पत्ति भी उससे किसी अंश में कम नहीं थी। जब मैं उसे लात मार आया हूं, तब इस मठ का मुझे क्या प्रलोभन है?" यहां से जोशी मठ और वहां से बद्रीनारायण गये। यहां से अलखनन्दा नदी के तट की यात्रा करते हुए उसके उद्गम स्थान पर पहुंच गये। उनके शरीर पर साधारण पतला वस्त्र था। इधर घोर शीत, भूख, थकावट ने उन्हें घेरा हुआ था। अलखनन्दा पार करने के लिए जब नदी में प्रविष्ट हुए, तो बर्फ के टुकड़ों से शरीर क्षत-विक्षत हो गया। ऐसा प्रतीत होता था कि मृत्यु सिर पर नाच रही है। पर दयानन्द ने धैर्य न छोड़ा। अपने जीर्ण वस्त्रों की पट्टी बना उसे रक्त युक्त घावों पर बांधने लगे। चलने की शक्ति नहीं रही। कायर दृष्टि से वे इधर-उधर देखने लगे कि इस मनुष्य रहित स्थान में कोई सहायक मिल जाए। अत्यन्त निराशा के साथ जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतिम बार दयानन्द ने इधर-उधर देखा तो दो मनुष्य आते दिखाई दिये। उन्होंने पास आकर नमस्कार किया और घर चलने का अनुरोध करते हुए भोजन-व्यवस्था का भी विश्वास दिलाया। पर दयानन्द में तो इस समय चलने का तनिक भी सामर्थ्य नहीं था। इसलिए उन्होंने उन दोनों का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। उनके अत्यन्त आग्रह पर भी स्वामी जी ने कहा "मुझे यहीं मर जाना स्वीकार है, पर मैं यहां से अन्यत्र कहीं जा नहीं सकता।" इसी समय उनके हृदय में एक प्रकाश हुआ और आत्मा में एक ध्वनि प्रकट हुई। स्वामी जी के अपने शब्दों में—"मैंने सोचा, यह क्या है ? मैं मरने की बात क्यों करता हूं ? क्या ज्ञानानुशीलन द्वारा मोक्ष मार्ग का यात्री बन इस जीवन को पूर्ण करना मेरे लिए श्रेष्ठ कर्त्तव्य नहीं है ?" इस प्रकार के चिन्तन से उनकी आत्मा में ऐसा बल आया कि वे खड़े होकर धीमे-धीमे चलने लगे और रात को ८ बजे बद्रीनारायण के मन्दिर में पहुंच गये।

यहां से चलकर रामपुर, चिल्किया घाटी, काशीपुर, द्रोणसागर स्थानों पर कई योगियों से मिलते हुए और संवत् १९१२ का शीत इन्हीं पर्वतों पर बिताते हुए स्वामी जी द्रोणसागर से मुरादाबाद पहुंचे। इस यात्रा में उनके हृदय में हिमालय के हिम भाग में जाकर देह त्याग का विचार भी एक क्षण के लिए आया पर दूसरे ही क्षण ज्ञान संचय द्वारा मोक्षपद प्राप्ति की भावना जागृत हो उठी।

शवच्छेद : रीछ का मुकाबला

मुरादाबाद से संभल होते हुए वे गढ़मुक्तेश्वर पहुंचे। इस समय उनके पास हठयोग प्रदीपिका, योग बीज इत्यादि ऐसी कई पुस्तकें थीं जिनमें नाड़ी चक्र का वर्णन था। गंगा में एक दिन शव को बहते देख उनके हृदय में इन पुस्तकों में वर्णित नाड़ी चक्र की सत्यता जानने की उत्सुकता हुई। एक बड़ी छुरी से शवच्छेद करके आभ्यन्तर अंगों की तुलना जब इन पुस्तकों से की तब सर्वथा मिथ्या वर्णन देख शव के साथ इन पुस्तकों को भी गंगा में प्रवाहित कर दिया। संवत् १९१२ के अन्त तक कानपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर होते हुए काशी पहुंचे और वहां एक मास रहे। यहां कुछ प्रमुख पंडितों से आपका वार्तालाप होता रहा। काशी से चुनार होते हुए स्वामी जी नर्मदा के स्रोत की ओर चल पड़े। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि किसी भी व्यक्ति से मार्ग की दिशा नहीं पूछेंगे। इस प्रकार चलते-चलते वे एक अत्यन्त घने और संकीर्ण जंगल में पहुंच गये। यहां एक भयंकर काला रीछ उनके सामने टांगों के बल खड़ा हो आक्रमण के लिए पहुंच गया। स्वामी जी ने धीरे-धीरे अपने हाथ की लाठी उसकी ओर उठाई। रीछ तत्काल भाग गया, स्वामी जी आत्मविश्वास और प्रभु-आस्था के सहारे आगे बढ़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व जंगल अत्यन्त बीहड़ और पूर्ण रूप से कंटीली झाडियों से भरा हुआ मिला। ामी जी घुटनों के बल रेंग-रेंगकर इसे पार करने लगे। पर इस कार्य में उनके त्र धज्जी-धज्जी हो गये, शरीर से अनवरत रक्तधारा बहने लगी। एक ओर रीर सर्वथा अवसन्न और दूसरी ओर सायंकाल के बाद जंगल में फैलता घोर धकार, पर स्वामी जी प्रभु पर अटल निश्चय रखे चलते ही गये। एक ओर ोटी-सी नदी देखी और उस पर चर रही बकरियों को देख उन्हें विश्वास हो गया कि यहां अवश्य आस-पास कोई गांव है। स्वामी जी ने वहीं आसन लगा रात िताने का निश्चय किया। इसी समय गांव के स्त्री-पुरुष भक्तिभाव से महाराज पास पहुंचे और गांव में चल कुटिया में विश्राम करने का आग्रह किया। स्वामी ी ने इसे स्वीकार कर लिया। तब वहीं दूध इत्यादि द्वारा उनका सत्कार किया या। रात भर दो व्यक्ति महर्षि की रक्षा में तत्पर रहे। संवत् १९१२ के अन्त क उनकी यह यात्रा हुई।

१८५७ के स्वातन्त्र्य युद्ध में सहयोग

इसके बाद संवत् १९१३ से ३ वर्ष का विवरण नहीं मिलता। स्वामी जी की अपनी सुनाई हुई आत्म कथा भी संवत् १९१२ तक समाप्त हो जाती है। यह तीन वर्ष का समय वही है जिसे भारत के इतिहास में '१८५७ का प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध' कहा जाता है। नयी खोज से ऐतिहासिकों ने सिद्ध किया है कि ये तीन वर्ष स्वामी जी ने इस स्वतन्त्रता युद्ध में सक्रिय भाग लेकर व्यतीत किये। इतना तो स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द सदृश दूरदर्शी, राष्ट्रभक्त, भावना-प्रबल और चेतनाशील व्यक्ति भारत में विदेशियों के साथ चल रहे इस संघर्ष को मौन होकर देखता रहा हो, यह सम्भव नहीं है।

दंडी विरजानन्द की शिष्यता

लगभग १३ वर्ष तक इस लम्बे भ्रमण काल में महर्षि ने देश की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक इत्यादि स्थितियों का गहराई के साथ अध्ययन किया। उन्होंने निश्चय किया कि बिना अधिक और गम्भीर ज्ञान संचय के देश और विश्व में किसी प्रकार के सुधार और परिवर्तन के आन्दोलन नहीं चलाये जा सकते। फलतः महर्षि इस ज्ञान-संचय की प्रबल भावना से संवत् १९१६-१७ में मथुरा में दंडी विरजानन्द स्वामी की सेवा में पहुंचे। यहां वे लगभग तीन वर्ष तक दंडी जी से विद्याध्ययन करते रहे। इस समय उनकी आयु लगभग ३० वर्ष थी। दंडी जी यद्यपि स्वभाव से तीक्ष्ण, उग्र और निःस्पृह थे पर वे भी दयानन्द की ऐकान्तिक सेवा, निष्ठा और गुरु भक्ति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने समझ लिया कि दयानन्द एक साधारण शिष्य नहीं है। शिष्य रूप में दयानन्द ने अपने गुरुचरणों के प्रति जिस प्रकार तप: पूत आस्था रखी और स्वयं को जिस प्रकार तपस्या और कष्टों की भट्टी में तपाया वह इस कलियुग में भारत के प्राचीनकाल की सतोयुग परम्पराओं का एक देदीप्यमान सजीव उदाहरण है। ऐसे शिष्य को दिया गया गुरुश्री का आशीर्वाद भला कैसे विफल हो सकता था ? दंडी जी के आशीर्वाद के साथ उनकी चरण रज को अपने मस्तक पर लगा दयानन्द अब कार्यक्षेत्र में प्रविष्ट हुआ और एक प्रबल आत्मविश्वास और ज्ञान संचय का सम्बल ले ऋषि रूप में अवतरित हुआ।

संशयग्रस्त मन

संवत् १९२० से संवत् १९२३ तक ऋषि दयानन्द ने आगरा में प्रारम्भिक प्रचार कार्य किया। अभी तक दयानन्द संशयग्रस्त विचारों के थे। वे कभी-कभी मथुरा जाकर अथवा पत्र द्वारा भी गुरु जी से शंका समाधान करते रहते थे। स्वामी जी इन दिनों आगरा में गीता और योग वासिष्ठ की कथा करते थे। प्राणायाम, न्यौली आदि क्रियाएं करते और कभी-कभी १८-१८ घण्टों तक एक आसन पर समाधिस्थ होते थे। यहां उन्होंने एक भक्त की सहायता से "सन्ध्या विधि" की ३० हजार प्रतियां छपवाईं। सिला हुआ कपड़ा नहीं पहनते थे और लोई व धुस्सा ओढ़ते, पगड़ी बांधते और जूते पहनते थे।

शैव मत के प्रचारक

इस समय स्वामी जी का झुकाव शैव मत की ओर था। भागवत का और वैष्णवों का खण्डन करते थे। शरीर पर भस्म रमाते और रुद्राक्ष माला पहनते थे। ग्वालियर, करौली, जयपुर, पुष्कर इत्यादि में उन्होंने वैष्णव पंडितों से शास्त्रार्थ कर और उन्हें पराजित कर शैव मत का खूब प्रचार किया। स्वामी जी के प्रचार से जनता ने कंठियां तोड़कर उनके ढेर लगा दिये। पुष्कर से अजमेर आये और यहां ईसाइयों से मुठभेड़ हुई। अजमेर में उन दिनों गर्वनर-जनरल के एजेंट का निवास स्थान था। स्वामी जी अब गोरक्षा के लिए भी आन्दोलन चला रहे थे। यहां उन्होंने अंग्रेज सरकारी अधिकारियों से गोवध रोकने के लिए कानून बनाने की मांग की। गवर्नर-जनरल के एजेंट कर्नल ब्रुक से स्वामी जी ने विशेष रूप से गोवध रोकने की मांग की। कर्नल ने गवर्नर-जनरल के नाम स्वामी जी को एक पत्र दिया जिसमें गोवध रोकने की पुष्टि की गयी थी। अजमेर में स्वामी जी ने रामस्नेहियों का खंडन किया। आगरा में आकर "भागवत खंडन" पर एक पुस्तक प्रकाशित कराई। आगरा से स्वामी जी मथुरा गये और अपने गुरु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी से भेंट की। यह उनकी अन्तिम भेंट थी। उन्होंने कई संशयों का निवारण किया। यहां से स्वामी जी संवत् १९२३ के कुम्भ मेले से एक मास पूर्व हरिद्वार पहुंच गये।

कुम्भ मेले में पाखंडखंडिनी पताका

दयानन्द की हरिद्वार कुम्भ मेले की यह दूसरी यात्रा थी। जब वे पहले आये तब केवल एक सामान्य संन्यासी के रूप में अथवा जिज्ञासु और दर्शक के रूप थे। अब दंडी विरजानन्द की शिक्षा से उन्मुक्त ज्ञान नेत्रों के साथ इस मेले में आये और सप्त सरोवर पर उन्होंने 'पाखंड खंडिनी पताका' गाड़कर मूर्तिपूजा या वैष्णव मत का खंडन प्रारम्भ कर दिया। इससे सारे मेले में एक प्रकार की हलचल मच गयी। जनता ऋषि के वचनों से प्रभावित हो रही थी। यहां भागवत के खण्डन में स्वामी जी द्वारा लिखित पुस्तक की हजारों प्रतियां बांटी गयीं। मेले में एकत्र गृहस्थों और साधुओं की दीन-दशा देख महाराज का हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने देखा कि इन तथाकथित साधु-सन्तों और संन्यासियों के चंगुल में फंसी भोली-भाली जनता किस प्रकार ठगी जा रही है। दयानन्द के हृदय में यह दृश्य देख प्रबल प्रतिक्रिया हुई। उन्होंने पाखण्ड के इस अभेद्य दुर्ग पर आक्रमण करने का निश्चय किया। गम्भीर चिन्तन के बाद उन्होंने "सर्वमेध यज्ञ" का संकल्प किया। जो कुछ उनके पास था— वस्त्र, पुस्तक, धन-सब जनता के अर्पण कर केवल एक कौपीन धारी हो अपनी कुटिया से बाहर निकल पड़े और मौन व्रत धारणकर गंगा के किनारे बैठ ध्यानावस्थित हो ब्रह्म चिन्तन में निमग्न हो गये।

गंगातट विचरण : मूर्तिपूजा खंडन

हरिद्वार से प्रारम्भ कर अढ़ाई वर्ष तक गंगातट विचरण करते रहे। इस अवधि में स्वामी जी का प्रधान कार्यक्रम एक ओर पाखण्डों का खण्डन और दूसरी ओर लोगों को सन्ध्या गायत्री सिखाना और कहीं-कहीं मनुस्मृति और उपनिषद् पढ़ाना, यज्ञ कराना और सबको यज्ञोपवीत देना था। वे प्रायः संस्कृत में ही बोलते और एकमात्र कौपीन धारी तथा भस्म रमाकर रहते। अनूपशहर में पण्डितों ने अपनी पराजय स्वीकार कर मूर्तियां गंगा में बहा दीं और कंठियां तोड़ दी थीं, जनता ने भी इन पण्डितों का अनुकरण किया। स्वामी जी के कुछ विरोधियों ने पान में विष मिलाकर उन्हें दे दिया। स्वामी जी के भक्त वहां के मुसलमान तहसीलदार सय्यद मुहम्मद ने अपराधी को पकड़ जेल में डाल कठोर दण्ड देने की इच्छा प्रकट की। ऋषि ने उत्तर दिया—**"मैं संसार को कैद कराने नहीं, वरन् कैद से छुड़ाने के लिए आया हूं।"** लंढौरा, मीरापुर (जि० मुजफ्फरनगर), बिजनौर, गढ़मुक्तेश्वर, फर्रूखाबाद, अनूपशहर, (दो बार), चांसी (जि० बुलन्द-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहर), थारपुर, कर्णवास, अहार, जहांगीराबाद (जि० बुलन्दशहर), खेरा इत्यादि गंगा तटवर्ती स्थानों पर प्रचार किया। गायत्री और यज्ञोपवीत प्रचार के साथ-साथ प्रत्येक स्थान पर पौराणिक पण्डितों से शास्त्रार्थ भी होते पर पण्डित निरुत्तर हो जाते थे। गायत्री मन्त्र की प्रति जिसे देते, उस पर १००० लिख देते, जिसका अभिप्राय यह था कि १००० बार जप करना आवश्यक है। कर्णवास में स्वामी जी ने धर्मपुर निवासी एक नव-मुस्लिम की शुद्धि भी की। बुलन्दशहर का अंग्रेज कलक्टर ऋषि का भक्त हो गया था और उनके दर्शन करने प्रायः आता था। स्वामी जी ने उसे न्याय-पूर्वक प्रजापालन का उपदेश दिया। स्वामी जी की दिनचर्या में इन दिनों गंगातट पर कई घण्टे समाधिस्थ होने का दैनिक कार्यक्रम था। शीतकाल में भी वे वस्त्र नहीं पहनते थे, रात को केवल फूस अपने ऊपर डाल लेते और ईंटों का तकिया करते थे। स्वामी जी कहा करते थे कि ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास के कारण उन पर शीत-उष्ण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। गढ़ियाघाट और सोरों में वे लगभग ३ मास विचरण करते रहे। यहां चक्रांकित सम्प्रदाय का जोर था और लगभग १० हजार ब्राह्मण रहते थे। स्वामी जी ने खूब खंडन किया और कई प्रमुख ब्राह्मण इनके शिष्य बन गये। स्वामी कैलाश पर्वत का सोरों में वराह मन्दिर था। मूर्तिपूजा का खंडन से करना था, इसलिए स्वामी जी ने मन्दिर छोड़ दिया जिससे कैलाश पर्वत कुपित हो गये और ऋषि दयानन्द के प्रति अपशब्द कहने लगे। पर ऋषि ने किसी प्रकार कैलाश पर्वत का अपमान नहीं किया। कैलाश पर्वत विद्वान् थे। उनसे पहले आगरा और हरिद्वार कुम्भ मेले पर भी भेंट हुई थी। ऋषिवर कैलाश पर्वत का सदा मान करते थे। सोरों में लगभग तीन मास रहकर कासगंज, पीलीभीत, बरेली होते हुए कर्णवास पहुंचे। यहां दशहरा स्नान का पर्व था।

कर्णसिंह का ऋषि पर तलवार से हमला

कर्णवास के पास बरौली ग्राम का ठा० कर्णसिंह भी यहां आया हुआ था। वह चक्रांकित सम्प्रदाय का था। एक दिन सभा में उपदेश देते समय वह झगड़ा करने आ गया। ऋषि ने रामलीला में स्वांग बनाने और तिलक आदि चक्रांकित चिह्नों का खण्डन किया। कर्णसिंह ने क्रुद्ध हो स्वामी जी पर तलवार से आक्रमण किया। उन्होंने तलवार छीन पृथ्वी पर टिका उसे तोड़ दिया। भक्तों के अत्यन्त आग्रह पर भी ऋषि ने थाने में रिपोर्ट नहीं लिखाई। कर्णसिंह ने फिर दोबारा अपने तीन सेवकों को भेजकर रात को स्वामी जी पर आक्रमण करने का षड्यन्त्र किया। कुटिया के द्वार पर जब ये घातक पहुंचे तो स्वामी जी की नींद खुल गई और उन्होंने जोर से हुंकार किया। तीनों डर के मारे भाग गये। प्रातः भक्तों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णसिंह और उसके सेवकों को ललकारा। पर कोई सामने आने का साहस न कर सका। यहां से शाहबागपुर, कादिरगंज, नरदौली, खोड़ा, कायमगंज पहुंचे और वहां भक्तों के अत्यन्त आग्रह पर संस्कृत पाठशाला स्थापित की। यहां से तीसरी बार फरूखाबाद पहुंचे। यहां स्वामी जी ने अनेक लोगों के यज्ञोपवीत कराये और पौराणिकों द्वारा मेरठ से विशेष रूप से बुलाये गये पं० श्रीगोपाल शास्त्री से मूर्ति-पूजा पर शास्त्रार्थ किया।

कानपुर में शास्त्रार्थ

इस नगर में भी स्वामी जी महाराज ने संस्कृत पाठशाला स्थापित की। पं० श्रीगोपाल जी के पराजय से यहां के पौराणिक खिन्न थे। प्रेमदास, देवीदास खत्री रईस की सलाह से कानपुर से पं० हलधर ओझा यहां बुलाया गया। रात्रि के एक बजे तक शास्त्रार्थ चलता रहा। शास्त्रार्थ अगले दिन के लिए स्थगित हो गया। नगर की पण्डित मण्डली पर स्वामी जी की विद्या का गहरा प्रभाव पड़ा। ओझा जी व्याकरण और महाभाष्य के सामान्य प्रश्नों का भी उत्तर न दे सके। अन्त में वे सभा में मूच्छित हो गये और उन्हें किसी प्रकार घर ले जाया गया। फरूखाबाद से १६ मील रामपुर में एक रात ठहरते हुए कन्नौज पहुंचे और यहां पं० रवि-शंकर और पं० गुलजारीलाल से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। पं० हरिशंकर ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। दोनों पण्डित स्वामी जी के कट्टर समर्थक हो गए। यहां स्वामी जी ने घोषणा की कि गायत्री मन्त्र सबके लिए एक समान है।

हलधर पण्डित की पराजय

कन्नौज में लगभग एक सप्ताह रह स्वामी जी कानपुर पधारे। नगर में हलचल मच गयी। मूर्ति पूजा पर खूब प्रश्न-उत्तर होते। यहां वही पण्डित हलधर ओझा और उनके साथ लक्ष्मण शास्त्री शास्त्रार्थ के लिए एक पौराणिक संन्यासी द्वारा खड़े किये गए। नगर के असिस्टैंट कलक्टर संस्कृतज्ञ थेन साहब मध्यस्थ बने। नगर के अनेक उच्च पदाधिकारी तथा प्रमुख महानुभाव उपस्थित थे। लगभग २०-२५ हजार लोग वहां सुनने के लिए एकत्र थे। ओझा ने पहले तो स्वामी जी के सामने व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों की चर्चा की। महाराज के यह कहने पर कि "यह स्थान महत्त्वपूर्ण शास्त्रार्थ का है, इन शंकाओं का उत्तर आप मुझसे मेरी कुटिया पर आकर ले लेना, हलधर ने महाभारत की एकलव्य और द्रोण की कथा द्वारा मूर्तिपूजा की सार्थकता बताई। स्वामी जी के यह कहने पर कि "एकलव्य तो अज्ञानी था और उसे लाभ मूर्तिपूजा से नहीं, किन्तु अभ्यास वश हुआ है", तब वह अप्रासंगिक चर्चा करने लगा। इस पर थेन साहब कुर्सी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठ खड़े हुए और जनता भी तितर-बितर हो गई। हलधर ओझा की फिर करारी हार हुई। थेन साहब ने एक विज्ञापन प्रकाशित कर स्वामी जी को विजयी घोषित किया। अब लोग मूर्तियां फेंकने लगे। इस पर ओझा ने जनता से अनुरोध किया कि मूर्तियों को फेंकने की बजाय कैलाश मंदिर में पहुंचा दें। महाराज तीन मास तक कानपुर रहे।

काशी में शास्त्रार्थ

यहां से विचरण करते हुए स्वामी जी महाराज पाखण्ड के दुर्भेद्य किले काशी पहुंचे। काशी नरेश ने उन्हें सन्देश भेजा कि अगर वे मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ दें तो उन्हें राज्य की ओर से १०० रु० की मासिक वृत्ति मिलती रहेगी। महर्षि का उत्तर था कि "यदि महाराजा सारा राज्य भी दे दें तब भी मूर्तिपूजा का खण्डन नहीं छोड़ूंगा।" महाराजा चिढ़ गये और उनकी प्रबल इच्छा हुई कि स्वामी जी को किसी प्रकार शास्त्रार्थ में हराया जाए। ऋषि ने काशी नरेश की हस्तिशाला के समीप एक वृक्ष के नीचे आसन लगाया था। अब सारे नगर में हलचल मच गई। लोग रामनगर में ऋषि के दर्शनों और शंका-समाधान के लिए उमड़ पड़े। काशी नरेश द्वारा पण्डितों को प्रेरणा देकर शास्त्रार्थ के लिए तैयार किया गया। पण्डितगण अभी तक टालते रहे थे और स्वामी जी के प्रति हीन वचन कहकर ही आत्मसन्तुष्टि कर रहे थे। अन्ततः उन्हें शास्त्रार्थ के लिए राजी होना पड़ा और कार्तिक शुक्ला १२, संवत् १९२६ (१६ नवम्बर, १८६९) मंगलवार का दिन शास्त्रार्थ के लिए निश्चित किया गया।

स्वामी जी के शिष्य ब्रह्मचारी बलदेव ने गुण्डों के उत्पात की निश्चित आशंका प्रकट की। महर्षि मुस्कराते हुए बोले—"योगीजनों का निश्चित सिद्धांत है कि सत्य का सूर्य गहनतम अन्धकार पर एकाकी विजय पा लेता है। जो ईश्वरानुकूल उपदेश करता है, उसे भय कहां ?" काशी में स्वामी जी राजा माधोसिंह के बाग में ठहरे और यहीं शास्त्रार्थ का स्थान निश्चित किया गया।

काशी के पण्डितों का छल-कपट

सरकार की ओर से शान्ति-व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया। ५० हजार लोगों की भीड़ की सम्भावना थी। बाग के दालान की खिड़की में महर्षि का आसन लगाया गया और उनके सामने पतिपक्षी पंडितों का। एक तीसरा आसन काशी नरेश के लिए था। काशी नरेश और पंडितों ने पहले ही अव्यवस्था प्रारम्भ कर दी। सबसे पहले पं० ताराचरण नैयायिक ने स्वामी जी के इस प्रश्न पर कि "वेद में पाषाण-पूजा का प्रमाण दें", कहा कि "हम केवल वेद को ही प्रमाण नहीं मानते। इस पर विशुद्धानन्द स्वामी बीच में ही व्यास के एक सूत्र को बोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठे और उसका अर्थ पूछा। स्वामी जी के यह कहने पर कि यह आज के प्रकरण से बाहर है, विशुद्धानन्द के आग्रह पर महर्षि ने कहा कि पूर्वापर प्रकरण देखकर ही उसका समाधान किया जा सकता है। विशुद्धानन्द जी उलाहना देते हुए बोले, "अगर समग्र कंठस्थ नहीं था तो काशी में शास्त्रार्थ करने क्यों आये ?" ऋषि ने कहा कि "क्या आपको सब-कुछ कंठाग्र है ?" विशुद्धानन्द जी के 'हां' कहने पर ऋषि ने पूछा कि "धर्म के कितने लक्षण हैं ?" विशुद्धानन्द जी से इसका उत्तर न बन पड़ा और स्वामी जी के आग्रह पर वे कोई प्रमाण भी न दे सके। विशुद्धानन्द जी के निरुत्तर होने पर पं० बालशास्त्री ने जब अपना बनाया हुआ श्लोक पढ़ा और स्वामी जी ने उसे अप्रामाणिक ठहराया तब शिवसहाय पण्डित ने मनुस्मृति का "धृतिःक्षमा" श्लोक पढ़ा। ऋषि के इस प्रश्न पर कि 'अधर्म का लक्षण कहें, वे निरुत्तर हो पीछे हट गये। इस प्रकार पण्डित वर्ग के महारथियों को उखड़ते देख अन्य पण्डित एक स्वर से चिल्लाकर पूछने लगे कि 'वेद में प्रतिमा शब्द है या नहीं ?" ऋषि के इस उत्तर पर कि 'वेद में प्रतिमा शब्द तो है" (स्वामी जी ने यहां यजुर्वेद और सामवेद के अध्याय और मन्त्र का प्रमाण दिया) पर वह पाषाण आदि की प्रतिमा के पूजन से सम्बद्ध नहीं है, ये उच्छृंखल पंडित तो चुप हो गये पर बालशास्त्री और विशुद्धानन्द को तब तक विश्राम मिल गया। इसलिए अब वे दोनों प्रश्न करने लगे। विशुद्धानन्द के प्रश्न वेद के सम्बन्ध में थे। जब वे चुप हो गये तब माधवाचार्य भिड़ गए। एक मन्त्र में आये "पूर्त" शब्द का अर्थ पूछने और जानने के बाद निरुत्तर हो बोले, "वेदों में पुराण शब्द आया है कि नहीं ?" ऋषि द्वारा इस प्रश्न के उत्तर में यह कहने पर कि "पुराण शब्द वेदों में आया है पर उसका अर्थ १८ पुराण नहीं, किन्तु 'सनातन' है" विशुद्धानन्द और बालशास्त्री फिर 'पुराण' शब्द पर शंका करने लगे। स्वामी जी द्वारा भगवद् गीता और छान्दोग्य उपनिषद् के प्रमाणों द्वारा "पुराण" की व्याख्या करने के बाद सब पण्डित मण्डली चुप हो गई और सभा में सन्नाटा छा गया। अब ऋषि दयानन्द ने पण्डितों को ललकारकर "संस्कृत-व्याकरण में 'कल्म' संज्ञा की उपपत्ति कैसे हुई" यह प्रश्न पूछा, पर कोई पण्डित इस शंका का समुचित उत्तर न दे सका। मध्याह्न ३ बजे से सायं ७ बजे तक शास्त्रार्थ होता रहा और अकेले अभिमन्यु पर कौरव दल द्वारा धूर्तता से किये गये सम्मिलित आक्रमण की तरह सारी पडिण्त मण्डली ने अकेले ऋषि दयानन्द के साथ छल-कपट का व्यवहार किया। शाम को सूर्यास्त के कारण अंधेरा हो रहा था। पं० वामनाचार्य ने पुराने, फटे, अस्पष्ट दो पन्ने आगे बढ़ाते हुए कहा कि "ये वेद के पन्ने हैं। इनमें यज्ञ की समाप्ति पर १०वें दिन पुराण-श्रवण के लिए कहा गया है।" स्वामी जी के यह कहने पर "आप पढ़कर सुनाइए" विशुद्धानन्द ने स्वामी जी से ही पढ़ने का यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहकर आग्रह किया कि वे बिना ऐनक के पत्र नहीं पढ़ सकते। तब विशुद्धानन्द जब पन्ने हाथ में ले धुंधले प्रकाश में पुस्तक का नाम, वेद का नाम, अध्याय, मन्त्र आदि प्रमाण देखने का प्रयत्न करने लगे, तब विशुद्धानन्द यह कहकर उठ खड़े हुए कि "हमें देर होती है" और साथ ही शोर मचा दिया कि "दयानन्द पराजित।" ऋषिवर ने विशुद्धानन्द जी का हाथ पकड़कर बैठ जाने का बहुत आग्रह किया पर यह तो पूर्वनियोजित कूटनीति का गहरा दांव था। विशुद्धानन्द अब क्यों बैठते ?

गुण्डो पूर्वनियोजित की शरारत

५० हजार की भारी भीड़ में हुल्लड़ मच गया। 'दयानन्द हार गया" इस कर्णभेदी कोलाहल के अतिरिक्त महर्षि पर चारों ओर से ईंट, पत्थर, कंकर, ढेले, गोबर और जूतों की वर्षा शुरू हो गई। कोतवाल ने महर्षि को खिड़की के भीतर बन्द कर किवाड़ बन्द कर दिए और उपद्रवियों को सिपाहियों ने संभाल लिया। अगर इस अवसर परपुलिस की सहायता न मिलती तो निश्चय ही ऋषि का जीवन संकट में था।

काशी के मुसलमानों की शरारत

पर महर्षि इस सारी विकट, अन्याय तथा हिंसापूर्ण परिस्थिति में भी अविचल, शान्त और निर्द्वन्द्व रहे। उन्होंने अपने एक शिष्य से इतना अवश्य कहा—"बड़ी आशा थी कि इतने विद्वानों के एकत्र होने पर शास्त्रार्थ न्यायपूर्वक होगा और कई दिन तक चलने वाला होगा पर काशी के पण्डितों ने कुछ घण्टों में ही बड़े अन्याय के साथ इसे हुल्लड़ में ही समाप्त कर दिया।" शास्त्रार्थ के एक मास पश्चात् तक महाराज काशी में ही रहे। ऋषि ने 'काशी-शास्त्रार्थ' नाम से पुस्तकाकार सारा वृत्तान्त टिप्पणी सहित छापकर बंटवा दिया। काशी का कोई पण्डित इस मास में ऋषि के सम्मुख नहीं आया। काशी में कुछ मुसलमानों ने ऋषि द्वारा इस्लाम के खंडन से चिढ़कर उन्हें गंगा में फेंकने का प्रयत्न किया, पर बलशाली स्वामी जी उनमें से दो मुख्य व्यक्तियों को बगल में दबा गंगा में छलांग मारकर स्वयं पार चले गये। उन दोनों को गंगा में गोते खाने के लिए छोड़ दिया। एक व्यक्ति महाराज को विष वाला पान देकर भाग गया। स्वामी जी ने पान खोलकर देखा तो उसमें विष मिला हुआ था।

मिरजापुर में वैदिक पाठशाला की स्थापना

काशी से मिरजापुर होते हुए स्वामी जी प्रयाग कुम्भ के मेले में पहुंचे। यहां आदि ब्रह्मसमाज के संस्थापक महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर (विश्वकवि डा० रवीन्द्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य ठाकुर के (पिता) से उनकी भेंट हुई और देर तक वार्तालाप होता रहा। ं ठाकुर महोदय से ऋषि ने 'वैदिक पाठशाला' नाम की एक संस्था खोलने का चार-विनिमय किया। ऋषि के पुनीत दर्शन से नगर के एक प्रमुख बंगाली ह्मण सरकारी ओवरसीयर माधवचन्द्र चक्रवर्ती के, जिनका झुकाव इस्लाम की र हो गया था और जो मद्य-मांस, वेश्यागमन इत्यादि के कारण आचारहीन हो थे पर तीक्ष्णबुद्धि और सुपठित थे, जीवन का कायापलट हो गया और वे कट्टर रभक्त हो गये तथा संध्या-हवन-जाप का पालन करने लगे। प्रयाग से पुनः र्जापुर आये, जहां स्वामी जी ने वैदिक पाठशाला स्थापित की जिसका सारा य चौधरी गुरुचरण रईस ने देना स्वीकार किया। पहले ३०-३५ छात्र प्रविष्ट । प्रत्येक छात्र के लिए संध्या, अग्निहोत्र और गायत्री जाप अनिवार्य था। र्जापुर से पुनः काशी आकर महर्षि ने मूर्ति-पूजा का खंडन किया और वहां के ण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। शंकर के नवीन वेदान्त के खंडन में र्षि ने 'अद्वैतमत-खंडन' नामक पुस्तक प्रकाशित की।

ब्राह्मण द्वारा पान में विष

वहां से स्वामी जी सोरों, कासगंज, और अनूपशहर आये। यहां एक ब्राह्मण स्वामी जी को पान में विष दे दिया। महर्षि ने न्यौली क्रिया से विष को शरीर निकाल दिया। यहां के तहसीलदार और ऋषि के भक्त सैयद मुहम्मद ने उस ह्मण को कैद में डाल दिया और अपनी ऋषि-भक्ति प्रकट करने के लिए उनसे रा वृत्तान्त कहा। ऋषि ने अप्रसन्न होते हुए कहा कहा, **'मैं संसार को कैद ने नहीं किन्तु कैद से छुड़ाने आया हूं?'** तहसीलदार ने तत्काल बन्दी को दिया। यहां से चल रामगढ़ और छलेसर पधारे। यहां भी पाठशाला की ना की गई। हवन के पश्चात् ब्रह्मभोज हुआ। यहां के ठाकुर मुकुन्दसिंह और तसिंह इतने कट्टर ऋषिभक्त बन गये कि बिना उनके दर्शन के भोजन नहीं ते थे। वर्षा होते हुए भी भक्तों के आग्रह के मोह में फंसते हुए महर्षि र से चल गंगा-तटस्थ स्थानों का दौरा करते हुए रामघाट और फर्रूखाबाद र पुनः काशी पहुंचे। कोई पण्डित ललकारने पर भी शास्त्रार्थ के लिए सामने आया। स्वामी जी महाराज को भविष्य का ज्ञान भी हो जाता था। एक यहां उपदेश देते हुए उन्होंने कहा कि अभी कुछ देर में एक कौतूहलजनक ना होने वाली है। इतने में एक ब्राह्मण भोजन और पान लेकर आया और राज को भेंट करने लगा। स्वामी जी ने भोजन तो अस्वीकार कर दिया पान ले लिया। दोनों को खोलकर देखा तो उनमें विष था। ब्राह्मण भाग गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा-तटवर्ती विभिन्न नगरों, कस्बों और ग्रामों की यात्रा तथा काशी की तीन-चार बार यात्रा करने के पश्चात् महर्षि मुगलसराय, डुमरांव आए। पटना, मुंगेर, भागलपुर होते हुए कलकत्ता पहुंचे और लगभग चार मास यहां ठहरे। काशी तक महर्षि का प्रवास और सम्पर्क प्रायः उन लोगों से रहा जो कट्टरपन्थी पण्डित वर्ग अथवा सामान्य स्थिति के व्यक्ति थे। कलकत्ता उस समय भारत की राजधानी और आधुनिकता का केन्द्र थी। यहां आकर महर्षि का सम्पर्क उन लोगों से हुआ जो आधुनिक विचारधारा में प्रमुख चिन्तनशील और पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नवीन समाज के अग्रणी थे। इस समय बंगाल में, और विशेषतः कलकत्ता में, ब्रह्मसमाज का जोर था। इस ब्रह्मसमाज के एक दल की स्थापना बा० केशवचन्द्र सेन ने की थी। इसका झुकाव अधिकतः ईसाई मत की ओर था। इस नये ब्रह्मसमाज का नाम 'नवविधान समाज' था। ब्रह्मसमाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान और आवागमन के सिद्धान्त को नहीं मानता था। ब्रह्मसमाज के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता पं० हेमचन्द्र स्वामी जी के अनुयायी बन गये और इन्होंने महाराज से अष्टांग योग की विधि सीखी, उपनिषदों का अध्ययन किया। फर्रुखाबाद में यह पाठ समाप्त हुआ।

वस्त्र-धारण और हिन्दी में भाषण

कलकत्ता में पहला व्याख्यान बा० केशवचन्द्र सेन के मकान पर हुआ। फिर ब्रह्मसमाज के उत्सव में, जो श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर के गृह पर हुआ, व्याख्यान हुआ। इसके बाद कलकत्ता के विभिन्न स्थानों पर कई व्याख्यान व उपदेश हुए। यहां केशव बाबू की प्रेरणा पर महर्षि ने वस्त्र-धारण और हिन्दी में व्याख्यान देना प्रारम्भ किया। कलकत्ता के पास हुगली में पं० ताराचरण तर्करत्न से प्रतिमा-पूजन पर शास्त्रार्थ हुआ। शास्त्रार्थ में अपनी हार होती देख पण्डित जी ने यह कहकर पीछा छुड़ाया कि मूर्तिपूजा मिथ्या तो है पर उदार-पूर्ति के लिए इसका समर्थन करना आवश्यक है। कलकत्ता से वापसी पर ऋषि वर्दमान ठहरते हुए भागलपुर और वहां से छपरा आये। यहां के पंडित जगन्नाथ को शास्त्रार्थ के लिए तैयार किया गया। उसने इस शर्त पर माना कि "नास्तिक का मुंह नहीं देखूंगा।" तब पर्दे की ओट में पं० जगन्नाथ ने बैठकर अनर्गल भाषण देना प्रारम्भ किया। हुल्लड़पन के साथ सभा समाप्त हुई। छपरा से आरा, डुमरांव और मिर्जापुर पहुंचे। यहां की पाठशाला की दुरवस्था को देख उसे तोड़ दिया। स्वामी जी ने काशी में आकर 'सत्यशास्त्र पाठशाला' के नाम से विद्यालय स्थापित किया। पं० शिवकुमार शास्त्री, जो बाद में काशी के दिग्गज पण्डित प्रसिद्ध हुए, इस पाठशाला में १५ रु० मासिक पर अध्यापक नियुक्त हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(विक्रमी संवत् १९३० से वि० संवत् १९३४ तक—

सन् १८७० से सन् १८७५ तक)

काशी-शास्त्रार्थ के बाद हम महर्षि की कार्य-पद्धति में परिवर्तन देखते हैं। ग १५ वर्ष के देश-भ्रमण और विशाल पैमाने पर जन-सम्पर्क के पश्चात् ने देखा कि एक ओर मूर्तिपूजा, मृतक-श्राद्ध इत्यादि अवैदिक सिद्धान्तों में स्वार्थी ब्राह्मण वर्ग और पाश्चात्य शिक्षा और ईसाइयत से प्रभावित ब्रह्म-ज—दोनों ही देश के लिए घातक हैं। उन्होंने अब निश्चय किया कि सघन म्पर्क स्थिर रखने के लिए कुछ परिवर्तन अनिवार्य हैं। ऋषि अभी तक अव-हते थे। अब उन्होंने व्याख्यानों और परिवारों में, जहां महिलाएं होती थीं, न स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग प्रारम्भ कर दिया। पैदल यात्रा के बदले अब मय और शक्ति बचाने की दृष्टि से रेल, बग्घी इत्यादि वाहनों का प्रयोग लगे। व्याख्यान, उपदेश प्रचार और बातचीत में ऋषिवर संस्कृत के बदले भाषा का उपयोग करने लगे। पहले स्वामी जी प्राय: बस्ती से बाहर ही थे; अब वे परिस्थिति के अनुसार नगरों के अन्दर भी टिकने लगे। अभी ऋषि की प्रचार शैली अधिकांश मौखिक ही थी—भाषण, उपदेश, शास्त्रार्थ, लाप इत्यादि द्वारा। अब उन्होंने लेखन और पुस्तक-रचना को भी प्रचार के आवश्यक समझ, उसका उपयोग करना प्रारम्भ किया। वैदिक पाठशालाओं अनुपयोगिता भी अब स्पष्ट हो चुकी थी। पौराणिक अध्यापक इन पाठ-ओं की आड़ में छात्रों को विशुद्ध वैदिक सिद्धान्तों और आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान की बजाय पौराणिक पोपलीला में ही फंसाये रखते थे। इसलिए यह काल सुदृढ़ विशाल, वेद पर आधारित और विश्वव्यापी संगठन के बीज-वपन का जा सकता है।

लखनऊ में शास्त्रार्थ : पण्डित की धूर्त्तता

इस काल की यात्रा का आरम्भ कानपुर से होता है। मिर्जापुर और प्रयाग हुए स्वामी जी कानपुर पहुंचे। कलकत्ता से हेमचन्द्र चक्रवर्ती अभी इनके ही थे। वे स्वामी जी से उपनिषद् पढ़ते थे। कानपुर में एक मुसलमान र-कोतवाल सुलतान अहमद की कुटिल नीति के कारण परेड के मैदान में ख्यान देने की व्यवस्था में गुंडों ने खूब विघ्न डाला, जिससे स्वामी जी के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याख्यान देना असम्भव हो गया। एक ईंट भी इनके शरीर के पास आकर गिरी। तब पुलिस की व्यवस्था में शिवप्रसाद के राजगद्दी भवन में प्रबन्ध किया गया। बाद में बा० क्षेत्रनाथ घोष की कोठी पर १०-१२ व्याख्यान हुए। कानपुर से महर्षि लखनऊ आये। यहां गंगाधर शास्त्री से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। काशी के पण्डितों की तरह इस शास्त्री ने भी यहां धूर्तता की और "यह पुस्तक अभी कलकत्ता से आया है जिसमें मूर्तिपूजा का पोषक वेद-मन्त्र दिया हुआ है"—यह कहकर एक पुस्तक स्वामी जी के हाथों में दी और जब वे उसे देखने लगे तो "दयानन्द हार गये" का झूठा नारा लगा दिया। यहां केसर बाग में महर्षि के कई व्याख्यान हुए। लखनऊ से आप फर्रुखाबाद आये। यहां से संयुक्त प्रान्त के लेफ्टि० गवर्नर सर म्योर से भेंट हुई। महर्षि ने इनसे गो-वध बन्द करने के लिए प्रयत्न करने का अनुरोध किया। म्योर साहब आपकी तर्कशैली से विशेष प्रभावित हुए। हेम बाबू रुग्ण होकर कलकत्ता चले गये।

'सत्यार्थप्रकाश' का लेखन प्रारम्भ

फर्रुखाबाद से कासगंज और छलेसर होते हुए अलीगढ़ पहुंचे। यहां आप डिप्टी कलक्टर राजा जयकिशनदास सी० एस० आई० के अतिथि हुए। राजा साहब स्वामी जी के परम भक्त बन गये। इन्हीं की प्रेरणा से ऋषि ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' लिखना प्रारम्भ किया। यहीं पर मुसलमानों के नेता और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खां से भेंट हुई। यह मुस्लिम नेता स्वामी जी से अत्यन्त प्रभावित हुआ। हाथरस, मथुरा, वृन्दावन, मुरसान होते हुए महर्षि काशी पहुंचे। यहां पर उन्होंने हिन्दी में प्रथम उपदेश दिया। लगभग १॥ मास यहां रहे।

'सत्यार्थप्रकाश' के मुद्रण व प्रकाशन का सारा व्यय-भार राजा जयकिशन दास ने अपने ऊपर लिया। उन्होंने ही ऋषि को प्रेरणा दी कि आपके उपदेश लेखबद्ध न होने से अनेक लोग उनसे वंचित रह जाते हैं। इस काम के लिए एक महाराष्ट्रीय पण्डित चन्द्रशेखर नियुक्त किया गया। और सन् १८७४ से 'सत्यार्थ-प्रकाश' का लिखाना प्रारम्भ हो गया, इसका पहला संस्करण १८७५ में प्रकाशित हुआ। आदि "सत्यार्थप्रकाश" में 'मृतकश्राद्ध' और 'मांसाहार' के समर्थक कई वाक्य लिखे गये तथा अन्य भी कई ऐसी बातें उसमें आ गईं जो स्वामी जी के सिद्धान्तों के विरुद्ध थीं। इसका एकमात्र कारण यह था कि महाराज तो १८७४ सितम्बर तक प्रयाग में पुस्तक लिखवाकर स्वयं जबलपुर होते हुए बम्बई-गुजरात-कठियावाड़ प्रदेशों की यात्रा पर चले गये। पीछे प्रूफ-शोधन और मुद्रण का सारा काम पौराणिक पंडितों के हाथ में था। स्वामी जी को तो 'सत्यार्थप्रकाश' को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ा देखने का ... ने इसमें मनचाही ट कर दी। स्वामी जी का ध्यान जब इन भ्रमजनक बातों की ओर दिलाया ब उन्होंने तत्काल एक विज्ञापन द्वारा इस प्रथम संस्करण को वापस ले ।

बम्बई में 'आर्यसमाज' की स्थापना

वामी दयानन्द का सुधार-सम्बन्धी कार्यक्रम सर्वांग सम्पूर्ण हो जनता के ा गया था। आपने अपने आन्दोलन का प्रारम्भ वैष्णव सम्प्रदाय के खंडन ा। धीरे-धीरे खंडन का यह महान् अस्त्र सारे पौराणिक मतों पर आक्रमण ा। इस सुधार-क्रान्ति का यह दूसरा पग था। तीसरा पग इस्लाम और त के खंडन से प्रारम्भ हुआ। महर्षि ने यह तीसरा पग—जो आज तक किसी सन्त-सुधारक-आचार्य ने नहीं उठाया था—क्यों उठाया? स्वामीजी रदृष्टि से उस संकट को भांप गये थे जो ईसाई-मुसलमान आर्य जाति को करने की दिशा में कर रहे थे। हिन्दू जाति इन दोनों मजहबों के हमलों से डावांडोल हो रही थी। स्वामी जी ने आर्य जाति के रक्षक के रूप में की इस बाढ़ को रोकने का प्रयत्न किया। एक अन्य दृष्टि से भी ऋषि प्रयास दूरगामी था। वे मानवमात्र के हितैषी थे। उनका एकमात्र लक्ष्य कि मनुष्यमात्र वैदिक धर्म का अनुयायी हो। हिन्दू जाति की ओर स्वामी ध्यान इसलिए विशेष रूप से गया क्योंकि हिन्दू ही ऐसे हैं जो वेद को ज्ञान और प्रामाणिक मानते हैं। यदि ३३ करोड़ हिन्दू वैदिक बन गये तो प्रभाव समूचे विश्व की विचारधारा पर पड़ेगा। यदि आर्य जाति अपने समझ ले तो वह संसार को शुद्ध धर्म का सन्देश दे सकेगी। इसलिए स्वामी जाति को अपना बिगड़ा हुआ किला समझते थे और ईसाई-मुसलमान तावलम्बियों को उस किले पर आक्रमणकारी प्रतिपक्षी समझते थे। इस ऋषि की कार्य-पद्धति एक ओर सुधार की दिशा में और दूसरी ओर प्रत्या- ी थी।

गोसाइयों द्वारा महर्षि को विष देने का षड्यन्त्र

र्म-महारथी ऋषिवर प्रयाग से २२ अक्तूबर १८७४ को नासिक होते हुए पहुंचे। स्वामी जी को इस नगर से चिरकाल से निमन्त्रण आ रहे थे। निवासी पं० मण्डनराय लेखक के रूप में उनके साथ थे। स्टेशन पर उनका स्वागत हुआ और बालकेश्वर में ठहराये गये। विज्ञापन द्वारा जनता को शंका- ान का अवसर दिया गया। १७ रु० प्रतिदिन किराये पर फ्रामजी कावसजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हाल में व्याख्यान का प्रबन्ध किया गया। एक दिन व्याख्यान और दूसरे दिन शंका-समाधान की व्यवस्था थी। सम्पूर्ण व्यय-भार पूर्वत: स्थापित वेद धर्म-सभा ने उठाया। स्वामी जी के विशेष भक्तों में पं० सेवकलाल, जयकृष्ण जीवनराम, प्रभुराम जीवनराम, लखमीदास खेमजी और लीलाधर ऊधो जी इत्यादि थे। इनमें से कुछ लोग काशी शास्त्रार्थ में उपस्थित थे और स्वामी जी की विद्या और तपस्या से बड़े प्रभावित थे। महर्षि को बम्बई का निमन्त्रण देने वालों में जयकृष्ण वैद्य और लखमीदास खेमजी का उद्देश्य वैष्णव मत का खंडन कराना था और वल्लभ मत के गोसाइयों को नीचा दिखाना था। महर्षि ने वल्लभ सम्प्रदाय तथा अन्य सम्प्रदायों का जोरदार खंडन प्रारम्भ कर दिया। इन गोकुलिये गोसाइयों के नेता जीवन जी गोसाईं ने स्वामी जी के सेवकों तक को १ हजार रु० नकद और ५ सेर मिठाई का प्रलोभन देकर महाराज को विष दिलाने का प्रयत्न किया, पर स्वामी जी को इस षड्यन्त्र का पता लग गया और वे सावधान हो गये। कुछ लोग स्वामी जी की हत्या के लिए निरन्तर उनका पीछा करने लगे। ऋषि निर्भय होते हुए भी असावधान नहीं थे। उन्होंने वल्लभ मत के २४ प्रश्नों का—जो इनके प्रमुख जीवन जी ने भेजे थे—उत्तर दिया। स्वामी जी के व्याख्यान प्रारम्भ हो गये और सारे नगर में पाखंडियों के गढ़ हिलने लगे। उन दिनों पं० गट्टूलाल नाम का एक व्यक्ति, जो शतावधानी और संस्कृतज्ञ था, स्वामी जी से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ करने के लिए उतावला हो रहा था। उसने ५ दिसम्बर शनिवार को बजे लालबाग में शास्त्रार्थ करने की घोषणा कराई। यद्यपि स्वामी जी के इस दिन फ्रामजी कावस जी हाल में भाषण देने की घोषणा नवम्बर मास में हो चुकी थी पर ऋषि ने इस अवसर को हाथ से जाने देना उचित नहीं समझा। गट्टूलाल ने शास्त्रार्थ की शर्तों को स्वीकार नहीं किया पर इस सभा में आकर 'मूर्तिपूजा' पक्ष में व्याख्यान दिया। स्वामी जी के दो शिष्यों ने जब गट्टूलाल से शंकाएं कीं तब वह उखड़ गया। स्वामी जी ने यहां पर 'वेदान्तध्वान्त-निवारण' तथा ऋग्वेद के पहले सूक्त का भाष्य गुजराती और मराठी भाषा में लिखवाया। यहां स्वामी जी वेदभाष्य के काम में संलग्न रहे।

आर्यसमाज नाम क्यों ?

इस समय सारे देश में महर्षि दयानन्द के अनुयायियों की संख्या हजारों से अधिक हो चुकी थी। सबको एक सूत्र में बांधना आवश्यक था। बम्बई में बहुत से भक्त महर्षि के पास आये और उनसे एक संगठन बनाने की प्रार्थना की। नाम के विषय में देर तक विचार होता रहा। भक्तों ने कहा कि आप ही अपने श्रीमुख से नामकरण कीजिए। महर्षि कुछ देर ध्यानावस्थित रहे। फिर बोले—"इस समाज का नाम आर्यसमाज होगा।" इसी समय स्वामी जी को सूरत जाना पड़ा। यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पांच सार्वजनिक व्याख्यान हुए, जिनमें वल्लभ मत, स्वामी नारायण मत रामानुजाचार्य मत तथा अद्वैतवाद का खंडन हुआ। यहां के ८० वर्षीय मठा-मोहन बाबा ने स्वामीजी को अत्यन्त आग्रहपूर्वक अपने मठ में ले जाकर उच्च न पर पुष्पमालादि से सम्मानित किया। सूरत में भड़ौच और अहमदाबाद व्याख्यान दिए, राजकोट में प्रार्थना समाज दो वर्ष पहले से स्थापित था। इस ज के सदस्यों ने महर्षि से प्रार्थना की कि इसी को "आर्यसमाज" नाम दे दिया । इस प्रकार राजकोट में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की गई, पर कुछ नों से यह समाज ५-६ मास वाद ही वन्द हो गया। राजकोट से अहमदाबाद पर यूरोपियन संस्कृत विद्वान् डा० वान बुहलर से साक्षात्कार हुआ और संस्कृत में वार्त्तालाप हुआ।

१० अप्रैल १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना

स्वामी जी बम्बई वापस आये। अब नियमित रूप से चैत्र शुक्ला ५, शनिवार १९३२, तदनुसार १० अप्रैल १८७५ को गिरगांव रोड स्थित डा० माणिक जी बागवाड़ी में सायं ५-३० बजे 'आर्यसमाज' की स्थापना हुई। इस समय सदों की संख्या लगभग १०० थी। साप्ताहिक अधिवेशन का समय पहले वार सायंकाल बाद में रविवार का निश्चित किया गया। सभासदों ने महर्षि समाज का "अधिनायक" अथवा "सभापति" बनाने का प्रस्ताव किया, पर र्षि ने अत्यन्त दूरदर्शिता से इसे सर्वथा अस्वीकार कर दिया।

प्रथम आर्यसमाज के नियम

बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के समय निम्न २८ नियम स्वीकृत ये—

(१) सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है। (२) इस ज में मुख्यतः स्वतः प्रमाण वेदों को ही माना जायेगा। साक्षी के लिए, वेदों ज्ञान के लिए और इतिहास के लिए शतपथादि चार ब्राह्मण, छः वेदांग, चार वेद, छः दर्शन और ११२७ वेदों की व्याख्या रूप शाखाएं— इन आर्ष ग्रन्थों भी वेदानुकूल होने से गौण प्रमाण माना जाएगा। (३) इस समाज में प्रति के मध्य एक प्रधान समाज होगा, दूसरे शाखा प्रतिशाखा समझे जायेंगे।) सब समाजों की व्यवस्था प्रधान समाज के अनुकूल होगी। (५) प्रधान ाज में सत्योपदेश के लिए संस्कृत और आर्य भाषा में नाना प्रकार के ग्रन्थ ये और एक साप्ताहिक पत्र 'आर्यप्रकाश' निकलेगा। ये सब समाजों में प्रवृत्त ये जाएंगे। (६) प्रत्येक समाज में एक प्रधान पुरुष, दूसरा मन्त्री तथा अन्य और स्त्री सब सभासद् होंगे। (७) प्रधान पुरुष इस समाज की व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का यथावत पालन करेगा और मन्त्री सबके पत्रों के उत्तर तथा सबके नाम
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लेख व्यवस्था करेगा। (८) इस समाज में सत्पुरुष, सदाचारी और परोपका सभासद् बनाये जायेंगे। (९) प्रत्येक गृहस्थ सभासद् को उचित है कि वह अप गृहस्थ से अवकाश पाकर, जैसे घर के कामों में पुरुषार्थ करता है, उससे अधि पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिए करे और विरक्त तो समाजोन्नति ही नित्य तत्पर रहे। (१०) प्रत्येक सप्ताह में एक दिन प्रधान, मन्त्री और सभास समाज-स्थान में एकत्रित हों और सब कामों से इस काम को मुख्य समझें (११) एकत्र होकर सर्वथा स्थिर-चित्त हो, पक्षपात छोड़कर परस्पर प्रीति प्रश्नोत्तर करें, फिर सामवेद गान, परमेश्वर, सत्य, धर्म, सत्यनीति सत्योपदेश विषय ही में बाजे आदि से गान और इन्हीं विषयों पर मन्त्रों का अर्थ औ व्याख्यान हों। फिर गान, फिर मन्त्रों का अर्थ, फिर गान आदि। (१२) प्रत्ये सभासद् न्यायपूर्वक पुरुषार्थ से जितना धन प्राप्त करे, उसमें से शतांश 'आर्य समाज', 'आर्य विद्यालय', और 'आर्यप्रकाश' पत्र के प्रचार और उन्नति के लि आर्यसमाज के कोष में देवे। (१३) जो मनुष्य इन कामों की उन्नति और प्रचा के लिए जितना-जितना प्रयत्न करे, उसका उतना ही अधिक सत्कार, उत्साह-वृ के लिए होना चाहिए। (१४) इस समाज में वेदोक्त प्रकार से अद्वैत परमेश्व ही की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जाएगी। स्तुति – निराकार सर्वशक्ति मान्, न्यायकारी, अजन्मा, अनादि, अनुपम, दयालु, सर्वाधार और सच्चिदान आदि विशेषण से परमात्मा का गुण कीर्तन करना, प्रार्थना—सब श्रेष्ठ कामों उससे साहाय्य चाहना, उपासना—उसके आनन्दस्वरूप में मग्न हो जाना। पूर्वोक्त लक्षणयुक्त परमात्मा ही की भक्ति करनी चाहिए, उसको छोड़ अन् किसी का आश्रय नहीं लेना चाहिए। (१५) इस समाज में निषेकादि अन्त्येष्टि पर्यन्त संस्कार वेदोक्त किए जाएंगे। (१६) आर्य विद्यालय में वेदादि सनातन आर्ष ग्रन्थों का पठन-पाठन हुआ करेगा और सब स्त्री-पुरुषों को वेदोक्त रीति ही शिक्षा दी जाएगी। (१७) इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिए प्रयत्न किया जाएगा—एक परमार्थ, दूसरे व्यवहार। इन दोनों का शोधन तथा समस्त संसार के हित की उन्नति की जाएगी। (१८) इस समाज में न्याय, पक्षपात से रहित प्रत्यक्षादि प्रमाणों से यथावत् परीक्षित सत्य धर्म, वेदोक्त ही माना जाएगा, इससे विपरीत कदापि नहीं। (१९) इस समाज की ओर से श्रेष्ठ विद्वान् लोग सदुपयोग करने के लिए समयानुकूल सर्वत्र भेजे जाएंगे। (२०) स्त्री और पुरुष—इन दोनों में विद्याभ्यास के लिए यथासम्भव प्रत्येक स्थान में आर्य विद्यालय पृथक्-पृथक् बनाए जाएंगे। स्त्रियों की पाठशाला में अध्यापिका आदि का सब प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जाएगा और पुरुषों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शाला में पुरुषों द्वारा। इसके विरुद्ध नहीं। (२१) इन पाठशालाओं की व्यव-
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रधान आर्यसमाज के अनुकूल पालन की जाएगी। (२२) इस समाज में नादि सब सभासदों को परस्पर प्रीतिपूर्वक, अभिमान, हठ, दुराग्रह और दि दुर्गुणों को छोड़कर, उपकार और सुहृद्भाव से निर्वैर होकर स्वात्मवत् के साथ वर्त्तना चाहिए। (२३) विचार के समय सब व्यवहार में जो न्याय-न, सर्वहित-साधक, सत्य बात स्थिर हो, वह सब सभासदों पर प्रकाशित कर बात मानी जाए। (२४) जो मनुष्य इन नियमों के अनुकूल आचरण करने ा, धर्मात्मा, सदाचारी हो, उसको उत्तम सभासदों में प्रविष्ट करना, इसके रीत को साधारण समाज में रखना और अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट को समाज से ाल ही देना। परन्तु यह काम पक्षपात से नहीं करना, किन्तु ये दोनों कार्य ठ सभासदों के विचार से ही किए जाएं, अन्यथा नहीं। (२५) आर्यसमाज, विद्यालय, आर्यप्रकाश पत्र और आर्यसमाज का कोष इन चारों की रक्षा और ति प्रधानादि सब सभासद् तन, मन, धन से सदा किया करें। (२६) जब नौकरी करने और कराने वाला आर्यसमाजस्थ मिले तब तक और की नौकरी रे और न किसी अन्य को नौकर रखे। दोनों परस्पर स्वामी-सेवक भाव से वत् वर्तें। (२७) जब विवाह, जन्म, मरण अथवा अन्य कोई दान करने का सर उपस्थित हो, तब आर्यसमाज के निमित्त धन आदि दान किया करें। धर्म का काम कोई दूसरा नहीं है, ऐसे समझ कर इसको कभी न भूलें। ८) इन नियमों में से यदि कोई नियम घटाया-बढ़ाया जाएगा तो सर्वश्रेष्ठ ासदों के विचार ही से सबको विदित करके ऐसा करना होगा।

बम्बई शास्त्रार्थ में विजय

बम्बई में वैष्णव सम्प्रदाय के गुरु पं० कमलनयन से शास्त्रार्थ हुआ। इससे मी जी की खूब धाक जम गई। फ्रामजी कावसजी हाल में १३ जून को र्थ करने स्वामी जी का और अपना प्रतिज्ञापत्र अत्यन्त अनिच्छा से बाध्य र पं० कमलनयन ने पढ़ा। विषय था 'मूर्तिपूजा'। शास्त्रार्थ का समय था बजे, पर २-३० बजे से ही सभास्थल भरने लगा। कमलनयन अब आने से टमटोल करने लगे। शास्त्रार्थ का विवरण लिखने वाले ८ लेखक नियुक्त किये । नगर के अनेक गण्य-मान्य विद्वान्, प्रतिष्ठित धनी-समृद्ध व्यक्ति सभा में स्थित थे। पं० कमलनयन और उसके साथियों ने अडंगा नीति से काम लेना किया। पहले कहा कि कोई अहिन्दू इस सभा में बैठ नहीं सकता। फिर ा—शास्त्रार्थ का निर्णय करने की योग्यता श्रोतागणों में नहीं है, अतः पंडित-डली जो निश्चय करे, वही मान्य होगा। महर्षि से पूछा गया कि क्या आप नी ओर से कोई पण्डित लाए हैं? उस समय महर्षि के वेदभाष्य के तीव्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचक विष्णु परशुराम शास्त्री ने अपने आपको इस सेवा के लिए प्रस्तुत किया। महर्षि ने सरल चित्त हो इसे स्वीकार कर लिया। अब वह पं० कमलनयन आचार्य इस शास्त्री से ही भिड़ गया। महर्षि ने कहा— इस अप्रासंगिक चर्चा में क्यों समय खराब करते हो, मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ करो। अगर यह नहीं करोगे तो हम मूर्तिपूजा का खण्डन प्रारम्भ कर देंगे। इस पर पं० कमलनयन सभा से चुपचाप उठकर चले गये। इसके बाद महर्षि ने मूर्तिपूजा के खण्डन में प्रभावशाली भाषण दिया। इसका नगरवासियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

पूना में ऋषि के प्रचार से हलचल

बम्बई हाईकोर्ट के जज श्री महादेव गोविन्द रानाडे के निमन्त्रण पर स्वामी जी पूना गये। यहां उनके १५ व्याख्यान हुए जो बड़े शिक्षाप्रद हैं और पुस्तकाकार छप चुके हैं। ३५ व्याख्यान छावनी में हुए। शास्त्रार्थ की चर्चा चली। नियम स्वीकार करने में पौराणिक पंडित टालमटोल करते रहे। श्री रानाडे प्रभृति ऋषिभक्तों ने स्वामी जी का सम्मान करने के लिए जुलूस निकालने का निश्चय किया। मैजिस्ट्रेट की आज्ञा ले ली गई। पुलिस व्यवस्था की गई। छावनी में महर्षि के व्याख्यान के पश्चात् जुलूस निकालने का कार्यक्रम बनाया गया। नगर के कई प्रमुख महानुभावों ने स्वामी जी को संवर्धना सभा में उपदेश देने के पश्चात् शाल, दुशाले, पगड़ी, रेशमी पीताम्बर, रेशमी चादर इत्यादि श्रद्धा से भेंट किए। स्वामी जी ने हाथी पर सवार होना स्वीकार नहीं किया। सबके साथ पैदल ही शोभायात्रा निकली। लगभग ३००-४०० व्यक्ति प्रारम्भ में थे। बाद में ५ हजार तक पहुंच गये।

पौराणिकों की नीचता

पौराणिकों ने शरारत के रूप में गधे को सजा कर उस पर गेरुए कपड़े की झूल डाल दी और उस पर लिख दिया 'गर्दभानन्द'। 'दयानन्द गधे की जय, गर्दभानन्द की जय' के साथ आगे बाजे बजाते जलूस निकाला। वर्षा के कारण मार्ग में कीचड़ पड़ा था। उधर अंधेरे के कारण स्वामी जी के जलूस में मशालें जलाई गईं। पौराणिकों ने अपनी मशालें बुझाकर स्वामी जी के जलुस पर ईंट, पत्थर, कीचड़, गोबर फेंकना शुरू कर दिया। गधे को तो पुलिस ने पहले ही अपने काबू में ले लिया था। रात्रि के दस बजे तक उपद्रव चलता रहा। पुलिस निष्क्रिय रही। अन्त में करीब २०० सिपाहियों के सहित पुलिस कप्तान आया। सिपाहियों को भी चोट आई। देर के बाद उपद्रव शान्त हुआ। तब भी पुलिस ने एक व्यक्ति को ही गिरफ्तार किया। इस गर्दभदल के साथ के लगभग १००० लोग उपद्रव की समाप्ति पर भी वहां डट कर खड़े रहे। इस सारी अपमानजनक घटना के दौरान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि तनिक भी विचलित नहीं हुए। शान्ति स्थापना के बाद महर्षि ने पूर्ववत् प्रसन्नता और निश्चिन्तता से उपदेश दिया। नागरिकों की ओर से महर्षि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए वेदभाष्य के लिए २५० रु० भेंट किये गये जो स्वामी जी ने स्वीकार किये। रात्रि के १२ बज गये। जिस समय स्वामी जी पुलिस के साथ अपने निवासस्थान पर जा रहे थे, पौराणिकों ने पुनः ईंट-पत्थर फेंके। अन्त में पूना में आर्यसमाज की स्थापना हो गई।

बड़ौदा के दीवान ऋषि-चरणों में

पूना से स्वामी जी सतारा गये। वहां से वापस पूना होते हुए बम्बई वापस आ गए। बम्बई आर्यसमाज ने वेदभाष्य के लिए ५ हजार रु० एकत्र कर लिया था और २५ हजार रु० एकत्र होने की आशा थी। बम्बई से रवाना होकर बड़ौदा पहुंचे। वहां राज्य की ओर से अतिथि सत्कार का प्रबन्ध था। यहां महाराज के तीन व्याख्यान हुए। राजधर्म की सुन्दर व्याख्या सुनकर राज्य के दीवान सर टी० माधवराव ने ऋषि-चरणों में दंडवत् प्रणाम कर कहा, "महाराज, आप राजनीति में हमसे भी सौ गुना अधिक निपुण हैं।" महर्षि कथा-वार्ता के पश्चात् भेंट चढ़ावा लेने के विरुद्ध थे। दीवान साहब ने अपने घर कथा कराने के पश्चात् स्वामी जी को एक हजार रु० भेंट करना चाहा पर महर्षि ने स्पष्ट कहा, "हम वल्लभाचार्यों के समान दूकानदार नहीं हैं।" बड़ौदे में 'संस्कारविधि' का लेखन समाप्त हो गया था। बड़ौदा से पुनः बम्बई और लगभग १८ मास तक बम्बई आदि में धर्म-प्रचार किया। संस्कृत के प्रसिद्ध यूरोपियन विद्वान् प्रो० मोनियर विलियम्स भी स्वामी जी के व्याख्यानों में आते रहे। स्वामी जी के साथ संस्कृत में वार्तालाप करते थे। स्वामी जी से बहुत प्रभावित हुए। बम्बई से स्वामी जी इन्दौर आये। महाराजा तुकाजी राव होलकर स्वामी जी के भाषण में आते रहे और उनका पूरा आतिथ्य किया। वेदभाष्य की ५० प्रतियां क्रय करने का वचन दिया।

प्रथम दिल्ली दरबार में

महाराष्ट्र प्रान्त की यात्रा के बाद महर्षि पुनः संयुक्त प्रान्त में प्रचारार्थ आये। फर्रुखाबाद ज्येष्ठ कृष्णा १, संवत् १९३३ वि० (९ मई सन् १८७६) को पहुंचे और पाठशाला की दुर्दशा देख उसे तोड़ दिया। पाठशाला का धन दानियों और संचालकों की अनुमति से वेदभाष्य में लगाया गया। यहां से काशी गये और वहां वेदभाष्य और 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के लेखन व छपाई में पौने तीन मास व्यस्त रहे। 'आर्याभिविनय' तैयार हो गई थी। काशी से जौनपुर, अयोध्या,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लखनऊ, शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद, अलीगढ़, कर्णवास, [illegible] पहुंचे। यहां भी पाठशाला की दुरवस्था देख उसे बन्द कर दिया। इन्हीं दिनों दिल्ली में लार्ड लिटन का दरबार होने वाला था। ऋषिभक्त ठा० मुकुन्दसिंह ने आपके निवास इत्यादि की व्यवस्था कर दी। अजमेरी दरवाजे के बाहर पश्चिम-दक्षिण की ओर अनार बाग में डेरा लगा दिया गया। स्वामी जी पौष शुदि २, रविवार, संवत् १९३३ (१९ दिसम्बर, १८७६) को दिल्ली पहुंचे और सत्यासत्य का निर्णय करने के सम्बन्ध में एक विज्ञापन बंटवा दिया। स्वामी जी का इस दरबार में एक उद्देश्य यह भी था कि वहां एकत्र राजाओं को सत्पथ पर लाने का प्रयत्न किया जाए। पर राजागण यहां लाट साहब और अन्य अंग्रेज अफसरों के चक्कर में ही व्यस्त रहे। केवल इन्दौर के महाराजा तुकोजीराव होलकर से ही भेंट हो सकी। कहते हैं कि कश्मीर-नरेश महाराजा रणवीरसिंह ने अपने मन्त्री श्री नीलाम्बर और दीवान अनन्तराय को महर्षि की सेवा में मिलने के लिए भेजा था और महर्षि ने स्वीकृति भी दे दी थी, पर पण्डितों ने महाराजा के मार्ग में बाधा डाल दी। दिल्ली के बाद जब स्वामी जी लाहौर में थे, तब भी महाराजा ने उन्हें श्रीनगर के लिए निमंत्रण देना चाहा था, पर पौराणिक पण्डितों के विरोध के कारण महाराजा की इच्छा पूरी न हो सकी।

प्रमुख नेताओं के सम्मेलन का आयोजन

इस दरबार के अवसर पर राजाओं से मिलने का अवसर स्वामी जी को नहीं मिला, पर उन्होंने इस अवसर से पूरा लाभ उठाने की इच्छा से अपने निवास-स्थान पर देश के तत्कालीन प्रमुख सुधारकों का एक सम्मेलन बुलाया। इसमें छः विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे, मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी, ब्रह्मसमाज के श्री नवीनचन्द्र राय और श्री केशवचन्द्र सेन, मुंशी इन्द्रमणि, मुसलमानों के नेता सर सैयद अहमद खां और महाराष्ट्र के श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि। महर्षि ने प्रस्ताव रखा कि सब सुधारक एक होकर एक ही प्रकार का सुधार-कार्य करें और वेद के ध्वज के नीचे ही भारत के सब सम्प्रदाय इकट्ठे हो सकते हैं। वेद की प्रतिष्ठा के आधार पर सुधार अधिक सफल ढंग से हो सकता है। श्री केशवचन्द्र सेन के प्रबल विरोध के कारण महर्षि की योजना स्वीकृत न हो सकी। इस दरबार के अवसर पर पंजाब के कई प्रमुख सज्जनों ने महर्षि से पंजाब पधारने की प्रार्थना की। महर्षि ने स्वीकृति दे यथा-अवसर उधर आने का वचन दिया। दिल्ली से मेरठ, सहारनपुर, होते हुए चांदापुर (जि० बिजनौर) के ब्रह्म विचार मेले में पहुंचे। महर्षि के प्रस्ताव पर इन पांच विषयों पर प्रत्येक धर्म के प्रतिनिधि ने आध-आध घंटा भाषण दिया,। विरोध व आक्षेपकर्त्ता ने १० मिनट लिये और फिर प्रथम मूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधि ने १० मिनट में उत्तर दिए। ५ विषय थे ?—(१) परमेश्वर ने जगत् किस वस्तु से, किस समय और किस उद्देश्य से रचा। (२) ईश्वर सर्वव्यापक है या नहीं ? (३) ईश्वर न्यायकारी और दयालु किस प्रकार है ? (४) वेद, बाइबिल और कुरान के ईश्वर-वाक्य होने में क्या प्रमाण है ? (५) मुक्ति क्या पदार्थ है और वह किस प्रकार प्राप्त हो सकती है ? इस धर्म-चर्चा में महर्षि ने ईसाई पादरी स्काट और मौलवी के प्रश्नों के उत्तर दिये। शाम को चार बजे मौलवी नमाज के लिए उठ गये और यह सम्मेलन अधूरा ही रह गया।

लाहौर में पौराणिकों का विरोध : मुसलमान की कोठी में प्रचार

दिल्ली-दरबार के अवसर पर पंजाब के कुछ प्रमुख व्यक्तियों के निमन्त्रण फलस्वरूप स्वामी जी ने चांदापुर से सहारनपुर जा कुछ दिन विश्राम कर वैशाख कृष्णा ५, संवत् १९३४ (३१ मार्च १८७७) को पंजाब की वीरभूमि में पदार्पण किया। सबसे पहले आप लुधियाना पहुंचे। यहां १९ दिन रहे, पंजाब के तत्कालीन प्रमुख सुधारक मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी ने आपका भक्ति-भाव से स्वागत किया। व्याख्यान और सार्वजनिक रूप से शंका-समाधान के पश्चात् १९ अप्रैल को पंजाब की राजधानी लाहौर पहुंचे। ब्रह्मसमाज और सत्सभा के सदस्यों ने स्टेशन पर स्वागत किया और ब्रह्मसमाजियों ने ही आतिथ्य की व्यवस्था की। बावली साहब में व्याख्यान होने लगे। पौराणिक दल में खलबली मच गई। कुछ पण्डितों ने स्वामी जी के आक्षेप का उत्तर देने का प्रयास किया पर उसका कुछ प्रभाव न पड़ा। अब ये लोग ओछे हथियारों पर उतर आए। स्वामी जी रतनचन्द दाढ़ीवाले के बाग में ठहराये गये थे। पौराणिकों ने दाढ़ीवाले के लड़के भगवान्दास को बहका कर उस बाग से स्वामी जी को हटवा दिया। ब्रह्मसमाजी भी किनारा कर चुके थे, क्योंकि वे स्वामी जी को अपने समाज के लिए प्रयोग करना चाहते थे। ब्रह्मसमाज के मन्दिर में ऋषि ने वेदों के ईश्वरीय ज्ञान और आवागमन के सिद्धान्त की पुष्टि में व्याख्यान दिए थे और ब्रह्मसमाजी इन दोनों को ही नहीं मानते थे। यहां के प्रमुख पण्डित मनफूल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ दें तो हिन्दू जनता और जम्मू कश्मीर के महाराजा आपका पूरा साथ देंगे। ऋषि का एक ही उत्तर था कि मैं महाराजा और जनता को प्रसन्न करूं अथवा ईश्वरीय शिक्षा का पालन करूं ? इस प्रकार लाहौर में स्वामी जी को जब कहीं ठहरने का स्थान नहीं मिला तब वहां के मुसलमान डाक्टर खान बहादुर रहीम खां ने अपनी कोठी के द्वार उनके लिए खोल दिये। यहां नियमपूर्वक व्याख्यान के और शंका-समाधान के कार्यक्रम चलने लगे। स्वामी जी इस मुसलमान की कोठी पर भी इस्लाम और ईसाइमत का खण्डन निर्भय होकर करते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महर्षि के यहां जो सत्य के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि लोगों ने अपनी मूर्तियां Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रावी में बहा दीं। लाला बालकराम खत्री ने अपने ठाकुरों की चौकी बाजार में फेंक दी।

लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना

लाहौर की शिक्षित जनता ऋषि के पवित्र जीवन और व्याख्यानों से बड़ी प्रभावित हुई। फलतः ज्येष्ठ शुक्ला १३, संवत् १९३४ (२४ जून १८७७) को डाक्टर रहीम की कोठी पर आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना ईश्वरोपासना और यज्ञ के पश्चात् हुई। बम्बई में आर्यसमाज के जो २८ नियम बनाये गये थे, अनुभव के आधार पर महर्षि ने उनमें परिवर्तन किया। उद्देश्यों और मन्तव्यों को पृथक् कर नियमों को संशोधित रूप दिया गया। उपनियमों को पृथक् रूप में वर्गीकृत किया गया। लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना के साथ १० नियम स्वीकृत किये गये जो आज तक सर्वमान्य चले आ रहे हैं। ये निम्नलिखित हैं—

आर्यसमाज के १० नियम

(१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

(२) ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

(३) वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(४) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

(५) सब काम धर्मानुसार अर्थात् और और असत्य का विचार करके करने चाहिए।

(६) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(७) सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिए।

(८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

(९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(१०) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद सम्बन्धी तीसरे नियम पर ब्रह्मसमाजियों ने महर्षि से कहा कि यदि यह न रहे तो वे भी आर्यसमाज में सम्मिलित हो सकते हैं। फिर राय मूलराज ने इसी तीसरे नियम में से 'सत्य' शब्द निकालने का प्रस्ताव किया। पर महर्षि सिद्धान्तों के साथ समझौता करने को किसी भी अवस्था में तैयार नहीं थे।

आर्यसमाज लाहौर का दूसरा अधिवेशन १ जुलाई को सत्सभा के स्थान पर हुआ पर पुराणों का खण्डन इस सभा में अनेक सदस्यों को सहन न हुआ। इस सभा ने अपना स्थान आर्यसमाज को देने से इन्कार कर दिया। अतः ३० रु० मासिक पर अनारकली में एक किराये का मकान ले लिया गया। सभासदों की संख्या शीघ्र ही १०० से ३०० तक हो गयी। यहां महर्षि पंजाब के गवर्नर से वेदभाष्य की सहायतार्थ मिले। सरकार ने जिन पण्डितों से ऋषि के वेदभाष्य पर सम्मतियां मांगीं, वे सब पौराणिक थे—उनका विरोध स्वाभाविक था। इसलिए सरकारी सहायता न मिल सकी।

श्यामजी कृष्ण वर्मा को इंग्लैण्ड भिजवाया

पंजाब में रहते हुए बम्बई आर्यसमाज के प्रधान और वेद-भाष्य के प्रबन्धक श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के पत्र द्वारा महर्षि का श्यामजी कृष्ण वर्मा से पत्र-व्यवहार हुआ। स्वामी जी ने वर्मा को प्रबल प्रेरणा दी कि ये इंग्लैण्ड अवश्य जाये और आक्सफोड विश्वविद्यालय में पढ़ें। इससे भारत का विदेशों से सम्बन्ध बढ़ेगा। श्यामजी अल्प आयु का होता हुआ भी संस्कृत का मेधावी छात्र था। आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से उसकी सिफारिश महर्षि ने आक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय के संस्कृत अध्यापक डा० मोनियर बिलियम्स से की। फलतः श्यामजी कृष्ण वर्मा इंग्लेंड चले गये।

ब्रह्मचर्य की शक्ति का परिचय

लाहौर से अमृतसर, लुधियाना, गुरुदासपुर और बटाला होते हुए महर्षि जालंधर आये। यहां स०विक्रमसिंह के आग्रह पर महर्षि ने उनकी बग्घी पीछे से, बिना उन्हें बताये, पकड़ ली। कई चाबुक मारने पर भी जब घोड़े आगे न बढ़े तब सरदार साहब ने पीछे देखा। महर्षि ने बग्घी पकड़ी हुई थी। सरदार साहब को अब ब्रह्मचर्य के बल का परिचय मिला। जालन्धर से पुनः लाहौर, वहां से फीरोजपुर, रावलपिंडी, जेहलम, गुजरात, वजीराबाद, मुलतान और फिर लाहौर आये, जहां वे एक मास ठहरे। एक ईसाई और ईसाइयत का प्रचारक पं० खड्गसिंह महर्षि के दर्शन मात्र से प्रभावित हो वैदिक धर्म में आ गया और प्रचारक बन गया।

तीसरी बार कुम्भ मेले पर

पंजाब की यात्रा के बाद महर्षि उत्तर प्रदेश में पहले रुड़की पधारे। यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी जी के [illegible] चाहते थे पर लिखित शास्त्रार्थ करने और नियमों का निर्णय करते हुए मुकर गये। अपना पक्ष कमजोर देख मैजिस्ट्रेट से किसी बहाने निषेध आज्ञा ले आये। रुड़की से मेरठ, अलीगढ़, दिल्ली, पुष्कर, अजमेर मसूदा, नसीराबाद, जयपुर, रिवाड़ी होते हुए संवत् १९३६ के कुम्भ मेले पर हरिद्वार पहुंचे।

थियोसोफिकल सोसायटी से सम्पर्क

वहां से देहरादून होते हुए मेरठ पहुंचे। यहीं थियोसोफिकल सोसायटी के कर्नल अल्काट और मैडम ब्लेवेट्स्की मिले। उन्होंने विशेष अनुरोध कर अपनी सोसायटी को आर्यसमाज की शाखा बनाने की स्वीकृति महर्षि से ले ली। यहां से अलीगढ़, मुरादाबाद, बदायूं होते हुए बरेली पहुंचे। यहां मुंशीरामजी (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द) का महर्षि से साक्षात्कार हुआ जिससे इस नास्तिक और मार्गभ्रष्ट युवक का जीवन एकदम बदल गया। मुन्शीराम के पिता ला० नानकचन्द जी उन दिनों बरेली में कोतवाल थे और सरकार की ओर से स्वामी जी के सत्संगों में सुरक्षा के लिए उपस्थित होते थे। पिता की प्रेरणा से ही मुन्शीराम भी महर्षि के उपदेशों में आने लगे थे। शाहजहांपुर, फर्रूखाबाद, प्रयाग, मिर्जापुर, दानापुर (पटना) और वहां से काशी पहुंचे। पौराणिक पंडितों ने मजिस्ट्रेट से मिल उनके व्याख्यानों पर रोक लगा दी। इस पर पत्रों में आन्दोलन हुआ। आखिर यह प्रतिबन्ध हटा लिया गया। महर्षि के व्याख्यान प्रारम्भ हो गये। यहीं लक्ष्मीकुण्ड पर वैदिक यंत्रालय की स्थापना की गई। महर्षि ने अनुभव किया कि इस प्रकार यंत्रालय की स्थापना करके वे एक प्रकार से गृहस्थी की तरह लौकिक व्यवहार में फंस गये हैं। इस यंत्रालय के पहले मैनेजर मुन्शी बख्तावर सिंह की जालसाजी को देख महर्षि ने बड़े खेद से सेठ कालीचरण को एक पत्र में लिखा, "यह मामला अदालत में अवश्य जाएगा। आप फिर हमको कोई दोष न देना क्योंकि हमने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण अपने समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड़कर यह कार्य ग्रहण किया है।......जो तुम इसका प्रबन्ध न करोगे तो ऐसी लूटमार से हमारे पास से पुस्तकादि भी कोई लूट लेगा। फिर तो हम अपने समीप कुछ भी न रख सकेंगे और वेदभाष्य आदि सब काम छोड़ देंगे। केवल एक लंगोटी लगा आनन्द में विचरेंगे।"

चौमुखा संघर्ष : अति व्यस्त जीवन

इस समय महर्षि का जीवन अत्यन्त संघर्षमय और व्यस्त था। एक ओर पौराणिक, ईसाई, मुसलमान इत्यादि से शास्त्रार्थ, पण्डितों से संघर्ष, वेद-प्रतिष्ठा का पुनः संस्थापन, प्रचार-यात्राएं, वेदभाष्य, दूसरी ओर वेदभाष्य की छपाई और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन की व्यवस्था, वैदिक यंत्रालय का प्रबन्ध —इत्यादि। इसके साथ-साथ बार-बार दुष्टों द्वारा विष-प्रदान जिसका स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव। मुन्शी इन्द्रमणि पर इस्लाम विरोधी पुस्तक लिखने हेतु ५०० रु० जुर्माना हुआ वे महर्षि के पास गये। मतभेद होने पर भी ऋषि द्वारा सहायता के लिए धन-संग्रह इस आदेश के साथ हुआ कि "यह चन्दा वैदिक निधि कहलाएगा और आर्यों की सहायता में प्रयुक्त होगा।" मुन्शी जी का जुर्माना तो ऋषि के आन्दोलन से माफ हो गया पर इस एकत्र राशि को अपनी सम्पत्ति समझ मुन्शी जी हड़प कर गये। स्वामी जी ने इस निधि को समाप्त कर बचा हुआ धन ५५२ रु० ५ पैसे दानियों को वापस कर दिया। ऋषि का 'आर्य रक्षानिधि' स्वप्न समाप्त हो गया, जो उनकी चिन्ता को बढ़ाने वाला ही था।

परोपकारिणी सभा की स्थापना

२० मई १८८० से १० मार्च १८८१ तक—लगभग ८ मास—स्वामी जी फर्रुखाबाद, मैनपुरी, मेरठ रहे। यहां मेरठ में ही स्वामी जी ने परोपकारिणी सभा स्थापित की जिसकी रजिस्ट्री १६ अगस्त १८८० को मेरठ में हुई। यहीं पर महर्षि ने कर्नल अल्काट की थियोसोफिकल सोसाइटी के आर्यसमाज से सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा की। मुजफ्फरपुर, देहरादून, आगरा इत्यादि की प्रचार यात्रा के साथ 'वैदिक यंत्रालय' को काशी से प्रयाग लाया गया। श्यामजी कृष्ण वर्मा विलायत से शिक्षा प्राप्त कर भारत वापस आ गये। कई रियासतों के दीवान बने।

राजाओं के सुधार की ओर विशेष ध्यान

इन दिनों महर्षि का विशेष ध्यान राजाओं के सुधार की ओर गया। इस समय उनका चरित्र बहुत गिर गया था। अजमेर में आर्यसमाज स्थापित कर मसूदा रियासत, वहां से रायपुर, बनेड़ा, चित्तौड़, शाहपुर, इन्दौर और बम्बई गये। बम्बई में ६ मास रहे और यहां उनका मुख्य कार्यक्रम गोरक्षा आन्दोलन था। यहीं ऋषि ने 'गोकरुणानिधि' पुस्तक लिखी। महर्षि की योजना थी कि ३ करोड़ भारतीयों के हस्ताक्षर से महारानी विक्टोरिया के पास गोवध बन्द करने का आवेदन-पत्र भेजा जाए। वे इन्दौर, रतलाम, चित्तौड़ होते हुए जयपुर पहुंचे। इस समय महर्षि सब जगह आर्यभाषा को अपनाने और राजकार्य चलाने में प्रवृत्त करने के लिए आन्दोलन कर रहे थे। गोवध-निषेध आवेदन-पत्र सारे देश में राजा-महाराजाओं और प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके पास भारी संख्या में डाक से लगातार भेजे जाते रहे।

उदयपुर में महाराज लगभग ८ मास तक रहे। यहां के नरेश पर स्वामी जी के उपदेशों का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा और उनके जीवन के कई दोष दूर हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेश ने स्वामी जी से [illegible], मनुस्मृति का राजधर्म, संस्कृत व्याकरण, अनुवाद आदि सीख लिये थे।

उदयपुर से शाहपुर होते हुए महर्षि जोधपुर गये। पहले उनका विचार मसूदा जाने का था पर विधि का विधान, उन्होंने जोधपुर में राजा को भी सन्मार्ग दिखाने के लिए अन्तिम क्षण मसूदा का विचार छोड़—क्योंकि मसूदा-नरेश तो उनका पक्का शिष्य था—जोधपुर जाने का ही निश्चय किया। चलते समय शाहपुराधीश ने नम्रता से निवेदन किया, "आप वहां जा तो रहे हैं, पर वेश्याओं का अधिक खण्डन मत करना।" शाहपुराधीश जानते थे कि जोधपुर नरेश जसवन्त सिंह नन्हीजान वेश्या में बुरी तरह आसक्त हैं।

महर्षि ने कड़क कर उत्तर दिया, "मैं बड़े कंटीले झाड़ों को नहुरने से नहीं काटता, उनके लिए तेज शस्त्र ही काम आते हैं।" शाहपुर से अजमेर आये। वहां भी भक्तों ने जोधपुर की स्थिति से सचेत किया। ऐसा प्रतीत होता है कि भाग्य प्रबल रूप से उन्हें जोधपुर जाने के लिए प्रेरित कर रहा था। अजमेर से ३१ मई सन् १८८३ को महाराज वहां पहुंचे।

जोधपुर में प्रचार : षडयन्त्र का बीज-वपन

३ जून से प्रतिदिन सायं ६ से ८ बजे तक महर्षि की उपदेश-माला प्रारम्भ होगई। महर्षि अपने उपदेशों में क्षत्रियों के चरित्र-शोधन, राजधर्म, गोरक्षा की अवश्यकता तथा वेश्यागमन इत्यादि दुर्व्यसनों के त्याग पर अधिक बल देते थे। एक दिन उन्होंने स्पष्ट कह दिया "क्षत्रिय सिंह हैं और वेश्याएं कुतिया हैं?" प्रकाशित पत्रों से ज्ञात होता है कि महर्षि राजा तथा राज्य कुटुम्ब के अन्य सरदारों की उपेक्षा वृत्ति से ऊब गये थे। २६ जून को जोधपुर नरेश पहली बार स्वामी जी को भेंट देने आये। २५ रु० और ५ अशरफी भेंट कीं। लगभग दो घंटे तक वार्तालाप हुआ। जुलाई के अन्त में राजा के नाम महर्षि ने एक गुप्त पत्र भिजवाया जिसमें मद्यपान, वेश्यागमन आदि दोषों का संकेत किया गया था। प्रतीत होता है कि अब राजा ने स्वामी जी की सेवा में आना ही छोड़ दिया था।

८ सितम्बर को स्वामी जी ने एक दूसरा गुप्त पत्र राजा को भेजा जिसमें नन्ही वेश्या के प्रेम को छोड़ने, राजकुमार की शिक्षा के लिए मुसलमान व ईसाई को न रखने, उसे देवनागरी, संस्कृत और आर्ष ग्रन्थ पढ़ाने, गणेशपुरी सरीखे ठगों और वेश्या आदि से परे रहने के उपदेश दिए गये थे। यह गणेशपुरी शाक्त-मतानुयायी और नन्ही वेश्या का गुरु था। रियासत में चक्रांकितों का जोर था। राज्य के प्रभावशाली मुस्लिम मुसाहिब मियां फैजुल्ला खां इस्लाम के खण्डन से बहुत क्षुब्ध हो गये थे। इस प्रकार जोधपुर में स्वामी जी के विरुद्ध षड्यन्त्र के बीज पनप रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेश्या की डोली को राजा द्वारा कंधा

इसी बीच एक घटना हो गई जिससे विरोधियों के षड्यन्त्र को बहुत बल (मि)ल गया। राजा यशवन्तसिंह का नन्हीजान वेश्या से गहरा सम्बन्ध था। एक (दि)न अपने निश्चित समय के अनुसार स्वामी जी जब दरबार में पहुंचे, उस समय (नन्)हीजान राजा के पास आई हुई थी। स्वामी जी के आने का समय जान राजा (उसे) डोली में रवाना कर रहे थे। स्वामी जी को अचानक देख राजा घबरा गये (औ)र स्वयं कन्धा देकर डोली उठवा दी। महर्षि इस दृश्य को देखकर अत्यन्त क्षुब्ध (हो) गये और उस दिन उन्होंने अपने उपदेश में राजधर्म का वर्णन करते हुए राजा (यशवन्त)सिंह और वेश्याओं को कुतिया के समान बताया और कहा कि राजा का (सम्ब)न्ध सिंहनियों से तो उचित है, कुतियों से नहीं। नन्हीजान ने जब यह सुना (तो) वह जल उठी और उसने षड्यन्त्र को बलपूर्वक अपने हाथ में लिया।

विपरीत दैवचक्र

इस षड्यन्त्र का पूर्व आभास इस घटना से मिला कि स्वामी जी के ५५० रु० (औ)र कुछ सामान की चोरी कल्लू कहार द्वारा हुई। उसकी तलाश व गिरफ्तारी में (रि)यासत के अधिकारियों ने कोई विशेष यत्न नहीं किया। उस दिन पहरेदार भी (भा)ग गये। यह घटना २० सितम्बर को हुई। २६ सितम्बर को स्वामी जी ने तीन (पत्)र क्रमशः जोधपुर राजा, दूसरा उनके भाई राव तेजसिंह और तीसरा कर्नल (प्र)तापसिंह को यह सूचित करते हुए लिखे कि वे १ अक्टूबर को यहां से विदा हो (जा)एंगे, इसलिए सवारी का प्रबन्ध कर दें। यहां फिर प्रतिकूल दैवी घटनाचक्र (चल)ता है। १ अक्टूबर को भारी वर्षा हो जाती है और ऋषि को बाध्य होकर (कुछ) दिन के लिए अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ती है।

षड्यन्त्र चालू हो गया : ऋषि को दूध में विष

अब आश्विन बदि ३० अमावस्या की रात, १ अक्टूबर को महर्षि अपने (धर्म)भक्त मसूदा रियासत के राजा के पास जाने को उद्यत थे। उसी रात नन्ही-(जा)न वेश्या का षड्यन्त्र चालू हो जाता है। प्रबल दैवचक्र विपरीत दिशा में जा (रह)ा था। इसी रात धौल मिश्र व जगन्नाथ ब्राह्मण रसोइये के हाथ से यथा-(नि)यम महर्षि दूध पीते हैं जिसमें कांच पीसकर विष मिला दिया गया था। आधी (रात) नींद खुली। वमन हुआ। ऋषि समझ गये कि विष दिया गया है। उसे (नि)कालने के लिए उन्होंने स्वयं वमन का उपचार किया, पर कोई विशेष लाभ (न)हीं हुआ। अन्तड़ियों, छाती, उदर, इत्यादि में तीव्र वेदना चल रही थी। विष (र)क्त के साथ मिलकर सारे शरीर को विकृत कर चुका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगन्नाथ की अपराध स्वीकृति : ऋषि द्वारा घातक को भागने के लिए धन

महर्षि ने जगन्नाथ रसोइये को बुलाया। वे जान गये थे कि इसी ने विष दिया है। उसने अपना अपराध भी स्वीकार किया। ऋषि ने इतना ही कहा, "तुमने कुछ धन के लोभ में मेरे महान् कार्यक्रम को विफल बना दिया। अब तुम यहां से भाग जाओ। मेरे शिष्य तुम्हें जीवित नहीं रहने देंगे।" रसोइये के यह कहने पर कि "मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे मैं भाग सकूं और अनजान होने से यह भी नहीं जानता कि किधर भागूं," महर्षि ने उसे अपने सन्दूक से यात्रा के लिए पर्याप्त धनराशि निकालकर दे दी और नेपाल की ओर चले जाने का मार्ग भी बता दिया। ऋषिवर ने कहा—

"मैं किसी को कैद कराने नहीं आया, किन्तु संसारमात्र को मुक्त कराना ही मेरा परम कर्त्तव्य है।"

मुस्लिम डाक्टर की शरारत

राव राजा तेजसिंह ने जेल के डाक्टर सूरजमल को बुलवाया। स्वामी जी को तीव्र पीड़ा के साथ ज्वर भी हो गया था। कर्नल प्रतापसिंह को सूचना मिली। वे तत्काल आये। पर दरबार की ओर से डा० अली मर्दान खां को इलाज के लिए नियुक्त किया गया। पीछे से पता चला कि हत्या के इस षड्यन्त्र में इस डाक्टर का भी हाथ था। इसने ऐसी दवाएं दीं जिनसे स्वामी जी की हालत निरन्तर बिगड़ती गई। दस्तों की संख्या बढ़ती गई। मुंह और माथा छालों से भर गये। हिचकी बंध गई और शरीर अत्यन्त कृश होने लगा। पर यह धूर्त डाक्टर राज्य अधिकारियों और सब लोगों से यही कहता रहा कि स्वामी जी की हालत सुधर रही है।

सारे देश में ऋषि के रोग से घबराहट

१२ अक्टूबर तक महर्षि की बीमारी का समाचार जोधपुर से बाहर किसी को ज्ञात नहीं हुआ। अचानक अजमेर में एक आर्य सज्जन ने 'राजपूत गजट' में प्रकाशित इस समाचार को देख लिया। छानबीन शुरू हुई। ला० जेठमल जोधपुर दौड़े। ऋषि की हालत देख घबरा गये। चारों ओर तार खटखटाये गये। आर्य जगत् में कोलाहल मच गया। आश्चर्य है कि महर्षि सरीखे विश्ववरेण्य व्यक्ति के जीवन के साथ रियासत की ओर से इस प्रकार खिलवाड़ होता रहा और उनका जीवन एक तीसरे दर्जे के केवलमात्र चापलूसी गुण वाले डाक्टर के निर्मम हाथों में सौंप दिया गया।

आबू यात्रा : अंग्रेज डाक्टर भी षड्यन्त्र में

चारों ओर बदनामी होते देख डा० अली मर्दान खां ने १५ अक्टूबर को अपना पिंड छुड़ाने के लिए स्वामी जी को आबू पर्वत भेजने का प्रस्ताव रखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की ओर से ... यथा। आबू जाते समय मार्ग में भेर
त्र) के सरकारी डाक्टर लक्ष्मणदास, जो तबदील होकर अजमेर जा रहे थे,
का नाम और उनकी बीमारी का हाल सुन तत्काल रास्ते से ही वापस आबू
ये और इलाज अपने हाथ में ले लिया। यहां फिर दुर्भाग्य ने पीछा किया। इस
र की श्रद्धापूर्ण चिकित्सा से ५-६ दिन में तनिक लाभ हो रहा था कि इनके
अफसर ने छुट्टी नहीं दी। इन्होंने त्यागपत्र दे दिया, पर वह भी स्वीकृत नहीं
गया। डाक्टर लक्ष्मण दास के जाते ही स्थिति फिर बिगड़ गई। अतः
जन महर्षि को २६ अक्टूबर प्रातः अजमेर वापस ले आये।

आबू से अजमेर : ऋषिवर का अनुपम धैर्य और प्रभुविश्वास

इतने कष्ट में भी ऋषि का धैर्य आश्चर्यजनक था। उसे देख मित्र और शत्रु
तले उंगली दबाते थे। इतना कष्ट और 'आह तक नहीं, धैर्य से रोग सह रहे
शरीर छालों से भरा हुआ था, बोलने में असह्य कष्ट होता था, हिलना-
ना भी कठिन हो रहा था। ऐसी दशा में ऋषि के मुंह पर न घबराहट थी
न खीझ। वही गम्भीर चेहरा और शान्त मुद्रा। जिन व्यक्तियों ने
दशा में महर्षि को देखा, उन्होंने अनुभव किया कि इस मनुष्य में अवश्य ही
दिव्य शक्ति काम कर रही है और इस महापुरुष के हृदय में निश्चय ही पर-
त्मा की दिव्य ज्योति प्रबल रूप में मूर्तिमान् है।

मसूदा-यात्रा के लिए आग्रह

२६ अक्टूबर को स्वामी जी ने अपने भक्तों से कहा, "हमको मसूदा ले
।" शिष्य जनों ने कहा, "आराम होने पर हम आपको वहां ले चलेंगे। इस
में बार-बार यात्रा करना ठीक नहीं।" इस पर महाराज ने कहा, "दो
में हमें वहां पूरा आराम आ जाएगा।" ऋषि का यह उत्तर स्मरणीय है।
न स्थिति बिगाड़ की ओर थी। उनके आग्रह पर उन्हें तकिये के सहारे बैठा
गया। सांस तब जल्दी-जल्दी चल रही थी। स्वामी जी उसे रोककर बल
देते थे और ईश्वर-ध्यान में मग्न थे। रात को अधिक कष्ट रहा।

गम्भीर स्थिति

३० अक्टूबर को हालत बहुत बिगड़ गई। अजमेर के सिविल सर्जन डा०
बुलाये गये। स्वामी जी को देख डाक्टर साहब आश्चर्य से कहने लगे—
"धन्य है यह अद्भुत महान् व्यक्ति! हमने ऐसे दृढ़ हृदय का व्यक्ति नहीं
जिसे इस प्रकार नख से शिख तक अपार पीड़ा हो और वह तनिक आह
तक न करे।"
३० अक्टूबर दिन के ११ बजे श्वासगति उखड़ने-सी लगी। महर्षि के आदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अनुसार सब औषधियां बन्द कर दी गईं। एक शिष्य ने पूछा, "आपका चित्त कैसा है?" उत्तर दिया, "अच्छा है। एक मास के पश्चात् आज आराम अनुभव हो रहा है।" ला० जीवनदास जी दर्शनार्थ लाहौर से अजमेर आये थे। उन्होंने पूछा, "इस समय आप कहां हैं?" महर्षि बोले, 'ईश्वर-इच्छा में।' इसी स्थिति में शाम के ५ बज गये। स्वामी जी सर्वथा सावधान थे। किसी ने पूछा, "अब आपकी तबीयत कैसी है?" महाराज बोले, "अच्छी है, प्रकाश और अन्धकार का भाव है।" साढ़े पांच बजे ऋषिवर ने आदेश दिया कि, "सब लोगों को बुलाओ और हमारे पीछे खड़ा कर दो। कोई हमारे सम्मुख खड़ा न हो। चारों ओर के द्वार व छत के रोशनदान खोल दो।" ऋषि की इन आज्ञाओं का तत्काल पालन किया गया।

अन्तिम क्षण

महर्षि ने पूछा, "कौन-सा पक्ष, क्या तिथि और क्या वार है?" एक भक्त ने उत्तर दिया कि, "कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की संधि, अमावस और मंगलवार है।" यह सुन छत और दीवारों की ओर दृष्टि की, फिर कई वेद-मन्त्र पढ़े, तत्पश्चात् संस्कृत में ईश्वर की उपासना की, आर्यभाषा में ईश्वर के गुण का कुछ वर्णन कर बड़े हर्ष और उत्साह के साथ गायत्री मन्त्र का सस्वर पाठ करने लगे। इसके बाद विशेष आह्लाद और प्रसन्न चित्त के साथ समाधि सदृश दशा में नयन खोल कहने लगे—

"हे दयामय! हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है! तेरी यही इच्छा है! तेरी इच्छा पूर्ण हो! अहा, तूने अच्छी लीला की!"

महाप्रयाण

बस, इतना कह स्वामी जी महाराज ने, जो सीधे लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक बार श्वास को रोक कर एकदम बाहर निकाल दिया।

इस क्रिया के साथ इस महात्मा ने इस विश्व से महाप्रयाण किया और इस मानव-जीवन की लीला समाप्त की। इस समय सन्ध्या के छः बजे थे।

नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गये

महर्षि के दर्शनों के लिए बाहर से आये आर्य भक्तों में लाहौर के पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए० भी थे। विज्ञान में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से प्रथम डिवीजन में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये थे। अत्यन्त मेधावी और तार्किक थे। आर्यसमाज में प्रविष्ट होकर भी नास्तिकता की छाप मस्तिष्क पर मौजूद थी। महर्षि के जीवन के इन अन्तिम क्षणों को स्वयं देख अन्तःकरण पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। एक आस्तिक कितनी शक्ति और प्रभु अर्पित भावना के साथ मृत्यु का आलिंगन कर सकता है, इसका साक्षात् प्रमाण देख आत्मा में प्रसुप्त श्रद्धा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ना जाग्रत हो गई, नास्तिकता का मल दूर हो गया और यह युवक नास्तिक से आस्तिक और ऋषि-भक्त बन गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त्येष्टि संस्कार

प्रातःकाल विधिवत् अन्त्येष्टि की तैयारी आरम्भ हुई। मृतक शरीर को न, चन्दनलेपन, वस्त्रावरण, पुष्पाच्छादन आदि से सजाकर वेदमन्त्रों की ति के साथ विमान पर लिटा १० बजे शवयात्रा प्रारम्भ हुई। आत्मानन्द, ानन्द ब्रह्मचारी, देवदत्त जी, गोपालगिरि आदि पण्डित वर्ग वेदध्वनि करते -आगे थे। पीछे नगर के सरकारी, गैर-सरकारी विशिष्ट व्यक्ति और प्रतिष्ठित नेताओं सहित नगर निवासियों का भारी समूह अरथी के आगे पीछे मन्थर से चल रहा था। श्मशान भूमि में ऋषि के आदेश और संस्कारविधि के ार वेदी बनाई गई थी। शास्त्रानुसार चन्दन की समिधा, घृत, सामग्री ादि के साथ ब्र० रामानन्द व आत्मानन्द जी ने चिता में अग्नि प्रविष्ट की वेद-मन्त्रों के साथ "भस्मान्त ँ शरीरम्" इस वैदिक श्रुति के अनुसार यह तक शरीर भस्म में समाप्त हो गया। असह्य शोक का यह दिन ३१ अक्टूबर, १८८३ का और समय सायंकाल ६ बजे का था।

ऋषि की वसीयत

ऋषि ने अपनी वसीयत में लिख दिया था कि उनके शरीर का दाह कर्म क विधि के अनुसार किया जाए। हिन्दुओं में प्रचलित रीति के अनुसार ासी के शरीर का दाह कर्म नहीं होता। उसे भूमि में गाड़ देते अथवा नदी में हित कर देते हैं। पर ऋषि दयानन्द तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और अंग में ति और सही स्थिति प्रचलित करने के कट्टर पक्षपाती थे। अपनी जीवन-ा समाप्त करते हुए भी उन्होंने यही किया। जहां उन्होंने वसीयत की कि के शरीर का दाह कर्म किया जाए, वहां यह भी आदेश दिया कि उनकी भस्म ी खेत में डाल दी जाए, ताकि उस किसान की खेती को कुछ लाभ हो सके। की स्मृति में श्मशान भूमि में अथवा अन्यत्र कोई मूर्ति इत्यादि स्थापित न की ।। महर्षि की अन्तिम इच्छा यही थी कि उनके पास पीछे जो द्रव्य, सामान व य पदार्थ हों, वे सब देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में वैदिक धर्म के प्रचार में व्यय किये जायें। महर्षि विश्व-कल्याण और प्राणिमात्र की सेवा की कितनी ज्वल, दीप्तिमय और साक्षात् मूर्ति थे—यह उनके जीवन के एक-एक क्षण के ठ प्रयोग से प्रकट होता है।

धन्य हो—ऋषिवर! तुम्हारे पुनीत चरणों में श्रद्धा और विनम्रता सहित ोटिशः नमस्कार!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयानन्द संस्थान के वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

सर्वश्री विनोद शर्मा बीकानेर—१००), गोपाल भद्रपुर—२५), प्रेम कानपुर—५०), ओम्प्रकाश खीरी--१०), सौ० दुर्गारानी जैतवारा—२), धर्मवीर करनाल—२५), सुनील गुप्ता बहराइच—२०), घनश्याम जायसवाल बाराबंकी—२१), ओम्प्रकाश फतहगढ़—१०), के० वेलायुधन् मद्रास—११), चौधरी रामा आइस फैक्टरी दिल्ली—७५), मुन्नालाल बदायूं—१५), शंकरदयाल होशंगाबाद—१०), जगदीश आर्य पीलीभीत—१२५), राधेलाल आगरा—६०), मांगीलाल जोधपुर—१०१), छगनलाल सिरोही—१३६.५०), धर्मदास आर्य बिलासपुर—१०१), स० स० आर्य जयपुर—१००), सामचन्द गुप्ता सहारनपुर—११), भंवरलाल जोशी पोरेरी—११), श्रीमती उषा गुप्ता मुरादाबाद—१०१); रामलाल वाकलियाघाट—१०), शैतानसिंह देवास—१०), राजेन्द्रसिंह सूरतगढ़—५१), राधेश्याम परगना--५), भूपेन्द्र भाई वासना---२१), नवप्रसाद शर्मा जोधपुर--१००), नरेश वाली आगरा--१०), श्रीमती सुरेश आगरा—५०), रामचन्द्र नक्सलवाड़ी—२५), ओम्प्रकाश वर्धा—१०), राजकुमार मुजफ्फरनगर—५१), ओ०पी० वाजपेयी भुसावल—२५), हवलदार बनीसिंह महेद्रगढ़—५०), मालाराम पालनपुर—५), अनोखलाल अलवर --२०), नितिनकुमार इन्दौर—५), राजेन्द्रसिंह गढ़वाल--१२५), दशरथसिंह फैजाबाद--११), रामा साहू रायपुर—२१), रामपालसिंह नालंदा—२५), विष्णुभक्त रावता—११), प्रेमसिंह जिन्दल दिल्ली-६—११, श्रीमती सत्यवती शर्मा बरेली—५०, जगन्नाथ त्यागी डलहौजी—२००, जितेन्द्रसिंह शाहदरा—१०, परशुराम शाहाबाद—५, जमादारसिंह मुजफ्फरनगर, १०, भगवतीप्रसाद कानपुर—१०, रमेश भसीन नई दिल्ली—१०, मातश्री जौनपुर—१०, जगदीपसिंह दिल्ली ११, श्रीमती नैमवती नजफगढ़—११, नेपाल कैरियर्स कलकत्ता—११, सुभाष चन्द्र पहाड़गंज—११, जगमालसिंह महेन्द्रगढ़—२५, जगदीशप्रसाद यादव महसाना—२० ओमप्रकाश नई दिल्ली ११,

श्रीमती चन्द्रवती दिल्ली-५२—१०, परमानन्द नई दिल्ली-१६—१०, रछपालसिंह मांडले १०, वीरनारायण एडवोकेट मुजफ्फरनगर २५, जगदीश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद एडवोकेट लुधियाना—५०, अमृतलाल गुप्ता जालंधर—५, रतिराम शर्मा दिल्ली—२१, एच० एल० सेठी नई दिल्ली—११, यादराम सैनी फरीदाबाद—११, बी० एन० गैरौला फरीदाबाद ११, जगदीशशरण आर्य संभल—११, जसवालसिंह नई दिल्ली—११, रामप्रसाद महरोत्रा शहरपुर—११, मुरारीलाल गोयल शाहदरा—५, राजवैद्य स्वामी धर्मपाल अहमदाबाद—५, शिवचरण मण्डल साहबगंज—५, महन्त श्याम-सुन्दर मलिया—५, कुंवरचन्द फरीदकोट—५, प्यारेलाल नरसिंहपुर—५, वेदप्रकाश भारती सहारनपुर—१०, कप्तान शेरसिंह रोहतक—१०, रामदत्त शर्मा ऊना—१०, रामदास दन्दी—२१, घनश्याम अग्रवाल कानपुर—२१, राधेश्याम जायसवाल गाजियाबाद—२०, रवि गुप्ता नई दिल्ली—२०, राम-कृष्ण अशोककुमार भरथना—५१, शंकरलाल अलीगढ़—५०. के० के० अग्रवाल बटाला—१००, नरेन्द्र प्रतापसिंह आजमगढ़—५१, लक्ष्मीचन्द्र वार्ष्णेय गाजिया-बाद १० शंकरलाल अजमेर—२१, शिवनाथ नई दिल्ली—२१, राधेलाल आगरा—२१, रामचन्द्र महेन्द्र सीतापुर—२१, हरिमोहन आगरा—२१, बज-रंग लाल बद्रीलाल कोटा—२१, मन्त्री आर्यसमाज २१, रामेश्वरदयाल ऐंड सन्स २१, कमलनारायण कलकत्ता —२१, देवदत्त शर्मा मेरठ—२१, जगदीश-प्रसाद उपाध्याय अलीगढ़—२१, रामअवतार बम्बई—२१, प्रेमदत्त गौतम होशियारपुर २१ ताराचन्द पलामू—२१, भोलानाथ ज्ञानचन्द आगरा—१०, धर्मप्रकाश आर्य कोसीकलां—१०, प्रेमराज सूद जालंधर—१०, सरदारसिंह जालौर—१०, रामबाबू सादू बहराइच ११, सत्यनारायण मोहनलाल नागौर —१०, सुदर्शन कपूर अमृतसर—११, आर्यसमाज मन्दिर गुजरात—११, केशव-चन्द शर्मा महसाना—२२ पारसचन्द जैन राजस्थान—११, द्वारकादास ईद-गांव ११, आर० के० सिंह कानपुर—११, संजीवकुमार बुलन्दशहर—११, शम्भुदयाल चांदपुर—११, सत्यनारायण नागपुर—११, गंगाप्रसाद सुमन दिल्ली—२, जे० के० सक्सेना कानपुर—२, वेदाराम पूना—२५, राजेन्द्रसिंह फैजाबाद—२१, विक्रमसिंह नागपुर—२५, मौजीराम दिल्ली बीकानेर—१२५, मनलाला महसाना ५, नितिनकुमार गुप्ता इन्दौर—६, खुशीराम शर्मा जालंधर—१५, वेदप्रकाश सीकर—७, डा० आई० एस० उप्पल—५०, सुदर्शन लाल छाबड़ा फगवाड़ा—२०, अवध बिहारी रोहताश—१०, प्रेमचन्द भारतीय श्रीगंगानगर—११, शिवचरनदास खेकड़ा—१०, फतिहा-प्रसाद सेलमपुर—१०, सुरेशचन्द रायपुर—१०, रुद्रदत्त पौड़ी गढ़वाल—१० मुन्नालाल बदायूं—१०, रामदास बुलढाना—५, हनुमान्सिंह सीकर—२१, रामेश्वरप्रसाद मिर्जापुर—५१, राज नारंग धनबाद—५१, अम्बाप्रसाद वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

—५१ गौरीशंकर बर्तन वाले कानपुर—२१, मनोहरलाल दिल्ली—२१, ज्ञानसिंह मेरठ—२५, अजयसिंह दिल्ली—२५, विद्याधर शर्मा मुजफ्फरनगर —१०, रामगोपाल वर्मा मंडी—११, जगदीशप्रसाद देवेन्द्रकुमार बिजनौर—११, जयसिंह महाशय मुजफ्फरनगर—१०, शिवनाथ सिंह बिजनौर—२५, कालीचरन महेशचन्द अलीगढ़—५, आर० सी० कालड़ा लश्कर—११, सोमचन्द आर्य अलीगढ़—२०, उड़ीसा राइस मिल कल्याणी—२१, सीताराम आर्य छाबड़ा—१००, सत्यनारायण कलकत्ता—१००, जमनालाल वर्धा—२५, करन कन्स्ट्रक्शन अहमदाबाद—२५, चमनलाल मेलान्ट—५०, मुनन्द्रिकाप्रसाद रांची—११, नागेश्वरसिंह रांची—१०, रामप्रतापसिंह भोपाल—१०, सदाशिव दुर्गाप्रसाद इन्दौर—५, भगरीराम सुगालचन्द बाड़मेर—११, श्यामवल्लभसिंह सहर्षा—२५, नन्दकिशोर रतनलाल बुलढाना—११, विनय भसीन करनपुर—२०, ज्योतिप्रसाद गोयल नई दिल्ली २०, मैसर्स कपिलदेव होशियारपुर ११, नावल्टी प्रोसेस स्टूडियो बम्बई—२१, एन० के० वार्ष्णेय बहजोई—११, ईश्वरदास नागपुर—१०, जगत्किशोर तीन पहाड़—११, वी० पी० सोभ विलीमोरा—११, के० वी० राय हुवली—१०, एस० वी० व्यास बम्बई—११, घोड़ेराम उर्फ दयाराम नान्देड़—७, जयन्तीप्रसाद राय भागलपुर—२०, बाबुआ भंडारी मन्दसौर—३०, शिवराज जी होशियारपुर—५, बलदेवप्रसाद चम्पारण—२५, बद्रीलाल वर्मा झालावाड़—५, मंत्री आर्यसमाज ब्यावर—१५,

५ रु० दान देने वालों की सूची

झूलालाल राव—माधोपुर रामानुजसिंह—भोजपुर रामप्रसाद द्विवेदी—हरदोई एस० सी० पाराजी—बम्बई पं० अरुण शास्त्री—टोंक वासुदेव—मण्डी विनोद बुक डिपो—इल्ली रामसिंह—दरभंगा मंत्री आर्यसमाज—ललितपुर जगन्नाथ प्रसाद—मीरगंज शंकरलाल—पोकरणा चिरंजीलाल—भीलवाड़ा शिवप्रसाद गुप्त—टाण्डा शिवदयाल गुप्त—बाराबंकी कृष्ण सिंह—रोहताश उपेन्द्रनारायण—सुमेरपुर दिनेशचन्द्र शर्मा—बिहार शिवनारायण शर्मा—अकबरपुर बाबूराम झा—शिकोहाबाद बद्रीनारायण सिन्हा—बांका लालबहादुर—मिर्जापुर दिलीपदत्त आर्य—नागौर रा० न० वुट्राजवार—दुर्ग श्यामवल्लभ सिंह—सहरसा गुलाबराज तनेजा—श्रीगंगानगर सुरेशचन्द्र सारस्वत—पहासू राजेश ऐंडवासानी—अदयार जीवनलाल—खैर (अलीगढ़) चन्द्रभान विश्वकर्मा—होशंगाबाद महावीर प्रसाद रतनगढ़—नदानसिंह संत देहरादून—गोपीराम भगवान्देव बर्दवान—ओम्प्रकाश जगाधरी—बेनीप्रसाद बिजनौर—श्रीप्रकाश माहेश्वरी छतारी—मंत्री आर्यसमाज बहजोई—ऋषिराम मिगलानी पानीपत—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तादीन बस्ती—आनंदप्रकाश बहराइच—रामगोपाल आर्य भीलवाड़ा—२५, एस० एन० शर्मा चित्तौड़गढ़—२५, रामपाल बुहेला देहरादून—२०; Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri जगन्नाथ आर्य जुलाना मण्डी—२०, अभिन्न शर्मा दिल्ली—२०, मोतीलाल भाटिया जैसलमेर—२०; अभयसिंह यादव महेन्द्रगढ़—११, जगदीशप्रसाद गुप्त भरतपुर—११, टी० डी० ठकराल बरला—११, भानुचन्द मधुपुरी खगोल—११, जेठानन्द ठाकरदास अहमदाबाद—११, महावीर प्रसाद सीतापुर—११, हरिप्रसाद गंगवार बरेली—२५, मंत्री आर्यसमाज कांडला २०, पी० टी० महाबुअम पूर्णे—२७, रतन मूविंग मशीन सासाराम—५, सोनेलाल मैनपुरी—२, नाथूराम भगवान्दास अकोला—१००, मंत्री आर्यसमाज गोन्डा—१५, हरपतसिंह आर्य चरखी दादरी—५, ।

१० रु० दान की सूची

शंकरदयाल—सेमरीखुर्द एस० एम० उपाध्याय—हरदन गिरिरजसिंह—मथुरा एस० पी० आर्य—खीरी कैलाशनारायण मिश्र—काव्वे सत्याचरण सिंह—आजमगढ़, हरिराम—दिल्ली, एस०पी० सिंह फतहगढ़, आर०जी० भुलाडिया—कोयम्बटूर, परसराय—गुलावठी, ई० पी० चव्हाण—जींद, प्रीतमसिर—सीहोर, चन्द्रपालसिंह—अलीगढ़, हरवंशलाल जनूजा—दिल्ली, रामसुन्दर प्रसाद—सिक्किम, चम्पामंगल—रांची, बजरंग सिंह—हैदराबाद, जी० जे० गणेशानी बम्बई, दीवान सिंह—चम्पारण, भोलानाथ केसर वानी—इलाहाबाद, रामगिरि गोंकले—कर्नाटक, मंत्री आर्यसमाज—चम्पाल, राजेन्द्रकुमार आर्य—पाटन, मोहनलाल गुप्ता—मेरठ, शिवनाथसिंह—बिजनौर, टेलर देव जी—मोरवी, गांधी उच्च विद्यालय—सीतामढ़ी, हरिओम् मंगल—जगनेरा, सूक्ष्मलता—मुजफ्फरनगर, बाबूराम शर्मा—मेरठ, सुरेशचन्द्र गुप्ता—गालिबपुर, मुंशीलाल—बीकानेर, अनोखेलाल विशारद—बदायूं, शंकरलाल—जोधपुर, जी० पी० सिगारे,—छिंदवाड़ा, रामप्रकाश रस्तौगी—बहराल, गरीबदास—भोपाल, कालप्पा—कराक्ला, श्रीनिवास—कर्नाटक, अमरनाथ स्वामी—सिरमौर, बिसना पी० चन्द—कटनी, कृष्णानंद दयानन्द—आजमगढ़, जी० सी० जोशी—चम्पारण, राजेश्वर तिवारी—सोनपुर, गणेशप्रसाद जोशी—बोरीवली, कशसिंह—फर्रुखाबाद, डा० सेवासिंह—देवास, वी० पी० कुढे—रायगढ़, के० पी० सिंघल—काल्ट, अनुदान सिंह—मिन्ड, नगेन्द्रसिंह चौहान—बरेली, सुधीसिंह—चम्बा, प्रेमकुमार पाक—घरौंडा, एस० पी० शर्मा—भावनगर, स्वामी आर्यव्रतानन्द सरस्वती—लालगंज, मांगीलाल पंड्या—धामनोद, होरामसिंह आर्य—मुरादाबाद, कर्मवीर सिंह जसपुर, रमेशचन्द्र शर्मा हाथीदेय—सीकर, मंत्री आर्यसमाज—खुशाली पुरादीप, सुरेन्द्र प्रसाद आर्य—मुंगेर, आर्य विद्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्दिर—सासाराम, श्री बसंतलाल—रोहतक, श्री कन्हैया—हजारीवाग, श्री सदानन्द—भिवंडी, श्री सखाराम जी गणपत राव—रिसाड, श्री चक्रधर गोपा—सिंहभूम, श्री रामसेवक—बारावंकी, श्री मंत्री आर्यसमाज—इन्दौर, महेन्द्र सिंह—रामपुर, जगदीश दयाल वैद्य—सैदपुरा, नारायण—कानपुर, कर्पद आर्य—उस्मानाबाद, एस० आर० स्कोण्डर—परमानन्द—नई दिल्ली, श्रीकृष्ण मोदेकर—भंडारा, कामतराय विनय कुमार, सत्यपाल गुलाटी—भिलाई, नरेश कुमार गर्ग—बिलकाला, देवराज आर्य—मण्डी, सहदेव शुक्ल—बस्ती, एन० शुक्ल—खजुराहो, रामसरन किशन चंद—मंडी, टी० वी० रावत मुंगेर, सुमन ट्रेडिंग कं.—सम्बलपुर, अनोखेलाल—अलवर, श्रीनाथ माथुर—पहासू, कल्पनाथ—वाराणसी, रामनाथ—सहारनपुर, सतवीर सिंह—दिल्ली, राकेश असम, सूरजप्रकाश शर्मा, भावनगर, रामकिशन शर्मा—बागोती, श्री सूबेदार क्लर्क—फतेहगढ़, श्रीकृष्ण गोपाल—अखनूर।

बाबूराम सूद चण्डीगढ़—हेमराज कांगड़ा—खिलूराम धर्मशाला—चौ. छंगालाल पाली—कैलाशप्रसाद नारायणपुर—विधुनाथ गोपीनाथ इन्दौर—सुखदेवप्रसाद शर्मा उन्नाव—नारायणभाई अहमदाबाद—शिवचन्द सिंघल राजगंगपुर—नन्दलाल बम्बई—गुमानसिंह महसाना—धर्मपालसिंह सहारनपुर—शिवराज बदायूं—एस० के० सरान् शिरपुर—वाई० पी० ओबेराय नई दिल्ली—बसन्तलाल महादेव मिर्जापुर—शिवप्रसाद आर्य उतरौला—३३, ब्रह्मदेवसिंह झरिया—२५०, धनसुखलाल झरिया—१०० कृष्णकुमार सोनी—१, बालाराम बारावाहा—२, महेन्द्र शर्मा देवघर—आशुराम आर्य चण्डीगढ़—३०, अनंतलाल राठी फरीदाबाद—५।

११ रु० की दान राशियाँ

बलबीर सिंह एटा—लच्छीराम सहारनपुर—सियाराम शर्मा अलीगढ़—डी० एम० छोंकर अलीगढ़—रामकिशन मुगलसराय—अमृतलाल पाली—संजीव कुमार—हरदोई—मंत्री आर्यसमाज आजमगढ़—नाथुराम कोंच—विनय चन्द्र (अस्पष्ट)—महेश चन्द्र (अस्पष्ट)—महेश आयल कम्पनी हापुड़—हरनामसिंह रायपुर—शिवनारायण कानपुर—भवानी ठाकुर (अस्पष्ट)—कृष्णलाल आर्य दिल्ली—नारायण मोदी भागलपुर—अजय भावे ग्वालियर—शिवदत्त श्योनागढ़—हीरानन्द गुप्ता सालेगांव—मनोहरलाल नागपुर—मर्दनानंद झा मधुवनी—देवेन्द्र पाण्डेय आर्यतारा—रछपाल शर्मा श्रीगंगानगर—श्रीपाल आशारम हैदराबाद—राज्यपाल सिंह फरीदाबाद—शोभालाल सूरत—मंत्री आर्यसमाज सालवा—सत्यानन्द शर्मा मुजफ्फरपुर—मनमोहन त्रिपाठी कानपुर—कमलादेवी अम्बाला—रायन कुमार राठी जावला—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरारीलाल इलाहाबाद—रामअवतार धारवाड़—एस० के० कापा गांधीधाम—आर० एस० शुक्ला सोलन—विजयपाल सिंह अफजलगढ़—विजयकुमार पटना—रविशंकर शर्मा उन्नाव—लालसिंह त्यागी मुजफ्फरनगर—जनार्दन सिंघल सहारनपुर—सतीश गुप्ता बिरहाना—लालबहादुर यादव फैजाबाद—प्रकाश कुमार गुप्त फैजाबाद—सीताराम आर्य हिसार—केशवप्रसदास गुप्त गाजीपुर—विनोद आर्य गोन्डा—धर्मदास मंत्री विलासपुर—विश्वगुरु ऋषिकेश—डा० महावीर प्रसाद जौनपुर—कनकसिंह हरिदास गुजरात—पन्नालाल वार्ष्णेय बेलौन—श्यामसुन्दर वैद्य जालना—रामबहादुर फतहपुर—सुखदेवराम आर्य रौद्रपुर—शान्तिस्वरूप गुप्ता मुरादाबाद—मोसाराम शिवरामदास—सदानंद अग्निहोत्री सीतापुर—रमेशचन्द्र मिश्र सीतापुर—नन्दकुमार मिर्जापुर—आर्यसमाज मंदिर फर्रुखाबाद—ठाकुरदास लड्डा अमरावती—टीकाराम कन्हैयालाल शाजापुर—रवि भगवान् महरोत्रा, चरनलाल बजाज मोदीनगर—कैलाशचन्द्र अलीगढ़—राजाराम फीरोजपुर—सी० पी० शर्मा ठाणे—धर्मवीर करनाल—परशुराम सिख लखनऊ—आर० एस० राकेश होशंगाबाद—जयप्रकाश ऐंड कम्पनी बंगलूर—हरिहर सिंह हजारीबाग।

हरिओम् अग्रवाल बरेली—११, ओम्प्रकाश शर्मा दिल्ली—११, अशोककुमार दिल्ली—११, शमशेरबहादुर लखनऊ—११, रामवीरसिंह हसनपुर—११, भावनदत्तशर्मा करौदा—११, वेदपाल चण्डीगढ़—११ लक्ष्मण अम्बाप्रसाद बैजनाथ—११,

जगदीश राय गोनीनामंडी—चन्द्रनाथसिंह गोरखपुर—धर्मेन्द्र अग्रवाल फैजाबाद भगवान् शरण वर्मा हरदोई—हीरजी गोहाटी प्रह्लाद राय वर्दभान—गोविन्दराम बाड़मेर—चमनलाल शर्मा धनबाद—रामप्रताप जालना—५१, अमरनाथ महरोत्रा सीतापुर—५१, रामगोपाल शर्मा पाली—५१, मांगीलाल जोधपुर—५१।

रामवातू रामनरायन बम्बई—प्यारेलाल गुप्ता अमृतसर—देसाई एस० प्रसाद सुमलापुर रामेश्वर लाल बिनोई गंगानगर—जानकीप्रसाद विदिशा—कृष्णकुमार रस्तोगी रायबरेली—प्रकाश ग्रंशुलाल राठौर अकोला—राजकुमार मुजफ्फरनगर—मंत्री आर्यसमाज भावनगर—अमृतलाल भूचोमण्डी—पुनः अमृतलाल भूचोमण्डी—मोतीराम तुलसीराम

१५ रु० के दाताओं की सूची

बाबूराम आर्य मेहसाना—माधोराम आर्य रामपुर—सूरजपाल आर्य बिलराम—दयाराम वर्मा मण्डी मोहनसिंह वर्मा मण्डी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२० रु० के दाताओं की सूची

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई० एच० मेहता धामरा—सुरेश बुलडाणा—डी० एन० अग्रवाल कलकत्ता—एल० डी० बांझा मद्रास—शाम नगीना बम्बई—आत्माराम चौरा—हेमराज आंवला—कृष्णमोहन बरेली।

२१ रु० के दाताओं की सूची

देवप्रकाश शर्मा सासनी—रामचन्द्र भादरा—मूलचन्द वर्मा बोरार—नरेश कुमार दिल्ली—ए० एम० तिवारी होशंगाबाद—त्रिनाथ बोरीगो—ज्योति उत्पादन केन्द्र लखनऊ—ईश्वरलाल गुलबर्गा—मृत्युंजय प्रसाद रुद्रपुर—एच० एम० दुआ आगरा—वी० वी० देशमुख अहमदाबाद—शिवलाल वर्मा डोम्बीवली शान्तिस्वरूप दिल्ली—यशपाल सिंह मुजफ्फरनगर—भगवान्दास कलकत्ता—सी० आर० गुप्ता नई दिल्ली—मंत्री आर्यसमाज कोसीकलां—मनोहरलाल सेठी फीरोजपुर।

२५ रु० के दाताओं की सूची

सुखानन्द सरदारशहर—कृष्ण जी त्रिपाठी बम्बई—ठाकुरलाल खरगौन—गायत्री स्टोर सिरगुप्पा—मंत्री आर्यसमाज बम्बई—एम० आर० मेहता जयपुर—हरिवंश कुमार बस्ती—नरेन्द्रकुमार मिर्जापुर—उमाकान्त सिंह समस्तीपुर—देवनन्दन राम सम्बलपुर—हरिसिंह बेंगलूर—केदारनाथ सिंह कैनार—पी० आर० टैक्सटाइल्स हैदराबाद—दामोदरराम वाराणसी—विद्याकान्त झा बम्बई—कन्हैयालाल एडवोकेट आजमगढ़—मुरलीधर माहेश्वरी सागर।

५० रु० दान देने वालों की सूची

सूरेन्द्र गुप्ता जालंधर—नारायणप्रसाद फरीदाबाद—बालकिशन अग्रवाल बम्बई—रामव्रत प्रसाद रांची—प्रेमनाथ आर्य फर्रुखाबाद—मीनू रानी आगरा।

११ रु० वाले दानदाताओं की सूची

१ गोपाल जी, प्रेम जी—उदयपुर, २ काली प्रसाद श्रीवास्तव—रायबरेली, ३ ए० एस० स्वामी—कर्नाटक, ४ रामेश्वर ठाकुर—पटना, ५ भु० जे० हीराकुन्द—संबलपुर, ६ श्री राधाकिशन बजाज—यवतमाल, ७ श्री रोशनलाल—जलपाईगुड़ी, ८ श्री अमरनाथ डनियाल—रांची ९ श्री एच० एस० सबलोक—दिल्ली, १० श्री एस.सी. पाटीदार—करसरावाद, ११ श्री बालकृष्ण—पन्दौर; १२ श्री मन्त्री आर्यसमाज—हमीरपुर, १३ श्री भगनलाल शर्मा—बेतूल १४ श्री हरिनारायण लाल—खीरी, १५ श्रीराम कटपीस—जौनपुर, १६ श्रीमती एस० आनन्द—सिकन्दराबाद, १७ श्री मेथी सिंह—चित्रदुर्ग, १८ श्री लक्ष्मण प्रसाद—दार्जीलिंग, १९ श्री किशन जी जगन्नाथ—नदीद २० मूरतसिंह—झांसी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ कुंवर नत्थूसिंह—झांसी, २२ श्री नरेशचन्द्र रस्तोगी—फर्रुखाबाद, २३ श्री जंगीलाल सिंह—इलाहाबाद, २४ श्री सुरेशचन्द्र कु० बाहरी—पानीपत, २५ बाबूराम—मन्दसौर, २६ चन्द्रसेन भाटी—मंदसौर २७ बन्सीलाल—पेद्दापल्लव, २८ सीताराम प्रधानाचार्य—रायपुर, २९ डा० राजेन्द्र प्रसाद—उन्भाव, ३० लक्ष्मणदास—दिल्ली, ३१ अरविन्द कुमार—गया ३२ हरिप्रसाद—थिलोम, ३३ श्रीनाथ राजदेव—जबलपुर, ३४ एम० एन० शर्मा—डावोडा ३५ श्रीमती वासुदेवी—चांदपुर, ३६ मोहन यादव—असम, ३७ ऊषा महरोत्रा—कानपुर, ३८ परमानन्द उपाध्याय—सीनिक, ३९ मंत्री आर्यसमाज—करनाल, ४० भागमल सचदेवा—भीलापुर, ४१ रवीन्द्र सिंह एडवोकेट—फतेहाबाद, ४२ बाला जी रामदयाल—हैदराबाद।

५ रु० दानदाताओं के नाम

१ फिरगी मिस्त्री आर्य—नैनी, २ बच्चूलाल हरिनारायण—सदावली, ३ लक्ष्मीनारायण—विदिशा, ४ हरिकृष्ण—बम्बई, ५ मिलन मीना—किशोरपुरा, ६ तेजसिंह वर्मा—अछनेस, ७ चन्द्रभान अशोक कुमार—आधवन्म्भ, ८ हरिशंकर—होशंगाबाद, ९ योगेन्द्र राय—कानपुर, १० गजेन्द्र सिंह कम्मूलव—पोरबन्दर, ११ हरिकिशन सोलंकी—जोधपुर, १२ हरिकिशन सोलंकी—जोधपुर, १३ टी.डी.बी. सिंह—पटना १४ जेठाराम जी—जोधपुर, १५ प्रधान आर्यसमाज—गोंडा, १६ एस० पी० शर्मा—जालंधर, १७ नरायन सिंह—स्याना १८ रमेशलाल जी—नासिक, १९ नैमसिंह—दिल्ली, २० सूबेदार जयनारायण—५६ ए. पी. ओ. २१ अविनाशचन्द्र मेहता—नंगल टाउनशिप, २२ हरवंशलाल—फरीदाबाद, २४ चन्द्रदेव पाण्डे—दिल्ली, २४ सच्चिदानंद—देहरादून कैन्ट २५ छगनलाल—सांतपुर, २६ नागेश्वरराय गुंरग—मोहाबी २७ रामकृष्ण शर्मा—ग्वालियर, २८ शंकर कोंडी जाधव—अहमदपुर, २९ महन्त राधिकादास—अलवर, ३० बी० एन० ओझा—चम्पारण, ३१ जय नारायण—गुड़गांवां, ३२ कृष्ण नानालाल शर्मा—बम्बई, ३३ पूरनमल शास्त्री—मुरैना, ३४ डी० पी० व्यास—गुना ३५ रामेश्वर प्रसाद मुनीम—डाल्टनगंज ३६ रामदेव—लखनऊ, ३७ मोहनलाल प्रजापंत—सैदार्क, ३८ भगवत प्रसाद सिंह—हजारीबाग, ३९ जनार्दन सिंघल—फैजाबाद, ४० मालाराम विश्नोई—बनासकंठा ४१ कामेश्वर प्रसाद चौरसिया—कालिझोग, ४ दसरथ सिंह शक्तावत—बलदरखा, श्री नितिनकुमार गुप्ता—इन्दौर।

२१ रु० वाले दानदाता के नाम

१ पतंजलि कुमार कोहली—कटनी, २ हरिगोपाल—बुलन्दशहर ३ वैद्य ब्रह्मदत्त—जायैली, ४ रमेश चतुर्वेदी—बम्बई, ५ कैलासीबाई—बून्दी, ६ एम०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर० गर्ग —[illegible] ७ [illegible]चन्द वर्मा—वाराणसी, ८ जगदीश प्रसाद शर्मा—मेरठ, ९ अशोक कुमार अमित कुमार—आसनसोल, १० रघुनाथ प्रसाद चौधरी—जलपाईगुड़ी, ११ पुरुषोत्तम शर्मा—जलपाईगुड़ी, १२ डा० मेलाराम भटिंडा, १३ चन्द्रभूषण शर्मा—चमोली, १४ राजकुमार श्रीवास्तव—बहराइच, १५ बी० एस० वानखेड़े—बोड़, १६ प्रेमप्रकाश मदाना—नई दिल्ली, १७ सुभाषचन्द्र गुप्ता—जम्मू, १८ देवराज सपरा—सोनीपत, १९ बी० एस० जयडाल—पूर्णे, २० सितारांचन्द गांधी—मेरठ, २१ शेषदेव आर्य—इन्दौर, २२ किशन सिंह—लक्ष्मीनगर, २३ कृष्णा टैक्सटाइल—पाली, २४ राधेश्याम—बम्बई, २५ हकीरलाल—चितौड़ २६ पोथीराम आर्य—अंगदपुर, २७ रमेश रा लोणार, २८ श्री जगदीश जी—सीहोर पाडुरंग निवास, गुलबर्गा (कर्नाटक)।

२५ रु० वाले दानदाताओं की सूची

१ छोरालाल गोरधन—पोरबंदर, २ रामरतन प्रसाद—दार्जीलिंग, ३ निर्भयसिंह काम्बोज—सहारनपुर, ४ बल्लनबाबू वर्मा—वदाई ५ लालचन्द सिन्कोक—डालन ६ कमलेश्वर—भड़ौंच ७ श्री खड़ुराम सुशील—पटियाला, ८ श्री रमेश बहादुर—रायगढ़, ९ श्री नेत्रपालसिंह आर्य—मैनपुरी, १० श्री नामदेव लक्ष्मण चोपने—लवूर ११ श्री रामप्यार भगत—गोंडा, १२ भीमसिंह—बिजनौर, १३ लक्ष्मीनारायण शास्त्री—आर्यनगर, १४ एम० पी० आर्य—भिलाई, १५ अरुण कुमार—आगरा, १६ एन० श्री गांधी—कालीकट, शौनक ऋषिदास—झुंझनू, १८ हीरजी मुलजी कागनी कच्छ-मांडवी, १९ कुंवर आर्यावर्तेश्वर सिंह—हांसी ४ श्रीमती मोहन जी—दिल्ली।

१५ रु० के दानदाताओं की सूची

१ सुभाषचन्द्र—मेरठ, २ शुभानन्द गंगाराम—पूर्णे ३ व्रजपालसिंह राजपूत—बिजनौर, ४ स्वतन्त्रप्रकाश आर्य—फैजाबाद, ५ डी०जी० चिरौंधी—हुबली, ६ श्री सत्यपाल सिंह—धौलपुर, ७ श्री एम० वी० करतारी—दार्जीलिंग, ८ पशुपतिनाथ शर्मा—देवरिया।

५० रुपये

१ रामायण मंडल—बिजनौर, २ प्रेम जी तिलकनगर—कानपुर, ३ श्रीमती सुशीलाबाई—बम्बई, ४ प्रेमचन्द्र—चण्डीगढ़, ५ जयप्रकाश आर्य—शाहदरा, ६ पन्ना देवी—हरयाणा।

१०० रु० देने वालों की सूची

१ नवीन इन्डस्ट्रीज—धनबाद, २ राधेलाल—आगरा, ३ शान्तिस्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ता—कलकत्ता, ४ पुरुषोत्तमलाल गुप्ता—जालंधर, ५ रामस्वरूप शर्मा—
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
फूलचन्द—गुना, ७ भंवरसिंह—चांदपुर, ८ श्रीमती हंसराज कुंवरि—
कलवा, ९ ताल्लुकदार सिंह—गोंडा, १० ठा० लल्लन सिंह—गोंडा, ११
तनलाल दोहरा—पेदापल्ली।

०१ रु० देने वालों की सूची

१ आर० एस० पटेल—बम्बई, २ डा० बी० एल० अग्रवाल—इलाहाबाद, के० के० माथुर—बूंदी, ४ रामवचनलाल श्रीवास्तव—बहराइच, ५ पूणचन्द कोपाधक—हिसार, ६ श्रीमती मिथिलेश त्रिवेदी—बाराबंकी, ७ शंकर इण्ड-स्ट्रियल कारपो०—लुधियाना, ८ नगेन्द्रसिंह कोठारी—गुजरात, डा० कु० शुक्ला —दुहाई।

१ राजेन्द्रसिंह सूरतगढ़—५१) २ परशराम शर्मा विदिशा—१०) ३ न्दलाल हैदराबाद—१०००) ४ ठाकुर राजेन्द्रसिंह पिथौरा—५१) ५ ओम्-प्रकाश हरनारायण शर्मा द्वारा संग्रहीत अकोला—१५५) ६ दौलतराम जालन्धर —५०१) ७ बद्री प्रसाद कल्याण सहाय बुलढाणा—५००) ८ डा० प्र० त्रिवेदी मोरवी—१००) ९ बलराम स्वरूप सक्सेना रायगढ़—१००) १० रेवती-रमण शर्मा जयपुर—२५) ११ भगवत प्रसाद रांची—५०) बलदेव वान-प्रस्थी बिजनौर—२०) १२ केशवराम यादव बाराबंकी—१०) १३ विनोद शुगर वर्क्स गोधरा १००) डा० रामव्रज प्रसाद लुन्डरी (रांची)— २५) १४ ओमप्रकाश चौहान फतहगढ़—१०) १५ बाबूराव कृष्णराव लीपुरा (नागपुर)—२४) १६ ली. डी. एस. ठक्कर धनवाद—१२५) १७ सरोज आर्या—२५) १८ केशवराम यादव गैदपुर (बाराबंकी)— १०१) १९ वानचन्द्रसिंह सिंहभूमि—५०) २० डा. पवनकुमार कान्ता बानजी—५१) २१ महेश कुभा गौड़ बून्दी (राम)—५५१) २२ के. आर. पाटाले चिन्चपुर (महा०)—११) २३ भगवती प्रसाद वैद्य बहराइच— १०) २४ देवराज शर्मा नटनेड (मण्डी)—२०) २५ रमेश बहादुर सिंह जग-दीशनगर—१००) २६ आत्माराम कन्होई हावड़ा—९००) २७ प्रवीण कुमार गंगाधरी—८०) २८ केदारनाथ यादव बम्बई—५०) २९ बी. वेकटाराव विशाखापट्टनम्—२०) ३० पानसिंह रावत बम्बई—५०) ३१ एस. एस. भारद्वाज शिवपुरी—५) ३२ प्रेमचरन शरीफनगर—१११) ३३ आर्य मनुज गिलोला (बहराइच)—३१) ३४ नरेन्द्र कुमार आर्य मेरठ शहर—२०) ३५ रामनरेश शुक्ला हमीरपुर—९०) ३६ जे. पी. सिन्हा चन्द्रपुर (असम)— १६) ३७ यज्ञ प्रकाश रस्तोगी बहराइच—१०) ३८ श्री मंत्री आर्यसमाज उधरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(सोहनगंज)—६४.५०) ३९ श्री एस. एस. भारती जमशेदपुर—११) ४० श्री मूलचन्द्र वर्मा वांटाड—३) ४१ श्री बालकृष्ण दत्त भिण्ड—१००) ४२ श्री द्वारिका प्रसाद पाटोदिया बम्बई—५०००) ४३ श्री पटेल दयालाल गोपाल कर्नाटक—२५१) ४४ श्री चुन्नीलाल आर्य सिसगुप्पा—२५१) ४५ श्री गंगा राम रवीअलदास बंगलौर—१००) ४६ श्री प्रह्लाद राय पचेरिया बम्बई—१०००) ४७ डा. वी. एल. अग्रवाल इलाहाबाद—१०००) ४८ श्री राजकुमार सम्बलपुर—२१) ४९ श्री महावीरप्रसाद उड़ीसा—२१) ५० श्री गोविन्द-प्रसाद अग्रवाल सम्बलपुर—११) ५१ श्री चन्द्रशेखर शर्मा प. चम्पारण—१५) ५२ श्री हवलदार वेनीसिंह महेन्द्रगढ़—५०) ५३ श्री ओम्प्रकाश राय सिंगापुर—५०१) ५४ चौ० प्रतापसिंह जी करनाल—५००) ५५ श्री नारायणदास बालचन्द कालबा देवी बम्बई—१२५) ५६ श्रीमती कमल बम्बई—७५०) ५७ श्री राधेलाल अग्रवाल बम्बई—२५१।

५१ रु० के दानदानताओं की सूची

१ गुरुकुल सोनागढ़—भावनगर, २ विश्वनाथ औरंगाबाद, ३ इन्द्रचन्द्र—वीहरा, ४ भारत टिम्बर कम्पनी—राजनांदगांव, ५ बुधप्रकाश—फीरोजपुर, ६ वली रामप्रसाद—सीहौर, ७ मेवालाल आर्य—कलकत्ता, ८ मलखानसिंह रावत—देवबन्द, ९ ओम्प्रकाश अग्रवाल—भोपाल, १० श्री जयसिंह गणपत-सिंह—शोलापुर, ११ श्री एस० सी० जैन—हरदोई, १२ श्री विमलभूषण गुप्ता, —कौवाक, १३ श्री जगदीश भीलका—रक्सोल १४ श्रीराम तीर्थ—गोंडा, ५१ श्री राजेन्द्रसिंह विष्ट—पौढ़ी गढ़वाल, १६ श्री लखनलाल गुप्ता—इलाहाबाद १७ श्री कन्हैया प्रसाद—बस्ती, १८ कमला प्रसाद—रीवां १९ कृष्ण गोपाल—भीलवाड़ा, २० मदनलाल अमृतलाल—जोगावनी, हेमन्तपुरी—कान्डला।

५० रु० दानदाताओं की सूची

१ वासुदेव—लुधियाना २ प्रतापसिंह—बरही, ३ भिकारीलाल—कोट-द्वार, ४ श्री शिवपाल वर्मा—दाहोद—गुंण ५ श्री सेवदचन्द—नसीराबाद, ६ रामचन्द्र मल्होत्रा—भटिन्डा, ७ विष्णुकान्त शास्त्री—कलकत्ता, ८ वैद्य शास्त्री बाबूराम गुलाटी—लोहामण्डी।

सभी दाताओं का धन्यवाद।

राकेशरानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसा के जीवन में श्रीकृष्ण के जीवनचरित्र की नकल

—डॉ० श्रीराम आर्य

ईसामसीह के जीवन की घटनाओं व कार्यों का जो कुछ भी विवरण न्यू टैस्टामैन्ट में बाइबिल में मिलता है उसे ध्यानपूर्वक देखने पर रतीय साहित्य के स्वाध्यायशील विद्वानों को यह सन्देह होने लगता है क्या कभी ईसामसीह नाम का कोई एतिहासिक व्यक्ति हुआ भी है थवा नहीं ? अथवा वहां के रहने वालों ने भारतीय श्रीकृष्ण जी के जीवन पौराणिक कथाओं को तोड़ मरोड़ करके श्रीकृष्ण जी के स्थान पर कृष्ण ही क्राइस्ट के रूप में कल्पित करके अपना आदि सम्प्रदाय-प्रवर्तक बना या है । इस विषय में हम निम्नलिखित आधार दोनों के जीवन में घटनाओं समानता का देखते हैं ।

१. भगवान् विष्णु ने स्वयं देवकी के गर्भ में आकर श्रीकृष्ण के रूप में म लिया (भागवत १०।२।१७-२०) । इसी की नकल में लूका १।३५ में खा गया है कि 'पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परम प्रधान की मर्थ तुझ पर छाया करेगी । इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा ।"

२. देवकी ने कहा 'इस पापी कंस को यह बात मालूम न हो कि आपका म मेरे गर्भ से हुआ है । मेरा धैर्य टूट रहा है, मैं बहुत डर रही हूं । (भा ०।२,२९) । इसकी नकल में गर्भिणी मरियम का घबराना लूका १।३० में खा है ।

३. श्रीकृष्ण जी ने जन्म लेते ही अपने माता-पिता को अपने असली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वैष्णवी रूप के दर्शन दिए थे (भा० १०।३।३० इसी की नकल में माना जाता है कि क्राइस्ट [illegible] मरियम से कहा कि मैं खुदा का बेटा हूं। (pp. 22 Coi. Life of V. C. by Deam Farear)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. श्रीकृष्ण के जन्म पर देवताओं ने आकर भारी आनन्दोत्सव मनाया (भा० १०।३।५-८)। इसी की नकल में लूका १।१३-१४ में देवदूतों की सेवा कर प्रकट होकर ईसा के जन्म ले पर आनन्द उत्सव मनाना लिखा है।

५. श्रीकृष्ण ने वसुदेव की प्रार्थना पर कहा कि मुझे नन्द गोप के यहां कर जाओ। उसी की नकल में मत्ती २।१३ में स्वप्न में देवदूत से यूसुफ को कहलवाया गया है कि 'उस बालक और उसकी माता को लेकर मिश्र देश को भाग जा और जब तक मैं न कहूं, तब तक वहीं रहना, क्योंकि हिरोदेश इस बालक को ढूंढने पर है कि उसे मरवा डाले।' यह बात कंस के देवकी पुत्रों को जन्मते ही ढूंढ़कर मार डालने की नकल पर गढ़ी गई है और कृष्ण की ही तरह ईसा को अयन्त्र भिजवाया गया है, क्योंकि वसुदेव कृष्ण को (भाग १०।३।४)-५१ नन्दघर को ले गए थे। उसी की नकल में यूसुफ का मिश्र से लौटाकर (नन्द घर की नकल पर) नासरत को जाना लिखा है (मत्ती २।२३) यहां नन्दघर और नासरत शब्दों की साभ्यता भी देखने योग्य है।

६. कृष्ण के जन्म की बात सुनकर कंस ने मथुरा और उनके आस-पास के पैदा हुए हाल के बच्चों को मरवाया था। (भागवत १०।५।२६) उसी की नकल में इञ्जील वालों ने लिख दिया है कि ईसा के जन्म की बात सुनकर हिरोद बादशाह ने दो साल के अन्दर पैदा हुए तमाम बच्चे बैथलहम के मरवा डाले थे। (मत्ती २।१६)।

७. कृष्ण का एक साल की उम्र में नामकरण हुआ था (भाग १०।८)। उसी की नकल में क्राइस्ट बपतिस्मा कराया गया। मत्ती ३।१३।। कृष्ण का बारह साल की उम्र में यज्ञोपवीत हुआ (भाग १०।४५।२६) उसी की नकल में क्राइस्ट का यूहन्ना १।२३ वाला बपतिस्मा लिखा है। कृष्ण का ३० साल की आयु के लगभग अविषेक (हरिवंश पु० ५।० हुआ। उसी की नकल में क्राइस्ट का लूका ३।२१ वाला बपतिस्मा लिखा गया है।

८. कृष्ण ने पूतना वध किया आंधी रोक दी, पेड़ों में से दो आदमी निकाले थे। उसकी नकल में क्राइस्ट की शैतान से जांच कराई गई (मत्ती ४।१-११) समुद्र में आंधी रुकवाई (मत्ती ७।१२-२७)। कब्रों में से दो भूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ने, मार्क्स ५।१-१०) आदि ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९. कंस के कष्टों से पीड़ित होकर नन्द बाबा नन्दघर छोड़कर और को लेकर कालीदह पर वृन्दावन जाकर बस गये थे (भाग १०।११) की नकल में ईसा को नासरत से गाजीली झील पर कफरहुम में जा ा गया (मत्ता ४।१२-१३।) इसमें कालीदह और कफनीहुम में शब्द ता देखने योग्य है । जैसे नन्द के साथ सैंकड़ों आदमी गए थे, वैसे ही के साथ भी भीड़ भेजी गई लिख दी है । मत्ती ४।२५।।

१०. कृष्ण ने जो गोवर्धन पहाड़ की पूजा का उपदेश दिया था, उसी कल में ईसा को पहाड़ पर चढ़ाकर उपदेश दिलाया गया है (मत्ती ५) ने विचित्र रूप से इस अवसर पर अपने साथियों को दर्शन दिए थे । की नकल में मत्ती १७।१०-१३ में ईसा का तेजस्वी रूप दिखाना लिख है ।

११. कृष्ण ने कुब्जा की कमर सीधी की तो ईसा से भी एक कुबड़ी औरत करा दी गई । (लूका १३।११-१३)

१२. कृष्ण के साथ भी औरतों का रहना लिखा है । बहुत-सी और साथ यरूशलम से आईं और गलील में उसकी सेवा में रहती थीं । १२।४१। ईसा ने अधिकतर औरतों के ही इलाज किये थे । तरियम लीनी ईसा के सिर में तेल मला करती थीं (मत्ती २६।७-१३।) क्राइस्ट पर जाते समय बहुत-सी औरतों ने विलाप किया था (लूका २३।२७) भी मर्द का उल्लेख बाइबिल में नहीं किया गया है जिसने विलाप किया जो ईसा की कब्र पर देखने भी गया हो। औरतों के ही कहने पर दो चेले कब्र पर तीसरे दिन गए थे, स्वयं नहीं गए थे। इस प्रकार के साथ भी गोपियों की तरह औरतों का संग बाइबिल से ही प्रमा- है जो कि कृष्ण की नकल मात्र है ।

१३. श्रीकृष्ण अपनी ३५ साल की उम्र तक चार बार मथुरा आये थे । की नकल में यूहन्ना ने क्राइस्ट का चार बार यरूशलम आना लिखा है ।

१४. कुब्जा ने श्रीकृष्ण के सिर में चन्दन लगाया, माली ने माला पहि- जिसे कृष्ण ने आशीर्वाद दिया । भाग० १०।४२।। इसकी नकल में मरि- ने ईसा के सिर में सुगन्धित तेल डाला (मत्ती २६।७) । ईसा ने अच्छे बुरे माली का दृष्टान्त कहा । (मत्ती २१।३३-४१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१५. कंस के साथ उसके दो पहलवान मुष्टिक और चाणूर मारे गए। भाग० १०।४४। इसकी नकल में डाकू क्राइस्ट के दाईं और बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाकर मारे गए। मत्ती (२७।४८)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६. मगधरानी देवकी शहर की अन्य औरतों के साथ बैठी हुई दूर से कंस वध देख रही थी। भाग० १०।४४।६। और देवकी पछताती थी। भाग० १०।४४।१८।। इसकी नकल में लिखा है कि मरियम मगधलीनी क्राइस्ट की मां मरियम और अन्य स्त्रियों के साथ दूर से देख रही थी। मत्ती २७।५५-३६। और क्राइस्ट की मां ने रंज माना है। (यूहन्ना २४।११)

१७. तीसरे पहर कंस के मारने पर हाहाकार मच गया (भाग ३०।४४।३८) उसकी पत्नी मगध रानी वहां आई और रंज किया, जिसे कृष्ण ने समझाया। उसे रोते-रोते शाम हो गई (हरि० वि० ३१।५६) उसकी नकल में क्राइस्ट तीसरे पहर मरे (लूका २३।४४) मरियम मगधलीनी कब्र के पास बैठी (मत्ती २७।६१) और रंज किया (यूहन्ना २०।११) दूतों ने उसे समझाया (यूहन्ना २०।१३) कब्र पर बैठे—२ शाम हो गई। (मत्ती २७।५७-६१)

नोट—बाइबिल बनाने वालों ने घटनाएं कृष्ण के जीवन की नकल की हैं परन्तु भूल के ईसा की मृत्यु को कंस की मृत्यु से मिला दिया है। इसलिए ईसा में कृष्ण व कंस दोनों के जीवन की घटनाओं का समिश्रण देखा जाता है।

१८. मथुरा के राजा कंस के बाप उग्रसेन ने कृष्ण से रात को कंस की लाश मांगी और फिर दूसरा दिन निकलने से पहले फूंकी। इसकी नकल में अरमथिया के यूसुफ (क्राइस्ट के पिता ने) पीलातुस से जाकर रात को लाश मांगी, कफन में लपेटी और दफनाई। (मत्ती २७।५७-६) दूसरे दिन मरियम मगधलीनी वगैर क्राइस्ट की कब्र पर गई। मत्ती २८।१।।

१९. कृष्ण पीपल के नीचे अपनी जांघ पर दूसरे पैर की पिंडली रख कर बैठे थे और व्याध ने उसके पैर में तीर मारा था। एक पैर पर दूसरा पैर रखने से + सलीब का चिन्ह बन जाता है। उसी की नकल में लिखा है कि क्राइस्ट को पीपल की लकड़ी की बनी हुई सलीब पर चढ़ाकर बर्छा मारा गया और खून निकला। (यूहन्ना १९।३४)

२०. कृष्ण का जन्म होते ही वासुदेव बालक को सूप में रख कर लेकर गोकुल को चले गए और यशोदा के घर रख कर उसकी उसी समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न पुत्री को ले आये थे। इसकी नकल में लिखा है कि मरियम ने पहि-ा बालक ईसा को जना और उसको कपड़े में लपेट कर चलनी में रखा। ा।२।७) यूसुफ उठकर रात को ही बालक और उसकी माता को लेकर को चला गया है। (मत्ती २।१४) बाइबिल में यहां सूप की चलनी लिख है।

२१. पुरुरवा से श्रीकृष्ण तक ४३ पीढ़ियां भागवत, स्कन्द ६ तथा विष्णु ण ४।११ १२ व १५ के अनुसार होती हैं। उसी की नकल में बाइबिल (उत्पत्ति व मत्ती १।१७) के अनुसार अबिराम (इब्राहीम) से क्राइस्ट तक पीढ़ियां होती हैं। इनमें बाइबिल की भूल से याकूब और यहुदा के बीच ० ४ की भूल से नहुष का नाम लिखने से छूट गया है। इसी प्रकार नं० र 'यदु' कृष्ण की पूर्व पीढ़ी में थे तो नं० ५ पर यहुदा ईसा की पूर्व पीढ़ी ा। यदु और यहूदा कृष्ण और क्राइस्ट यह नाम साम्यता तथा दोनों में ४३ ही पढ़ियां बैठी, यह प्रकट करता है कि बाइबिल बनाने वालों ने णों से कृष्ण के जीवन की घटनाएं व उनकी वंशीवली तक की नकल कर ी है। जहां तक हो सका है नामों को बदलने का प्रयत्न किया गया है कि चोरी न पकड़ी जा सके।

२२. कृष्ण और क्राइस्ट के जन्म से पूर्व दोनों के जन्म की भविष्य णियां हुई थी। दोनों के जन्म का उद्देश्य धर्म रक्षा था।

२३. कृष्ण यदुकुल में जन्मे तो क्राइस्ट यहूदा कुल में जन्मा। (मत्ती १।१)

२४. श्रीकृष्ण जी ने गोवर्धन 'पर्वत' की पूजा के अवसर पर नन्द जी नता को उपदेश दिये थे तो उसी की नकल में ईसा से पहाड़ पर लोगों उपदेश दिलाये गये हैं जो अधिकांश बौद्ध मत की छाप लिए हुए हैं (मत्ती) में जिनका वर्णन है।

२५. कृष्ण को नन्द-नन्दन व ईश कृष्ण कहा जाता था तो उधर क्राइ-नासरी व यीशु क्राइस्ट कहा जाने लगा।

२६. कृष्ण चरवाहा गोपाल थे तो क्राइस्ट भेड़ बकरी चराने वाला रिया था।

२७. कृष्ण यमुना के क्षेत्र में जन्मे थे तो ईसा को यर्दन नदी के पास क्षेत्र में पैदा कराया गया

यमुना और यर्दन में नाम साम्यता नोट करने योग्य बात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण का जन्म अंधेरी रात में अष्टमी को हुआ था। उसी तारीख को ईसा का जन्म कराया गया। मरियम का ८ दिसम्बर को गर्भ रहा था और पूरे आठ माह बाद अर्थात् ७ अगस्त को जन्म हुआ था (सेंट पाल का कलेन्डर देखें)। (हरिवंश पुराण विष्णु पर्व ४।११) के अनुसार कृष्ण का जन्म भी ८ माह में हुआ था।

२८. कृष्ण व क्राइस्ट दोनों के ही मरने से पूर्व उनके पास देव दूतों का आना लिखा है। कृष्ण के दो से अधिक पत्नियां थीं। उसी क नकल में ईसा के भी दो से अधिक पत्नियां थीं।

The Inormous not only believe that jesus was married man but that he was actually the husband of more than two wives at one and the same time (Agnostic journal 18/3/05)

अर्थात् जनता का भारी बहुमत यह विश्वास करता है कि ईसा न केवल विवाहित था किन्तु इसके एक ही समय में दो से अधिक पत्नियां मौजूद थीं।

२९. बौद्ध मत में धम्मपद ग्रन्थ में प्रत्येक व्यक्ति के लिए पांच हुक्म लिखे हैं—(१) हिंसा न करना, (२) चोरी न करना, (३) व्यभिचार न करना, (४) झूठ न बोलना (५) शराब न पीना। इसी की नकल में ईसाई मत में मत्ती १९।१८ में लिखा है (१) हिंसा न कर (२) परस्त्रीगमन न कर, (३) चोरी न कर, (४) झूठी गवाही मत दे। क्योंकि ईसा स्वयं शराब पीता था अतः उसने शराब पीने को मना नहीं किया था। शेष चारों उपदेश बौद्धमत की नकल थे।

भागवती कृष्ण के जीवन की पचासों और भी बातों की नकल ईसा का जीवन गढ़ने वालों ने की है जिन्हें हम विस्तार भय से नहीं देना चाहते कुछ प्रमुख घटनाएं देकर हमने वह प्रदर्शित किया है कि ईसा का सारा जीवन चरित्र काल्पनिक है। इस विषय में एक प्रबल तथ्य यह भी विचारणीय है कि ईसाई मत (क्रिश्चियनिटी) ईसा से दो सहस्र वर्ष पूर्व से मौजूद थी। सीरिया के देश में क्रिश्चियन लोग पहले से विद्यमान थे। यदि यह मत ईसा से जारी होता तो उसके बाद इसे अस्तित्व में आना चाहिए था। उस समय उन सिरिया के क्रिश्चिनन लोगों को नीच समझा जाता। (टोलीटस हिस्टोरियन)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत युद्ध के पश्चात् भारत से अनेक जातियां मिश्र सीरिया आदि देशों में जाकर वस गई थीं तथा भारत के साथ उन सभी पाश्चात्य देशों के व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध बने रहते थे। प्रसिद्ध रूसी यात्री डा० नोटो विच ने यह प्रकट किया है कि ईसा भारत में आया था और १३ से २१ वर्ष की आयु तक यहां रहा था। उसने यहां शिक्षा प्राप्त की थी और फिर स्वदेश लौटकर अपने मत का प्रचार किया था। बाइबिल में भारतवर्ष का उल्लेख भी आता है। यथा "सो उसी समय अर्थात् सीवान नाम तीसरे महीने के तेईसवें दिन राजा के लेखक बुलाये गये और जिस बात की आज्ञा मोर्दके ने उन्हें दी थी उस यहूदियों और अधिपतियों और हिन्दुस्तान से लेकर कूश तक जो एक सौ सत्ताईस प्रान्त हैं, उन सभों के अधिपतियों और हाकिमों को एक-एक प्रान्त के अक्षरों और एक-एक देश के लोगों की भाषा में ओर यहूदियों को उनके अक्षरों और भाषा में लिखी गई। (एस्तेर ८६)

इससे स्पष्ट है कि बाइबिल के लेखकों को भारतवर्ष की हर बात की भरपूर जानकारी थी। उन लोगों ने ईसा का अथवा स्वयं ईसा ने अपना व्यक्तित्व महान् बनाने के लिए अथवा उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके चेलों ने ईसा को प्रभुपुत्र घोषित करने के लिए भारतीय श्रीकृष्ण जी के जीवन की घटनाओं को ईसा के जीवन में जोड़कर उसको परमेश्वर का खास बेटा, जगत् उद्धारक बना दिया और न्यू टेस्टामेन्ट के विभिन्न लेखों में उसका कल्पित चरित्र भी लिख दिया। अन्वेषणों से यह भी प्रकट हो चुका है कि वर्तमान बाइबिल का संकलन करते समय बड़ी सावधानी से काम लिया गया था। परस्पर विरुद्ध कई दर्जन पुस्तकों को उनमें जानबूझ कर नहीं जोड़ा गया था, उनके अनेक भाग लुप्त भी हो गये थे। यदि वे सम्पूर्ण पुस्तकें आज अपने असली रूप में उपलब्ध होतीं तो आज ईसाई मत का संसार में कोई स्थान नहीं होता। ईसा मसीह का जो स्वरूप न्यू टैस्टमेन्ट में दिखाया गया है वह वास्तव में किसी और ही रूप में सामने आता है।

फिर भी जो कुछ बाइबिल में दिया गया है उससे यह स्पष्ट है कि ईसा के चरित्र को श्रीकृष्ण के चरित्र के आधार पर गढ़ा गया है जो कि भागवत, विष्णु तथा हरिवंश आदि पुराणों में दिया गया है। बाइबिल ईसा का सत्य-स्वरूप प्रस्तुत नहीं करती।

ईसा से दो वर्ष पूर्व भी सीरिया में बसे भारतीय लोगों तथा कृष्ण के वंशजों में श्रीकृष्ण की भक्ति का प्रचार था। जिसे 'श्रीकृष्ण इज्म कहा जाता था। उसी को बिगाड कर कृष्ण इज्म की जगह 'क्रिश्चयनिटी" कर दिया

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया था। स्पष्ट है कि क्रिश्चियनिटी भारतीय मत व विश्वास का ही बिगाड़ा हुआ नाम है। ईसा का चरित्र भी कृष्ण व कंस की सम्मिलित जीवन घटनाओं की नकल पर फर्जी तौर पर गढ़ा गया है। सम्मपूर्ण ईसाई मत भारतीय आधार पर कल्पित मिथ्या मजहब है। इसका ऐतिहासिक स्वतन्त्र महत्व बिलकुल भी नहीं है।

इसी प्रकार बाइबिल तथा कुरान का नूह भारतीय साहित्य में वर्णित मनु के नाम में से 'म' उड़ाकर 'नूह' बना दिया गया है। श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव को बाइबिल में यूसुफ बना लिया है। अर्जुन को इलियाजर महाभारत की प्रथा (कुन्ती) को मर्था बनाकर बाइबिल के कल्पित इतिहास रूपी नाटक के पात्रों के रूप में नाम बदल कर प्रस्तुत किया गया है।

यदि इन भारतीय कृष्ण के जीवन की नकल की हुई बाइबिल की घटनाओं को देखकर कह दिया जावे कि क्राइस्ट नाम का कोई भी व्यक्ति कभी भी पैदा नहीं हुआ था, भारतीय श्रीकृष्ण जी को ही उस देश के लोगों ने क्राइस्ट के रूप में मानकर एक फर्जी मजहब चला डाला था तो हमारा यह दावा निराधार नहीं होगा और मूल के मिथ्या हो जाने से सारा ईसाई मत ही शेखचिल्ली की कल्पनाओं के समान मिथ्या सिद्ध हो जायेगा।

राजनीतिक वक्ता (भाषण को समाप्त करते हुए) :"मुझे खेद है कि मेरा भाषण कुछ लम्बा हो गया। आज मैं अपनी घड़ी भूल आया हूं।"

जनता में से एक आवाज : "पर, हुजूर आप की पीठ के पीछे कलेंडर तो लटका हुआ है"

बैंजामिन फ्रेंकलिन को एक बार अपने किसी रिश्तेदार को रुपया उधार देना पड़ गया। रिश्तेदार ने पचास पौण्ड लेने के बाद फ्रेंकलिन से एक कोरा कागज माँगा ताकि वह उस पर उधार का करारनामा लिख सके।

"क्या ?" फ्रेंकलिन ने आश्चर्य से कहा, "आप मेरे रुपयों के साथ-साथ मेरी स्टेशनरी भी खराब करना चाहते हैं ?"

'मसखरा विश्वकोश, में 'महान पुस्तक, की परिभाषा इस प्रकार पाई गई : ऐसी पुस्तक जिसे बिना पढ़े ही लोग यह कहने लगते हैं कि उन्होंने उस का अध्ययन किया है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक विचार

जब रक्षक ही भक्षक बनें

—सत्यपाल शास्त्री

पंजाब की स्थिति देखकर स्वर्गीय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां याद आती हैं—रक्षक ही जब भक्षक बने, तब कौन रखवाली करे? मुगल अत्याचारों से पीड़ितों की रक्षा करने के लिए गुरु गोविन्दसिंहजी ने खालसा पन्थ को सैनिक रूप दिया था, लेकिन आज उन्हीं के अनुयायी कहते हैं कि मुसलमानों, ईसाइयों और अन्य गैर-हिन्दुओं से हमारी कोई दुश्मनी नहीं, हम तो हिन्दुओं को चुन-चुनकर मारेंगे—उनमें भी विशेष रूप से निरंकारियों और आर्यसमाजियों को।

पांच अक्तूबर की रात को कपूरथला जिले के गिडाना और अमृतसर जिले के मनावला नामक स्थानों पर जो हत्याकांड हुए, उनके बाद पंजाब के लोग अपने आपको अत्यन्त असुरक्षित अनुभव कर रहे हैं। असुरक्षा की भावना का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि पंजाब में रात्रि बस सेवाएं स्थगित कर दी गई हैं।

ऊपर हमने जिन हत्याकांडों की चर्चा की है, उनमें आठ व्यक्ति मारे गये और लगभग एक दर्जन घायल हुए। सभी हत्याएं निर्दयता और बीभत्सता दर्शाती हैं, लेकिन जब हत्यारे प्राण लेने का पक्का फैसला कर ले तब यह निर्दयता और बीभत्सता व्यापक जनरोष उभारती है। इन हत्याकांडों ने जनमान को झिंझोड़ दिया है। और लोग पूछ रहे हैं कि पंजाब का क्या बनेगा? जिस प्रकार दिल्ली आ रही बस और अमृतसर जा रही रेलगाड़ी में चुन-चुन कर हिन्दुओं की हत्या की गई, पाठक उससे अवश्य परिचित होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्यारों की निर्दयता किस सीमा तक पहुंची हुई थी, इसे बताने के लिए इतना लिख देना पर्याप्त है कि बस यात्रियों में से एक सतीश कपिला को पहले सीने में दो गोलियां मारी गईं; इस पर जब वह अपने प्राण बचाने के लिए भागा और भागते-भागते बीस मीटर दूर तक पहुंच गया, तब एक हत्यारे ने उसके सिर के पृष्ठ भाग पर गोली मार कर उस बेचारे को मौत के मुंह में धकेल दिया।

इतना कुछ हो जाने पर भी हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी अकालियों से पुन: समझौता–वार्ता करने को तैयार हैं। स्वर्णमन्दिर में अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस भेजने का तो उनके मन में विचार तक नहीं आता। उनका कहना है कि इससे गुरुद्वारे की पवित्रता नष्ट होगी। वे चाहती हैं कि यह कहकर सिक्खों को भडकाया जाये कि "देखो, मैं तो गुरुद्वारे में पुलिस के प्रवेश के विरुद्ध हूं, लेकिन चौधरी चरणसिंह सदृश प्रतिपक्षी नेता मुझे ऐसा करने का सुझाव दे रहे हैं।" विवश होकर कहना पड़ता है कि इन्दिरा जी अपनी और अपने परिवार सत्ता अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए राष्ट्रीय हितों की बलि चढ़ाने में भी संकोच नहीं कर रहीं। केन्द्रीय सरकार ने राष्ट्रपति शासन लागू किया और अनन्तप्रसाद शर्मा के स्थान पर भैरवदत्त पांडे को राज्यपाल बना दिया, यह तो अच्छा किया, लेकिन पंजाब विधानसभा को भंग नहीं किया; केवल निलम्बित किया गया है। भंग कर देने का एक लाभ यह भी होता कि अकाली विधायकों ने विधानसभा की सदस्यता से त्यागपत्र देने का जो स्टंट खड़ा कर रखा है, वह बे-असर हो जाता।

खैर, शुक्र है कि सरकार जागी तो है। हाल ही में पंजाब सरकार ने तीन उग्रवादी अकाली नेताओं जगदेवसिंह तलवंडी, सुखजिन्दर और भरपूर सिंह बलवीर (पत्रकार) को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अधीन नजर बन्द किया। ये तीनों खुल्लमखुल्ला देश द्रोह का प्रचार कर रहे थे। उग्रवादियों ने नजरबन्दियों पर अपना रोष प्रकट करने के लिए हिंसात्मक कार्रवाइयां तेज कर दी हैं। यहीं पर बस नहीं। अखिल भारतीय सिख छात्र फैडरेशन ने धमकी दी है कि सरकारी कार्रवाई का बदला लिया जायेगा। सरकार को दृढ़ता से इस चुनौती का सामना करना चाहिए। धमकियों से डरने की जरूरत नहीं। चारों ओर से मांग की जा रही है कि पुलिस स्वर्ण मन्दिर में दाखिल होकर अपराधियों को गिरफ्तार करे और सन्त जरनैलसिंह भिंडरांवाले को गिरफ्तार करके उन पर मुकद्दमा चलाये। राष्ट्रपति शासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लागू करना और पंजाब व चंडीगढ़ को अशान्त क्षेत्र घोषित करना अपने आप में लक्ष्य नहीं। ये पग तो कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उठाये गये हैं। पंजाब में प्राशसन के सामने पहला लक्ष्य है कानून व व्यवस्था का शासन स्थापित करना। उग्रवादियों ने जिस क्रूरता से बस और रेलगाड़ी के आठ यात्रियों को मौत के घाट उतारा, यदि उसे देखकर भी भारत सरकार पंजाब में राष्ट्रपति शासन न लागू करती तो कब करती? आश्चर्य की बात है कि अकाली नेता सन्त हरचन्दसिंह लौंगोवाल को इस पग में आपातकालीन स्थिति की बू आ रही है। पंजाब में उग्रवादी जो कुछ कर रहे हैं, उससे राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया है। लौंगोवाल और भिडरांवाला घटनाओं पर जो प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं, उससे मानसिकता प्रकट होती है। अकाली नेता पंजाब में हिंसा के तांडव की जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। उन्होंने उग्रवादी तत्वों की हिंसात्मक गतिविधियां रोकने का कोई प्रयत्न नहीं किया। गुरुद्वारों में शरण लेने वाले हत्यारों व अपराधियों को पुलिस के हवाले करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। भिडरांवाला ने ताजा हिंसात्मक घटनाओं के लिए सरकार को दोषी ठहराया है। उनका यह दोषारोपण हास्यस्पद है। अकाली स्वयं मांग करते रहे हैं कि सरदार दरबारसिंह को मुख्यमन्त्रिपद से हटाया जाये और राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये, लेकिन अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष सरदार गुरुचरणसिंह टोहरा कहते हैं कि केन्द्रीय सरकार ने यह पग अकाली आन्दोलन को कुचलने के लिए उठाया है।

अकाली आन्दोलन का परिणाम यह हुआ है कि सिख भी स्वर्णमन्दिर जाकर प्रार्थना करने में अपने आप को सुरक्षित नहीं समझते। हाल ही में जेल का एक सहायक सुपरिटेंडेंट हरदीपसिंह प्रार्थना करने स्वर्णमन्दिर गया। कुछ उग्रवादियों ने उसे पीटा। पुलिस ने धमकी दी कि यदि उसे सुरक्षित वापस भेजा जायेगा, तो पुलिस स्वर्णमन्दिर में प्रविष्ट हो जायेगी। तब जाकर उसे छोड़ा गया। पुलिस ऐसा न करती तो उस बेचारे की लाश नाली में पड़ी मिलती। स्वर्णमन्दिर के बाहर नाली में अब तक दस क्षतविक्षत लाशें मिल चुकी हैं। जालन्धर पुलिस के डिप्टी इन्स्पैक्टर-जनरल अवतारसिंह अटवाल प्रार्थना करने ही तो स्वर्णमन्दिर गये थे, जहां उनकी हत्या कर दी गई।

अकाली पंजाब की समस्या के राजनैतिक समाधान की मांग करते हैं, लेकिन वे एक ही मंच से अलग-अलग बोलियां बोलते हैं। कोई अलग सिख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य की मांग करते हैं और कोई आनन्दपुरसाहब प्रस्ताव की अपनी ही व्याख्या करता है। उनके पास कोई ठोस सुझाव तो है ही नहीं।

यह बात याद रखने की है कि सन् १९७७ से १९८० तक जब पंजाब में अकाली दल और जनता पार्टी का संयुक्त शासन था, वर्तमान मांगों में से एक भी मांग न उठाई गई थी। यह साम्प्रदायिक आन्दोलन तब प्रारम्भ हुआ, जब सन् १९८० के जून महीने में हुए चुनाव में अकाली दल को पराजय का मुंह देखना पड़ा। अब अकाली नेता ऐसे प्रश्न उठा रहे हैं, जिनका समाधान हो चुका है। नई-नई मांगें पेश की जा रही हैं। अकाली नेताओं को बार-बार समझाया गया कि टक्कर लेने का रास्ता छोड़ दें, लेकिन वे अपने आन्दोलन को तेज करते गये। अब भी जब उनकी नित नई की जाने वाली मांगें नहीं मानी जातीं, वे धमकी देते हैं कि आन्दोलन इतना तेज किया जायेगा कि सरकार को उसके आगे झुकना ही पड़ेगा।

अकाली नेता कुछ भी कहें, आम जनता का विचार यह है कि सिखों के विरुद्ध भेदभाव बरतने की तो बात ही क्या, शासन में उन्हें उनके उचित अधिकार से अधिक मिल रहा है। जनता का विचार है कि अकाली नेताओं के पास सिखों के लिए कोई अच्छा कार्यक्रम तो है नहीं, इसलिए वे इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण और अर्थहीन आन्दोलन चलाकर अपनी 'भेड़ों' को संगठित रखना चाहते हैं। अकाली दल ने पंजाब में जो आन्दोलन चला रखा है, अब उसका कोई मतलब नहीं रह गया। यह मोर्चा वापस लिया जाना चाहिए।

पंजाब केवल सिखों के लिए नहीं, अपितु सभी पंजाबियों के लिए है, जिनमें हिन्दू भी शामिल हैं। चंडीगढ़ पंजाब को दिये जाने और पंजाब व अन्य राज्यों के बीच नदियों के जल की समान भागीदारी की मांगों को लेकर जो आन्दोलन शुरू हुआ, वह धर्मयुद्ध नहीं। (अकालियों ने इसका नाम धर्मयुद्ध रख छोड़ा है।) जो मांगें की जा रही हैं, उनका सम्बन्ध प्रान्तीय हितों से है, साम्प्रदायिक हितों से नहीं। अकाली तो ऐसे चल रहे मानो उन्हें निरपराध हिन्दुओं की हत्या का लाइसेन्स मिल गया हो। उग्रवादियों को गुरुद्वारों में शरण नहीं मिलनी चाहिए। जो स्थिति पैदा हुई है, उससे अकालियों ने पंजाब में ही नहीं, अपितु सारे देश में अपनी साख खोई है।

दिल्ली भी लपेट में

पंजाब की कानून और व्यवस्था की स्थिति तो खराब थी ही, अब हिंसा की आग ने दिल्ली को भी अपनी लपेट में ले लिया है। १३ अक्तूबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रात को दिल्ली-शाहदरा के गयानन्द और स्वर्ण सिनेमा हालों में हुए विस्फोटों में पांच व्यक्ति मारे गये और लगभग चालीस घायल हुए। १४ अक्तूबर को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बमविस्फोट से २६ व्यक्ति घायल हुए, जिनमें एक आठ-वर्षीय लड़की और एक महिला भी शामिल हैं। (दो व्यक्ति बुरी तरह घायल हुए।) इससे पूर्व भी नई दिल्ली के पालिका बाजार और अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डे पर बम फेंके जा चुके हैं। नई दिल्ली का डाक-तार घर भी बम विस्फोट का शिकार हो चुका है। सरकारी सूत्रों का कहना है इरतन सब बम विस्फोटों का निर्देशन और नियन्त्रण अमृतसर से हो रहा है। कि इन हास्यास्पद बात है कि इस वास्तविकता का एक प्रकार से मुंह चिढ़ाते हुए सन्त लौंगो वाल ने इन बम विस्फोटों की निन्दा की है। इसी को कहते हैं—वही जुर्म भी करे हैं, वही लें शबाब उलटा। ऐसी बातों से जनता की आंखों में धूल नहीं झोंकी जा सकती।

जैसा हम इस स्तम्भ में कई बार लिख चुके हैं, इस समस्या का एक ही समाधान है कि पुलिस स्वर्णमन्दिर में दाखिल होकर अपराधियों को गिरफ्तार करे और उन पर मुकद्दमे चलाकर उन्हें सजा दिलवाये। जब तक ऐसा नहीं होता, निर्दोष व्यक्ति अत्याचार झेलते रहेंगे। हम यह भी लिख दें कि पुलिस के स्वर्णमन्दिर में प्रवेश की सम्भावना न के बराबर है, क्योंकि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी बार-बार कह रही हैं कि ऐसा करने पर उग्र प्रतिक्रिया होगी। पुलिस स्वर्णमन्दिर में जायेगी नहीं, उग्रवादी अपनी पशुता छोडेंगे नहीं और बेचारी जनता भुगतता रहेगी। भगवान् ही जानता है कि यह आंख मिचौली कब तक चलती रहेगी। आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों, एक न एक दिन तो पुलिस को स्वर्णमन्दिर में प्रविष्ट होना ही होगा। वही दिन पंजाब की मुक्ति और शान्ति का दिन होगा।

संकल्प उस अटल निश्चय का नाम है जिससे मानव सही मार्ग पर चलने के लिए आत्मबल और दृढ़ता को जुटाता है। —स्वामी दयानन्द

संकल्प वह चमत्कारी जादू है जिसे दैनिक जीवन में नियमित रूप से अपनाने से मानव का कायाकल्प हो जाता है। —स्वामी विवेकानन्द

संकल्प वह रामबाण है जो बिना चूके अपने निशाने तक पहुँच जाता है। शर्त एक ही है। उस संकल्प के पीछे कर्त्ता की कितनी दृढ़ता और अटल आकांक्षा है। —स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिख आवाज दें कि देश की एकता और अखंडता को दाव पर नहीं लगायेंगे

क्या खालसा कभी 'राज करेगा ?'

—बालकवि बैरागी

पंजाब में आज जो आग बिखरी पड़ी है उसे केवल पंजाब की समस्या मानकर आंखें मूंद लेना सचमुच हमारी भूल होगी। राष्ट्र से कटकर इस समस्या को देखना संभवतः पागलपन ही होगा। हमें जो कुछ सूचना एवं समाचार पंजाब के बारे में संचार माध्यमों से मिलते रहे हैं वे इस समस्या की भयावहता और भयानक भविष्य का पूरा खाका नहीं खींचते। प्रायः हम यह मानकर दायित्व से परे हो जाते हैं कि हो न हो यह सारा झगड़ा केन्द्रीय सरकार और अकालियों के बीच का ही मुद्दा है। आप अपनी कोटर से बाहर निकल कर जितना पंजाब के करीब जायेंगे उतना पायेंगे कि यह झगड़ा न तो चंडीगढ़ का है और न यह झगड़ा नहरी पानी या नदी जल का है और यदि आप ठेठ पंजाब की धरती पर पहुंच कर देखेंगे तो पायेंगे कि यह झगड़ा पंजाबी भाषा, संस्कृति और सभ्यता का बिल्कुल नहीं है। शनैः-शनैः यह बात साफ होती जा रही है कि यह झगड़ा विशुद्ध तौर पर 'खालिस्तान' की स्थापना का है। बिलकुल एक नये देश की गर्म समस्या का सारा विवाद है। मैंने मालवा मध्यप्रदेश से बाहर जाकर ठेठ पंजाब के कटिबंध पर बैठकर इस समस्या का जायजा लिया है। सारा आन्दोलन बिल्कुल सोचा-समझा और सिलसिलेवार गणित पर बैठाया गया है। इसके पीछे अकेले पंजाब में बसे अकालियों का दिल दिमाग नहीं है। सूत्रधार कोई और है। डोर कहीं दूसरी जगह से खींची जा रही है। धन कहीं दूसरा और साधन कहीं तीसरा है। साध्य है खालिस्तान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ारत को काटने का जाल

भारत के प्रति एक बहुत ही पराजित मानसिकता को ओल ओल कसकर ना दिया गया है। भारत को चाहे जहां से काटा या तोड़ा जा सकता —यह आन्दोलन इस थीसिस का बिलकुल नया संस्करण है। भारत से भी बर्मा कटा, कभी सिंहलद्वीप कटा। नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, गालदेश और सुदूर काल खंड में काबुल कंधार तक काट लिये गये। यदि ाल क्रम और हीन महत्त्वाकांक्षाओं का कुटिल गणित बिलकुल नपा-तुला ा तो भारत को इच्छित मात्रा में काटा जा सकता है और भारत की हिन्दू हनशीलता, भारत का आर्य अक्रोध, भारत का सन्तोष-बोध, भारत का ाग्यवाद इस काटपीट को अल्हड़ भावना से चुपचाप सह लेगा। इस कुत्सित तिहास बोध का ताजा दोहन पंजाब का वर्तमान खालिस्तान आन्दोलन । इस षड्यन्त्र को और कोई पहचाने न पहचाने दिल्ली के जागृत नेतृत्व पूरी पारदर्शिता के साथ आरपार पहचान लिया है।

ार्यसमाज की भूमिका

पंजाब के वर्तमान आन्दोलन ने आज एक ही साथ कई सवाल भारत के ाकाश में उछाल दिये हैं। इस आन्दोलन के आसपास आन्दोलन की मूल ावना से सटकर कई अन्य विकृतियां भी बैठ गई हैं। पंजाब के भीतर ाज आर्यसमाज एक तरह से इस आन्दोलन का एकमात्र विरोधी बनकर यूं हिये कि पुनर्जीवित हो गया है। कल तक आर्यसमाज करीब-करीब बिखर- ा गया था। खालिस्तान आन्दोलन ने आर्यसमाज को नये सिरे संगठित कर या है। खुलकर दो पक्ष आमने-सामने आ गये हैं—सिख बनाम हिन्दू। ान देने की बात यह है कि सारा सिख समाज इस आन्दोलन का पक्षधर हीं है। सिखों का अकाली वर्ग ही इस आन्दोलन का हरावल दस्ता है। ाक हिन्दूमात्र इसके विरोधी हैं। हिन्दुओं में सनातनी, जैन, अजैन, आर्य- ाजी और हर वर्ण के जाति के हिन्दू शिवालयों और मन्दिरों के लिये ार्यसमाज सरकार से पहिले लड़ने के लिए आगे आ रहा है। ज्यों ही ातंकवादियों और उग्रवादियों का कोई प्रहार होता है कि सरकार से पहले हां आर्यसमाज के नेता कार्यकर्ता पहुंच जाते हैं। पंजाब के भीतर की दशा ाहे जो हो किन्तु पंजाब के बाहर सामान्यतः पढ़ा-लिखा और विशिष्ट ्यक्ति भी सिख को सिख ही मानता है। यह विभेद आप कतई नहीं कर ाते कि सामने वाला सिख अकाली है या गैर-अकाली। भारत के भीतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और भारत के बाहर भी अकेला सिख ही वह शख्सियत है, जो सीधे भारत की पहचान बना हुआ है। सिख आपको संसार के किसी कोने में मिले उसे देखते ही आप कह देंगे कि यह सिख है और भारत से आया है। यह दूसरी बात है कि फिर वह सिख अमरीका, कनाडा या मलेशिया या कि पाकिस्तान का निकल आये।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी दशा में भारत के भीतर पंजाब आन्दोलन ने सिखमात्र को घृणा के दायरे में धकेल दिया है। किसी बिन्दु पर घृणा के मामले में आज मुसलमान और सिख एक जैसी आग में झुलस रहे हैं। पाकिस्तान की स्थापना ने आज हमारे राष्ट्रभक्त बलिदानी मुसलमानों तक को घृणा की इस बेपनाह लहर के कारण प्रथम संबोधन में 'पाकिस्तानी' जैसा फतवा दे दिया है। वही हालत हमारे आदरणीय सिख भाइयों की होती जा रही है। यत्र-तत्र समाचार बनते जा रहे हैं कि अमुक शहर में एक टैक्सी में बैठने से यात्रियों ने केवल इसलिये इन्कार कर दिया कि उस टैक्सी को एक सिख चला रहा था। गुरुद्वारों में जहां दर्शनीनार्थियों की भीड़ कम हुई है, वहां सरदारों के ढाबों और आटो-गैरेजों में भी ग्राहकों की संख्या में कमी आ रही है। इसे कहते हैं करे कौन और भरे कौन? बोया पंजाब में उगा अन्य प्रदेशों में। आज समझदार मुसलमान यहां वहां सरदारों को समझाते मिलते हैं। कि हमारे पुरखों ने जो गलती की इसका खमियाजा हम आज तक भुगत रहे हैं अपने भाई बेटों को समझाओ सरदार। वर्ना सब मारे जायेंगे।

खालिस्तान का बिच्छू

कहा जाता है कि 'खालिस्तान' का मूल 'थॉट' सन् १९२७ की उपज है। वर्तमान खालिस्तान आन्दोलन इस तरह से १९२७ के महत्त्वाकांक्षी राजनैतिक सपने का नया प्रत्यारोपण है। हमें लगता है कि मानो यह सब सन् १९८३ की ही देन है। ऐसा बिल्कुल नहीं है। 'पंजाबी सूबा' जैसा शब्द डायन के चेहरे पर सुहाग का घूंघट जैसा छलवा मात्र है। आजादी के बाद पंजाब और पंजाबी के लिये तुलनात्मक तथ्यों पर जितना किया गया उतना शायद ही किसी भाषा और प्रान्त के लिए किया गया है। किन्तु जिसके पेट में बिच्छू जा बैठे उसकी जठराग्नि को साक्षात् अन्नपूर्णा भी नहीं बुझा सकती। पंजाब आन्दोलन के पेट में खालिस्तान का बिच्छू बैठा दिया गया है! इसकी जड़ों पर से मिट्टी हट चुकी है। हर आदमी समझ गया है कि इसकी जड़े कहां हैं। दो बातों पर ध्यान दिया जाय तो इसकी तैयारी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरता का अनुमान लगाया जा सकता है। बंगलादेश के युद्धकाल में जब कस्त खाता ... वापस लौट रहा था तब उस ड़े के लड़ाकू कप्तान ने टिप्पणी की थी "यदि धर्म, भाषा और संस्कृति के ाम पर पाकिस्तान के दो टुकड़े किये जा सकते हैं तो हम भारत को स टुकड़ो में बाँट सकते हैं। इस वाक्य में एक साम्राज्य की पूरी लिप्सा बोलती । चलिये बात आई गई हो जानी थी पर अभी एक विदेशी लेखक की ाजा पुस्तक आई है जिसमें वह लिखता है कि सन् २०२४ में भारत का ौगोलिक परिवेश जो हो पर रजानैतिक दशा क्या होगी ?

विदेशी ब्लू-प्रिन्ट

वह स्पष्ट लिखता है कि तब भारत स्पष्टतः तीन टुकड़ों में बंट ायेगा। एक टुकड़ा होगा दक्षिण का जो अमरीका के अधिकार में होगा। क टुकड़ा होगा पूरब का जो चीन के अधिकार में जायेगा और एक टुकड़ा गा उत्तर का जो रूस के आधिपत्य में होगा। बीच का जो कुछ शेष वह रहेगा 'भारत'। इस पुस्तक के आधार पर विदेशी मन्सूबों का जो लू-प्रिन्ट' तैयार हो रहा है उसके अनुसार यदि परिस्थितियां आकार लेती तो अमरीका की चिन्ता यह है कि उत्तर-पश्चिम में उसका 'बेस' कहां है? तब उसकी नजर 'खालिस्तान' पर जाती है। हमारे अकाली भाई क लम्बी साजिश के शिकार बनते जा रहे हैं। इस दलदल में वे शायद इतना केल दिये गये हैं कि पीछे लौटने को उनके पास जमीन नहीं बची। नन्दपुर प्रस्ताव ने उस दलदल को और अधिक आदमखोर बना दिया है। ह प्रस्ताव छोड़ने पर अकाली नेतृत्व टूटता है।

समझाये कौन ?

आज सिखों को समझाये कौन ? सिखों ने जो मुद्दे आगे किये हैं वे तने पानी में हैं इसका एक ही उदाहरण काफी है। मुद्दा है अमृतसर को वित्र नगर' घोषित करने का और शहर में बीड़ी-सिगरेट-तम्बाकू पर रोक गाने का। मुद्दा पहली ही नजर में गले उतर जाता है। पर अभी कुछ दिन हले आर्यसमाज के नेता और जालन्धर के दैनिक हिन्दी प्रताप के यशस्वी ादक वीरेन्द्र ने संत लौंगोवाल से भेंट करके कहा कि "आप इस लड़ाई में हिन्दुओं को शामिल क्यों नहीं करते ?" तो लौंगोवाल चुप थे। वीरेन्द्र कहा "आप अमृतसर को पवित्र शहर घोषित करवा लें; हमें सौ फीसदी जूर है। आप इस पवित्र शहर में सिगरेट, बीड़ी और तम्बाकू प्रतिबन्धित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कर दें इससे बढ़कर हमारा और क्या सौभाग्य हो सकता है, किन्तु कृपा
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करके इसमें दो चीजें हमारी ओर से भी जोड़ लीजियेगा—मांस और शराब। आप सिगरेट, बीड़ा और तम्बाकू के साथ अमृतसर में मांस और शराब को भी प्रतिबंधित करवा दें। सारा हिन्दू समाज आपको सिजदा करके इस लड़ाई में आपका साथ देगा"। तो लौंगोवाल चुपचाप आकाश देखते बैठे रहे। लौंगोवाल की सांसें तब सुनी और गिनी जा सकती थीं।

आत्मबंदी

केन्द्रीय सरकार की रणनीति और देश के जन-मानस की तीव्र प्रति-क्रिया का ही परिणाम है कि आज अकाली बचाव के लिए विवश हो गये हैं। कल तक वे आक्रामक थे। टोहरा ने अभी-अभी संसद् सदस्यों के नाम जो पुस्तिका अंग्रेजी में वितरित की है उसमें यद्यपि उनका तेवर पुनः आक्रमण का है पर मैदानी तैयारी यह नहीं है। सिख अलग धर्म है, सिख अलग राष्ट्र है और सिख अलग देश है, यह कहने वाले टोहरा आज भारत से अलग होने की बात करने में सौ बार सोचने लगे हैं। सबसे ज्यादा हास्यास्पद दशा संत भिंडरांवाले की है। संत उग्रवादियों के एकछत्र नेता माने जाते हैं पर इस तथाकथित 'धर्मयुद्ध' में अकेले वे ही नेता हैं जो इस युद्ध को स्वर्णमन्दिर के भीतर गुरु नानक निवास की पांचवीं मंजिल पर बैठकर लड़ रहे हैं। पांच पचास बंदूक और स्टेनगनधारी अंगरक्षकों के बिना संत आज कहीं आ-जा नहीं सकते। उनके आस-पास वाले जानते हैं कि संत अगर नीचे उतर आये और स्वर्ण मन्दिर से बाहर निकल गये तो गिरफ्तार नहीं होने पर उनका क्या हश्र होगा? जो खेल वे खेल रहे हैं वह मैदान में उनको मिटा कर रख देगा। कतिपय आर्यसमाजियों ने जब उनके करीबी लोगों से संत के नीचे आने का आग्रह किया तब इस आत्मभय का पता चला। दूसरे अकाली नेता तो स्वर्ण मन्दिर से बाहर आते-जाते हैं पर संत भिंडरांवाले तो एक तरह से गुरु निवास के आत्मबन्दी हो गये हैं। उनकी जिद पर कितने परिवार आज अपने मुखियाओं को खो बैठे हैं, यह किसी से अप्रकट नहीं है। पंजाब के श्मशान को जगाये रखने में उनका बड़ा योगदान है। गुरु गोविन्दसिंह का पवित्र नाम लेने वाले अकाली सिख 'खालिस्तान' की मांग करते समय यह भूल जाते हैं कि गुरु गोविन्दसिंह का जन्म पटना में हुआ किन्तु पालन-पोषण आनन्दपुर साहब में और महाप्रस्थान महाराष्ट्र के नांदेड़ में हुआ। अभी तक हमारे सिख मित्रों को अपने पवित्र तीर्थ ननकाना साहब जाने के पासपोर्ट बनवाकर पाकिस्तान जाना होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल को दुर्भाग्य से ... तो पटना और नांदेड़ के लिए भी वे पासपोर्ट बनवायेंगे ? यदि सन् २०२४ तक उस विदेशी लेखक का मनहूस सपना सच हो गया तो फिर वे कितने पासपोर्ट बनवायेंगे ? सिख हिन्दू हैं या नहीं, इस बहस को उठाना अभी मैं उचित नहीं समझता पर अकाली भारतीय और राष्ट्रीय हैं, या नहीं यह बहस स्वयं अकाली मित्रों ने शुरू कर दी है। बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी होगी कि 'अकाल' कोई धर्म जाति नहीं है। गुरु नानकदेव से लगाकर सिख समुदाय में दशम गुरु गोविन्दसिंहजी तक सब गुरुओं ने सिख को भी 'पंथ' या संगत' कहा है। कभी धर्म नहीं कहा। 'हिन्दू धर्म की रक्षा' उनका एक-सूत्री कार्यक्रम रहा। दशम गुरु गोविन्दसिंह ने 'सिख पंथ' को 'अकाल पंथ' भी दिया। इसी को 'खालसा' भी कहा गया। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने एक भारतीय संत की विनम्र शालीनता के साथ उत्तर दिया था आगिया भई अकाल की तबै चलायो पंथ, सब सिक्खन को हुकुम है गुरु मानियो ग्रन्थ।

राज करेगा खालसा

दशम गुरु ने ही नारा दिया था 'राज करेगा खालसा'। इस नारे का लक्ष्य और मूल भाव आज आतंक और अरक्षा में बदल दिया गया। नारों के पीछे जो भावुकता होती है, उसका दोहन आज पंजाब में गली-गली में द्रष्टव्य है। पीढ़ियों और सदियों से एक समूह नारा लगाता आ रहा है 'राज करेगा खालसा'। इस समूह को जनून में डुबाने का काम जिसने भी किया है वह निश्चित कोई गैर-सिख और तयशुदा तौर पर गैर-भारतीय तो है ही। सिख अकालियों को ललकार कर कह दिया गया है—आखिर यह खालसा कब राज करेगा ? यही ठीक समय है जबकि राज करेगा खालसा। और उग्रवादियों का एक समूह 'राज, करने चल निकला।

अकाली जब दोयम नागरिकता की बात करते हैं तब वे इतिहास से आंखें मूंदे प्रतीत होते हैं। इस समय भारत के राष्ट्रपति पद पर एक महामहिम सिख सरदार विराजे हैं तो अकालियों ने आवाज उठाई है "या तो ज्ञानी जैलसिंह सिख धर्म छोड़ें या फिर ज्ञानीजी को सिख धर्म से बाहर निकालो।" यदि पंजाब का सर्वे किया जाय तो पता चलेगा कि समाज और सरकार के हर अंग में अस्सी फीसदी सिख बैठे हैं और शेष बीस प्रतिशत में सभी हिन्दू और गैर-हिन्दू हैं। पंजाब पुलिस तक में यही दशा है। इस आन्दोलन के दौरान जब-जब गोली चली है पुलिस की गोली से गैर-सिख ज्यादा मरे हैं। एक धारणा बनती जा रही है कि पुलिस भी सिखों पर गोली नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलाती । पुलिस में आधे सिख हैं । अकाली और निहंग आगे ट्रकों, ट्रैक्टरों और जलूसों में तलवारें, बछियां और कृपाणें चमकाते-घुमाते सड़कों को रौंद रहे हैं तो कोई बात नहीं पर यदि इसके प्रतिकार में कोई जुलूस निकाला जायेगा तो पुलिस की गोली चलेगी । इस धारणा का आधार टूटना चाहिये । सरकार से हटकर आखिर इस आन्दोलन का प्रतिकार कहां हो ? कैसे हो ? यह विचारणीय प्रश्न है । जो उत्तर तत्काल उभर कर सामने आता है वह बहुत छोटा-सा है । पंजाब के बाहर जो भी सिख जहां भी बैठा हैं वहीं से आवाज लगाये कि "देश की अखण्डता और एकता के मूल्य पर खालसा कभी राज नहीं करेगा । यह आन्दोलन भारत की आबरू को लूटने वाला आन्दोलन है । मैं इसमें शामिल नहीं हूं ।" प्रतिकार के लिए प्रज्ञा और प्रतिज्ञा की आवश्यकता होती है । सिखों के पास दोनों ही हैं ।

पंजाब के अमृतसर और कपूरथला जिलों के हत्याकांडों में गोलियों से मारे गए निरीह हिन्दू । इन्हीं हत्यकांडों के फलसवरुप राष्ट्रपति शासन लागू करना पड़ा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब के हिन्दू संगठित होकर देशद्रोही तत्त्वों का सामना करें

—राकेशरानी

(हमारे कार्यालय प्रतिनिधि से)

करतारपुर । पंजाब प्रदेशीय हिन्दू सम्मेलन में हिन्दू नेता पण्डिता केशरानी ने मांग की कि भिंडरांवाला जैसे व्यक्तियों को गिरफ्तार कर ड़े से कड़ा दण्ड दिया जाए और हिन्दू संगठित होकर देशद्रोही तत्वों का मना करें।

पंजाब में हुई अमानवीय नरसंहार की घटनाओं के समाचार पाकर ण्डिता राकेशरानी व महात्मा वेदभिक्षु: तुरन्त पंजाब के लिए रवाना हो ए। दोनों ने अपने वक्तव्यों द्वारा पंजाब के हिन्दुओं को विश्वास दिलाया सारे देश के हिन्दू उनके साथ हैं और जहां उनका पसीना गिरेगा वहां रे देश के हिन्दू अपना रक्त बहा देंगे।

अपने भाषण में अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा भिक्षु: ने राष्ट्रपति शासन का स्वागत करते हुए हम यथायोग्य व्यवहार विश्वास रखते हैं। किसी भी मूल्य पर कहा कि भारत मां के टुकड़े नहीं ने देंगे। जो देश की अखण्डता को चुनौती देगा उसे जीवित नहीं रहने या जायेगा।

सम्मेलन में श्री वीरेन्द्र जी ने अपने भाषण में आर्यसमाज को निर्भीक कर स्थिति का सामना करने का आह्वान किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है हिन्दुओं के संगठन की

—वीरेन्द्र, संचालक, प्रताप व वीरप्रताप, जालन्धर

जो परिस्थितियां पंजाब में उत्पन्न हो रही हैं उनकी ओर से आंखें बन्द करके और हाथ पर हाथ रखकर बैठना पंजाब के हिन्दुओं के लिए घातक सिद्ध होगा राजनीति में भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं होता वही लोग जीवित रहने का अधिकार रखते हैं और जीवित रह सकते हैं जो वास्तविकता को समझते हैं तथा उनकी तह तक पहुंच कर अपने हितों की स्वयं रक्षा करते हैं। जहां तक हमारा सम्बन्ध है हम तो विगत ६८ वर्षों से हिन्दुओं को चेतावनी देते चले आ रहे हैं कि जागो और देखो कि चारों ओर क्या हो रहा है। दैनिक "प्रताप" के मुखपृष्ठ पर सबसे ऊपर लिखा होता है—

खुदा ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली,
न हो जिसको खयाल अपनी हालत के बदलने का।

हम स्वीकार करते हैं। कि हमारी आवाज कमजोर रही है। १९१९ से लेकर १९४७ तक कांग्रेस हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई का राग अलापती रही और १९४७ में हिन्दू और मुसलमान ने एक-दूसरे के रक्त की होली खेली। जब हम उस समय अपने देशवासियों को चेतावनी दिया करते थे कि मुस्लिम लीग के इरादे अच्छे नहीं; इनसे बच कर रहो तो हमें साम्प्रदायिक कहा जाता था। अधिक रोचक बात यह है कि कांग्रेस स्वयं मुस्लिम लीग से बेजार थी। कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता मुस्लिम लीग के विरुद्ध थे। परन्तु यदि कांग्रेस मुस्लिम लीग का विरोध करती थी तो यह कौमपरस्ती समझी जाती थी, हम इसका विरोध करते थे तो यह साम्प्रदायिकता करार दी जाती थी। इतिहास साक्षी है कि मुस्लिम लीग के बारे में हमारा अनुमान सही निकला और कांग्रेस का राष्ट्रवाद और उसकी धर्मनिरपेक्षता विश्व इतिहास के सबसे बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरसंहार में हिन्दुओं और सिखों की तबाही और बर्बादी से न बचा सकी। कांग्रेस की धर्मनिरपेक्षता हिन्दुओं और सिखों के रक्त में बह गयी।

क्या १९४७ का इतिहास अब फिर दोहराया जायेगा? मेरा दिल इसे मानने के लिए तैयार नहीं। मैं अब भी समझता हूं कि गुरु नानक, गुरु तेग बहादुर जी और गुरु गोविन्द सिंह के सिंह कभी वह कुछ न करेंगे जो कुछ मुसलमानों ने १९४७ में किया था। गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोविन्द सिंह जी तक दसों गुरु साहबान हिन्दू ही थे। वे हिन्दू धर्म और संस्कृति के वैसे ही दीवाने थे जैसे बड़े से बड़े और कट्टर से कट्टर हिन्दू। हम यह भी नहीं भूल सकते कि इतिहास केवल तीन उदाहरण पेश करता है जब किसी महापुरुष ने अपने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष किया हो। एक बार इसके लिए महाराणा प्रताप ने तलवार उठाई थी, दूसरी बार छत्रपति शिवाजी ने तलवार उठाई थी और तीसरी बार गुरु तेग बहादुर जी ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना सिर दिया था। इसलिए मैं कहा करता हूं कि गुरु बहादुर ने अपने खून से हिन्दू-सिख एकता के पौधे को सींचा था। यह कभी सूख नहीं सकता। आंधियां आएं, तूफान आएं, भूचाल आए, हिन्दू-सिख एकता पर कभी आंच नहीं आ सकती।

लेकिन हम जानते हैं कि एक ही हरिवार में कई प्रकार के बच्चे होते हैं। अच्छे भी बुरे भी, सपूत भी और कपूत भी। इसलिए मैं बार-बार कहता हूं कि हमें सिखों और अकालियों में फर्क समझने की कोशिश करनी चाहिए। जो कुछ अकाली कर रहे हैं उस के बाद वे गुरु के सिंह कहलाने के अधिकारी नहीं। वे गुरु साहबान की शिक्षाओं के बिल्कुल विपरीत जा रहे हैं। इसलिए इनसे भी उसी तरह बचने की कोशिश करनी चाहिए जिस तरह हम मुस्लिम लीग से बचने की कोशिश करते रहे आज अकाली भी वही बोली बोल रहे हैं जो १९४७ में मुस्लिम लीग बोला करती थी।

प्रश्न पैदा होगा कि हम क्या करें। इस समय हमने जिन राजनीतिक दलों पर भरोसा किया है, उन्होंने हमें धोखा दिया है। १९४७ तक और फिर १९४७ से लेकर १९६६ तक केवल कांग्रेस ही धर्मनिरपेक्ष थी। १९६६ के बाद जनसंघ भी धर्मनिरपेक्ष हो गया और फिर अब उसने भारतीय जनता पार्टी के रूप में गांधीवाद-समाजवाद का मार्ग अपना लिया है, जिस का अभिप्राय यह है कि न तो कांग्रेस पंजाब के हिन्दुओं को बचा सकती है और न भारतीय जनता पार्टी। दोनों को वोट की आवश्यकता है और वोट के लिए यदि ये आवश्यता समझें तो हिन्दू को हिन्द महासागर में जाकर डुबो आएंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पंजाब में विगत सवा तीन वर्ष से कांग्रेस सत्तारूढ़ थी। हिन्दुओं का जो हाल हो रहा है वह हमारे सामने है। हमारे मन्त्री हर रोज दमगजे चलाते थे कि यह कर देंगे, वह कर देंगे। दबा देंगे, कुचल देंगे, मसल देंगे। लेकिन—

न खंजर चलेगा न तलवार इनसे
ये बाजू मेरे आजमाए हुए हैं।

इन परिस्थितियों में प्रश्न पैदा होगा कि हिन्दू क्या करें। कांग्रेस हमें नहीं बचा सकती। भारतीय जनता पार्टी हमें नहीं बचा सकती। दोनों धर्म-निरपेक्ष हैं। दोनों को वोट की आवश्यकता है। अब दोनों की नीति एक है। अब दोनों का लक्ष्य एक ही है। हिन्दुओं की उन्हें उसी समय तक आवश्यकता होती है जब तक उनके वोटों की आवश्यकता होती है। उसके पश्चात् हिन्दू न तीन में न तेरह में।

आज पंजाब की हालत क्या है? अकालियों ने अपने गुरुद्वारे किले बना दिये हैं। इनमें हथियार जमा किये जा रहे हैं। कोई व्यक्ति हत्या करके इन गुरुद्वारों में जाकर शरण ले सकता है और सरकार इन गुरुद्वारों में जाने को तैयार नहीं। इसके अर्थ हैं—A State within a State अर्थात् एक सरकार के मुकाबले में एक दूसरी सरकार खड़ी हो रही है और हमारी सरकार अपने आप को बेबस पाती है।

यह है आज की स्थिति। अकालियों के जो इरादे है, वे आनन्दपुर प्रस्ताव के माध्यम से स्पष्ट हो गये हैं। जरनैल सिंह भिंडरांवाला ने खुले रूप से खालिस्तान का समर्थन कर दिया है। सन्त लौंगोवाल और भिंडरांवाला के मध्य प्रतिदिन परामर्श होते हैं। लौंगोवाल, टोहरा, बादल कोई भी भिंडरांवाला की गतिविधियों की निंदा करने को तैयार नहीं। उन्होंने भिंडरांवाला को गुरु नानक निवास में स्थान दे रखा है। भिंडरांवाला वहां शस्त्र जमा कर रहा है।

पाठकगण! मैंने आपके सम्मुख पंजाब का वास्तविक चित्र रख दिया है। मैं तो पंजाब के हिन्दुओं से केवल यही कह सकता हूं कि वतन की फिक्र कर नादां, मुसीबत आने वाली है। तेरी बरबादियों के मशविरे हैं आसमानों में।

अकालियों के इरादे क्या हैं, वे स्पष्ट दिखाई दे रहें हैं। वह समय दूर नहीं जब पंजाब का एक-एक गुरुद्वारा किला बन जाएगा। इन्हें रुपये की कमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं; इसलिए हथियारों की भी कमी नहीं रहेगी। कई अन्तरराष्ट्रीय संस्थाएं उन्हें हथियार देने को तैयार हैं। हथियार देने वाले तैयार हैं और हथियार लेने वाले भी तैयार हैं।

इन परिस्थितियों में हिन्दुओं का बचाव केवल इनके संगठन में ही हो सकता है। अब हमारा एक ही नारा होना चाहिए—One for all and all for one अर्थात् एक-दूसरे की मदद करते हुए एक-दूसरे का सहारा बनते हुए अब हमें आगे बढ़ना हैं। हमें यह भी स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि पंजाब हमारा है, हमारे अकाली मित्र कोई और स्वप्न ले रहे हैं। परन्तु जहां तक हिन्दुओं का सम्बन्ध है, एक-एक हिन्दू की जबान से अब केवल यही निकलना चाहिए कि—

खाके वतन का मुझको हर जर्रा देवता है।

हमारे सामने अब केवल यह प्रश्न है कि हमने अपने इस पंजाब को कैसे बचाना हैं। इसका एक विभाजन मुस्लिम लीग ने करवा दिया था, दूसरा अकाली कराना चाहते हैं। इसका एक ही उत्तर हो सकता है और वह है हिन्दू संगठन। इसका यह अर्थ नहीं कि हम किसी के विरुद्ध हैं। हम तो केवल अपनी रक्षा स्वयं करना चाहते हैं। कोई राजनीतिक पार्टी हमारी रक्षा नहीं कर सकती। उन्हें केवल वोट की आवश्यकता है। हमारी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं। जब तक पंजाब में अकाली पार्टी चलेगी, हिन्दुओं का बचाव केवल हिन्दू संगठन द्वारा ही हो सकता है। कांग्रेस की धर्मनिरपेक्षता ने हमें १९४७ में मरवा दिया था, कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी की धर्मनिरपेक्षता हमें अब मरवा देगी। इसलिए पंजाब के हिन्दुओं को सारी परिस्थितियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

—बात १९१० ई. की है। श्यामजी कृष्ण वर्मा के साप्ताहिक पत्र इंडियन सोश्यालोजिस्ट पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। पत्रकार होने के नाते गाई आल्ड्रेड सरकार के उक्त दमन से तिलमिला गया। उक्त प्रतिबन्ध का विरोध करते हुए उसने इंडियन सोश्यालोजिस्ट को पुनः शुरू कर दिया। पत्र में वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध उत्तेजक लेख छापने लगे। ब्रिटिश अधिकारियों ने तुरन्त गाई आल्ड्रेड को कैद कर लिया। उस पर मुकद्दमा चला। मुकद्दमे के दौरान उसने भरी अदालत में यह सिद्ध किया कि भारत को स्वतन्त्रता मिलनी ही चाहिये। साम्राज्यवादी सरकार को यह बात बर्दाश्त नहीं हुई कि एक अंग्रेज पत्रकार इस तरह एक गुलाम उपनिवेश के पक्ष में लड़ाई लड़े। परिणाम स्वरूप गाई आल्ड्रेड को दो वर्ष कठोर कारावास की सजा दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

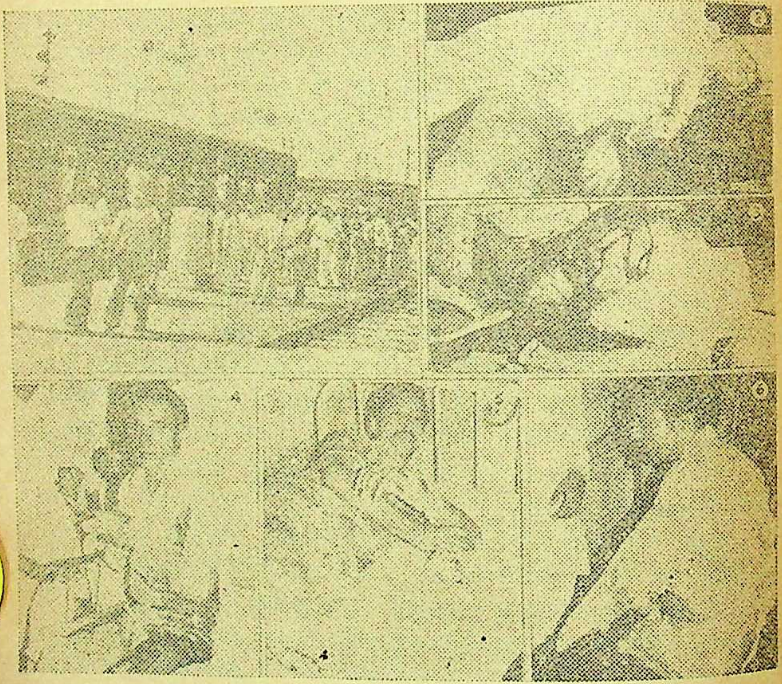

(ऊपर बाएं से) (१) अमृतसर रेलवे स्टेशन पर खड़ी हावड़ा मेल का वह डिब्बा जिसमें उग्रवादी सवार थे और उन्होंनेगोलियाँ चलाईं। (२) उग्रवादियों की गोलियों से मारे गए सैंट्रल एक्साइज एंड कस्टम्स डिपार्टमेंट के इंस्पैक्टर श्री एस. पी. सूरी और (३) एस. आई. प्यारा सिंह (४) उग्रवादियों कीगोलियों से घायल ओम् प्रकाश (५) मंगत राम मल्होत्रा (६) रमेश शर्मा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का
(२)
मेंट के
दियों
र्मा।
सिक]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढिलवां (पंजाब) में उग्रवादी सिखों द्वारा मारे गए व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९८४ का बड़ा कैलंडर
५ रंगों में

★ ★ ★ ★ ★

मूलय १)५०   १००) सैंकड़ा

डाक व्यय अलग होगा । रेलवे स्टेशन लिखें ।

अपनी अधिक से अधिक प्रतियाँ मंगा लें अन्यथा गत वर्ष की भांति निराश होना पड़ेगा ।

१९८४ की डायरी छप रही है । अपनी प्रतियाँ सुरक्षित कराएं ।

दयानन्द संस्थान
बेद मन्दिर, पो० आ० अलीपुर
दिल्ली-३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये अमर दीप !

जिन्होंने तिल-२ जलकर देश को प्रकाश दिया ।

—आभा

दीपों की यह अनवरत शृंखला । दीपक का कार्य है प्रकाश देना। अंधकार को समाप्त करना । ज्ञानरूपी दीपक का कार्य है अंधकाररूपी अज्ञान को दूर कर नष्ट कर मानव समाज को आलोकित करना, उसका पथ प्रदर्शन करना ।

चतुर्दिक् अंधकार का साम्राज्य, अमावस्या की तामिस्रपूर्ण रात्रि उस गहन निशा को झिलमिलाहट कितनी सुन्दर लगती है—लेकिन ये छोटे छोटे माटी के दीपक, उसमें छोटी-सी बाती, स्वयं तिल तिल जलकर दुनिया को उजाला देती है । सचमुच कितना त्यागपूर्ण जीवन है ।

हम दीपावली का किसी उद्देश्य से मनाते हैं । इसी दिन १४ वर्ष त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत कर राम अयोध्या लौटे थे । सम्पूर्ण रूपी अज्ञान का विनाश कर भगवान् राम ने असत्य रूपी अंधकार पर विजय पाई थी ।

इन असंख्य दीपों की दीपशिखा में अनेक दीप (प्रसंग) झिलमिला उठते हैं । स्वामी दयानन्द, भगवान् महावीर, स्वामी रामतीर्थ जैसे अमर दीप, जिन्होंने अपनी लौ से समस्त अंधकारमय जगत् को रोशनी प्रदान की ।

लेकिन वर्तमान हालात को देखकर दुःख होता है । दीपावली मनाने का अधिकार हमें है क्या ?—हम दीपावली मनाते हैं, दिये जलाते हैं, खुशी मनाते हैं, बस एक खेल, तमाशे या रस्म अदायगी के रूप में करते हैं यह सब । भूल गये उन दीपों का आत्मत्याग, जो देश में फैले गहन अंधकार के विरुद्ध लड़े । क्या इन सबके बावजूद देश में व्याप्त अंधकार हम समाप्त कर सके हैं ? आज देश में चारों ओर वे समस्यायें सिर उठा रही हैं जिन्होंने सर्वत्र अंधेरा फैला दिया है । राष्ट्र की प्रमुख असमसमस्या, पंजाबसमस्या, हमारी ओर मूक निरीह दृष्टि से टकटकी बाँधकर देख रही है । चारों ओर अराजकता अशान्ति मन्दिर, बस, ट्रेन, सिनेमाघर आदि में हो रहे बम विस्फोट, रोज की हिंसात्मक घटनायें आए दिन निरपराध निहत्थे लोगों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलि। पाशविकता और बर्बरता का यह ताण्डव नृत्य आखिर कब तक। रक्त की येनदियां कब तक बहती रहेगी। कहां हैं वे नेता जो देश, जनता के रक्षक प्रहरी बनकर देश-सेवा का व्रत लेते हैं? आज उन दीपों की रोशनी धुंधली क्यों पड़ गई है, यह दीपक की लौ इतनी मंद क्यों? क्या तेल की जगह पानी का प्रयोग किया जा रहा है? कहाँ हैं वे दीपक, जिन्होंने अपनी बलिदान आहुति देकर दुनिया को दिया अजस्र शाश्वत, अमिट प्रकाश! आइये देखें, जानें, शायद उनका आत्म बलिदान हमें कुछ प्रेरणा दे सके और हम जनता में राष्ट्रीय भावना जाग्रत कर सकें अपने देश अपनी माटी की रक्षा कर सकें।

स्वामी दयानन्द

वैदिक श्रद्धा भावना की शुष्क हुई धारा को पुनर्जीवत करने वाले ऋषि दयानन्द जिनके प्रयास से युवकों के हृदयों में त्याग और परोपकार की भावना जाग्रत हुई हिन्दू जाति के सम्पूर्ण उत्थान का श्रेय यदि किसी को जाता है तो वह हैं महान् सुधारक स्वामी दयानन्द।

पाश्चात्य, दिग्भ्रम में फँसे अभिशापग्रस्त परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े भारत को आदर्श को कर्तव्य का मार्ग प्रशस्त कर नवचेतना और जाग्रति प्रदान की।

उन्होंने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश द्वारा सत्य की ज्योति प्रज्वलित कर भारतीय, जनता को अन्धविश्वास के कगार से निकाला, शास्त्रार्थ के माध्यम से पाखण्डखण्डिनी पताका फहरा कर, धर्म के नाम पर हो रहे ढोंग, आडम्बर, अनाचार, औरधार्मिक संकीर्णता को समाप्त किया। अस्पृश्यता निवारण शिक्षा सुधार, व नारी जागरण, सामाजिक कुरीतियों, को समाप्त करने के उद्देश्य से आर्यसमाज रूपी आन्दोलन की शुरुआत की!

हम गर्व करते हैं कि आज हमारे देश की प्रधान मन्त्री एक महिला हैं। ऐसा कोई भी कार्य क्षेत्र नहीं जिसमें महिलायें कार्य न करती हों। हम सभी को कृतज्ञ होना चाहिये उस झिलमिलाते दीप महान् ऋषि के प्रति जिसने आज ही के दिन, स्वयं मिटकर, अमावस्या के घोर अंधकार को अपने पराक्रम से छिन्न-भिन्न करके एक बार फिर समस्त भारतीय जनता को पूर्णिमा के दर्शन करा दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपहरण कांड, बलात्कार की घटनाएं, चोरी, लूटपाट करने वाले अनाचारी नरकासुर के रूप में हमारे समाज का एक अंग बन गये हैं। आज का दिन याद दिलाता है उस कार्तिक अमावस्या को, जब भगवान् श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध कर जनता को भय व आतंक से विमुक्त किया था। हताशा, के अंधकार से मुक्ति दिलाई थी।

आज फिर वही दीपों की हंसती-मुस्कराती पक्तियां नरकासुर प्रकृत्तियों को समाप्त करने की प्रेरणा दे रही हैं।

स्वामी रामतीर्थ

विज्ञान का अध्ययन कर वैदिक अध्यात्म ज्ञान द्वारा मोह माया के बन्धन तोड कर जीवन-दर्शन की सार्थकता को पहचाना। देश-विदेश में भ्रमण कर वेद-ज्ञान का दीप जलाया। राम नाम का मनन कर अपने नाम को सार्थकर कर पसिद्ध पवित्र तीर्थ गंगा नदी में, दीपावली के दिन यह दीपक, सदा के लिए तिरोहित हो गया। उनकी अखंड-ज्योति समाज व राष्ट्र का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

भगवान महावीर

कठोर तप और सत्य काप्रकाश देने वाला अमर दीप चौबीसवें जैन तीर्थ-कर भगवान् महावीर। सत्य, अहिंसा, अचमौर्य और ब्रह्मचर्य के पांच महाव्रत, प्रतिष्ठापित करने वाले महावीर जिन्होंने राजपाट छोड़कर घोर तपस्या कर मानवीय कमजोरियों व इच्छाओं पर विजय प्राप्त की और विश्व को एक नया जीवन दर्शन दिया।

यह जीवन दर्शन आज के संदर्भ में कितना प्रासंगिक है—हम स्वयं समझ सकते हैं, क्योंकि आज हमारे सारे संकटों की जड़, सारी समस्याओं का मूल हिंसा, चोरी, झूठ व परिग्रह हैं परन्तु दुःख की बात हैं कि स्वयं महावीर के अनुयायी इन दुष्ट प्रवृत्तियों के शिकार होकर, कहार बने अंधेरे को पालकी में बैठाये कंधो पर उठा कर ला रहे हैं।

अच्छे चिकित्सक के अभाव में १५ बच्चों ने दम तोड़ दिया। कारण था चिकित्सकों की हड़ताल। दवाई के प्रयोग से अमुक व्यक्ति की मृत्यु। नकली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंजेक्शन से प्रतिक्रिया। न मालूम कितने ही रोगी चिकित्सकों की लापरवाही, स्वार्थपरायणता, धनलोलुपता के कारण अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। चिकित्सकका कार्य त्यागपूर्ण सेवा भाव है। इसके साक्षात् उदाहरण हैं आचार्य धन्वन्तरि। जो आज भी भारतीय चिकित्सा पद्धिति के पोषकों के लिए आशा दीप हैं। उनका अद्भुत आत्म त्याग। तमतमाती लौ गर्मी से एकबारगी देवताओं का सिंहासन भी हिल गया। अमावस्या की काली आँधी रूपी सर्प ने डसकर उस दीपक को सदा के लिए बुझा दिया लेकिन उसका अमिट प्रकाश आज भी मानो हमारा पथ अलोकित कर रहा है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★

बुद्ध की सीख

एक लड़का था. वह चतुर था। उसने बहुत-सी कलाएं सीखीं। उसे तीर चलाना आ गया, वह नाव खेने लगा और बढ़िया से बढ़िया मकान बनाना सीख गया। उसके बाद वह घर लौटा। बड़े घमण्ड से वह लोगों से कहता, "इस दुनिया में मेरे मुकाबले का कोई नहीं है. मैं सब कुछ जानता हूं।"

भगवान् ने यह देखा तो सोचा, उसे शिक्षा देनी चाहिए। उन्होंने एक बूढ़े का रूप बनाया और हाथ में भिक्षा पात्र लेकर उसके पास गये। लड़के ने पूछा, "तुम कौन हो?"

बुद्ध ने कहा, "मैं अपने को वश में रखनेवाला एक आदमी हूं।"

उनकी बात लड़के की समझ में नहीं आयी। उसके कहा आपका मतलब?"

बुद्ध बोले, "कोई आदमी तीर चलाना जानता है, कोई नाव खेना जानता है, कोई घर बनाना जानता है, लेकिन ज्ञानी आदमी अपने ऊपर शासन करता हैं।"

लड़का अब भी कुछ समझा, उसने पूछा, "अपने ऊपर शासन करना क्या होता है?"

बुद्ध ने कहा, "अगर कोई उसकी प्रशंसा करे, तो वह खुशी से नहीं फूलता. निंदा करे तो दुखी नही होता। इस तरह उसका मन उसके वश में रहता है। ऐसा आदमी किसी चीज का अभिमान नहीं करता। "बुद्ध की बात का उस लड़के पर ऐसा असर हुआ कि उस दिन से उसने डींग मारना बंद कर दिया।

—यशपाल जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवेदनहीनता का संकट

—सत्यपाल गुलाटी

हमारा समाज आज समस्याओं की विकरालता के ऐसे शिकंजे में जकड़ा दिखाई देता है कि उससे त्राण पाने के सम्बन्ध में आम आदमी प्रायः निराश दिखाई देता है। चायघरों, मनोरंजन गृहों अथवा अन्य मिलन स्थलों पर बातचीत घूम फिर कर एक ही बिन्दु पर केन्द्रित दिखाई देती है कि इस देश का क्या होगा ? समाज और राष्ट्र की अन्तर्बाह्य समस्याओं के प्रति आम आदमी जागरूक और चिंतित तो है, पर उसकी यह चिंता निष्क्रिय संवेदना भर ही रहती है।

निरन्तर अनेक बहनों की दहेज पर बलि, महिलाओं के साथ सरेआम सार्वजनिक स्थलों अथवा वाहनों में गुंडों द्वारा आक्रामक छेड़छाड़, दो-चार लुटेरों द्वारा दुस्साहसिक लूटपाट आदि घटनाएं लोकमानस को उद्वेलित तो करती हैं लेकिन आम आदमी बहुसंख्या के बावजूद भीड़ में स्वयं को "अकेला" अनुभव कर असामाजिक तत्त्वों द्वारा किए जा रहे अन्याय और अत्याचारों का मूकदर्शक बने रहने को स्वयं को विवश पाता है।

इसी प्रकार राष्ट्रीय समस्याओं की ओर देखें तो जिस देश में कभी १९०५ में बंग विभाजन से तूफान खड़ा हो गया था और अंग्रेजी सरकार हिल उठी थी, उसी देश में विदेशियों की घुसपैठ के रूप में असम पर कब्जा करने के सक्रिय षड्यन्त्र को देखते हुए भी वैसी प्रतिक्रिया नहीं होती। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगाकर आन्दोलन करने वाले असमी युवकों के साथ सारा देश खड़ा नहीं हो पाता। देश अथवा समाज के किसी भाग पर आए संकट के बारे में एकांगी प्रतिक्रिया ही होती है मानो शेष समाज और देश से उसका संबंध नहीं है।

यह स्थिति बड़ी खतरनाक है—ठीक वैसी ही जैसे किसी लकवाग्रस्त शरीर की हो, जिसमें एक लकवाग्रस्त भाग को काट फेंकने पर भी सारा शरीर वेदना अनुभव न करे।

आखिर ऐसी स्थिति क्यों हो गई है ? जिस देश में समाज की एक-एक समस्या के लिए किसी एक नेता के संकेत पर व्यापक आन्दोलन खड़े हो गए और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उन समस्याओं को समाज से समूल नष्ट कर दिया गया, वहीं अब यह निष्क्रिय संवेदनशून्यता कैसे पनप रही ? सती प्रथा और विधवाओं की विकराल समस्या के लिए राममोहन राय और महर्षि कर्वे जैसे अकेले महापुरुष खड़े हुए और उन्होंने अपना सर्वस्व होम कर इनके विरुद्ध सारे समाज को खड़ा कर दिया। आज वही सामाजिक और राष्ट्रीय विभीषिकाएं फिर से ऐसे पनप रही हैं, मानो समाज की चेतना जड़ हो गई हो और उसमें प्रतिकार की क्षमता नष्ट हो गई हो।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या यह सच है कि हमारे समाज की जीवन शक्ति और संघर्ष क्षमता ही समाप्त हो गई है ? तथ्य साक्षी है कि ऐसा नहीं है। दिशा सृजनात्मक हो या ध्वंसात्मक—यदि नेतृत्व तैयार है तो समाज की संघर्षक्षमता ने उसका अनुकरण किया है। जयप्रकाश बाबू के रचनात्मक आन्दोलन का मुद्दा रहा हो या आरक्षण की आग का ध्वंसात्मक सवाल, समाज की युवाशक्ति उसमें जूझती दिखाई दी है। देश में चल रहे विभिन्न रचनात्मक अथवा पृथक्तावादी आन्दोलनों में भी समाज की यह शक्ति प्राणों की बाजी लगाती दिखाई देती है। प्रश्न यह है कि विधायक कामों अथवा देश तथा समाज को खोखला करने वाली समस्याओं के प्रति उदासीनता क्यों है ?

राष्ट्रीय चारित्र्य विकास की उपेक्षा

सामाजिक समस्याओं के प्रति विमुखता का मूल कारण हम अतीत के सन्दर्भ में खोज सकते हैं। ब्रिटिश दासता के उस काल में जब समाज पर कोई समस्या आती थी या इसे खोखला करने वाली कोई भी विकृति उभरती थी, तब सारा समाज इसलिए खड़ा हो जाता था कि उस सबके लिए हमारे सम्मुख एकमात्र शत्रु था "अंग्रेज"। हम उसे ही सब षड्यन्त्रों का सूत्रधार मानकर समस्याओं के प्रति युद्ध स्तर पर जूझ पड़ते थे। अंग्रेजी दासता से मुक्ति के बाद स्थिति बदली। राष्ट्रीय क्षितिज से प्रत्यक्ष शत्रु के हटने के बाद समाज के सामने यह दिशा नहीं रखी गई कि असली शत्रु अभी गया नहीं है और वह है हमारे राष्ट्रीय चरित्र का अभाव। हजारों साल की दासता के कालखंड में आक्रमणों ने हमारे राष्ट्रीय चरित्र का सुनियोजित ढंग से हनन किया था अतः स्वतन्त्रता के बाद चरित्र निर्माण की जो सबसे बड़ी चुनौती थी उस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए था। खेद है कि स्वतन्त्रता के बाद इस बात की उपेक्षा की गई। यही कारण है कि स्वतन्त्रता के बाद सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याएं विकरालता से मुंह फैलाने लगीं।

राष्ट्रीय नेतृत्व की दिशाहीनता

जहां एक ओर राष्ट्र और समाज के हितों को सर्वोपरि मानने की प्रवृत्ति यानी राष्ट्रीय चारित्र्य के जागरण की उपेक्षा की गई, वहीं सामाजिक समस्याओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रति उदासीनता के लिए दूसरा कारण इससे भी विकट रहा—वह है राष्ट्रीय नेतृत्व की स्वार्थपरता। सामाजिक संस्थाओं से अधिक व्यक्ति राष्ट्र के सामयिक नेतृत्व से अनुप्राणित होता है। दुर्भाग्य से सत्ता की अन्धी दौड़ की होड़ में देश का समूचा राजनीतिक नेतृत्व व्यापक राष्ट्रीय हितों से विमुख रहा। आम आदमी के सम्मुख गांधी, जयप्रकाश तथा कृपलानी जैसे उदाहरणों के बजाय सत्ता के लिए राष्ट्रीय हितों की बलि देने वाले ही उदाहरण रहे। परिणामस्वरूप आम आदमी में भी समाज के लिए त्याग की बजाय छीना-झपटी और स्वार्थपरता की प्रवृत्ति पनपती गई। राष्ट्रीय नेतृत्व के अभाव में आदर्शविहीन युवा पीढ़ी की नजरें किसी आदर्श को ढूंढ़ने के लिए भटकीं तो उन्होंने सिनेमा कलाकारों को ही अपना आदर्श मानना अभीष्ट समझा। उनकी लोकप्रिय छवि में उन्हें दोहरापन तो नजर न आया, लेकिन राष्ट्र की सेवा का व्रत लेने के नाम पर स्वार्थ का जप करने वालों को युवा पीढ़ी ने अपना आदर्श स्वीकार नहीं किया।

सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं के झंझावात में वे किस नेतृत्व की ओर निहारें। आदर्शविहीन नेतृत्व उन्हें कोई दिशा न दे सका। समस्याओं के विस्फोट और आक्रोश को रचनात्मक मोड़ की ओर ले जाने के लिए आस्थायुक्त नेतृत्व ही न हो तो समाज के प्रति संवेदनाएं निष्क्रिय होकर रह जाती हैं।

भविष्य की चिन्ता का संघर्ष

देश की युवा पीढ़ी में सदैव तूफानी क्षमता रहती है। स्वतन्त्रता के लिए जिस युवा पीढ़ी ने अपना सर्वस्व समर्पित किया था, उस युवा पीढ़ी से समाज की समस्याओं से जूझकर देश और समाज के भविष्य निर्माण की आशा भी की जा सकती थी। लेकिन उपर्युक्त दो प्रमुख कारणों के अतिरिक्त युवा पीढ़ी के ऊपर एक और मारक मन्त्र काम कर रहा है जो उसे निष्क्रिय ही नहीं अपितु विद्रोही बना रहा है। वह है भविष्य निर्माण (कैरियर) की चिन्ता। उसके लिए बचपन और कैशोर्य के अर्थ अब मस्ती के नहीं रहे, मुक्त मन लेकर अब वह कल्पना के उस लोक की दौड़ नहीं लगा पाता जहां उदात्त चिन्तन उसमें संवेदनशीलता का ज्वार भरता है। अब प्रतिक्षण उसे भावी जिन्दगी जीने के लिए स्वयं को तैयार करना पड़ता है। आर्थिक सुनिश्चितता के लिए भयावह संघर्ष के बावजूद वह आश्वस्त नहीं हो पाता। इसलिए जीवन ढोने मात्र को लक्ष्य बनाकर उसे इसके लिए भारी मोर्चेबन्दी करनी पड़ती है। स्वतन्त्र देश की युवा पीढ़ी का मन आर्थिक भंवर में कैद होकर रह गया है, इसलिए सामाजिक सुख-दुःख की लहरें उसकी चेतना से टकराकर व्यर्थ लौट जाती हैं। संवेदना के सारे स्रोत संघर्ष की इस तपती धरती में सूख गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उपाय क्या है ?
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे समाज और विशेषकर युवापीढ़ी में राष्ट्र की समस्याओं के प्रति संवेदनहीनता निसन्देह बहुत बड़ा खतरा है बल्कि देश पर बाहरी आक्रमणों से भी बड़ा खतरा यही है। यदि आम आदमी देश की समस्याओं से ही विमुख हो जाय तो देश और समाज स्वयं विघटित होने लगता है। आज देश और समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनहीनता का यह खतरा बढ़ रहा है। बाहरी आन्दोलनों, वक्तव्यों और प्रदर्शनों से इस संकट का सामना करना सम्भव न होगा। इसके लिए आवश्यक है कि नेतृत्व का मुखापेक्षी बनने की बजाय हर जागरूक और देशभक्त नागरिक आत्मचिन्तन करे और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की धारा को बलवती बनाने में अपना योगदान दे।

वैदिक संपत्ति

वैदिक संपत्ति

सजिल्द : ८१)

३० नवंबर तक ५१)

आज ही आदेश भेजें।

दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर

पो. ऑ. अलीपुर, दिल्ली-३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन-ज्ञान [मासिक]

की

१० प्रतिया केवल २०) की
वी. पी. से मंगाएं और

अपने मित्रों को भेंट करें।

२० या २० से अधिक प्रतियां
हम आपको १)७५ पैसे प्रति
के हिसाब से भेजेंगे।

कागज—छपाई—डाक—व्यय सब महंगे
पर प्रचार के लिए

**हम जन-ज्ञान आज भी लागत से कम मूल्य पर
दे रहे हैं।**

हिन्दू राज्य स्थापना के लिए

हमारा साथ दीजिए।

जन-ज्ञान [मासिक], नई दिल्ली-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य		मूल्य ४४४)
२. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)		४०)
३. गीता का वैदिक भाष्य (पं० आर्यमुनि)		२५)
४. वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या		३०)
५. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)		१५)
६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार		१५)
७. संस्कारविधि: [सजिल्द]	छोटा साइज	१०)
	बड़ा साइज	१५)
८. सरस्वतीन्द्र जीवन-चरित्र		३०)
९. अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)		२०)
१०. सत्यार्थ-प्रकाश (१० | १५ इंच) स्थूलाक्षर		१५१)
	आर्ट पेपर पर	२५१)
११. ज्योति स्तम्भ :		१०)
१२. दयानन्द दर्शन :		१०)
१३. योगासन :		२)
१४. योग और ब्रह्मचर्य :		३)
१५. दयानन्द चित्र दर्शन :		२०)
१६. श्रीमद्दयानन्दप्रकाश :		२०)
१७. LIGHT OF TRUTH		३०)
१८, प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री		६)
१९. अथर्ववेद परिचय :		६)
२०. संक्षिप्त महाभारत :		६)
२१. वाल्मीकि रामायण :		६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, पो० आ० अलीपुर, दिल्ली-३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३ मुकद्दमे जीतने हैं

मुस्लिम गढ़ों में जागृति लानी है

शुद्धि का चक्र चलाना है

दंगे रोकने हैं

और

भारत में सैक्युलरवाद–समाजवाद मिटाकर

हिन्दू राज्य स्थापित करना है

क्या इन सब कामों के लिए आप प्रतिमास एक निश्चित राशि की सहायता नहीं भेज सकते ?

धन नहीं तो काम नहीं

इस सत्य को समझें और हमें पूरा सहयोग दें।

—राकेश रानी अध्यक्ष
दयानन्द संस्था, नई दिल्ली-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू संघ के एक करोड़ सदस्य बनाइए

आप हिन्दू संगठन के लिए अपने क्षेत्र में "हिन्दू संघ" के अधिक से अधिक सदस्य बनाएं। वार्षिक शुल्क १) मात्र लें।

आप १०) सैकड़ा के हिसाब से सदस्यतापत्र मंगा लें। उन्हें भरवा कर— जो व्यय हुआ हो, वह सभी काटकर शेष राशि व फार्म का दूसरा भाग हमें भेज दें।

एक करोड़ सदस्य हिन्दू राज्य का संकल्प लेंगे।

ओ३म्

महोदय,

मैं...

पुत्र ग्राम

पो० जिला वासी

स्वेच्छया हिन्दू संघ का सदस्य बनता हूं। मुझे अपने हिन्दू होने पर अभिमान है। १) सदस्यता शुल्क दे रहा हूं—

पूरा पता————————— भवदीय

—————————

—————————

ओ३म् **प्रमाणपत्र**

श्री **जी**

निवासी

को "हिन्दू संघ" का सम्मानित सदस्य स्वीकार किया जाता है। इस विश्वास के साथ कि वे हिन्दू राष्ट्र निर्माण में हमारा साथ देंगे।——**वेदभिक्षु**:

हस्ताक्षर सदस्य————————————————अध्यक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—ब्रह्मचारी प्रेमप्रकाश शास्त्री
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोलाझाल (मेरठ)

क्या हम स्वतन्त्र हैं ?

एक ओर जहां सृष्टि के नैसर्गिक नियमानुसार प्रत्येक प्राणी की यह आन्तरिक अभिलाषा होती है कि हम किसीके अधीन न रहकर स्वच्छन्द जीवन यापन करें, दूसरी ओर यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से अवेक्षण करते हैं तो हमें यह स्पष्ट रूप से विदित हो जाता है कि सृष्टि के नियमानुसार प्रत्येक प्राणी को अन्य किसी प्राणी के वशीभूत होना पड़ता है। यह नियम विशेषकर मानव समाज में घटित होता है।

यही कारण है कि मनुष्य कभी अपनी तमोगुण बहुलता एवं प्रमाद की पराकाष्ठा के कारण दूसरों की पराधीनता रूपी जंजीरों से जकड़ा जाता है, तो कभी काल की गति के अनुसार अपने रजः प्रधान, सत्त्व गुण एवं विवेक पूर्ण कार्य कौशलता के कारण जहां अपने आपको स्वतन्त्र करता है, वहां विपक्षियों को जड़ से उखाड़ फेंकता है एवं आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करता है।

यह नियम एक सौ या हजार वर्षों से नहीं अपितु सृष्टि के आरम्भ होने के पश्चात् से ही चला आ रहा है। हम वेदों एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के देवासुर संग्राम सुनते हैं। देव एवं असुर से हमारा अभिप्राय ज्ञानी एवं अज्ञानी से है, क्योंकि कहा भी गया है—

"विद्वांसो वै देवाः"

महाभाष्यकार महर्षि पतञ्जलि ने भी अपने महाभाष्य में देवासुर संग्राम की ओर इंगित किया है, जैसा कि प्रथमाध्याय के प्रथम पाद के प्रथमाह्निक में उन्होंने लिखा है—

ते असुरा हेलयो हेलय इति कुर्वन्तः पराबभूवुः" महा० १।१।१

कभी देवता असुरों की प्रचण्ड शक्ति के सामने अधीनस्थ होकर अपनी विजयश्री लाभ के लिए भगवान् से प्रार्थना करते थे, तो कभी असुर लोगों को भी इन्द्र जैसेमहान् प्रतापी की वज्र शक्ति के सामने अपनी हार माननी पड़ती थी एवं पराधीनता स्वीकार करनी पड़ती थी।

इतना ही नहीं, वेदों में भी स्वराज्य प्राप्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है। यहां तक कि ऋग्वेद में तो एक सूक्त ही स्वराज्य सूक्त के नाम से वर्णित है। उदाहरण के रूप में हम एक-दो मन्त्र आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। ऋग्वेद प्रथम मण्डल के ८०वें सूक्त के प्रारम्भिक मन्त्रों को देखिए—

(१) इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निःशशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्॥

(२) स त्वामदद् वृषा मदः सोमः श्येनाभृतः सुतः।
येना वृत्रं निरद्भ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसार्चन्ननु स्वराज्यम्॥

इन मन्त्रों का महर्षि दयानन्द जी के भाष्यनुसार अर्थ देखिये—

(१) हे (शविष्ठ) बलयुक्त (वज्रिन्) शस्त्रास्त्र विद्या से सम्पन्न सभापति जैसे सूर्य (अहि) मेघ को जैसे (ब्रह्मा) चारों वेदों के जानने वाला (ओजसा) अपने पराक्रम से (पृथिव्याः) विस्तृत भूमि के मध्य (मदे) आनन्द और (सोमे) ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाले में (स्वराज्यम्) अपने राज्य की (अन्वर्चन्) अनुकूलता से सत्कार करता हुआ (इत्था) इस हेतु से (वर्धनम्) बढ़ती को (चकार) करे वैसे ही तू सब अन्यायाचरणों को (इत् हि) ही (निश्शशाः) दूर कर दे।

(२) हे (वज्रिन्) शस्त्रों और अस्त्रों की विद्या को धारण करने वाले और सभाध्यक्ष (येन) जिस न्याय वर्षा ने और मद करने वाले जो कि बाज पक्षी के समान धारण किया जावे उस उत्पादन किये हुए पदार्थों के समूह से तू (ओजसा) पराक्रम से (स्वराज्यम्) अपने राज्य को (अन्वर्चन्) शिक्षानुकूल किये हुए जैसे सूर्य (अद्भ्यः) जलों से अलग कर (वृत्रम्) जल को स्वीकार अर्थात् पत्थर-सा कठिन करते हुए मेघ को निरन्तर छिन्न-भिन्न करता है, वैसे प्रजा से अलग कर प्रजा सुख को स्वीकार करते हुए शत्रु को (निर्जघन्थ) छिन्न-भिन्न करते हो (सः) वह (वृषामदः, श्येनाभृतः सुतः) उक्त गुण वाला (सोमः) पदार्थों का समूह (त्वा) तुझको (अमदत्) आनन्द करावे।

देवासुर संग्राम हुआ हो अथवा न हुआ हो परन्तु इन दोनों मन्त्रों के अर्थ से यह स्पष्टरूपेण अवश्य विदित हो जाता है कि वेदों में स्वराज्य प्राप्ति का वर्णन उदात्त शब्दों में किया गया है। सामवेद में भी अनेक स्थलों पर स्वराज्य के लिए प्रार्थना की गई है।

यह बात हमें सदैव ध्यान में रखनी चाहिये कि हम लोगों का शरीर भी एक राज्य है और इस शरीर रूपी राज्य में दो शक्तियां बराबर परस्पर संघर्ष करती रहती हैं। वे हैं दैवी एवं आसुरी शक्तियां। दैवी शक्ति को अपनाने एवं आसुरी शक्ति को परास्त करने के निमित्त देव, ऋषि, मुनि एवं ज्ञानी पुरुष स्वराज्य-प्राप्ति के लिए निरन्तर भगवान् से प्रार्थना करते थे। इसी शक्ति को हमें अप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाना है और देखना है कि क्या हम इस आसुरी शक्ति से स्वतन्त्र हैं ?

गीता के सोलहवें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए इसी शक्ति को सम्पत्ति के नाम से बतलाया और कहा कि हे अर्जुन, इस शरीर में दो प्रकार की सम्पत्तियां हैं—दैवी और आसुरी।

अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, मृदुता आदि गुण दैवी सम्पत्ति कहलाते हैं एवं दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कठोरता, अज्ञान आदि अवगुण आसुरी सम्पत्तियां हैं।

दैवी सम्पत्ति मोक्ष के लिए एवं आसुरी सम्पत्ति बन्धन के लिए मानी गई है।
दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। गीता अ. १६. श्लो. ५

अब हमें समझना है कि क्या हम इस आसुरी शक्ति से स्वतन्त्र हैं ? क्या हम दैवी शक्ति को पाने के लिए उन्मुख हैं ? जिस शक्ति को उपलब्ध करने के लिए ऋषियों, मुनियों आदि ने हमें सुगम सरणि का अनुसरण करने का उपदेश दिया था।

महर्षि दयानन्द ने हमें इसी सरणि पर चलने के लिए प्रेरित किया था। जहां उन्होंने हमें अपने अन्दर के स्वराज्य को पहचानने एवं प्राप्त करने के लिए उपदेश दिया, वहां बाह्य राज्यरूपी स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए स्वाधीनतारूपी मंत्र का पाठ पढ़ाया था। स्वराज्य के प्रति उनका उत्कट प्रेम एवं अटूट आस्था इस बात से प्रकट होती है कि जब वे अंग्रेजों के किसी कार्यालय में गये और उन्होंने देखा कि विदेशी जूता पहनने वाला व्यक्ति तो कार्यालय के अन्दर घुस सकता था, किन्तु स्वदेशी जूता पहनने वाले व्यक्ति को अपना जूता बाहर उतारना पड़ता था, तब उनके नेत्रों से आंसू गिर पड़े और उनकी अन्तरात्मा कहने लगी कि धिक्कार है इस पराधीनता को। उन्होंने वहीं निश्चय किया कि भारत माता का कण-कण हमारा प्राण है और इसकी सुरक्षा हमारा परम कर्त्तव्य है। ऐसी अनेक बातों को देखकर उन्होंने स्वराज्य का उद्घोष किया था, जिसके परिणामस्वरूप रानी लक्ष्मीबाई और मंगल पाण्डे जैसे अनेक देशभक्त देश के लिए शहीद हुए।

लगभग एक हजार वर्ष विदेशी शासन में रहने के पश्चात् अनेक शहीदों की कुर्बानियों से, अनेक वीर नर पुंगवों के शौर्य से, अनेक वीरांगनाओं के सतीत्व से एवं अनेक नवयुवकों की प्रस्फुरित धमनियों के उष्ण शोणित से हमारा भारतवर्ष स्वतन्त्र हुआ। परन्तु हम पूछना चाहते हैं अपने देश के कर्णधारों से, हम प्रश्न करना चाहते हैं देश के नौजवानों से और हम पूछते हैं इन पदलोलुप राजनेताओं से कि अंग्रेजों की सत्ता से मुक्त होने के पश्चात् क्या हम स्वतन्त्र हो गये ? क्या हम स्वतन्त्र हैं अपनी भारतीयता से ? क्या हम स्वतन्त्र हैं अपनी भाषा से ? क्या हम स्वाधीन हैं अपनी संस्कृति से ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार छाया हुआ है। विदेशी ताकतें हमारा समूल उन्मूलन करने पर उतारू हैं। आज हमारे सामने यह जटिल प्रश्न है कि हमारा देश किसका है? हिन्दुओं का, मुसलमानों का, ईसाइयों का, सिक्खों का या जिनका बहुमत है, उनका? आज चारों ओर तनाव है। हम आर्य हैं, किन्तु शिखा एवं यज्ञोपवीत से घृणा करते हैं। भारतीय हैं, किन्तु हम अपनी सर्वभाषा जननी संस्कृत को हेय दृष्टि से देखकर अंग्रेजी एवं अंग्रेजियत को प्रश्रय देते हैं। चारों ओर प्रान्तवाद, जातिवाद जोरों पर हैं। हम किसी के बारे में कुछ भी कहने में असमर्थ हैं। यह है हमारी स्वतन्त्रता।

यह सब देखकर किसी भी स्वदेश-प्रेमी के नेत्रों से आंसू टपक पड़ेंगे। हम पूछना चाहते हैं अपने भाइयों से कि क्या इन्हीं बातों के लिए शहीद कुर्बान हुए? क्या इसीलिए वीरांगनाएं सती हुईं? क्या इन्हीं कारणों से अनेक देशभक्त बलिदान हुए? आओ, हम सब उठें, जागें और ऋषियों के द्वारा कथित अन्दर के स्वराज्य एवं बाह्य स्वराज्य दोनों को प्राप्त करने का प्रयत्न करें। प्रभु हमें शक्ति एवं बुद्धि प्रदान करें, जिससे हम अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हों।

उसने सात गोलियां खाकर भी सुभाष की रक्षा की

सन् १९४५ की बात है। आजाद हिन्द फौज के प्रधान सेनापति सुभाषचन्द्र बोस को बर्मा की सीमा पार करके जापान जाना था। हजारों अंग्रेज सैनिकों ने, शिकारी कुत्तों की भांति सुभाष की गंध सूंघते फिर रहे थे। हर सैनिक की आंखों में सुभाष को गोलियों से भून देने की हिंसा चमक रही थी।

आजाद हिन्द फौज के कर्नल लक्ष्मणस्वरूप मिश्र पर सुभाष की सुरक्षा का भार था। उन्हें आदेश मिला था कि जब तक सुभाष के सुरक्षापूर्वक सीमा पार कर लेने का सन्देश मिले तब तक अंग्रेज सेना को सीमा से दूर रोके रखना है।

कर्नल मिश्र अपनी जगह पर चट्टान हो गए। साथी सैनिकों के साथ उन्होंने मोर्चा सम्भाल लिया। आजाद हिन्द फौज की उस छोटी-सी टुकड़ी और अंग्रेज सेना के बीच जम कर लड़ाई होने लगी। आजाद हिन्द फौज का हर सैनिक चट्टान था। वे बन्दूक की गोलियों को फूलों के आघात की तरह झेल रहे थे। कर्नल मिश्र के शरीर में सात गोलियां लग चुकी थीं पर वे डटकर अंग्रेज सैनिकों का मुकाबला कर रहे थे।

अन्ततः सन्देश पहुंचा कि सुभाष सुरक्षित सीमा पार कर गए हैं। कर्नल मिश्र ने भारत माता का जयघोष किया और कटे वृक्ष की तरह वहीं गिर पड़े। शरीर के घावों से बहुत खून बह चुका था। बाद में सारी घटना सुनकर सुभाष की आंखें डबडबा आई थीं। कर्नल मिश्र का वे बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने स्व० कर्नल मिश्र को 'सरदार-ए-जंग' की उपाधि दी।

—ओम्नारायण शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी ने कहा था–

देश के विभाजन से पहले मेरे शरीर के दो टुकड़े होंगे

मैं अहिंसा का पुजारी होने के नाते प्रस्तावित विभाजन का बलपूर्वक विरोध नहीं कर सकता, यदि भारत के मुसलमान वास्तव में चाहें। परन्तु मैं भारत के विभाजन के कार्य में स्वेच्छा से भाग नहीं ले सकता। मैं उसका विरोध करने में प्रत्येक अहिंसात्मक उपाय का इस्तेमाल करूंगा। विभाजन एक मिथ्यावाद है। मेरी आत्मा इसके खिलाफ बगावत करने लगती है कि हिन्दुत्व और इस्लाम दो विरोधी संस्कृतियां और सिद्धांत हैं। मैं इस विचार के खिलाफ हूं कि लाखों भारतीयों ने, जो कल तक हिन्दू थे, आज सिर्फ इस्लाम ग्रहण कर लेने से अपनी राष्ट्रीयता को भी बदल दिया है।

(हरिजन, १३ अप्रैल १९४०)

एम्बिट कार्पोरेशन
एटलांटा बिल्डिंग, बम्बई
के सौजन्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपमाला पर
उदारतारता पूर्वक
हिन्दू राज्य के लिए

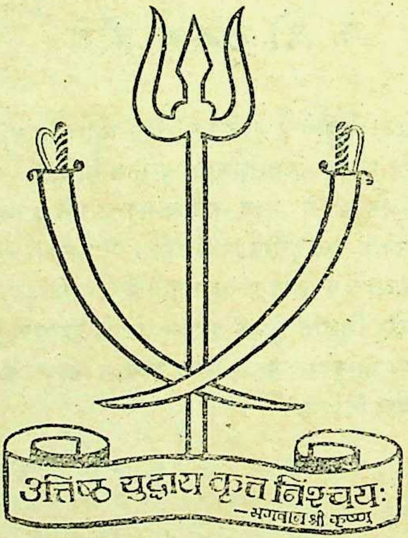

अपनी सहायता भेजिए

—अध्यक्ष—

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-

मुद्रक : जन-ज्ञान मद्रणालय दिल्ली-३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द
की जीवनी

बड़ी : पृष्ठ ११६ = मूल्य ३)
२००) सैकड़ा

छोटी : पृष्ठ ४०
मूल्य १)२५
७५) सैकड़ा

कलैंडर १९८४ : १००) सैकड़ा
मूल्य १)५० ।

गायत्री मंत्र : ८०) सैकड़ा
मूल्य १)

दयानन्द संस्थान
पो० आ० अलीपुर दिल्ली–३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113348

हिन्दू सभ्यता की अंग्रेजी में एक अनुपम पुस्तक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्र नवनीतम

(A concise study of Hindu Scriptures)

हिन्दू धर्म में अनेक धर्म ग्रन्थ पाये जाते हैं, जिनका अध्ययन करना किसी के लिए भी बहुत कठिन है। उनमें से मुख्य धर्म ग्रन्थों के उत्तम अंशों का इस पुस्तक के ५१२ पृष्ठों में संग्रह किया गया है। और इस तरह एक ही ग्रंथ में सभी शास्त्रों के अध्ययन का सुन्दर अवसर मिलता है।

इस ग्रन्थ में आप पढ़िए :

क. चार वेद : ईश्वर प्रदत्त ज्ञान, हिन्दू धर्म का लमू-आधार (यहां २०० पृष्ठ में चारों वेदों के श्रेष्ठ सूक्तों और मन्त्रों की व्याख्या की गई है।

ख. आध्यात्मिक और दार्शनिक ज्ञान देने वाले ग्रन्थ : उपनिषद; भगवदगीता महाभारत; मनुस्मृति; योगदर्शन तथा अन्य ग्रन्थ (२०० पृष्ठ)

ग. सन्त महात्माओं की अनुभव सिद्ध अमृत वाणी : शंकराचार्य, तुलसीदा तिरुयल्लुवर, नानक, कबीर, सूरदास, मीरा, नरसिंह मेहता, तुकारा स्वामी दयानन्द, रवीन्द्रनाथ आदि के वचन (११२ पृष्ठ)

- पाश्चात्य विद्वानों का हिन्दू धर्म सम्बन्धी भ्रामक धारणाओं का खंडन।
- हिन्दू धर्म सम्बन्धी ऐसी सुन्दर दूसरी पुस्तक पाना दुर्लभ।
- विशिष्ट अवसरों पर उपहार में देने की अमूल्य निधि।
- हर एक हिन्दू घर में यह पुस्तक अवश्य रहनी चाहिए। इस अनुपम पुस्तक संपादक हैं—स्नातक त्रय:।

पं० नरदेव वेदालंकार; पं० धर्मदेव वेदवाचस्पति, डा. सुरेश कुमार विद्यालंका पुस्तक का मूल्य : ८० रुपये (१० डॉलर यू. एस. ए.) २० प्रतिशत कमीशन।

पुस्तक मिलने के पते—

१. राजपाल सन्स : कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६ २. दयानन्द संस्था १५६७ हरध्यानसिंह रोड दिल्ली-५। ३. गोविन्दराम हासानन्द : ४४०८ सड़क दिल्ली-६। ४. आर्यसमाज सांताक्रूज, विट्ठल भाई पटेल रोड बम्ब ५४। ५. प्रकाशक—वेद निकेतन, ३५ क्रॉस स्ट्रीट, डरबन साउथ अफ्रीका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar